भारत में पुस्तकालयों

का

उद्भव और विकास

भारत में पुस्तकालयों का उद्भव

पुस्तकालयों का उद्भव और विकास

[सिन्धु सभ्यता-काल से पंचवर्षीय योजनाकाल तक]

द्वारकाप्रसाद शास्त्री
पुस्तकालयाध्यक्ष
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

भूमिका

श्रीमगनानन्द, एम ए, डिप एल एस्सी, पी ई एस
अध्यक्ष
राजकीय केन्द्रीय पुस्तकालय : उत्तरप्रदेश, प्रयाग

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय
वाराणसी–१

द्वितीय संस्करण ११००

अक्टूबर · १९६१

●

मूल्य : पाँच रुपये

प्रकाशक
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय
पो. वक्स न ७०, ज्ञानवापी
वाराणसी-१

मुद्रक
शिव प्रेस
प्रह्लाद घाट, वाराणसी

भूमिका

ज्ञान और विज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र का विकास सदैव ही क्रमिक रहा है और पुस्तकालय-क्षेत्र भी इसका अपवाद नही है। अत, अन्य क्षेत्रो की भाँति पुस्तकालय-क्षेत्र के उद्भव और विकास का अनुसन्धान भी आवश्यक है। श्री द्वारकाप्रसादजी शास्त्री की यह पुस्तक-जिसकी भूमिका लिखने के लिए उन्होने मुझे आमन्त्रित किया है—इस दिशा की ओर एक अनूठा और सराहनीय प्रयास है।

अभी तक पाश्चात्य लेखकों की यह धारणा रही है कि भारतीय पुस्तकालयो के विकास का कोई सुव्यवस्थित रूप नही रहा। उनकी यह धारणा इस मान्यता पर आधारित है कि भारतीयो ने ईस्वी सन् की सातवी, आठवी शताब्दी मे विदेशियो से लिपि-ज्ञान प्राप्त किया। किन्तु लेखक ने प्रस्तुत पुस्तक के प्रथम अध्याय मे ही भारतीय भाषाओ और लिपियो का विवेचन करते हुए भारतीय वाङ्मय के अन्तर्साक्ष्यो और कतिपय बहिर्साक्ष्यो से यह सिद्ध करने का सफल प्रयास किया है कि भारत मे अति प्राचीनकाल से ही लिखने की परम्परा रही है और फलत भारतीय पुस्तकालयो का विकास भी सुव्यवस्थित योजना का एक अङ्ग रहा है।

इस मान्यता के आधार पर लेखक ने सिन्धु सभ्यताकाल से ले कर आधुनिक काल तक के लम्बे युग को कतिपय अध्यायो मे वैज्ञानिक रीति से विभक्त करके तत्कालीन पुस्तकालयो की परम्पराओ का सप्रमाण विवेचन किया है। यद्यपि राजनीतिक उलट-फेर तथा अन्य कारणो से प्राचीन काल के पुस्तकालयो के सम्बन्ध मे आज पर्याप्त सामग्री उपलब्ध नही है, फिर भी सम्पूर्ण पुस्तक मे प्राप्त सामग्री का व्यवस्थापन, विषय का सरस वर्णन, आँकड़ों और तथ्यो का विधिवत् सग्रह और विभिन्न विचारधाराओ का सुन्दर समन्वय इस वात को प्रकट करता है कि लेखक ने वहुत लगन के साथ इस कार्य को किया है और यत्र-तत्र बिखरी हुई विविध सामग्री को सुचारु रूप से संगृहीत करके उन्हे यथास्थान व्यवस्थित किया है। वैदिककाल, बौद्धकाल, मुस्लिम एव ब्रिटिशकाल तथा स्वाधीनकालीन पुस्तकालयो का एक शृङ्खलावद्ध वर्णन पुस्तकालयाध्यक्षो एवं सामान्य पाठको के लिए भी महत्त्वपूर्ण सूचना सामग्री एवं ज्ञानवृद्धि का रत्न प्रदान करता है।

प्रस्तुत विषय के विवेचन की गम्भीरता और पूर्णता तो विशेपज्ञो के लिए भी पर्याप्त शोध की अपेक्षा रखती है। फिर भी शास्त्री जी ने व्यक्तिगत सीमित साधनो के अन्तर्गत इस ओर जो प्रयास किया है वह अपने ढग का सर्व प्रथम होने के कारण इस क्षेत्र के अन्य अनुसंधानकर्त्ताओ के लिए अवश्य ही पथ-प्रदर्शक होगा। अभीतक कुछ फुटकर लेखो को छोड कर भारतीय पुस्तकालयों के सुव्यवस्थित इतिहास का पुस्तक रूप मे पूर्णत अभाव रहा है। वर्तमान युग मे पुस्तकालयो के मानव जीवन का अभिन्न अङ्ग हो जाने के कारण श्री शास्त्रीजी की यह पुस्तक अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। अत. यदि इस पुस्तक का भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो सके तो पुस्तकालय-जगत् के लिए वहुत ही हितकर होगा। साथ ही इससे भारत के सामाजिक और आर्थिक जीवन के अनुरूप पुस्तकालय-विकास की योजना वनानें मे भी सहायता मिल सकेगी।

राष्ट्रभापा हिन्दी मे लिखित इस पुस्तक द्वारा भारतीय पुस्तकालय-साहित्य के एक रिक्त स्थान की पूर्त्ति हुई है। अत इस कृति के लिए श्री शास्त्री जी समस्त पुस्तकालय-जगत् की वधाई के पात्र है। मुझे आशा है कि भविष्य मे भी इसी प्रकार उनकी अनूठी कृतियाँ प्राप्त होती रहेगी।

राजकीय केन्द्रीय पुस्तकालय
इलाहावाद
२६–१०–'५७

—मगनानन्द

दो शब्द

विश्व की संस्कृति इसके पुस्तकालयो मे सुरक्षित रहती है और वह भविष्य की शान्ति और समृद्धि की योजना बनाने मे बहुत सहायक सिद्ध होती है। भारतीय सभ्यता और सस्कृति भी अतीत के व्यक्तियो और कार्यो का लेखा अपने पीछे छोड़ चुकी है जो कि धीरे-धीरे बढता रहा है। ऐसा संग्रह यहाँ भोज-पत्रो, ताड-पत्रो, हस्तलिखित पोथियो और अंत मे मुद्रित पुस्तकों और दृश्य-श्रव्य उपकरणो के रूप मे पाया जाता है। इस प्रकार भारतीय सभ्यता नाना रूपो से एक साधन उपस्थित करके विजयपूर्वक आगे बढ़ती रही है। इसलिए सम्पूर्ण सम्भव उपायो और विधियो से पुस्तकालयो की रक्षा और उनका उपयोग होना चाहिए।

खेद है कि पाश्चात्य विचारको ने भारतीय पुस्तकालय की प्राचीनता को यथोचित सीमा तक स्वीकार नही किया है। उनमे से अधिकाश विद्वानो का मत है कि भारतीयो ने लिखने की कला भी सातवी, आठवी शताब्दी मे विदेशियो से सीखी तथा मूल ब्राह्मी लिपि भी मौलिक आविष्कार नही है। स्पष्ट है कि उनके मत से भारत मे पुस्तकालयो की परम्परा भी बहुत वाद की है। परन्तु यह मत सर्वथा भ्रामक और निराधार है। यदि वे भारतीय सभ्यता और सस्कृति को अति प्राचीन न स्वीकार करे तो भी आज से ५००० वर्ष पूर्व सिन्धुघाटी की सभ्यता से अब तक के लम्बे युग के अन्तर्साक्ष्य से यह प्रमाणित होता है कि यहाँ के निवासियो की अपनी भाषा और लिपि थी और वे लिखना-पढना जानते थे। वे अपने विचारो को विविध रूपो से प्रकट करते थे। आज की भारतीय भाषाएँ, लिपियाँ और पुस्तकालय उसी परम्परा के विकसित रूप है।

इस पुस्तक मे मैने प्राप्त सामग्री के आधार पर सिन्धु सभ्यता से अव तक के काल को सात भागो मे विभाजित करके पुस्तकालयो के उद्भव और विकास का सप्रमाण विवेचन किया है। राजनीतिक उथल-पुथल के घोर संघर्ष से गुजरने के कारण भारत के विभिन्न कार्यालयो से तथ्यपूर्ण आँकड़े पर्याप्त रूप मे नही मिल सके है। फिर भी सिन्धु-घाटी की चित्रलिपि की कड़ी से द्वितीय पचवर्षीय योजना के अन्तर्गत आयोजित पुस्तकालयो की कड़ी क्रमवद्ध मिली हुई है।

अन्त मे मैं उन समस्त मित्रो और संस्थाओ के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ जिन्होने इस पुस्तक के लिए सामग्री जुटाने में अपना सहयोग प्रदान किया है। मेरे आदरणीय मित्र श्री मगनानन्दजी, अध्यक्ष, सेंट्रल स्टेट लाइब्रेरी, उत्तर प्रदेश ने इस पुस्तक की भूमिका लिखने का कष्ट किया है। एतदर्थ मैं उनका विशेष रूप से आभारी हूँ। यदि इस पुस्तक द्वारा भारतीय पुस्तकालय-जगत् को कुछ भी लाभ हुआ तो मै अपने परिश्रम को सफल समझूंगा और चेष्टा करूँगा कि इसका अगला संस्करण अपेक्षाकृत अधिक परिवर्द्धित रूप मे उपस्थित किया जा सके।

दीपावली
२०१४

—द्वारकाप्रसाद शास्त्री

विषय-सूची

अध्याय १

भारतीय पुस्तकालयों की पृष्ठभूमि

पुस्तकालय की मान्यता

अब यह बात सार्वभौम रूप से स्वीकार कर ली गई है कि पुस्तकालय केवल शिक्षण-संस्थाओ के लिए ही आवश्यक सहायक नही है, बल्कि सभी प्रकार के बौद्धिक, सामाजिक और आर्थिक क्रियाकलाप के लिए भी जरूरी है। पुस्तकालयो और उनमें व्यवस्थित पुस्तकों की संख्या से किसी भी देश की प्रगति का अनुमान सरलतापूर्वक लगाया जा सकता है। पुस्तकालय की सबसे बडी कसौटी उसके उपयोग करनेवालो की संख्या है जिनके लिए वह स्थापित किया गया हो। अत अब राष्ट्रीय उत्थान मे पुस्तकालय-आन्दोलन को धीरे-धीरे एक प्रभावकारी साधन के रूप मे मान्यता मिल रही है। साथ ही यह अनुभव किया जाने लगा है कि पुस्तकालय की व्यवस्था एक आर्थिक व्यवस्था है, उसके अभाव मे प्रारम्भिक शिक्षा पर व्यय की जाने वाली धनराशि व्यर्थ हो जायगी, क्योकि वह शिक्षा फिर निरक्षरता मे बदल जायगी।

पृष्ठभूमि के आधार

भारत का क्षेत्रफल लगभग १२,६६,९०० वर्गमील है। जन-सख्या के दृष्टिकोण से ससार मे इसका दूसरा स्थान है। १९५१ की जन-गणना के अनुसार यहाँ की जन-सख्या ३५, ६८, ७९, ३९४ थी। यह संख्या बढ कर १९५६ मे ३८ ६५ करोड तक पहुँच चुकी है। यह विशाल जन-सख्या १४ प्रदेशो तथा ६ केन्द्र द्वारा शासित क्षेत्रो के ३०१८ नगरो और ५,५८,०८९ गाँवो मे बसी हुई है। इनमे से १९५१ की जन-गणना के अनुसार केवल १६.६१ प्रतिशत लोग ही साक्षर है और साक्षरता के सुलभ साधन पुस्तकालयो की सख्या तो कुल ३२००० ही है। फिर भी लिपि के आविष्कार से लेकर अब तक के इन पुस्तकालयो का भारत मे क्रमश विकास कैसे हुआ? यह एक मनोरंजक एव खोजपूर्ण कहानी है। स्वतन्त्र भारत मे पंचवर्षीय योजनाओ के अन्तर्गत पुस्तकालयो के विकास का जो प्रयास किया जा रहा

है, वह भी पुस्तकालय के इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण अग है। लेकिन इस विषय को भलीभाँति समझने के लिए भारत की भाषाओ, भारतीय लिपियो, भारत मे लिखने के प्रचार की प्राचीनता और भारतीय इतिहास की राजनीतिक उथल-पुथल को सक्षेप मे जान लेना आवश्यक है, क्योकि इन बातो का भारतीय पुस्तकालयो के ऊपर विशेष प्रभाव पडता रहा है। ये ही भारतीय पुस्तकालयो की पृष्ठभूमि है। भारतीय शिक्षा का तो पुस्तकालयो से घनिष्ट सम्बन्ध रहा ही है, अत उसका वर्णन पुस्तकालयो की बदलती हुई स्थिति के साथ-साथ ही करना उचित होगा। अब उपर्युक्त चार विषयो मे से प्रत्येक की सक्षिप्त चर्चा की जायगी।

भारतीय भाषाएँ

भारतीय गणतन्त्र मे अनेक जातियो और नाना भाषाओ के लोग बसे हुए हैं। भारत के इस भाषा-समूह का विवेचन स्वर्गीय सर जार्ज ग्रियर्सन ने 'लिग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया' नामक ग्रन्थ के बीस खण्डो में किया है। इसमे उन्होने भारत की भाषाओ की सख्या १७९ और उपभाषाओ की सख्या ५४४ दी है। इन १७९ भाषाओ मे से १०६ भोट-चीन भाषा गोष्ठी के अन्तर्गत आती है जिनमे से कितनी ही तो छोटे-छोटे कबीलो या उपजातियो की भाषाएँ हैं। इनमे से कुछ भाषाएँ तो बहुत थोडे से लोगो मे प्रचलित हैं।

इनके अतिरिक्त २४ और भाषाएँ अन्य भाषा-गोष्ठियो के अन्तर्गत हैं जो नगण्य हैं। शेष जो भाषाएँ बचती हैं उनमे से निम्नलिखित १५ भाषाएँ ऐसी हैं जो भारत की प्रधान, मुख्य या साहित्यिक भाषाएँ कही जा सकती हैं —

हिन्दी, उर्दू, बँगला, उडिया, मराठी, गुजराती, सिन्धी, काश्मीरी, पजाबी, नेपाली, आसामी, तेलुगु, कन्नड, तामिल और मलयालम।

इनमे से एक से ग्यारह तक की भाषाएँ आर्य गोष्ठी की और शेष चार द्राविड गोष्ठी की हैं।

भारत मे प्राचीन तथा मध्य युग मे भाषाओ का इतना विभेद नहीं था। हजार बारह सौ या दो हजार वर्ष पहिले देश के एक बडे हिस्से मे तब एक ही भाषा चलती थी। उस समय इन सारी भाषाओ और उपभाषाओ के आदि रूप मे चार, पाँच या छ प्रकार की प्राकृते चलती थी। वे एक दूसरे के इतना निकट थी कि लोग परस्पर व्यवहार से ही उनको समझ लिया करते थे। धीरे-धीरे उन्ही प्राकृतो से इन भाषाओ का उद्गम और विकास हुआ। इसको इस प्रकार समझा जा सकता है :—

भारतीय आर्य भाषाओं का विकास (डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी के मतानुसार)

- भारत ईरानी
  - भारतीय आर्य (प्राचीन वैदिक बोली)
    - उदीच्य
      - ब्राचड अपभ्रंश — सिन्धी
      - केकय मद्र टक्क आदि — पश्चिमी पंजाबी या लहन्दी
        - शौरसेनी से प्रभावित — पूर्वी पंजाबी
    - उत्तर की पहाड़ी भाषाएँ जो मूलत. नाग अथवा दर्द थी, किन्तु जो पाकृत युग में राजपूताने की बोलियों से प्रभावित हुईं।
      - नाग अपभ्रंश
        - पहाड़ी भाषाएँ
          - पूर्वी (नयकुरा या, नेपाली)
          - मध्य (गढवाली, कुमाऊँनी)
          - पश्चिमी (चमेआली, कुल्लुई आदि)
    - प्रतीच्य (दक्षिण-पश्चिम)
      - लाटी शौरसेनी आभीर तथा अवन्ती आदि, किंतु शौरसेनी से विशेष प्रभावित
        - नागर अपभ्रंश
          - राजस्थानी
            - मालवी तथा निमाड़ी
            - मेवाती, गूजरी
            - जयपुरी हाड़ौती
            - पश्चिमी
              - मारवाड़ी
              - गुजराती
    - मध्यदेशीय
      - शौरसेनी
        - शौरसेनी अपभ्रंश
          - पश्चिमी हिन्दी
            - बुन्देली
            - कन्नौजी
            - ब्रज
            - बाँगरू
            - हिन्दुस्तानी या नागरी हिन्दी जिससे आधुनिक हिन्दी का निर्माण हुआ
    - प्राच्य
      - अर्धमागधी
        - अर्धमागधी अपभ्रंश
          - अवधी
          - बघेली
          - छत्तीसगढ़ी
      - मागधी
        - मागधी अपभ्रंश
          - पूर्वी मागधी
            - असमिया
            - बँगला
            - उड़िया
          - पश्चिमी मागधी
            - मैथिली
            - मगही
            - भोजपुरी
    - दाक्षिणात्य
      - महाराष्ट्री
        - महाराष्ट्री अपभ्रंश
          - मराठी तथा कोकणी

जब देश मे प्राकृतो का प्रचलन था उस समय जनता अपनी प्रान्तीय या स्थानीय बोलचाल की भाषा को लेकर अपना दैनिक कार्य चलाती थी। लेकिन उच्च स्तर के तथा शिक्षित लोग जिनके हाथो मे देश के संचालन का भार था, हिन्दू राज्य मे सस्कृत भाषा की सहायता से कार्य चलाते थे। इसी परम्परा के अनुसार मुसलमानी शासनकाल मे फारसी की सहायता से तथा अंग्रेजी शासन काल मे अंग्रेजी भाषा की सहायता से कार्य होता रहा। अब स्वतन्त्र भारत मे हिन्दी भाषा को इसके लिए चुना गया है।

ऊपर जिस सस्कृत भाषा का जिक्र किया गया है, वह आर्यो की भाषा थी। उसी भाषा मे आर्यो के मुख्य और आदि ग्रन्थ 'वेद' आज भी पाये जाते हैं। इस सस्कृत भाषा के प्राचीन रूप को वैदिक सस्कृत और बाद के रूप को लौकिक सस्कृत कहते है। बाद का साहित्य जिसमे पुराण, रामायण आदि सम्मिलित है, सब लौकिक सस्कृत मे लिखा गया।

इस प्रकार प्राचीन भारत के पुस्तकालयो मे सस्कृति तथा प्राकृत आदि की पोथियो की प्रधानता रही। समय के परिवर्तन के साथ-साथ उनमे अन्य भाषाओ के ग्रन्थो को स्थान मिला और आज के भारतीय पुस्तकालयो में भारतीय भाषाओ के अतिरिक्त अनेक विदेशी भाषाओ की पुस्तकें बहुत बडी संख्या मे पाई जाती है।

भारतीय लिपियाँ

चूंकि पुस्तकालयो मे लिखित ज्ञान-सामग्री का सग्रह होता है। इसलिए भारतीय पुस्तकालयो की परम्परा के सम्बन्ध मे यहाँ की लिपियो का भी ज्ञान आवश्यक है। प्राचीन काल मे भारत मे ब्राह्मी (पाली बभी) और खरोष्ठी नामक दो लिपियाँ प्रचलित थी। इनमे से ब्राह्मी एक प्रकार से राष्ट्रीय लिपि थी। इसका प्रचार पश्चिमोत्तर प्रदेश को छोड कर समस्त भारतवर्ष मे था। यह बाईं ओर से दाहिनी ओर को लिखी जाती थी। पश्चिमोत्तर प्रदेश मे मे खरोष्ठी लिपि का प्रचार था और यह दाहिनी ओर से बाई ओर को लिखी जाती थी। खरोष्ठी लिपि का सम्बन्ध विदेशी सेमिटिक अरमइक लिपि से है। लेकिन ब्राह्मी लिपि आर्यो का मौलिक आविष्कार था। यद्यपि आर्य सभ्यता बहुत पुरानी है फिर भी ई० पू० ३०० के पहिले की आर्य भाषा मे लिखा हुआ कोई भी लेख न तो अभी तक मिला है और न पढा ही गया है। इसलिए मौर्ययुग की ब्राह्मी लिपि को ही आधुनिक भारतीय लिपियो मे आदि लिपि मानना पडता है। मध्य तथा आधुनिक कालो की समस्त भारतीय लिपियाँ इस ब्राह्मी लिपि से निकली है। इनको इस प्रकार समझा जा सकता है :—

प्राचीन भारत की
ब्राह्मी लिपि
कुषाण लिपि
गुप्त लिपि
दक्षिण भारत की लिपि
पल्लव
ग्रन्थ
मलयालम
तामिल
तेलुगु
कानडी, ब्रह्म, कम्बोज और श्याम के अक्षर
उत्तर पश्चिम भारत (शारदा)
मध्यदेश और राजस्थान-गुर्जर (नागर)
पूर्व भारत (कुटिल)
देवनागरी, गुजराती, कैथी
बँगला, आसामी, मैथिली, नेपाली, उडिया
यवद्वीप और वलिद्वीप आदि के अक्षर
काश्मीरी, गुरुमुखी
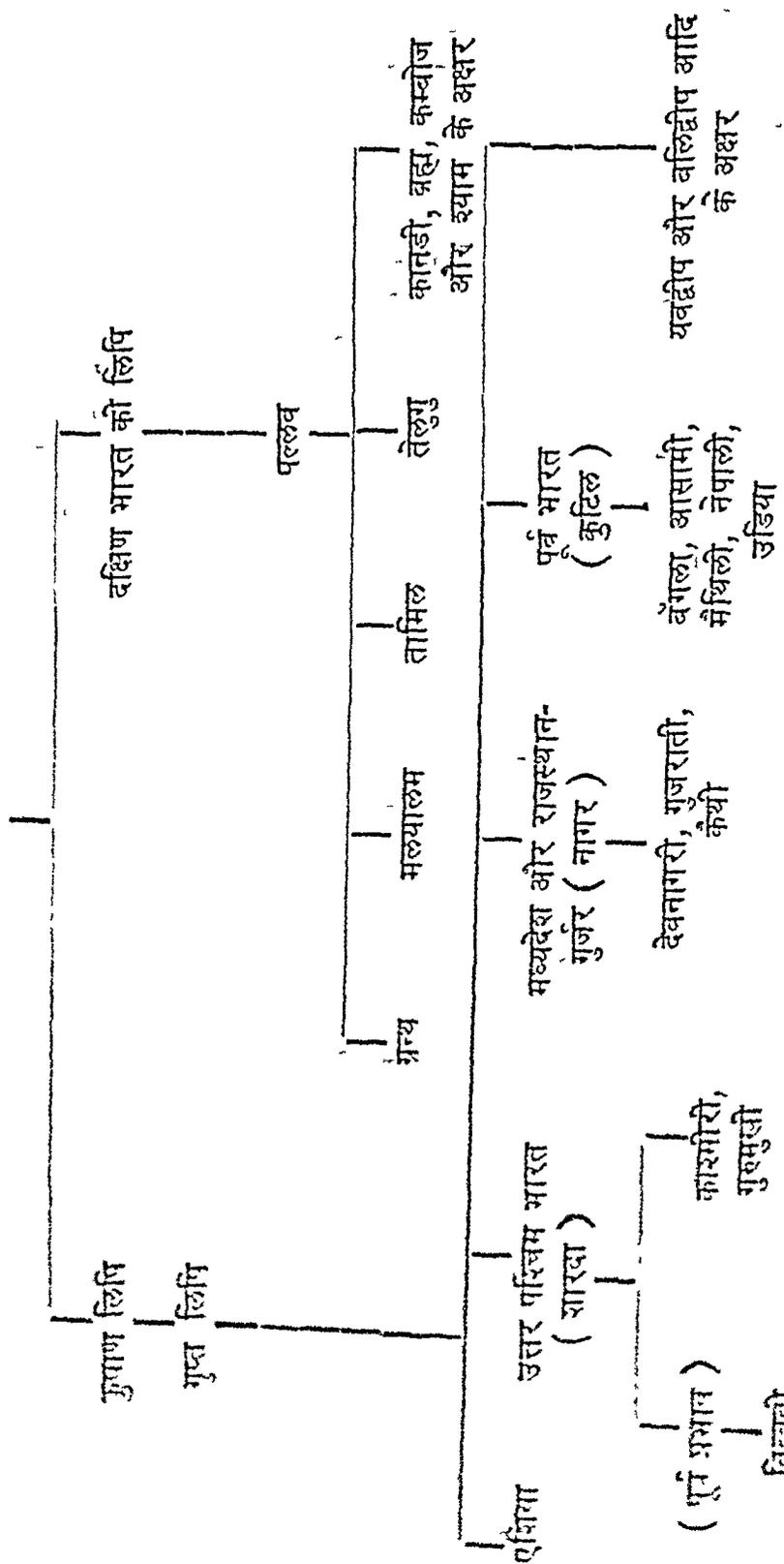
भारतीय प्राचीन पुस्तकालयो मे भी ब्राह्मी लिपि मे लिखे ग्रन्थ नही मिलते, किन्तु शिलालेख आदि कुछ फुटकर नमूने प्राप्त है। पुस्तकालयो मे ब्राह्मी लिपि से उत्पन्न अन्य प्रसिद्ध लिपियो मे लिखे एव छपे ग्रन्थ पाये जाते है।

भारत में लिखने के प्रचार की प्राचीनता

भारत में लिखने की प्रथा अति प्राचीन काल से चली आ रही है। यहाँ प्रकृति की कृपा से भोज-पत्र और ताड-पत्र प्राप्त थे। अत उन पर लिखाई का काम होता था। लेकिन यहाँ की जलवायु ऐसी है कि भोज-पत्र, ताड-पत्र और कागज पर लिखे ग्रन्थ हजारो वर्ष तक नही ठहर सकते। फिर भी भोज-पत्र पर लिखा हुआ सबसे पुराना सस्कृत ग्रन्थ 'सयुक्तागम' नामक बौद्ध सूत्र है। वह डा० स्टाइन को खेतान प्रदेश के खडलिक स्थान मे मिला था। उसकी लिपि ई० सन् की चौथी शताब्दी की मानी जाती है। ताड-पत्र पर सबसे पुराना ग्रन्थ तुरफान मध्य एशिया मे अश्वघोष के तीन नाटको का ब्राह्मी लिपि में लिखित त्रुटित अश के रूप मे मिला है। वह ई० सन् की दूसरी शताब्दी के आस-पास का लिखा माना जाता है। कागज पर लिखे चार संस्कृत के ग्रन्थ मध्य एशिया मे यारकन्द नगर से ६० मील दक्षिण मे 'कुगिअर' स्थान से श्री वेवर महोदय को प्राप्त हुए जिनका समय डा० हार्नली ने ई० सन् की पाँचवी शताब्दी का अनुमान किया है। प्राचीन शिलालेख मौर्यवशी राजा अशोक के समय ई० सन् की तीसरी शताब्दी के है जो पत्थर के विशाल स्तम्भो पर और चट्टानो पर प्राय सारे भारत-वर्ष मे पाये जाते है। अशोक से पूर्व के भी दो छोटे शिलालेख अजमेर जिले के वडली गाँव से तथा नेपाल की तराई के पिप्रावा नामक स्थान के एक स्तूप के भीतर से पात्र पर मिले है। इसकी लिपि अशोककालीन लिपि से पुरानी है और सम्भवत. ई० पू० ४४३ की है। इन शिलालेखो से ऐसा मालूम होता है कि ई० सन् के पूर्व पाँचवी शताब्दी मे लिखने का प्रचार इस देश मे साधारण वात थी।

इनके अतिरिक्त ई० पू० ३२६ मे भारत पर आक्रमण करने वाले सिकन्दर महान् के एक सेनापति--निआर्क्स ने भी लिखा है कि 'यहाँ के लोग रूई (रूई के चिथडो) को कूट कर लिखने के लिए कागज वनाते है।' मेगस्थनीज ने भी लिखा है कि 'यहाँ पर दस-दस स्टेडिआ (एक स्टेडिया = ६०६ फीट ९ इच) के अन्तर पर पत्थर लगे है, जिनसे धर्मशालाओ का तथा दूरी का पता चलता है। नये वर्ष के दिन भावी फल (पंचाङ्ग) सुनाया जाता है। जन्म-पत्र बनाने के लिए जन्म समय लिखा जाता है और न्याय स्मृत के

अनुसार होता है।' इन दोनो यूनानियो के वक्तव्य से स्पष्ट है कि ई० सन् की चौथी शताब्दी मे यहाँ के लोग कागज बनाना जानते थे। पञ्चाङ्ग और जन्म-पत्र बनते थे और मीलो के सूचक पत्थर भी लगते थे। ये बाते लेखन-कला की प्राचीनता को प्रकट करती है। बौद्ध ग्रथो मे लिखने की कला की प्रशंसा की गई है। जातक के ग्रथो मे खानगी तथा सरकारी पत्रों, कर्जदार की तहरीरो, पोत्थको (पुस्तकों), कुटुम्बसम्बन्धी आवश्यकीय विषयो, राजकीय आदेशो तथा धर्म के नियमो को सुवर्ण-पत्रो पर खुदवाए जाने का वर्णन मिलता है। महावग्ग (विनयपिटक का एक ग्रन्थ) मे लेखा (लिखना) गणना (पहाडा) और रूप (हिसाब) की पढाई का, जातकों मे पाठशालाओ तथा विद्यार्थियो के लिखने के फलक (तख्ती) का और 'ललित विस्तर' ग्रथ मे बुद्ध का लिपिशाला मे जा कर अध्यापक विश्वामित्र से चन्दन की पाटी पर सोने के वर्णक (कलम) से लिखना सीखने का वर्णन मिलता है।

इन उद्धरणो से ई० पू० की छठी शताब्दी के आस-पास की लेखन दशा का पता लगता है और सिद्ध होता है कि उस समय लिखने का रिवाज एक साधारण बात हो गई थी। स्त्रियाँ और बालक भी लिखना जानते थे और प्रारम्भिक पाठशालाओ की पढाई ठीक ऐसी ही थी, जैसी कि आज देहाती खानगी पाठशालाओ की है।

महाभारत, स्मृति, कौटिल्य के अर्थशास्त्र और वात्स्यायन के कामसूत्र आदि ग्रन्थो मे भी लिखना और लिखित पुस्तको का उल्लेख पाया जाता है। पाणिनि (ई० पू० ५००) ने अष्टाध्यायी मे 'लिपि' (लिखना), लिपिकर शब्द, स्वस्ति के चिह्न और ग्रन्थ का भी उल्लेख किया है। उन्होंने कई ग्रथो और अपने पूर्ववर्ती लगभग १२ वैयाकरणो के नाम भी गिनाये है। पाणिनि से भी पूर्व यास्क ने अपने निरुक्त मे अपने से पूर्ववर्ती निरुक्तकारो के नाम गिनाये है जिनसे पता चलता है कि यास्क और पाणिनि से बहुत पहले व्याकरण और निरुक्त के ग्रंथ लिखे गए थे, जो आज प्राप्त नही है। छान्दोग्य उपनिषद और ऐतरेय आरण्यक मे अक्षर स्वरो और उनके प्रयत्नों का विवेचन मिलता है। शतपथ ब्राह्मण मे लिङ्गो के भेद एक वचन, बहुवचन आदि पाये जाते है।

उपर्युक्त प्रमाणो से, उपनिषद्, आरण्यक और ब्राह्मण ग्रंथो से पूर्व व्याकरण ग्रंथो के होने का पता लगता है। यदि उस समय तक लिखने का प्रचार न होता तो इनमें व्याकरण और पारिभाषिक शब्दो की चर्चा कैसे

होती ? व्याकरण-रचना लेखन-कला की उन्नत दशा मे होती है । अतः उस समय लेखन-कला उन्नत दशा मे थी, ऐसा अनुमान किया जाता है ।

ऋग्वेद मे छन्दो के नाम दिये गये है । वाजसनेयि सहिता मे कुछ छन्दो के भेद भी दिये गये है । अथर्ववेद मे छन्दो की सख्या भी ११ लिखी है । तैत्तरीय सहिता, मैत्रायणी सहिता, काठक सहिता तथा शतपथ ब्राह्मण में कई छन्दो और उनके पादो के अक्षरो की संख्या भी गिनाई गई है । लिखना न जानने वाली जातियो मे छन्दो के नाम का ज्ञान नही होता । अत ब्राह्मण ग्रथो और वेदो मे मिलने वाले छन्दो के नाम आदि से स्पष्ट है कि उस समय लेखन-कला की उन्नति हो चुकी थी ।

वेदो की सहिताओ मे कितना एक अश और ब्राह्मण गथो का बहुत बड़ा भाग गद्य में है और वे वेदो की टीका स्वरूप है । लिखना न जानने से और वेदो के लिखित गथ पास न होने से ब्राह्मण ग्रथो आदि की रचना की कल्पना भी नही की जा सकती ।

पठन शैली और लिखित पुस्तक

वेदो के मन्त्रो के शुद्ध उच्चारण का बहुत महत्त्व है । उसके पाठ मे स्वर और वर्ण का अशुद्ध उच्चारण बहुत ही हानिकर बताया गया है । इस लिए उनका शुद्ध उच्चारण गुरु के मुख से सुन कर ही किया जाता था । यही कारण है कि वैदिक काल मे वेदो को कठ करने की प्रथा थी । गुरु मत्र का एक-एक अंश पढता था और शिष्य उसे उसी रूप मे कण्ठ कर लिया करते थे । वेदो को लिख कर पढने की मनाही थी और ऐसे लिखित पाठक को 'अधम पाठक' कहा जाता था । इससे यह भी स्पष्ट है कि वेदो के भी लिखित ग्रंथ थे । वे ग्रंथ भूलने पर सहायता देने के लिए अवश्य रहते थे । इसके अतिरिक्त व्याख्यान, टीका, व्याकरण, निरुक्त, प्रातिशाख्य आदि मे सुभीते के लिए उनका उपयोग किया जाता था ।

धीरे-धीरे वेद के पठन-पाठन मे लिखित पुस्तक का अनादर एक प्राचीन परम्परा-सी बन गई । उसी की देखादेखी वेदोत्तरकालीन अन्य ग्रन्थ भी कण्ठस्थ किये जाने लगे । इस प्रकार यहाँ शताब्दियो से यही परिपाटी हो गई कि **मस्तिष्क और स्मृति ही पुस्तकालय का काम दे** । इसीलिए बाद को ज्योतिष, वैद्यक, कोश आदि सभी विपयो के ग्रन्थ याद करने की सुविधा के कारण श्लोकबद्ध लिखे जाने लगे ।

अत अन्त मे हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि रचनाकाल मे सब ग्रन्थ विचारपूर्वक लिखकर ही बनाये गये । केवल अध्ययन-प्रणाली मे ही कंठस्थ

करना मुख्य समझा जाता रहा। इसीलिए बूलर महोदय ने बहुत खोज के बाद लिखा है कि 'इस अनुमान को रोकने के लिए कोई कारण नही है कि वैदिक समय मे भी लिखित पुस्तके मौखिक शिक्षा और दूसरे अवसरो पर सहायता देने के लिए काम मे लाई जाती थी।' बोधलिङ्ग ने भी लिखा है कि 'मेरे मत मे साहित्य के प्रचार मे लिखने का उपयोग नही होता था परन्तु नए ग्रंथो को बनाने मे इसको काम मे लाते थे। ग्रन्थकार अपना ग्रथ लिख कर बनाता परन्तु फिर या तो उसे स्वयं कण्ठस्थ कर लेता या औरो को कण्ठस्थ करा देता। कदाचित् प्राचीन काल मे एक बार लिखे ग्रंथ की प्रतिलिपि नही उतारी जाती थी, परन्तु मूल लिखित प्रति ग्रथकार के वंश मे उसकी पवित्र यादगार की तरह रखी जाती रही और प्राय गुप्त रहती थी।' राँथ का मत है कि 'लिखने का प्रचार भारतवर्ष मे प्राचीन समय से ही होना चाहिए क्योकि यदि वेदो के लिखित ग्रथ विद्यमान न होते तो कोई व्यक्ति प्रातिशाख्य न बना सकता।'

इस प्रकार उन पाश्चात्य विद्वानो के मत का कोई महत्त्व नही रह जाता जो यह मानते है कि भारतवासियो ने विदेशियो से छठी, सातवी शताब्दी मे लिखना सीखा।

भारत मे ताड-पत्र, भोज-पत्र, कागज, रूई का कपडा, लकड़ी की पाटी, रेशमी कपडा, चमडा, पत्थर, ईट, सोना, चादी, ताँबा, पीतल, काँसा और लोहा लिखने के आधार थे और वर्णक (नड की कलम, बाँस की कलम), शलाका (लोहे की कलम), परकार और रेखापाटी का प्रयोग किया जाता था। इनके नमूने भी खोज मे प्राप्त हुए है। अत हमारे देश मे पुस्तकालयो की परम्परा वैदिक काल से भी पुरानी रही है।

भारतीय इतिहास की रूपरेखा

भारतीय इतिहास को निम्नलिखित भागो मे बाँटा जा सकता है —

१ ४००० ई० पू० से २००० ई० पूर्व तक।

२. २००० ई० पूर्व से ६०० ई० पूर्व तक।

३ ६०० ई० पूर्व से ३०० ई० पूर्व तक।

४ ३०० ई० पूर्व से इस्लामी विजय तक।

५ मुस्लिम काल।

६. अंग्रेजी काल।

७. स्वतन्त्र भारत।

इनमे से प्रथम चार भाग प्राचीन काल के अन्तर्गत आते है।

(१) ४००० ई० पूर्व से २००० ई० पूर्व तक

इस काल का क्रमवद्ध इतिहास बहुत ही विवादग्रस्त है। भारत के आदि निवासी कौन थे ? आर्य यदि बाहर से आये तो उनके पहले यहाँ किस जाति के लोग रहा करते थे ? क्या वे भी बाहर से आए थे अथवा यही के मूल निवासी थे ? आदि बातो पर अभी तक विद्वानो मे एक मत नही हो पाया है। फिर भी हडप्पा और मोहनजोदडो की खुदाई से जो सामग्री प्राप्त हुई है, उससे यह सिद्ध होता है कि आज से चार हजार वर्ष पहले सिन्धु घाटी मे एक उच्चकोटि की सभ्यता का विकास हो चुका था। इस काल की दूसरी महत्वपूर्ण घटना आर्यो का भारत मे बाहर से आगमन है। ऐसा इतिहासकारो का मत है कि आर्य लोग ३००० ई० पू० से २५०० ई० पू० भारत मे आए। उनकी अपनी उच्चकोटि की सभ्यता एव सस्कृति थी।

(२) २००० ई० पू० से ६०० ई० पू० तक

इस काल मे आर्यो ने २००० ई० पू० से १५०० ई० पूर्व तक पूर्व और दक्षिण मे अपने उपनिवेश बनाए। धार्मिक ग्रथो की रचना की। अपने अनेक छोटे-छोटे राज्य स्थापित किए। इस प्रकार इस काल मे आर्य सभ्यता का उत्तरोत्तर विकास होता रहा।

(३) ६०० ई० पूर्व से ३०० ई० तक

इस काल मे भारत का अधिकाश भाग आर्य सभ्यता से प्रभावित हो चुका था। सम्पूर्ण भारत अनेक जनपदो मे बँट गया था। पाँचवी शताब्दी पूर्व से लोगो मे आधिपत्य की भावना जोर पकडने लगी थी और सघर्ष शुरू हो चुके थे। इसके फल-स्वरूप मगध मे शिशुनाग वश की स्थापना हुई। साम्राज्यवादी नीति को अपना कर उसने अग और लिच्छवि जैसे गणतत्रो पर विजय प्राप्त की। धीरे-धीरे ई० पू० चौथी शताब्दी तक पजाब और सिधु को छोडकर पूरा भारतवर्ष मगध राज्य के घेरे मे आ गया था। इसी काल मे ३२७ ई० पू० से ३२५ ई० पू० के बीच सिकन्दर महान् ने भारत पर चढाई की। इसी बीच वैदिक धर्म के विरोध मे धार्मिक क्रातियाँ भी हुई जिनके फलस्वरूप, भारतीय समाज वैदिक, जैन एव बौद्ध इन तीन धर्मो मे बँट गया। ३२१ ई० पू० मगध का सिहासन मौर्यो के हाथ आ गया। चन्द्रगुप्त मौर्य ने मगध साम्राज्य को हिन्दुकुश तथा हिरात तक फैला दिया। २७० ई० पू० से २३० ई० पू० तक सम्राट् अशोक मगध के सिहासन पर रहा। उसके राज्यकाल मे लगभग सारा भारतवर्ष मगध साम्राज्य के

अधीन आ गया। कलिङ्ग के युद्ध मे घोर नर-संहार से खिन्न हो कर उसने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया। फिर तो बौद्ध धर्म के भाग्य जग गए। भारत के कोने-कोने मे तथा पड़ोसी राष्ट्रो मे भी बौद्धधर्म का प्रचार एव प्रसार हो गया। बौद्धधर्म की अहिसा और शान्तिप्रियता की नीति का देश की राजनीति पर बुरा प्रभाव पडा। सम्राट् अशोक की सैनिक शक्ति का ह्रास होने पर देश के ऊपर विदेशी हमलो का ताँता सा बँध गया। यूनानी, शक, कुशन और हूण आदि विदेशी जातियो ने पश्चिमोत्तर की ओर से भारत पर भीषण आक्रमण किए। इस प्रकार २०० ई० पू० से ईसा की तीसरी शताब्दी तक राजनीतिक स्थिति बहुत ही डावाँडोल रही। धीरे-धीरे ३२० ई० मे मगध मे गुप्त साम्राज्य का उदय हुआ जिसने फिर एक बार देश मे एक सुदृढ राज्य स्थापित कर लिया। इतिहासकार इस 'गुप्तकाल' को भारत का 'स्वर्ण युग' कहते हैं।

(४) ३०० ई० पू० से इस्लामी विजय तक

गुप्तवंश का साम्राज्य दो शताब्दियो तक भारत मे जमा रहा। इस काल मे वैदिक सभ्यता और संस्कृति का एक बार फिर उत्थान हुआ। लेकिन हूणो के आक्रमण ने गुप्त साम्राज्य को जर्जर कर दिया और सम्पूर्ण देश छोटे-छोटे राज्यो मे बँट गया। यशोवर्धन, शशाक तथा हर्षवर्धन आदि राजाओ ने भारत मे पुन एक साम्राज्य स्थापित करने की चेष्टाएँ की किन्तु सफलता न मिल सकी। दक्षिण मे चालुक्यो और उनके पश्चात् राष्ट्रकूटो का जोर रहा। बंगाल मे पालवंश और राजस्थान तथा कन्नौज मे गुर्जर - प्रतिहार वंश के लोगो का जोर बना रहा। आपसी सघर्ष मे इन लोगो की भी शक्ति नष्ट हो गई। इस प्रकार देश छोटे-छोटे राज्यो मे बँट गया। फिर तो संगठित हो कर शत्रु से मोर्चा लेने की शक्ति देश मे न रह गई।

सातवी शताब्दी से बारहवी शताब्दी तक का समय भारतीय इतिहास में 'राजपूत काल' कहलाता है। महमूद गजनवी के हमले से १५० वर्ष बाद तक भारत पर विदेशी हमले नही हुए किन्तु इस बीच भी राजपूत लोग संगठित होने के बजाय आपस मे लडते रहे और इस प्रकार उनकी शक्ति का ह्रास हो गया। बारहवी शताब्दी के अन्त मे उत्तरी भारत मे दो प्रसिद्ध राज्य थे—कन्नौज मे गहरवार वंश का और दिल्ली अजमेर मे चौहान वंश का। ११९२ मे मुहम्मदगोरी ने हमला करके इनको भी नष्ट कर दिया। इस प्रकार भारत मे इस्लामी राज्य स्थापित हुआ।

दक्षिण भारत के राष्ट्रकूटो की चर्चा ऊपर की जा चुकी है । सन् ९३७ से ११९१ ई० तक तो उनका जोर रहा । इसके बाद उनका साम्राज्य देवगिरि के यादवो और द्वारसमुद्र के होइसलो से बँट गया । सुदूर दक्षिण मे पल्लव शक्ति का जोर नवी शताब्दी तक बना रहा । इसके बाद उनका स्थान चोल शक्ति ने ले लिया, जिसका प्रभुत्व तेरहवी शताब्दी तक बना रहा ।

(५) इस्लामी राज्य

मुहम्मद गोरी ने ११९२ ई० में उत्तरी भारत पर विजय प्राप्त की थी। उसके एक गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली में 'गुलाम वश, की नीव डाली। सन् ११९२ से १५२५ ई० तक दिल्ली पर गुलाम वश, खिलजी वश, तुगलक वश, सैयद वश तथा लोदी वश का राज्य क्रमश चलता रहा। सन् १५२६ मे बाबर ने भारत पर हमला करके विजय प्राप्त की और मुगल राज्य की स्थापना की। २०० वर्षों तक भारत पर मुगलो का शासन बना रहा। औरङ्गजेब के बाद मुगल साम्राज्य विघटित होने लगा और छोटे-छोटे राज्य स्थापित होने लगे।

इस इस्लामी शासन काल मे भी कुछ हिन्दू राज्य अपना अस्तित्व बनाए रहे। दक्षिण मे विजयनगर का साम्राज्य १३५० से १५६५ तक चलता रहा। अकबर के शासन काल मे मेवाड का राज्य अपना स्वतत्र अस्तित्व बनाए रहा और महाराणा प्रताप ने अधीनता स्वीकार नही की। मुगल साम्राज्य के आखिरी दिनो मे दक्षिण मे मराठो, राज स्थान मे राजपूतो और पजाब मे सिक्खो ने अपने-अपने स्वतत्र राज्य स्थापित कर लिए। मराठो ने तो अठारहवी शताब्दी के अंत प्राय. सम्पूर्ण भारतवर्ष मे अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था।

(६) अंग्रेजी काल

यद्यपि सोलहवी शताब्दी से ही भारत मे योरोपीय जातियो का आना प्रारभ हुआ, फिर भी वे व्यापार ही करते रहे। उनमे डच, पुर्तगाली, स्पेनिश, फ्रासीसी तथा अग्रेज थे। धीरे-धीरे इन जातियो ने भारत की गिरती हुई राजनीतिक स्थिति से अनुचित लाभ उठाना चाहा और वे अपने राज्य स्थापित करने के लिए इधर उधर हाथ-पैर भी मारने लगी। उनके इस आपसी सघर्ष मे अग्रेजो की जीत हुई। उनकी शक्ति दिनो दिन बढने लगी। उन्होने १८१८ ई० मे मराठा शक्ति को पराजित कर दिया और १८४९ ई० मे सिक्खो का राज्य भी छीन लिया। इस प्रकार उन्होने जम कर भारत पर १४ अगस्त सन् १९४७ तक राज्य किया।

(७) स्वाधीन भारत

भारत मे अंग्रेजी शासन के विरुद्ध धीरे-धीरे जनता मे विद्रोह की भावना प्रबल होती गई। सन् १८५७ ई० मे स्वातंत्र्य-आन्दोलन की पहली चिनगारी फूट पडी। अंग्रेजो ने उसे 'सिपाही विद्रोह' कह कर बडी निर्ममतापूर्वक दबा दिया। भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस की स्थापना बम्बई मे सन् १८८५ मे हुई। इसका उत्तरोत्तर विकाश होता गया। अत मे महात्मा गाधी के नेतृत्व में १५ अगस्त १९४७ ई० को भारत को अग्रेजो के फौलादी पंजे से मुक्ति मिली, किन्तु देश हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दो भागो मे बँट गया। भारत मे प्रजातात्रिक प्रणाली से काग्रेस दल की सरकार स्थापित हुई। उसने अपनी प्रथम पंचवर्षीय योजना मे देश के अनेक क्षेत्रो मे काफी विकास किया है। अब द्वितीय पंचवर्षीय योजना चल रही है। इन योजनाओ मे पुस्तकालय के विकास की ओर भी पर्याप्त ध्यान दिया गया है।

★

अध्याय २

भारतीय पुस्तकालयों का काल-विभाजन

काल-विभाग

जैसा कि पिछले अध्याय मे कहा जा चुका है कि भारत मे आर्यों का आगमन ३००० ई० पू० और २५०० ई० पू० के बीच हुआ। उससे पूर्व यहाँ पर 'सिधु सभ्यता' का अस्तित्व पाया जाता है। हड़प्पा और मोहन-जोदडो की खुदाई मे इस बात का स्पष्ट पता लगता है कि यहाँ पर आर्यों के आने से पहले भी एक सभ्य और सुसस्कृत सभ्यता मौजूद थी, यह बात दूसरी है कि उसका अधिक फैलाव न रहा हो। इस प्रकार आर्यों के आने से दो हजार वर्ष पूर्व की सिन्धु सभ्यता से ले कर अव तक के लगभग ६९५७ वर्षो को पुस्तकालय के उद्गम और विकास की दृष्टि से सात भागो में बाँटा जा सकता है —

१. प्रागवैदिक काल	५००० ई० पू० से	२५०० ई० पू०	तक
२ वैदिक काल	२५०० ई० पू० से	५०० ई० पू०	तक
३ बौद्ध काल	५०० ई० पू० से	१२०० ई०	तक
४ मुस्लिम काल	१२०० ई० से	१७०० ई०	तक
५ संधि काल	१७०० ई० से	१८१३ ई०	तक
६ ब्रिटिश काल	१८१३ ई० से	१९४७ ई०	तक

७. स्वाधीनता काल १९४७ से अव तक

आधार

सिधु सभ्यता से ले कर वर्त्तमान काल तक को उपर्युक्त सात भागो मे विभाजित किया गया है, उसका आधार अनेक ऐतिहासिक घटनाएं है। सिधु-सभ्यता से वैदिक काल के बीच इतना लम्बा अन्तर है कि उसे एक अलग काल मानना उचित है। वैदिक काल ऋग्वेद के निर्माण काल से ले कर भगवान् बुद्ध के जन्म काल के लगभग तक माना गया है। उसके बाद से नालन्द पुस्तकालय के नष्ट होने तक बौद्ध काल और उसके पश्चात् मुगल-शासन की समाप्ति तक लगभग मोटे तौर पर मुस्लिम काल मान लिया गया है।

मुगल-शासन की समाप्ति से सन् १८१३ ई० तक के काल को सन्धि-काल इसलिए कहा गया है कि इस बीच पुराने ढर्रे से चले आ रहे पुस्तकालयो को कुछ मजबूत सहारा नही मिल सका। इससे वे वैसे बने रहे और कुछ तो सदा के लिए नष्ट हो गए। सन् १८१३ ई० से बृटिश काल का प्रारम्भ इसलिए माना गया है कि इसी सन् मे पार्लियामेंट के आज्ञा-पत्र के अनुसार ईस्ट-इण्डिया कम्पनी ने भरतीयो की शिक्षा की जिम्मेदारी आंशिक रूप मे अपने ऊपर ली और तदनुसार शिक्षा के साथ-साथ पुस्तकालयो का भी उत्तरोत्तर विकास होता गया। १९४७ ई० मे अंग्रेजी राज्य के समाप्त होने पर पुस्तकालय-विकास के लिए एक नये युग का प्रारम्भ हुआ। यह काल स्वाधीनता काल है जो १५ अगस्त १९४७ ई० से प्रारम्भ होता है। इस काल मे पुस्तकालयो की स्थापना और उनके विकास के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण कदम उठाए गए है।

प्रत्येक काल मे पुस्तकालयो का विकास एक अजीब ढंग से होता रहा है। काल-विभाजन से यह बात न समझनी चाहिए कि एक काल मे दी गई अवधि के बाद एक दम नए ढग के पुस्तकालय होगे। हर एक परवर्ती काल मे पूर्ववर्ती काल के या कालो के ढग के पुस्तकालय किसी न किसी रूप मे रहे है। उदाहरणार्थ, बौद्धकालीन पुस्तकालयों के युग मे भी वैदिक कालीन पुस्तकालयो की परम्परा बनी रही। जो लोग बौद्ध केन्द्रो के पुस्तकालयो से लाभ उठाना नही चाहते थे वे वैदिककालीन ढग से शिक्षा प्राप्त करते रहे और उस ढग से व्यवस्थित पुस्तकालयो से लाभ उठाते रहे। इसी प्रकार मुस्लिम काल मे यद्यपि पुस्तकालयो के रूप मे कुछ परिवर्त्तन हुआ। फिर भी पुराने वैदिक और बौद्धकालीन पुस्तकालय यत्र-तत्र बने ही रहे। आज भी जब कि पुस्तकालयो का सार्वजनिक रूप से प्रसार होता जा रहा है फिर भी विभिन्न-भाषा-प्रेमियो के विभिन्न मतावलम्बियो के, तथा विभिन्न रुचि के लोगो के अनेक स्वतन्त्र पुस्तकालय विद्यमान है, यद्यपि समय की माँग के अनुसार उनमे भी थोडा बहुत परिवर्तन आ ही गया है। इसलिए पुस्तकालय के उद्गम और विकास की परम्परा जानने के इच्छुक प्रत्येक व्यक्तिको यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि प्रत्येक काल का एक-दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध है और प्रत्येक काल के पुस्तकालयो पर उस काल की सभ्यता और संस्कृति का तथा राजनीतिक उथल-पुथल का गहरा प्रभाव पड़ा है।

★

अध्याय ३

प्राग्वैदिककालीन पुस्तकालय

सिन्धु सभ्यता

पाश्चात्य विद्वानो तथा कतिपय देशी विद्वानो का यह मत था कि वैदिक सभ्यता, भारत की प्राचीन सभ्यता थी और इसका काल वे २००० ई० पूर्व-से पहिले न मानते थे। परन्तु अग्रेजी शासनकाल मे तत्कालीन सरकार द्वारा सर जॉन मार्शल के नेतृत्व मे सिन्ध प्रान्त के मोहनजोदडो और हडप्पा नामक दो स्थानो की खुदाई द्वारा जिस सुविकसित सभ्यता का पता लगा है, उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत की सभ्यता वहुत प्राचीन है। आज से लगभग ६००० वर्ष पूर्व भी भारत एक उन्नत सभ्यता का केन्द्र था। गार्डन चाइल्ड और हॉल जैसे विद्वान् तो इस सभ्यता को सुमेरीय सभ्यता की जन्मदात्री मानते है। सिन्धु घाटी की इस सभ्यता को 'सिन्धु सभ्यता' कहा जाता है।

संक्षिप्त रूपरेखा

सिन्धु सभ्यता भारतीय इतिहास की आधार-शिला थी। वह वैदिक काल की भाँति ग्राम्य सभ्यता न थी वल्कि वह नगर-सभ्यता के रूप मे थी। मोहनजोदडो के ध्वंसावशेष इस वात को सिद्ध करते है कि यह नगर सुनिश्चित क्रम से वसा हुआ था। इसकी लम्बी-चौडी सडके, सुन्दर, हवादार मकान, स्नानागार, मजबूत नालियाँ, कूडादान आदि की व्यवस्था अपने समय की अनोखी छाप छोड गई है। सिन्धु घाटी के निवासी कृषि कार्य जानते थे। वहाँ कला-कौशल तथा व्यापार की अवस्था उन्नत थी। उनका व्यापारिक सम्बन्ध दूर-दूर देशो से था। वहाँ की वास्तुकला मे सौन्दर्य की अपेक्षा उपयोगिता की भावना अधिक थी। वहाँ के निवासियो को जीवन-सम्बन्धी सभी आवश्यक सामग्री उपलब्ध थी। वच्चो के खिलौने, तौलने के बाट, बैलगाडियाँ, कुर्सियाँ, दर्पण, अङ्गराग, कैची, सुई आदि

सभी सामग्री के होने का प्रमाण मिलता है। उनके पास शस्त्रास्त्र भी थे। वे कदाचित् तलवार का भी उपयोग करते थे। वे लोग धार्मिक प्रवृत्ति के थे। वे अपने शवो को जलाते तथा गाडते भी थे।

सर जान मार्शल ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि—"मोहनजोदडो के विशाल स्नानागार और एक से एक सुन्दर भवन, उनके भीतर गहरे कुएँ तथा जल-निर्गम की बहुश्रम-प्रणालियाँ—इस बात के ठोस प्रमाण है कि उस युग के साधारण नागरिक भी ऐसी सुख शान्ति, ऐसा विलासमय जीवन बिताते थे, जिसकी उपमा तत्कालीन सभ्य ससार के अन्य किसी भी देश मे नही थी" "इन दोनो स्थानो मे जो सभ्यता हमारे सामने आई है, वह कोई प्रारम्भिक सभ्यता नही है बल्कि ऐसी है कि जो उस समय तक युगो से प्राचीन हो चुकी थी, भारत भूमि पर सुदृढ हो चुकी थी और उसके पीछे मनुष्य के हजारो वर्ष पूर्व का कारनामा है। इस प्रकार अब से यह मानना पडेगा कि भारतवर्ष उस समय के प्रमुख देशो मे से एक है जहाँ सभ्यता का जन्म और विकास हो चुका था।" **श्री गार्डनचाइल्ड** महोदय ने भी इसे वर्तमान भारतीय सस्कृति का आधार माना है।

सिन्धु सभ्यता की लिपि

मोहनजोदडो और हड़प्पा के निवासियो के बीच कौन-सी लिपि और भाषा प्रचलित थी, यह प्रश्न अभी विवादग्रस्त हैं। जो मुद्राएँ मिली है, उन पर की लिपि अद्वितीय है। मध्य पश्चिमी देशो की किसी लिपि से इस लिपि का कोई सम्बन्ध नही है। संसार के अन्य देशो की भाँति इस लिपि को भी चित्र लिपि के अन्तर्गत माना गया है। हटर महोदय के मतानुसार सिन्धु लिपि सकेतात्मक है और इसकी उत्पत्ति पदार्थ चित्रो तथा साधारण चित्र लिपि से हुई है। इस लिपि मे लगभग चार सौ वर्ण है जिनके ठीक रूप का पता नही चलता। यह लिपि दाएँ से बाएँ को पढी जाती थी।

श्रीराधाकुमुद मुकर्जी ने 'हिन्दू सभ्यता' के पृष्ठ २१ पर इस प्रसंग मे लिखा है —

"सिन्धु उपत्यका के लोगो ने लिखने का भी आविष्कार किया था। वे एक प्रकार की लिपि काम मे लाते थे जो उस काल की अन्य लिपियो (जैसे आरम्भिक एलम, प्राचीन सुमेरु, क्रीट और मिस्र) के समान कुछ चित्रात्मक ढङ्ग की है। इस लिपि मे ३९६ चिह्न है। इसके लेख मुद्रा मात्रिकाओ मे, मुहरो पर, बर्तन के ठीकरो पर, ताँबे के छोटे टुकडो

पर और मिट्टी के कडूलो पर पाये जाते है। कई चिह्नो से मिला कर शब्द बनाए गए है और अक्षरो मे मात्राएँ भी लगी हुई जान पडती है। कई लकीरो से मिला कर जिनकी सख्या १२ तक पहुँचती है, चिह्न बनाए जाते है जो अङ्ककी अपेक्षा अक्षर जान पडते है। यह लिखावट दाएँ से बाई ओर चलती है। सम्भव है कही समाप्त होती हुई पक्ति को जारी रखने के लिए बाईं ओर से भी पक्ति को आरम्भ किया गया है। लिपि-चिह्न की यह संख्या बताती है कि सिन्धु की लिपि अक्षर पर आश्रित न हो कर ध्वन्यात्मक वर्णों पर आश्रित है।"

पुस्तकालय

इस प्रकार सिन्धु सम्यता के निवासियो की उनकी अपनी लिपि और भाषा थी। वे अपने विचारो को वृक्ष की छालो, लकडी की तख्तियो, भोज-पत्रो तथा ताड-पत्रो पर प्रकट किया करते रहे होगे। इस प्रकार की लिखित सामग्री को वे एकत्र करके रखते रहे होगे जो कि आधुनिक पुस्तकालयो के आदि रूप थे। सिन्धु सम्यता की सुसस्कृत जनता की शृङ्खला पञ्जाब से लेकर सिन्धु और बलूचिस्तान तक फैली हुई थी और उसके साथ ही ऐसे पुस्तकालय भी विद्यमान रहे होगे। ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि सिन्धु सम्यता के इस केन्द्र का विनाश सिन्धु की भयङ्कर बाढ तथा बाहरी आक्रमणो द्वारा हुआ और उसके साथ ही भारत की आदि सम्यता के वे पुस्तकालय भी सदा के लिए नष्ट हो गए।

★

अध्याय ४

वैदिककालीन पुस्तकालय

सिन्धु सभ्यता के नष्ट होने के बाद भारत को पुन अपने उस गौरव तक पहुँचने मे अनेक शताब्दियाँ बीत गई। इतिहासज्ञो का मत है कि इस सभ्यता के अन्त के बाद लगभग २००० ई० पू० आर्य लोग भारत मे आए। वे बहुत ही सभ्य और सुसंस्कृत थे। उनके पूर्वज आर्यों ने एक मौलिक ब्राह्मी लिपि का आविष्कार किया था। उसका विकास होते-होते उसकी वह वर्णमाला बन गई थी, जो आज की देवनागरी वर्णमाला का पूर्वरूप थी। आर्यों की भाषा संस्कृत थी और वेद उनके धार्मिक ग्रन्थ थे।

शिक्षा

इस वैदिक काल को शिक्षा और साहित्य की दृष्टि से छः भागों मे बाँटा जा सकता है—

१. ऋग्वेद काल

२. उत्तर वैदिक काल

३. ब्राह्मण काल

४. उपनिषद् काल

५. सूत्र काल

६. स्मृति काल

लेकिन पुस्तकालयो के उद्भव और विकास की दृष्टि से इस काल के अनेक उप-विभाजनो की आवश्यकता नही है।

वैदिक काल मे नगरो के कोलाहलपूर्ण वातावरण से दूर गुरुकुल स्थापित किए जाते थे। वहाँ बालको के पढने-लिखने और चरित्र-निर्माण के लिए सभी सुविधाएँ होती थी। विद्यार्थी विलासिता से दूर रह कर शिक्षा ग्रहण करते थे। बालक गुरु के परिवार का अङ्ग बन जाता था। वहाँ बालको के शरीर, मन, एव आत्मा तीनो का प्रशिक्षण एव विकास होता था

काल मे ऊँची से ऊँची शिक्षा नि शुल्क दी जाती थी। इस काल की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि गुरु स्वयं चलते-फिरते पुस्तकालय हुआ करते थे। भोजपत्रो एव ताड-पत्रो पर ग्रन्थ लिखे जाते थे किन्तु शिष्यो को लिखे हुए ग्रन्थो को पढने की सख्त मनाही (निषेध) थी। गुरु के मुख से शिष्य वेदो की ऋचाओ तथा अन्य ज्ञान को सुन लेते थे और उसको कण्ठस्थ कर लिया करते थे। इसका परिणाम यह होता था कि ग्रथ बहुत ही कम सख्या में होते थे। वे ग्रथ गुरुओ के पास ही उनके निजी पुस्तकालय के रूप मे रहते थे। निजी पुस्तकालयो की वह परम्परा आज भी वैदिक ब्राह्मणो के घरो में पाई जाती है। उस काल मे एक-एक गुरु के बहुत से शिष्य हुआ करते थे। शिक्षा-दीक्षा के साथ ही साथ वे गुरुओ को ग्रन्थो की प्रतिलिपि करने मे भी सहायता किया करते थे। इससे गुरुओ के वे पुस्तकालय नष्ट होने से बचे रहते थे।

वैदिक काल मे ऋग्वेद काल से स्मृति काल तक राजतन्त्र चलता रहा। पुरोहितो, सभाओ और समितियो के सहयोग से राजतन्त्र की प्रणाली चलती रही किन्तु स्मृति काल में राजतन्त्र ढीला पड गया। इसका प्रभाव वैदिक-कालीन पुस्तकालयो पर भी पडा। अनेक ऐसे ग्रथ राजकीय पुस्तकालयो में रखने की आवश्यकता हुई जिनसे शासन के कार्य में सहायता मिल सकती थी। इस प्रकार के ग्रन्थो मे स्मृति ग्रथ प्रधान समझे गए। इस प्रकार स्मृति ग्रथो से युक्त इस काल के राजकीय पुस्तकालय ही आजकल के केन्द्रीय, प्रान्तीय सरकारो के प्रशासन एव न्याय-विभाग के पुस्तकालयो के आदि रूप थे। चूंकि वैदिक काल मे शिक्षा कोरी धार्मिक न थी बल्कि उस समय के पाठ्य-क्रम मे परा (आध्यात्मिक) और अपरा (लौकिक) दोनो प्रकारकी विद्याएँ सम्मिलित थी, इसलिए उनसे सम्बन्धित ग्रन्थ भी गुरुओ के गुरुकुलो के पुस्तकालय मे होते थे।

उपनिषद् काल मे आने पर अनेक नए विषय हो गए और उनके ग्रथ भी लिखे गए। छान्दोग्य उपनिषद् मे पाठ्य-क्रम की एक निम्नलिखित तालिका मिलती है —

ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, इतिहास और पुराण, व्याकरण, राशि (अङ्क शास्त्र), दैव, शकुन विद्या, निधि (भूगर्भ विद्या), वाचोवाक्य (तर्क शास्त्र), एकायन (आचार शास्त्र), देव विद्या (भौतिकी), ब्रह्म विद्या, भूत विद्या, प्राणिशास्त्र, क्षत्र विद्या (सैन्य-विज्ञान), नक्षत्र विद्या, ज्योतिष, सर्प विद्या, देवजन विद्या, शिल्प-विज्ञान, सङ्गीत शास्त्र एवं आयुर्वेद।

अत स्पष्ट है कि उपनिषद्कालीन पुस्तकालयो मे इन विषयो के ग्रन्थो का समावेश हो गया था ।

स्मृति-काल मे ऊपर लिखे गए विषयो के अतिरिक्त वेदो की विविध शाखाओं, ब्राह्मण ग्रंथों, आरण्यकों, उपनिषदों, शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण ग्रंथ, दर्शन, धर्म शास्त्र, वैखानस सूत्र, नास्तिक दर्शन, वार्त्ता (अर्थ शास्त्र), आन्वीक्षिकी (तर्कशास्त्र) तथा दण्डनीति (राजनीति विज्ञान) का भी उल्लेख पाया जाता है । इससे प्रकट होता है कि इस काल मे पाठ्य-क्रम मे ये विषय पढाये जाते थे और उनसे सम्बन्धित ग्रन्थ इस काल के पुस्तकालयो मे आ गए थे ।

ज्ञान पर एकाधिकार

प्रारम्भ मे इस काल मे ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य की शिक्षा एक समान थी परन्तु ज्यो-ज्यो जाति-व्यवस्था दृढ होती गई, त्यो-त्यो तीनों वर्ण अनेक उपवर्णों मे बँट गए और उनकी शिक्षा मे भी अन्तर होता गया । धार्मिक ग्रंथो का पठन-पाठन ब्राह्मण वर्ग की विशेष सम्पत्ति-सी हो गई । अन्य वर्णों की शिक्षा-दीक्षा का भार भी उन्ही पर था । इस प्रकार धीरे-धीरे ज्ञान पर उनका एकाधिकार हो गया । कर्मकाण्ड और यज्ञ की विधियो का ज़ोर बढता गया और अन्त मे वैदिक धर्म मे, यज्ञो मे हिसा की प्रबलता और कर्म काण्ड के जगड्वाल के कारण, जनता की अनास्था-सी होने लगी । फिर भी वैदिककालीन पठन-पाठन प्राणाली चलती रही और उसके साथ ही साथ वैदिक ग्रंथो के पुस्तकालय भी बने रहे ।

अध्याय ५

बौद्धकालीन पुस्तकालय

धार्मिक क्रान्ति

वैदिक धर्म की जाति-पाँति व्यवस्था, ज्ञान पर एकाधिकार और कर्म-काण्ड विधि मे हिंसा के प्रोत्साहन के कारण छठी शताब्दी ई० पू० भारत में धार्मिक क्रान्ति हुई। उसके फलस्वरूप वैदिक धर्म के विरोधी दो बडे सुधार-वादी धर्मो का उदय हुआ। उनके नाम थे—जैनधर्म और बौद्ध धर्म। इस धार्मिक क्राति का बहुत व्यापक प्रभाव उस समय की शिक्षा-दीक्षा और पुस्तकालय पर पडा।

इन धर्मो ने भोगपूर्ण स्वर्ग के स्थान पर मोक्ष एव निर्वाण को जीवन का लक्ष्य ठहराया। यज्ञो के स्थान पर तपस्या और सदाचार की प्रतिष्ठा की। पशुहिंसा का खुल्लमखुल्ला विरोध किया। ब्राह्मणो की जातिगत प्रधानता की निन्दा करते हुए कर्म और योग्यता का समर्थन किया। फल यह हुआ कि जनता ने तथा तत्कालीन राजाओ ने भी इस नवीन धर्म को अपनाया। इस प्रकार राजाश्रय पा कर इन दोनो धर्मो का प्रचार हुआ और तदनुसार पुस्त-कालयो के रूप मे भी परिवर्तन हुआ।

संघों की परम्परा

धर्म-सघर्ष के उस युग मे सभी अपने-अपने मत का प्रचार करने तथा अन्य मतो का छिद्रान्वेषण करने पर कमर कसे हुए थे। जब लोग नए धर्म मे दीक्षित होने लगे तो ग्रन्थो को लिपिबद्ध करने का काम भी तेजी से चल पडा। इन नवीन धर्मो के आचार्य लोग सघबद्ध होकर ग्रन्थो का पठन-पाठन और प्रचार करने लगे। इस प्रकार वे एक-दूसरे का मत जानने के लिए उस मत के ग्रन्थो का यत्नपूर्वक सग्रह करने लगे और अपने मत के ग्रन्थो मे भी वृद्धि करने लगे। यही कारण है कि बौद्ध और जैन ग्रथो मे 'ग्रन्थ-संग्रह' करने को महद् पुण्य का कार्य घोषित किया गया और ग्रंथो की प्रतिलिपि

कराना तथा ग्रंथो का दान देना भी एक महान् कार्य समझा जाने लगा। उसका परिणाम यह हुआ कि आज भी बौद्धो के मठो और जैन मन्दिरो और उपाश्रयो में बहुमूल्य हस्तलिखित ग्रन्थो का संग्रह पाया जाता है।

जैन पुस्तकालय

जैन धर्म के मन्दिरो और उपाश्रयो मे जैन साहित्य के पठन-पाठन की व्यवस्था हुई तो वहाँ ग्रन्थो का संग्रह होना प्रारम्भ हुआ। बम्बई प्रदेश मे अहमदाबाद, पाटन, काम्बे, सूरत, पूना और नासिक आदि मे हस्तलिखित ग्रन्थो के भण्डार आज भी है। गुजरात की राजधानी पाटन मे जैनियो के ११ और अहमदाबाद मे ६ उपाश्रय आज भी है जिनमे हस्तलिखित ग्रन्थो का संग्रह पाया जाता है। पाटन के पोफलिया नोपाडो के उपाश्रय मे तीन हजार से अधिक ग्रथ है और हेमचन्द्र भडार मे प्राय चार हजार हस्तलिखित ग्रथ है। इन दो उपाश्रयो से १६ वी शताब्दी मे लिखित ताड-पत्र की पोथियाँ मिली है। इनके अतिरिक्त निम्नलिखित जैन सस्थाओ मे जैन सम्प्रदाय के ग्रथ का सग्रह पाया जाता है ––

अलक पन्नालाल दिगम्बर जैन संस्था।
सरस्वती, भवन. झालरापाटन।
अमृतलाल मगनलाल शाह् जैन विद्याशाला, अहमदाबाद।
कारुकीर्त्ति पण्डिताचार्य, जैन भण्डार भुवनवेल गोला, मैसूर।
सेंट्रल जैन लाइब्रेरी, आरा।
दिगम्बर जैन भण्डार, दिल्ली।
दिगम्बर जैन लाइब्रेरी, रोहतक।
जैन मंदिर घिलावली, घिरोर, मैनपुरी।
वीर वाणी विलास जैन सिद्धान्त भवन, मूडविद्री।
शान्तिनाथ जैन मंदिर, अलीगंज, एटा।
स्याद्वाद जैन महाविद्यालय, भदैनी बनारस।
राजाराम कालेज कोल्हापुर।

इनमे से केवल एक जैन केन्द्र के हस्तलिखित ग्रथो की खोज का विवरण दिया जाता है जिससे प्राचीन जैन पुप्तकालयो की समृद्धि का परिचय मिल सकता है। भारतीय ज्ञानपीठ काशी की एक शाखा दक्षिण मे मूडविद्री मे सन् १९४४ ई० मे खोली गई। पं० के० भुजबली शास्त्री महोदय की अध्यक्षता मे उस केन्द्र से पाँच ग्रंथ-भण्डारो की जाँच की गई तो उसमे के १३५ अप्रकाशित और ३५३८ ताड़-पत्रीय हस्तलिखित ग्रंथ प्राप्त हुए। भारतीय विद्यापीठ

ने इन ग्रथो की सूची 'कन्नड प्रान्तीय ताड-पत्रीय ग्रथ-सूची' के नाम से प्रकाशित की। इस ग्रथ मे जैनमठ कारकल के ताडपत्र और कागज की पोथियाँ, मूडबिद्री जैन भवन के ताड-पत्रीय ग्रंथ, मूडबिद्री के अन्य ग्रथ भण्डार, अलियूर, आदिनाथ देवालयस्थ ताडपत्रीय ग्रथो की सूचियाँ शामिल है। कुल मिला कर १३५ अप्रकाशित ग्रंथो की प्रतिलिपियो और ३५३८ ताडपत्रीय और हस्तलिखित ग्रथो की विवरण-सूची यह है और इनमे निम्नलिखित विषय के ग्रथ है —

सिद्धान्त, अध्यात्म, धर्म, प्रतिष्ठा, आराधना, पूजापाठ, न्याय-दर्शन, व्याकरण, कोश, काव्य, अलंकार, नीति, सुभाषित, पुराण, चरित कथा, इतिहास, आयुर्वेद, ज्योतिष, गणित, मंत्रशास्त्र, लोक विज्ञान, शिल्प शास्त्र, लक्षण तथा समीक्षा, क्रियाकाण्ड, स्तोत्र और भजन गीत आदि।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि जैन-ग्रन्थो के सग्रह की यह परम्परा जैन-धर्म के उदय के साथ ही साथ शुरू हुई और उसका विकास होता रहा। आन्तरिक और वाह्य सघर्पो से वचते-वचते आज भी अनेक जैन पुस्तकालय उस परम्परा के प्रतीक वने हुए है। इन पुस्तकालयो के हस्तलिखित ग्रन्थो के उद्धार की ओर अव ध्यान दिया जाने लगा है जो कि एक शुभ लक्षण है।

बौद्धकालीन शिक्षा

बौद्धकालीन शिक्षा कोई सार्वजनिक शिक्षा-प्रणाली न थी। वह मुख्य रूप से विहारो एव मठो तक सीमित रही। बौद्ध भिक्षु उन विहारो मे रहते हुए धर्म-प्रचार किया करते थे। वे नवीन भिक्षुओ को ट्रेड भी किया करते थे। जाति-पाँति का विचार किए विना इस शिक्षा के द्वार सव के लिए खुले हुए थे। गृहस्थ उपासक और उपासिकाएँ, भिक्षु तथा भिक्षुणियो से शिक्षा ग्रहण करते थे। बुद्धं शरणं गच्छामि, धम्मं शरणं गच्छामि, संघ शरणं गच्छामि' की प्रतिज्ञा लेने पर कोई भी व्यक्ति सघ मे प्रविष्ट हो सकता था। इस प्रकार इस काल की शिक्षा गुरु केन्द्रित न रह कर संघवद्ध हो गई, यद्यपि इस काल मे भी गुरु-शिष्य सम्वन्ध वैदिक काल की भाँति ही चलता रहा। बौद्ध-कालीन शिक्षा व्यवस्था मे दो प्रकार के पाठ्य-क्रम थे—धार्मिक और लौकिक। धार्मिक शिक्षा मे बौद्ध धर्म की पुस्तकें, त्रिपिटक आदि होती थी। लौकिक पाठ्य-क्रम मे अनेक कला-कौशल, शास्त्रार्थ, रथ हाँकना, धनुर्वेद, मल्लविद्या, चित्रकला, सगीत, और चिकित्सा शास्त्र आदि होते थे। शिक्षा का माध्यम लौकिक भाषा थी परन्तु विश्वविद्यालयो मे शिक्षा का माध्यम

संस्कृत भी थी। बौद्ध साहित्य और लौकिक पाठ्य-क्रम तो विशेष रूप से लोक-भाषा के माध्यम से पढाए जाते थे। इस प्रकार बौद्धकालीन शिक्षा के केन्द्र धीरे-धीरे सुसंगठित हो गए। इन केन्द्रो मे से तक्षशिला, नालन्दा और बलभी आदि तो शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र हो गए। इन शिक्षा-केन्द्रो के साथ महत्त्वपूर्ण पुस्तकालय भी होते थे। इनका विवरण इस प्रकार है —

तक्षशिला का पुस्तकालय

तक्षशिला भारत के उत्तर-पश्चिम सीमा-प्रान्त पर एक बहुत ही प्रसिद्ध नगर था। आज भी वह 'तक्सिला' के नाम से मशहूर है। यह नगर गाधार-राज्य की राजधानी थी। यहाँ पर एक बहुत ही प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था। पहले तो उसमे वैदिक विषयो की शिक्षा दी जाती थी किन्तु समय के परिवर्त्तन के साथ ही वहाँ के पाठ्य-क्रमो मे भी परिवर्त्तन हो गया। इस विश्वविद्यालय के साथ ही एक अच्छा पुस्तकालय था। तक्षशिला के आचार्यो की योग्यता और उसके पुस्तकालय से सगृहीत बहुमूल्य ग्रन्थो की धूम बहुत दूर-दूर तक फैल चुकी थी।

अत भारत के कोने-कोने से तथा विदेशो से भी छात्र पढने के लिए आया करते थे। महान् वैयाकरण पाणिनि, राजनीतिज्ञ चाणक्य, भगवान् बुद्ध के व्यक्तिगत चिकित्सक जीवक, सम्राट् चन्द्रगुप्त तथा पुष्यमित्र इसी तक्षशिला विश्वविद्यालय के छात्र थे और उन्होने इस पुस्तकालय की पोथियो से प्रचुर ज्ञान प्राप्त किया था। इस पुस्तकालय मे वेद, आयुर्वेद, धनुर्वेद, ज्योतिष, तर्क, तन्त्र, व्याकरण, चित्रकला, वास्तुकला, कृषि, व्यापार, और पशुपालन आदि विषयो के ग्रंथो का अच्छा सग्रह था क्योकि तक्षशिला केन्द्र मे ये विषय उस समय पाठ्य-क्रम मे सम्मिलित थे। उत्तर-पश्चिम से होने वाले विदेशी आक्रमणो से यह पुस्तकालय अपने विश्वविद्यालय सहित सदा के लिए नष्ट हो गया।

नालन्द का पुस्तकालय

ज्ञान के विकास की दृष्टि से बौद्ध काल को तीन भागो बाँटा जा सकता है। प्रथम भाग गौतम बुद्ध से ईसवी सन् के प्रारम्भ से पूर्व तक, दूसरा भाग ईसवी सन् के प्रारम्भ से छठी शताब्दी तक और तीसरा भाग सातवीं शताब्दी से बौद्ध काल के पतन तक। इन तीनो कालो की अपनी अलग-अलग विशेषताएँ थी। प्रथम काल मे बौद्ध साधु त्यागी और सच्चरित्र हुआ करते थे। दूसरे काल मे बौद्धो ने स्वधर्म पालन के साथ-साथ शिल्पकला मे भी उन्नति की थी। तृतीय काल मे बौद्ध सन्त महन्तो का चारित्रिक पतन प्रारम्भ हो गया था।

फिर भी उन्होंने आयुर्वेद और रसायन शास्त्र मे पर्याप्त उन्नति की। इस काल को हम तान्त्रिक युग कह सकते है। इन तीनो कालो के अपने अलग-अलग विश्वविद्यालय तथा उनसे सम्बद्ध पुस्तकालय थे। प्रथम काल का विश्वविद्यालय तक्षशिला, द्वितीय काल का नालन्द और तृतीय काल का विक्रमशिला था। इन विश्वविद्यालयो के पुस्तकालयो मे संचित ज्ञान-राशि बडी आकर्षक थी। सुदूर देश से छात्र अनेक कष्टो को झेलते हुए यहाँ ज्ञानोपार्जन के लिए आया करते थे।

नालन्द से भारत के दो धर्मगुरु श्री महावीर एव गौतम बुद्ध पूर्ण रूप से सम्बद्ध थे। ईसा से कम से कम ५०० वर्ष पूर्व से नालन्द का वर्णन ग्रन्थो मे मिलता है। जैनो के 'सूत्र कृताङ्ग' तथा बौद्धो के 'निकाय' मे एव ताम्र-पत्रो तथा शिलालेखो मे भी इसके विवरण मिलते है। ह्वेनसाग के मतानुसार तथागत अपनी वृद्धावस्था मे इस स्थान पर वास करते हुए अनवरत दान करते रहे जिसके कारण इस स्थान का नाम नालन्द (जिसका अर्थ दान का अन्त नही) पडा। इत्सिङ्ग के कथनानुसार नालन्द का पहला नाम नालानन्द था जो किसी व्यक्ति के नाम पर रखा गया था। या चूँकि यहाँ नल अर्थात् कमल के फूलो की अधिकता थी, इसलिये इसका नाम नालन्द पडा। बाद मे पास के बडगाँव के नाम से यह स्थान भी पुकारा जाने लगा। डॉ० हीरानन्द शास्त्री (एपिग्राफिस्ट टु द गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया) के सत्प्रयत्नो के फलस्वरूप इस स्थान का पुन नामकरण नालन्द हुआ। पण्डित हससोम के 'पूर्वदेश चैत्यपरिपाटी' (वि० १५६५) और विजय सागर के 'समेत शिखर तीर्थमाला' (वि० १७००) नामक जैन ग्रन्थो मे इसका उल्लेख इस प्रकार आया है —

"नालन्द पाडै चौद चौमास सुणी जै।
हौडो लोक प्रसिद्ध से वडगाम यही जै।
सोल प्रसाद तिहा अच्छै जिन विम्ब नमीजै।"

"बयहरी नालन्दा पाडो
सुरारयो तस पुण्यपवाडो
वीर चौद रूहा चौवाऊ
हौडा बड़गाम निवास।
विंद देहरे एक्सो प्रतिमा
नवील हिन्दी बोधनी गणिमा।"

बौद्ध ग्रन्थो मे नालन्द का वर्णन राजगृह के एक भाग के रूप मे आता

है जो राजगृह के विस्तार का सूचक है, नही तो सात मील की दूरी पर स्थित यह स्थान उसका एक भाग या मुहल्ला कैसे हो सकता है ? उपर्युक्त विचार से यह स्पष्ट हो जाता है कि ईसा की कई शताब्दियो पूर्व से नालन्द एक विख्यात नगर था और वाद मे भी इसका गौरव कई शताब्दियो तक वना रहा। जैन और वौद्ध धर्म के महान् गुरुओ की चरण-रज से पवित्र यह स्थान अपने प्राकृतिक सौन्दर्य से युक्त था और जैन एव वौद्ध धर्मों के इन्द्रभूति एव सारिपुत्त नामक दो प्रमुख शिष्यो के चिर निवास ने इसके गौरव को और भी वढा दिया। धीरे-धीरे यह शिक्षा का एक अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र वना।

स्थापना

इस पुस्तकालय की नीव सकादित्य ने ४२५ ई० मे डाली। उसके वाद उसके पुत्र वुद्धगुप्त ने पहले सग्रहम के दक्षिण मे एक नया संग्रहम वनवाया। तथागत गुप्त नामक राजा ने पूर्व की ओर और वज्र नामक राजा ने पश्चिम की ओर एक-एक संग्रहम वनवाया। इसके वाद वालादित्य ने ३०० फुट ऊँचा एक संग्रहम वनवाया और मन्दिर को पूरा कराया। तत्कालीन मध्य-प्रदेश के राजा ने चारो ओर चहारदीवारी बनवाई। सुमात्रा और जावा के तत्कालीन राजा वालपुत्र देव ने भी एक मठ वनवाया और आर्थिक सहायता के लिए स्थायी रूप से ५ गाँव दिये। समय-समय पर जितने भी धनी-मानी राजा, महाराजा, सेठ, साहूकार नालन्द जाते वे इस विद्या-केन्द्र और पुस्तकालय के लिए आर्थिक सहायता दिया करते थे। इस प्रकार इसकी आर्थिक स्थिति वहुत सुदृढ हो गई। गुप्तकालीन राजाओ ने तो अतुल सम्पत्ति इस विश्वविद्यालय को दान दी और अपने शासन काल मे वे ही इस शिक्षाकेन्द्र के तथा पुस्तकालय के सरक्षक रहे।

पुस्तकालय की रूपरेखा

नालन्द के इस विशाल पुस्तकालय का नाम 'धर्मगंज' था। दर्शन और धर्म के ग्रन्थो का विशाल संग्रह होने के कारण व्यवस्था की सुविधा के लिए इसे तीन भागो मे वाँट दिया गया। पहिले भाग को 'रत्नोधि', दूसरे भाग को 'रत्न सागर' और तीसरे भाग को 'रत्नरंजक' कहते थे। इन विभागो में संगृहीत ग्रंथ विषय-क्रम से पत्थर के फलकों पर आलमारियो मे व्यवस्थित किए जाते थे। इससे ग्रंथो के वर्गीकरण की किसी विषयानुसारिणी विशिष्ट वर्गीकरण पद्धति का अनुमान किया जा सकता है। इन ग्रंथो की सुरक्षा की

व्यवस्था सुन्दर थी। ग्रन्थ के आकार के बराबर पत्थर के फलक रहते थे। उपयोग के पश्चात् ग्रंथ को पत्थर के उसी फलक पर रख कर उसके ऊपर दूसरे पत्थर के फलक से दवा देते थे। ऐसा करने से ग्रन्थ सुरक्षित रहते थे। ये सभी ग्रन्थ बहुमूल्य वस्त्रो में बँधे रहते थे। यदि कोई ग्रन्थ अधिक उपयोग करने से या अन्य किसी कारण से जीर्ण-शीर्ण होने लगता तो तुरन्त उसकी प्रतिलिपि करा ली जाती थी। प्रत्येक आचार्य पर पुस्तकालय के एक विभाग का दायित्व था। वही उन ग्रन्थो के रक्षक थे। उनके अधीनस्थ शिष्य उन की देख-रेख मे ग्रन्थो का उपयोग करते तथा प्रतिलिपि आदि करते थे। धर्मपाल के शिष्य शीलभद्र उस पुस्तकालय के मुख्य ग्रन्थपाल थे। इस पुस्तकालय की आभ्यन्तरिक छटा भी मनोहर थी। आजकल पुस्तकालय को भीतर वाहर से आकर्षक वनाने पर वल दिया जाता है। आश्चर्य है कि नालन्द के उस पुस्तकालय मे इन वातो को ओर विशेष ध्यान दिया गया था। इमारत के खम्भे और गुम्वद परदार सर्प की आकृति मे सजे हुए थे। इन पर जो शहतीरे लगी थी, वे सूर्य के प्रकाश से मिलती-जुलती सतरगो से रँगी हुई थी। वल्लियो पर भी नक्काशी की गई थी। किवाडो के लिन्टल स्वच्छतापूर्वक रँगे हुए थे जो कि वडे ही नयनाभिराम थे। छत के खपडे शीशे की भाँति चमकते थे और उनमे क्षण-क्षण मे रङ्ग वदला करते थे। वैदिक धर्म, जैन धर्म, वौद्ध धर्म की हीनयान और महायान शाखाओ से सम्वद्ध सभी विषय, व्याकरण, आयुर्वेद, दर्शन, कलाकौशल, ज्योतिष और वास्तु कला आदि के ग्रन्थो की अनेक प्रतियो का दुर्लभ सग्रह यहाँ था।

इस विशाल पुस्तकालय का उपयोग भारतवर्ष के विद्वान् तो करते ही थे, साथ ही विदेशो से भी विद्वान् इस पुस्तकालय का उपयोग करने के लिए आया करते थे। चीनी यात्री फाहियान, ह्वेनसांग, इत्सिग आदि ने चीन में ही नालन्द पुस्तकालय की प्रशसा सुनी थी और उससे आकृष्ट हो कर वे यहाँ आये। फाहियान ने लिखा है कि नालन्द 'एक विशाल शिक्षाकेन्द्र था और वहाँ के पुस्तकालय में हजारो विद्यार्थी प्रतिलिपि करने का काम किया करते थे।' फाहियान जव स्वदेश लौटा तो ५२० वण्डल हस्तलिखित ग्रन्थ, जिनमे ६५७ विभिन्न विषयो की प्रतिलिपियाँ थी, अपने साथ ले गया था। इत्सिङ्ग ने लिखा है कि 'प्रज्ञापारमिता ग्रन्थ की प्रतिलिपि करना पुण्य का कार्य समझा जाता था।' जाते समय इत्सिग भी अपने साथ ४०० ग्रन्थो की प्रतिलिपि करा के ले गया था। इन चीनी यात्रियो के अतिरिक्त अन्य आगन्तुको मे ह्यामन युवाङ् चिङ्, टाओदी और आर्यवर्मा नामक (कोरियन)

प्रमुख थे जिन्होने वर्षो नालन्द मे रहकर उसके इस पुस्तकालय मे अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रंथो की प्रतिलिपि की थी।

पुस्तकालय का विध्वंस

वौद्ध धर्म के दोषापन्न होने पर धीरे-धीरे जनता की श्रद्धा घट गई। इस प्रकार वौद्ध राजाओ के निर्वल होने पर हूणो के सरदार मिहिरकुल ने सवसे पहले नालन्द के इस पुस्तकालय को क्षति पहुँचाई किन्तु राजा वालादित्य ने उसे ४७० ई० मे पराजित किया और पुस्तकालय की जो हानि हुई थी उसकी भी उसने पूर्ति करा दी। लेकिन इसके वाद जो द्वितीय प्रहार हुआ उससे इसकी अपूरणीय क्षति हुई। वह आक्रमण था वख्तियार खिलजी का, जो उसने धर्मान्ध होकर १२०५ ई० मे किया था। वख्तियार खिलजी के आक्रमण की खवर सुनते ही नालन्द से शिक्षक, छात्र और भिक्षु कुछ ग्रथो को साथ लेकर पहाडो की ओर भाग खडे हुए। जव वख्तियार खिलजी पुस्तकालय के द्वार पर पहुँचा तो सवसे पहले उसने वहाँ वचे-खुचे लोगो को तलवार के घाट उतार दिया। इसके वाद जव वह पुस्तकालय के भीतर गया तो उसकी व्यवस्था देख कर विभोर हो उठा। उसने उन ग्रन्थो के नाम और विवरण जानना चाहा, किन्तु वहाँ उनके सम्वन्ध मे वताने वाला कोई न मिला। अत. उसने नाराज होकर पुस्तकालय मे आग लगवा दी। लौटते समय उसने अपना एक प्रतिनिधि छोड दिया था। ऐसा कहा जाता है कि वह वचे-खुचे ग्रथो के पन्ने जला कर नहाने का पानी गरम करता और भोजन वनाता रहा। इस प्रकार शताब्दियो से सचित वह ज्ञान-राशि सदा के लिए राख वन गई।

इस घटना के कुछ वर्षो के वाद एक वार पुन नालन्द के जीर्णोद्धार का प्रयत्न मुदितभद्र नामक एक महात्मा ने किया। उसके वाद मगध के मन्त्री श्री कुकुत्सिद्ध ने मन्दिर वनवाया और नालन्द को पूर्ववत् गौरवपूर्ण वनाने की चेष्टा की किन्तु उसके भाग्य मे वैसा कहाँ वदा था। वौद्ध भिक्षुओ और जैन साधुओ मे कुछ कारणो से झगड़ा हो गया। कहा जाता है कि कुछ वौद्ध भिक्षुओ ने जैन साधुओ के ऊपर अशुद्ध जल फेर दिया था। अत रुष्ट होकर जैन साधुओ ने कुछ दहकते कोयले इस पुस्तकालय पर फेक दिये। फलत 'रत्नोधि' मे संगृहीत ग्रन्थ जल कर राख हो गए। इस प्रकार नालन्द के उस पुस्तकालय का अस्तित्व सदा के लिए जाता रहा।

विक्रमशिला का पुस्तकालय

मगध के प्रसिद्ध राजा धर्मपाल (देवपाल) ने एक पहाड़ी के ऊपर

विक्रमशिला के मठ को बनवाया था। उस स्थान पर छोटे-बड़े १०८ मठ थे। महापंडित राहुल सांकृत्यायन का कथन है कि यहाँ के सबसे बड़े विद्वान् 'दीपंकर श्री ज्ञान' जी थे। वे साधारण रूप से 'अतिश' के नाम से प्रसिद्ध थे। तिब्बत के राजा के निमंत्रण पर वे वहाँ गए थे। राजा ने २०० हस्तलिखित ग्रन्थो की प्रतिलिपि और अनुवाद की हुई पुस्तके उन्हें भेंट की थी। 'अतिश' महोदय का तिब्बत मे ही देहावसान हुआ। बारहवी सदी में लगभग ३००० बौद्ध भिक्षु विद्यार्थी यहाँ रहा करते थे। इन महान् पुस्तकालय की प्रशसा आक्रमणकारियो ने स्वय की थी। इस पुस्तकालय का भी कक्ष चित्रकला से सुसज्जित था। इसका भी विध्वंस बख्तियार खिलजी के द्वारा ही हुआ।

वलभी का पुस्तकालय

वल्लभी (गुजरात) मे एक बड़ा पुस्तकालय था जिसकी स्थापना राजकुमारी दृक्षा ने की थी। यह राजा धारा सेन प्रथम की मौसी की लड़की थी। राजा गुहसेन (५५९) इस पुस्तकालय का खर्च चलाते थे। दक्षिण भारत के शिलालेख संख्या ६०४, ६६७, ६७१ और ६९५ जिनकी तारीख १२१६ ई० बताई जाती है, उनमे लिखा है कि यहाँ के शिक्षको के वेतन और छात्रो के व्यय के लिए समुचित प्रबंध होता था। अन्तिम शिलालेख मे यह पाया गया है कि तिन्नावली जिले के सरस्वती भवन के लिए भी एक बड़ा चदा दिया गया था। वलभी पश्चिम दिशा मे होने के कारण भारत से व्यापारिक सम्बन्ध रखने वाले सभी देशो तक प्रसिद्ध था। इस कारण इस पुस्तकालय की प्रसिद्धि बहुत बढ़ी चढ़ी थी। इस पुस्तकालय ने पाठ्य-ग्रन्थो के अतिरिक्त अनेक अन्य विषयो की भी पुस्तके थी।

ऊपर बौद्धकालीन कुछ प्रमुख पुस्तकालयो की संक्षिप्त चर्चा की गई। इस काल मे कोई भी मठ एव विहार ऐसा न था जहाँ पुस्तकालय न रहा हो। इसका कारण यह था कि बौद्ध धर्म को राजाश्रय प्राप्त था। महाराज कनिष्क के समय से बौद्ध ग्रन्थो को विशेष रूप से सग्रह करने की परम्परा चली थी। स्वय कनिष्क ने बौद्धो के धार्मिक तथा दार्शनिक मतो के अनेक भेदो को देख कर 'पार्श्व' की सहायता से सम्पूर्ण बौद्ध ग्रन्थो का एक प्रामाणिक सग्रह कराया और उसे ताम्रपत्रो पर लिखवा कर एक अलग स्तूप बनवा कर उसमे उन ग्रन्थो को सुरक्षित रखा दिया था तथा उसकी रक्षा के लिए पहरेदार नियुक्त करा दिया था। कनिष्क का राज्यकाल ईसा के बाद ७८ वी शताब्दी या किसी-किसी के मत से ई० १२५ है।

भारतीय ग्रंथ बाहर कैसे पहुँचे

बौद्धकालीन पुस्कालयो का यह अध्याय समाप्त करने से पहले यह बात भी इसी सिलसिले मे जाननी जरूरी है कि भारतीय ग्रथ बाहर कैसे पहुँचे ? यह इसलिए और भी आवश्यक है कि इसका विशेष सम्बन्ध बौद्ध धर्म से है । ऐतिहासिक खोज से पता लगता है कि चीन मे बौद्धधर्म का प्रचार कार्य ईसा पूर्व कुछ शताब्दियो से ही हो चुका था । हान् वंश के सम्राट् मिग और मिगी ने सन् ६४ ई० मे अपने कुछ पडितो को बौद्ध दर्शन सम्बन्धी साहित्य की खोज के लिए भारत भेजा । लेकिन रखोतान मे ही उन लोगो की भेट कुछ भारतीय बौद्ध भिक्षुओ से हो गई । वे उन्हे लेकर लौट गए इन भारतीय भिक्षुओ के नाम काश्यप मातग और धर्मरत्न या गोवर्द्धन थे । जब वे चीन पहुँचे तो राजा ने उनका सत्कार किया और उनके लिए लोयाग मे श्वेताश्व (पाइ-मा-स्म) नामक बिहार बनवा दिया । कुछ दिनो बाद वह बिहार बौद्ध संस्कृति का केन्द्र हो गया । वे भिक्षुद्रय अनेक बौद्ध ग्रथ साथ ले गए थे । वहाँ जा कर उन्होने उनका अनुवाद किया । काश्यप मातग ने चीनी भाषा मे सबसे पहले जिस पोथी का अनुवाद किया, वह आज भी शाति निकेतन के पुस्तकालय मे सुरक्षित है ।

उत्तरी तातार के वई वश की महारानी ने ५१८ ई० मे सुंग-युन् और हुई-सेग नामक पडितो को ग्रथो का संग्रह करने लिए उज्जयिनी और गाधार भेजा । वे यहाँ से लौटते समय १७० पोथियाँ स्वदेश ले गए । सम्राट् ताई-चि ने भी १५० भिक्षुओ को भारत भेजा और वे अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ साथ ले गए ।

बौद्ध धर्म के प्रचार के साथ ही जापान मे भी भारतीय ग्रथ ले जाए गए । आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय मे जब प्रो० मैक्समूलर सस्कृत के अध्यापक थे तो उन्होने अपने जापानी शिष्यो (नाजिओ और ताकाकुसू) के द्वारा 'सुखावतीव्यूह' नामक संस्कृत की पोथी जापान से मँगाई । वह पोथी चीनी भाषा मे अनूदित थी और उसका उच्चारण जापानी लिपि मे लिखा था । उसके बाद प्रो० मैक्समूलर ने जापान से अनेक महत्त्वपूर्ण पोथियो को मँगा कर उनकी प्रतिलिपि कराई जो आज भी आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के बोलडियन लाइब्रेरी मे सुरक्षित है ।

काश्यप, धर्मरत्न, धर्मपाल, बोधिरुचि और कुमारजीव आदि बौद्ध पर्यटक बौद्धधर्म के प्रचार के लिए दुर्गम नदी-नलो, गुफाओ और पर्वतो को पार करते हुए अनेक देशो मे गए और अपने साथ ग्रंथो को ले गए जहाँ

उनका उन भाषाओ मे अनुवाद भी हुआ। तिब्बत मे तो आज भी भोज-पत्र एव ताड-पत्र पर लिखित पोथियां पांचवी से दसवी शताब्दी तक की पाई जाती है। महापडित राहुल जी को अपनी तिब्बत यात्रा में धर्म, दर्शन, व्याकरण आदि की अनेक भारतीय पोथियां वहां मिली। राहुल जी ने कुन्-छे-लिंग महाविहार मे रखी हुई ताड-पत्रीय पोथियो का भी पता लगाया। वहां उन्हे धर्मकीर्ति के 'वादान्य' ग्रथ पर नालन्द के आचार्य शांतिरक्षित द्वारा लिखी हुई एक महत्त्वपूर्ण टीका प्राप्त हुई। आचार्य धर्मकीर्ति का वह सस्कृत ग्रथ आज केवल भूटिया भाषा मे ही लिखा हुआ मिलता है।

बौद्ध धर्म के प्रचार के साथ-साथ तो भारतीय ग्रथ बाहर पहुंचे ही, देश के व्यापारिक सम्बन्ध से भी व्यापारियो द्वारा यहां के ग्रथ बाहर पहुंच गए। मुसलमान आदि आक्रमणकारियो द्वारा यहां के ग्रथ बाहर पहुचे। नादिरशाह तो दिल्ली का पूरा पुस्तकालय उठवा ले गया। सुकरात ने सिकन्दर से भगवद्गीता की पोथी भारत से अपने साथ लाने का आग्रह किया था। इसके अतिरिक्त अग्रेज शासको की सभ्य लूट और कूटनीति से अनेक दुर्लभ ग्रन्थ बाहर चले गए। इडिया आफिस लाइब्रेरी, ब्रिटिश म्युजियम आदि मे भारतीय हस्तलिखित ग्रथ काफी सख्या मे पाए जाते है और उनमे से अनेक तो बहुत महत्त्वपूर्ण है और उनकी प्रतियां भारत मे पाई ही नही जाती। शिल्प शास्त्र जैसे असाधारण विषय पर लिखी 'दश चित्र लक्षण' नामक ग्रथ की प्रति जर्मनी मे पहुँची तो इलाफर नामक विद्वान् ने उसका अनुवाद किया और उसे देख कर लोगो को आश्चर्य हुआ कि भारत मे हजारो वर्ष पूर्व शिल्पशास्त्र जैसे विषय पर भी ग्रन्थ लिखे जाते थे।

बौद्धकालीन पुस्तकालयों का अन्त

इस प्रकार युद्ध, साम्प्रदायिक विद्वेष, शासको की कूटनीति से तथा काल और उपेक्षा से भी, प्राचीन भारतीय पोथियाँ नष्ट हो गई। इनके उद्धार की ओर हमारा ध्यान तब गया जब कि बहुत कुछ नष्ट हो चुका था। इस ओर जो प्रयास हुए है, उनकी चर्चा यथास्थान की जायगी। बौद्धकालीन पुस्तकालयो के युग मे वैदिक धर्म वालो की भी अपने पुराने ढग से पठन-पाठन और ग्रन्थ-सग्रह की परम्परा बनी रही किन्तु उनके कोई विशेष पुस्तकालय इस काल मे नही थे।

अध्याय ६

मुसलमानी शासनकालीन पुस्तकालय

मुसलमानी शिक्षा

भारत मे सब से पहले गुलाम वश से मुसलमानी राज्य स्थापित हुआ और मुगल वश के अतिम दिनो तक किसी तरह चलता रहा। इस पूरे मुस्लिम काल मे शिक्षा की कोई सार्वजनिक प्रणाली न थी। इस काल मे मकतबो और मदरसो मे शिक्षा दी जाती रही। मकतब प्राय मस्जिदो के साथ जुडे रहते थे। इनमे मुल्ला या मौलवी कुरान की आयते तथा कुछ प्रार्थनाएँ याद कराते थे। साथ ही थोडा पढना-लिखना और गणित भी सिखाया जाता था। लिपि ज्ञान, उच्चारण तथा व्याकरण पर विशेष जोर दिया जाता था। कुछ मकतबो मे हदीस, कविता एवं नीतिशास्त्र भी पढाया जाता था। शासको तथा धनी मानी व्यक्तियो के बच्चो की पढाई उनके घर पर हुआ करती थी। शाहजादो के लिए जो पाठ्य-क्रम निश्चय किया जाता था, उसमे अरबी, फारसी, सैनिक शिक्षा, कानून, न्याय शास्त्र, कला तथा धर्म-ग्रन्थो का विशेष स्थान रहता था।

मकतबी पुस्तकालय

ये मकतब प्राय राज्य तथा धानी मुसलमानो की आर्थिक सहायता से चलते थे। इन मकतबो मे कुछ इनी गिनी हाथ की लिखी पोथियाँ होती थी, खास कर धार्मिक ग्रथ। इन्हे हम 'मकतबी पुस्तकालय' कह सकते है। ये विशेष महत्त्वपूर्ण नही थे।

मदरसे के पुस्तकालय

मुसलमानी काल मे ऊँची शिक्षा मदरसो मे दी जाती थी। इनका प्रबध समितियो और प्रतिष्ठित नागरिको के हाथ मे रहता था। राज्य की ओर से मदरसो को आर्थिक सहायता दी जाती थी। मदरसो मे दो तरह के पाठ्य-क्रम होते थे। एक धार्मिक और दूसरा लौकिक। धार्मिक पाठ्य-क्रम मे

कुरान शरीफ तथा उससे सम्बन्धित विपय, इस्लामी इतिहास तथा कानून शामिल थे। लौकिक पाठ्य-क्रम मे अरवी, फारसी, व्याकरण, गणित, इतिहास, भूगोल, यूनानी चिकित्सा, कृपि, दर्शन, कानून, नीतिशास्त्र, धर्म, तर्क शास्त्र, ज्योतिप, वहीखाता और अर्थशास्त्र आदि विपय शामिल होते थे। शिक्षा का माध्यम अरवी भापा थी। अकवर के समय में मदरसो के पाठ्य-क्रम में विज्ञान, गृह विज्ञान, शासन पद्धति, सगीत, तथा शिल्पशास्त्र आदि विपयो को भी शामिल कर दिया गया था। इन मदरसो के साथ पुस्तकालय जुडे रहते थे। जिनमे उपर्युक्त पाठ्य-क्रम के विपयो का सग्रह होता रहता था।

विशेप विपयों के पुस्तकालय

भारत मे मुस्लिम शिक्षा प्रणाली के प्रमुख केन्द्र आगरा, दिल्ली, जौनपुर, वीदर, वीजापुर, गोलकुण्डा, गुजरात, मालवा, इलाहावाद, रामपुर, लाहौर स्यालकोट, पटना, हैदरावाद, अहमदावाद तथा लखनऊ थे। इनमें जौनपुर सबसे अधिक प्रसिद्ध था। उसे शीराज-ए-हिन्द कहा जाता था। क्योकि इब्राहीम शर्की और सिकन्दर लोदी के समय वहाँ सैंकडो मदरसे थे। शेरशाह सूरी ने जौनपुर केन्द्र से ही शिक्षा प्राप्त की थी। इन केन्द्रो मे से कुछ केन्द्र तो विशेप विपयो के लिए प्रसिद्ध हो गए। लाहौर तथा स्यालकोट गणित और ज्योतिप के लिए, रामपुर तर्क और चिकित्सा के लिए, दिल्ली इस्लामी परम्पराओ और कविता के लिए तथा लखनऊ शिक्षा के लिए। अत इन केन्द्रो मे इन विशेप विपय के ग्रथो का यत्नपूर्वक सग्रह किया जाता रहा और अच्छे पुस्तकालय पाये जाते थे।

नगरकोट का पुस्तकालय

फीरोज तुगलक विद्याप्रेमी शासक था। उसने शिक्षा को प्रोत्साहन दिया तो हिन्दू लोग भी उसके समय से अरवी-फारसी पढने लगे और मुसलमान लोगो ने भी सस्कृत पढकर हिन्दू ग्रथो का अनुवाद करना शुरू किया। उसने जव १४ वी शताब्दी मे नगरकोट पर चढाई की और विजय प्राप्त की तो वहाँ उसे एक सस्कृत पुस्तकालय प्राप्त हुआ था। उसने मौलाना ईजुद्दीन खलीदरखानी को दर्शन, भविष्य-विचार तथा शकुन-विचार विषयक एक सस्कृत ग्रन्थ का फारसी मे अनुवाद करने का आदेश दिया। इस अनुवाद का नाम वाद मे 'दलायल-ए-फिरोजशाही' रखा गया।

दक्षिण के स्वतन्त्र राज्यो ने भी शिक्षा के लिए वडे पैमाने पर विद्यालय खोले। वहाँ भी ग्रन्थो का सग्रह होता रहा।

महमूद गवाँ का पुस्तकालय

अहमदनगर मे बहमनी राज्य का मन्त्री महमूद गवाँ बहुत ही विद्या-व्यसनी था। उसके पास ६००० पुस्तको का एक अच्छा पुस्तकालय था। यह पुस्तकालय बीदर मे उसके एक विद्यालय मे था। अपने फुरसत के समय महमूद गवाँ विद्वानो की सगति मे उसी पुस्तकालय मे अपना समय बिताता था। वह गणित, चिकित्सा तथा साहित्य मे निष्णात था और उसमे काव्य-रचना की भी अद्‌भुत शक्ति थी। फरिश्ता का कथन है कि उसने 'रौजत-उल-इन्शा' तथा 'दीवान-ए-अश्र' नामक दो काव्य-ग्रंथो की रचना भी की थी। एक षड्‌यन्त्र के फलस्वरूप जब १४८१ ई० मे महमूद गवाँ की हत्या कर दी गई तो धीरे-धीरे बहमनी राज्य के सन्त-महन्त भी विलासिता मे डूब गए और राज्य की अवनति हो गई।

मुगलकालीन पुस्तकालय

यद्यपि मुगल काल मे सार्वजनिक शिक्षा या अनिवार्य शिक्षा नाम की कोई वस्तु नही थी, तथापि जिस वर्ग मे इसका प्रचार था उस वर्ग मे वह ऊँची दृष्टि से देखी जाती थी। साहित्य सृजन गौरव की बात समझी जाती थी। अत पुस्तकालयो का भी विकास हुआ। सौभाग्यवश बाबर और हुमायूँ ये दोनो प्रारम्भिक मुगल सम्राट् पुस्तको के प्रेमी थे। सुन्दर पुस्तको के सग्रह मे हुमायूँ को बहुत आनन्द मिलता था। उसकी मृत्यु भी अपने पुस्तकालय की सीढियो से गिर कर ही हुई थी। उसने शेरशाह के आमोद-गृह को पुस्तकालय के रूप बदल दिया था।

अकबर का पुस्तकालय

स्मिथ महोदय का कथन है कि 'अकबर ने असाधारण आर्थिक मूल्य वाली बहुत अच्छी पुस्तको का सग्रह किया था।' अकबर के पुस्तकालय मे २५००० चुने हुए ग्रथ थे। यह पुस्तकालय सुन्दर पाण्डुलिपियो से भरा हुआ था। उसका प्रबन्ध भी बहुत सुन्दर ढङ्ग से होता था। वे पुस्तके कला और विज्ञान दो वर्गो मे विभक्त थी। उस पुस्तकालय की उस समय और भी अधिक समृद्धि बढ गई जब कि फैजी की मृत्यु के बाद उसके निजी पुस्तकालय से चार हजार तीन सौ हस्तलिखित पुस्तके लाई गई। उन सब को तीन विभागो मे पंजीकृत किया गया। ये विभाग इस प्रकार थे —

१. कविता, आयुर्वेद, फलित ज्योतिष और संगीत की पुस्तकें।
२. भाषाविज्ञान, दर्शन, सूफीमत और ज्यामिति की पुस्तके।

३. व्याख्यान, दर्शन, परम्परागत कथाएँ, धर्मशास्त्र और कानून की पुस्तके ।

इस युग मे प्रेस केवल जेसुइट लोगों के पास था, जो गोवा और उनके आस-पास बसे हुए थे । इसलिए तब तक हस्तलिखित ग्रन्थों का ही प्रचलन था । इसके लिए सुन्दर लिपिको की आवश्यकता होती थी । अकबरी दरबार के प्रसिद्ध हस्तलिपि लेखको की सूची आईन-ए-अकबरी में दी हुई है । मुहम्मद हुसैन उन सब मे सबसे अधिक मशहूर था । उसे 'जरीने कलम' (सोने की कलम) की उपाधि दी गई थी । अबुलफजल ने लिखने की आठ विभिन्न शैलियो का उल्लेख किया है । अकबर के समय में अनेक संस्कृत ग्रन्थो का फारसी मे अनुवाद भी किया गया । रामायण, महाभारत, अथर्ववेद, लीलावती, ताजिक, राजतरगिणी, नल दमयन्ती, तुजक बाबरी, बाइबिल और कुरान आदि के अनुवाद भी अकबर ने करवाये थे । अनेक देशो के कवि, लेखक, सगीतज्ञ, चित्रकार एव कलाविदो को अकबर के दरबार मे आश्रय मिला हुआ था । वास्तव मे साहित्य और कला की उन्नति के लिए यह एक अच्छा युग था ।

जहाँगीर को भी पुस्तको और चित्रकारी से प्रेम था । उसका आदेश था कि जो लावारिस सम्पत्ति राज्य में मिले उसे विद्यालयो और पुस्तकालयो के बनाने और बढाने मे लगाया जाय । शाहजहाँ का पुत्र दाराशिकोह तो सस्कृत का बहुत अच्छा विद्वान् था । उसने उपनिषदो का फारसी मे अनुवाद किया था । दारा के सम्बन्ध मे तो यहाँ तक कहा जाता है कि वह केवल सुन्दर लिखता ही नही था बल्कि शाहजहाँ की हस्तलिपि की ठीक-ठीक नकल भी कर देता था । औरङ्गजेब भी अपने खुशकत के लिए प्रसिद्ध था और इसी लिए वह सुन्दर लिखने वालो का आदर करता था । उसने मुसलमानी शिक्षा को विशेष बढावा दिया । उसके समय मे राज्य के पुस्तकालय मे धार्मिक ग्रन्थ बढाए गए । मुगलकालीन पुस्तकालयो मे सगृहीत पुस्तको से प्रमाणित है कि उस समय हस्तलिखित पुस्तको की सजावट मे भी बहुत दिलचस्पी ली जाती थी । चारो ओर कलात्मक हाशिए छोड कर बीच मे बिल्कुल समान रूप मे मोती की तरह अक्षर पिरोये जाते थे । इन पुस्तको की जिल्दसाजी भी काफी सुन्दर ढङ्ग से की जाती थी । पुस्तके सुन्दर चित्रो से अलकृत भी की जाती थी और इस बात का ध्यान रखा जाता था कि वे टिकाऊ भी हो ।

उत्तरकालीन मुगल-सम्राटो मे भी अधिकाश को पुस्तको से प्रेम था । धीरे-धीरे मुगल साम्राज्य की अवनति हो गई । जब नादिरशाह ने हमला किया तो वह शाही पुस्तकालय को भी फारस ले गया ।

बीजापुर मे आदिलशाह का 'आदिलशाही पुस्तकालय' एक राजकीय पुस्तकालय के रूप मे था। औरङ्गजेब ने जब बीजापुर पर चढाई की तो वह पुस्तकालय भी नष्ट हो गया।

मुस्लिम काल मे भी नदिया, बनारस और मिथिला आदि में सामान्य पुस्तकालयो का विवरण पाया जाता है। इस समय हिन्दू राजाओं के भी अच्छे पुस्तकालय थे। तंजौर के राजा ने शुरू से ही प्राचीन ग्रन्थो के संग्रह मे रुचि ली थी। शरभोजी के समय के उनके 'तंजौर पुस्तकालय' मे बढते-बढते २५,००० से अधिक ग्रन्थो का संग्रह हो गया था। आज भी तंजौर राज्य के उस पुस्तकालय मे १८,००० से ऊपर केवल संस्कृत के ग्रन्थ मौजूद है तथा अन्य ग्रन्थ देवनागरी, कनाडी, तैलङ्गी, उडिया आदि लिपियो में लिखे हुए हैं और ऐसा सग्रह भारत में अन्यत्र कही नही है।

अध्याय ७

संधिकालीन पुस्तकालय

मुसलमानी शासन के अत और अग्रेजो के आगमन के बीच के समय को सधिकाल कहना उचित है। यह काल पुस्तकालय विकास की दृष्टि मे अप्रगतिशील रहा है। इस काल में निम्नलिखित छ प्रकार के पुस्तकालय विद्यमान थे —

१. गुरु-गृहों के पुस्तकालय

सस्कृत भाषा एव साहित्य के पडित लोग अपने घरो पर विद्यार्थियो को पढाया करते थे। इसलिए पठन-पाठन के उपयोगी ग्रथो का सग्रह वे लोग अपने घरो पर ही एक कक्ष मे रखते थे। ऐसे पुस्तकालय 'गुरु-गृहों के पुस्तकालय' थे।

२ संस्कृत विद्यालयो के पुस्तकालय

सस्कृत विद्या के प्रचार करने एव उसे जीवित रखने के लिए देश मे अनेक सस्कृत विद्यालय खुले हुए थे। उन्हे धनी-मानी व्यक्तियो, सेठ-साहूकारो, एव राजाओ से सहायता मिल रही थी। बगाल मे ऐसे विद्यालय 'टोल' कहलाते थे। दक्षिण भारत मे ऐसे विद्यालय प्राय मन्दिरो तथा गाँवो मे चलते थे। जो विद्यालय इस प्रकार के थे उनमे सस्कृत की पोथियाँ सगृहीत थी। बगाल के किसी-किसी टोल मे १० से लेकर ४० तक ग्रन्थो का जिक्र जांच रिपोर्टों मे मिलता है।

वास्तव मे उपर्युक्त दोनो प्रकार के पुस्तकालय वैदिक काल के पुस्तकालयो के प्रतीक थे। पूरे मुस्लिम काल के तूफान से गुजर जाने पर भी उन पर कोई विशेष प्रभाव नही पडा था।

३. मकतबो के पुस्तकालय

मुस्लिम काल मे जिन मकतबी पुस्तकालयो की चर्चा पिछले अध्याय मे

की गई है, वे पुस्तकालय इस काल मे भी पाए जाते थे। ये नाम मात्र के थे और अभी चले चल रहे थे।

४ मदरसों के पुस्तकालय

मुस्लिम काल के मदरसो के पुस्तकालय इस काल मे भी वने हुए थे किन्तु राजनीतिक उथल-पुथल के कारण उनकी कुछ उन्नति न हो सकी।

५ ग्रामीण पाठशालाओं के पुस्तकालय

मुस्लिम शासन काल के पहले भी देश के प्रत्येक गाँव मे बच्चो को पढाने-लिखाने की व्यवस्था प्राइवेट तौर पर कभी कुछ राज्य-प्रोत्साहन द्वारा भी की जाती रही। ऐसी ग्रामीण पाठशालाएँ तो मुस्लिम काल मे भी वनी रही। जो वच्चे मकतव नही जा सकते थे वे वही पढा करते थे। इन पाठशालाओ के अध्यापक अपनी पाठशाला मे कुछ पोथियाँ अपनी रुचि के अनुसार सग्रह कर के रखा करते थे। फुर्सत के समय वे स्वय पढते और गाँव के लोगो को भी सुनाया करते थे।

हार्डी ने अपनी पुस्तक 'इण्डिया' मे लिखा है :—

"मैक्समूलर ने सरकारी उल्लेखो के आधार पर और एक मिशनरी की रिपोर्ट के आधार पर जो वगाल पर कब्जा होने से पहले वहाँ था—शिक्षा की अवस्था के सम्वन्ध मे लिखी गई थी, लिखा है कि उस समय वंगाल मे ८०,००० पाठशालाएँ थी। अर्थात् सूवे की आवादी के प्रति ४०० आदमियों पर एक पाठशाला मौजूद थी।" इन पाठशालाओ का लोप ग्राम पंचायतो के नष्ट होने पर हो गया। जैसा कि इतिहासकार लडलो 'अपने ब्रिटिश भारत' मे लिखता है :—

"प्रत्येक हिन्दू गाँव में जहाँ कि पुराना सगठन अभी तक कायम है, मुझे विश्वास है कि आमतौर पर सव वच्चे लिखना-पढना जानते है किन्तु जहां कही हमने पचायतो का नाश कर दिया है, जैसे वंगाल मे, वहाँ ग्राम पंचायतो के साथ-साथ पाठशाला का भी लोप हो गया है।"

६ विदेशियों के विद्यालयों के पुस्तकालय

इस काल में ईसाई धर्म के प्रचार के लिए ईसाई प्रचारको ने कुछ विद्यालय खोले। भारत मे व्यापार करने वाली कम्पनियो ने भी अपने कर्मचारियो के वच्चों की शिक्षा देने के लिए कुछ विद्यालय स्थापित किए। इन दोनों प्रकार के विद्यालयो के साथ-साथ कुछ छोटे-छोटे पुस्तकालय भी सलग्न थे। उनमें पाठ्य-विषयो से सम्बन्धित पुस्तकें, सामान्य रुचि की कुछ पुस्तकें तथा

विशेष रूप से धार्मिक पुस्तकें होती थी। प्रारम्भ में पुर्तगालियों ने और उनके वाद फ्रासीसियो ने इस ओर कदम वढाया।

अंग्रेजों का प्रारम्भिक प्रयास

जब अग्रेज लोग भारत मे आए और कुछ-कुछ उनके पैर जम गए तो उन्होंने भी धर्म प्रचार और शिक्षा की ओर ध्यान दिया। पुर्तगाली कैथोलिक थे और अग्रेज प्रोटेस्टेण्ट। इसलिए अग्रेजो ने सोचा कि प्रोटेस्टेण्ट मत के प्रचार से पुर्तगालियो का राजनीतिक प्रभाव भी खतम हो जायगा। अग्रेजो ने शिक्षा के लिए सन् १६७० ई० में मद्रास मे पहला अँग्रेजी स्कूल खोला। उसके वाद अँग्रेजो के सभी व्यापारिक केन्द्रो मे स्कूल खोले गए। लेकिन कम्पनी ने थोडे दिनो के भीतर ही यह अनुभव किया कि धार्मिक प्रचार की नीति अच्छी नही है। इससे तो हिन्दू और मुसलमान दोनो नाराज हो जायेंगे। इसलिए कम्पनी ने पादरियो को सहायता देनी वन्द कर दी। शिक्षा के झगडे को भी कम्पनी अपने ऊपर नही लेना चाहती थी। फिर भी सिरामपुर (वगाल) मे काम करने वाले मार्शमैन तथा वार्ड नामक पादरियो ने छापाखाना खोला और पुस्तके प्रकाशित करके हिन्दू तथा इस्लाम धर्म पर आक्षेप करने लगे। साथ ही उन्होंने अपने ढंग से शिक्षा-प्रचार करने के कई सौ प्रारम्भिक स्कूल भी खोले। इन स्कूलो के साथ-साथ उन्होने नाम-चारे के पुस्तकालय भी स्थापित किए। धीरे-धीरे पादरियो ने कम्पनी की नीति का डट कर विरोध किया। लेकिन इगलैण्ड मे पादरियो का पक्ष सदा कमजोर रहा। मार्शमैन लिखता है :—

"भारतीयो को शिक्षा देने के प्रश्न के विरोध मे वोलते हुए कम्पनी के एक डाइरेक्टर ने पार्लियामेंट मे वडे जोरदार शब्दो मे कहा—'हम लोग अपनी इसी मूर्खता के कारण अमेरिका से हाथ धो वैठे है क्योकि हमने वहाँ स्कूल और कालेज खुल जाने दिये। अब फिर भारत मे उसी मूर्खता को दोहराना उचित नही है'।"

फिर भी लडते-झगडते अन्त मे पादरियो तथा उनके चार्ल्स ग्राण्ट आदि मित्रो के आन्दोलन और लार्ड मिण्टो के प्रयत्नो से सन् १८१३ ई० मे पार्लियामेंट ने एक नवीन आज्ञा-पत्र द्वारा निम्नलिखित आदेश-पत्र दिया —

"यह गवर्नर जनरल के लिए न्यायसगत होगा कि वची हुई रकम मे से वह कम से कम एक लाख रुपये अलग कर दे और उसे साहित्य के पुनरुद्धार तथा सुधार और भारतीय साहित्य के प्रोत्साहन मे तथा वृटिश भारतीय क्षेत्रो मे विज्ञानो के, ज्ञान के प्रारम्भ तथा उन्नति मे लगावे।"

"ब्रिटिश भारतीय निवासियो के हितो और सुख की उन्नति इस देश का कर्त्तव्य है और उनमे उपयोगी ज्ञान तथा नैतिक सुधार के साधनो का उपयोग होना चाहिए। उपर्युक्त उद्देश्यो तथा इन सौजन्यपूर्ण कार्यो को पूरा करने के लिए भारत जाने तथा रहने के इच्छुक व्यक्तियो को कानून द्वारा यथेष्ट सुविधाएँ मिलेगी।"

इस आदेश का नतीजा यह हुआ कि शिक्षा-प्रचार कम्पनी की जिम्मेदारी हो गई और पादरियो को भी इस देश मे काम करने की पूरी आजादी मिल गई।

कम्पनी ने राजनीतिक जरूरतो को पूरा करने के लिए सन् १६८१ मे कलकत्ता मदरसा, सन् १७९१ मे बनारस सस्कृत कालेज तथा सन् १८०० ई० मे फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना की। इनके साथ पुस्तकालय भी स्थापित हुए जो धीरे-धीरे महत्त्वपूर्ण पुस्तकालय बन गए।

इस प्रकार शिक्षा की इस डावॉडोल स्थिति मे अग्रेजो द्वारा अधिकृत भारत मे पुस्तकालयो की स्थिति पहले से कुछ सुधर न सकी। साथ ही साथ देश के आन्तरिक कलहपूर्ण स्थिति के कारण अन्य भागो मे भी पुस्तकालयो की स्थिति पूर्ववत् बनी रही।

अध्याय ८

ब्रिटिश कालीन पुस्तकालय

ब्रिटिशकालीन शिक्षा

यद्यपि संधिकाल मे अंग्रेजो ने भारत के कुछ भागो पर अधिकार कर लिया था किन्तु अपने उन क्षेत्र मे भी शिक्षा-दीक्षा की ओर उन्होने ध्यान नही दिया। इस काल मे कम्पनी का राज्य भारत मे उत्तरोत्तर बढता गया। उसके अत्याचारो से पीडित हो कर जनता ने १८५७ ई० मे स्वतंत्र होने की पहली वार चेष्टा की। कम्पनी ने उसे 'सैनिक विद्रोह' कह कर दवा दिया किन्तु उसके साथ ही कम्पनी की सत्ता भी खतम हो गई। उसके वाद से १९४७ ई० के १४ अगस्त तक भारत पर इङ्गलैण्ड के वादशाह के प्रतिनिधि द्वारा शासन होता रहा। जब कम्पनी का शासन रहा तो उसके कर्मचारियो तथा अधिकारियो की सदा यही नीति रही कि इस देश से ज्यादा से ज्यादा धन कमा कर स्वदेश लौटा जाय। इसलिए उन्होने अनेक षड्यन्त्र और जाल, फरेब से पूरे भारत को अपने कब्जे मे किया। विलियम हाविट नामक अंग्रेज ने लिखा है कि "जिस तरीके से इस्ट इण्डिया कम्पनी ने हिन्दोस्तान पर कब्जा किया उससे अधिक वीभत्स और ईसाई सिद्धान्तो के विरुद्ध किसी दूसरे तरीके की कल्पना भी नही की जा सकती।"

इसलिए सदा कम्पनी के राज्यकाल मे शिक्षा और पुस्तकालयो के विकास मे रोडे अटकते रहे। फिर भी १८१३ ई० के आज्ञापत्र से ले कर १९४७ ई० तक अर्थात् १३४ साल के लम्वे कार्यकाल मे एक नए ढङ्ग से शिक्षा और पुस्तकालयो का विकास हुआ। चूंकि ब्रिटिशकाल मे भी पुस्तकालय शिक्षा-विभाग के ही अन्तर्गत रहे, और शिक्षा के विस्तार के साथ-साथ ही उनका भी विस्तार हुआ, अत शिक्षा की नीति को कुछ विस्तारपूर्वक समझना आवश्यक है।

शिक्षा का काल-विभाजन

शिक्षा की दृष्टि से ब्रिटिशकाल को तीन भागो मे बाँटा जा सकता है :—

१ सन् १८१३ से १८५४ तक।

२. सन् १८५४ ई० से १९२० ई० तक।

३ सन् १९२० ई० से १९४७ ई० १५ अगस्त तक।

प्रथम भाग : १८१३–१८५४ तक

सन् १८१३ ई० के आज्ञा-पत्र मे शिक्षा के उद्देश्य, स्वरूप, माध्यम एव साधनो की व्याख्या नही की गई थी। इसलिए शिक्षा के क्षेत्र मे एक सघर्ष उठ खडा हुआ। इस सघर्ष मे तीन प्रकार के विचारो के लोग थे : इसलिए तीन दल बन गए—(१) प्राच्य शिक्षावादी, (२) पाश्चात्य शिक्षावादी और (३) लोक-शिक्षावादी।

(१) प्राच्य-शिक्षावादियो का कहना था कि भारतीय प्राचीन साहित्य, सभ्यता एव सस्कृति तथा पाश्चात्य ज्ञान और विज्ञान की शिक्षा सस्कृत एवं अरबी के माध्यम से होनी चाहिए। इस दल मे कम्पनी के पुराने अधिकारी थे।

(२) पाश्चात्य शिक्षावादियो का कहना था कि भारत मे अग्रेजी के माध्यम से योरोपीय ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा होनी चाहिए। इस दल मे मिस्टर ग्राण्ट के पिछलग्गू कम्पनी के नवयुवक अधिकारी, ईसाई पादरी और राजाराम-मोहन राय जैसे लोग भी थे।

(३) लोक-शिक्षावादियो था कहना था कि पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा प्रान्तीय भाषाओ के माध्यम से हो। इस दल मे बम्बई और मद्रास के गवर्नर श्री स्टुअर्ट एल्फिन्स्टन तथा मुनरो आदि थे जिनकी कोई सुन-वाई न थी।

इन तीनो दलो के सघर्ष का परिणाम यह हुआ कि दस वर्ष तक अर्थात् १८२३ ई० तक शिक्षा की प्रगति न हो सकी। बेलारी के कलक्टर श्री कैम्पबेल ने अपनी १८२३ ई० की शिक्षा-रिपोर्ट मे कम्पनी को लिखा था '—'इस जिले मे घटत-घटते शिक्षा-सम्बन्धी ५३३ सस्थाएँ रह गई है और मुझे यह कहते लज्जा आती है कि इनमे मे एक को भी सरकारी सहायता नही मिलती।' सन् १८२३ ई० मे शिक्षा-सम्बन्धी सरकारी योजनाओ को चालू करने के लिए तथा एक लाख रुपये के अनुदान को उचित रूप से उपयोग करने के लिए 'शिक्षा समिति' तत्कालीन गवर्नर जनरल ने बनाई। इस समिति मे दस सदस्य थे और सस्कृत भाषा के प्रसिद्ध विद्वान् विल्सन महोदय इस

समिति के मन्त्री बनाए गए। इस प्रकार शिक्षा-समिति मे प्राच्य-शिक्षावादियो का बहुमत हो गया। फिर क्या था, संस्कृत, अरबी तथा फारसी की शिक्षा के लिए वजीफे मिलने लगे। इन भाषाओ की पुस्तकें छापने के लिए प्रेस खोला गया। कलकत्ता, आगरा, देहली और मुर्शिदाबाद मे कालेजो की स्थापना हुई। समिति ने अनेक पाश्चात्य पुस्तको का संस्कृत तथा फारसी मे अनुवाद कराया। कालेजो के साथ पुस्तकालयो की भी स्थापना हुई किन्तु पाश्चात्य शिक्षावादी बराबर विरोध करते रहे।

धीरे-धीरे इस समिति के सदस्यो मे ही घोर मतभेद हो गया। उन्होने गवर्नर जनरल से नीति-निर्धारण की प्रार्थना की। लार्ड मैकाले उन दिनो गवर्नर जनरल की काउन्सिल का कानूनी सलाहकार था। गवर्नर जनरल ने उसे 'लोक-शिक्षा समिति' का प्रधान बना दिया। इस प्रकार २ फरवरी सन् १८३५ ई० को लार्ड मैकाले ने अपना वह क्रान्तिकारी विवरण-पत्र काउन्सिल के समाने पेश किया जिसमे अग्रेजी माध्यम द्वारा पाश्चात्य साहित्य एव विज्ञान की शिक्षा देने का समर्थन एव प्राच्य शिक्षा के शिक्षण का खण्डन किया गया। उसने निर्भीक हो कर इस बात की घोषणा की कि 'एक अच्छे योरोपीय पुस्तकालय की आलमारी भारत तथा अरब के सम्पूर्ण साहित्य से कम महत्त्वपूर्ण नही।' मैकाले की इस शिक्षा नीति के पीछे बडे-बडे कूट-नीतिक उद्देश्य थे जिनकी चर्चा इतिहासकारो ने विस्तारपूर्वक की थे। इसका फल यह हुआ कि लार्ड मैकाल की राय से सहमत हो कर लार्ड विलियम बेंटिग ने अपनी शिक्षा नीति इस प्रकार घोपित की :—"प्राच्य-शिक्षा के लिये जो कुछ किया जा चुका है वह ज्यो का त्यो बना रहेगा परन्तु आगे से अब सम्पूर्ण ग्राण्ट अँग्रेजी माध्यम द्वारा दी जाने वाली शिक्षा पर खर्च की जायगी।" इस प्रकार कम्पनी की शिक्षा की नीति की एक दिशा निश्चत हो गई। लार्ड विलियम बैंटिंग ने कलक्टरो का अदेश दिया कि उनके जिलो मे जो 'ला खिराज' जमीनें धार्मिक सस्था, देशी स्कूलो आदि के नाम लगी हो वे कम्पनी के नाम जब्त कर ली जाएँ। इस प्रकार देशी शिक्षा का नाश हो कर अग्रेजी शिक्षा जबर्दस्ती लाद दी गई।

लोकशिक्षा एवं उच्चशिक्षा में संघर्ष

कम्पनी को शिक्षा पर एक लाख रुपया व्यय करने का जो अधिकार मिला था, उसकी व्याख्या नही की गई थी। फलत प्रत्येक प्रान्त मे अपने-अपने ढग से काम शुरू किया गया। मद्रास मे गवर्नर मि० मुनरो ने प्रात की शिक्षा की प्रारभिक जाँच करा के सन् १८२२ ई० मे प्रातीय स्तर पर एक

'लोक शिक्षा समित' बनाई और प्रत्येक जिले मे हिन्दुओ के लिए एक-एक स्कूल खोलने और अध्यापको को ट्रेण्ड करने की योजना भी बनाई। कम्पनी ने ५०,००० रु० वार्षिक सहायता भी देना प्रारभ किया। इस सम्पूर्ण योजना का अभिप्राय यह था कि प्रान्त मे प्राथमिक शिक्षा मे सुधार हो। बगाल मे श्री एडम ने और बम्बई मे मि० एलफिंस्टन ने भी इस ओर ध्यान दिया। लेकिन इस बीच उच्च शिक्षा देने की भी बात उठी। इस प्रकार लोक-शिक्षा और उच्च शिक्षा के सघर्ष से बचने के लिए लार्ड ऑकलैण्ड ने **शिक्षाछन ने के सिद्धान्त** (फिल्ट्रेशन थियरी ऑफ एजुकेशन) को सरकारी नाति घोषित किया। इसको इस रूप मे कहागया कि 'धन की कमी के कारण सरकार को शिक्षा समाज के उच्च वर्ग को देनी चाहिए जिसके पास शिक्षा के लिए समय है और जिससे छन-छन पर सभ्यता जनता मे पहुँचेगी।'

इस प्रकार शिक्षा नीति मे एक और स्थिरता आ गई कि शिक्षा उच्च लोगो को ही प्राप्त हो फल यह हुआ कि सरकारी समर्थन पा कर उच्च शिक्षा का तेजी से विकास हुआ। सन् १८४४ ई० मे लार्ड हार्डिञ्ज ने घोषणा की कि **'अंग्रेजी स्कूलों में शिक्षा-प्राप्त भारतीयों को सरकारी नौकरियों में प्राथमिकता दी जायगी'** इससे सरकारी नौकरी प्राप्त करना अग्रेजी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बन गया। इसका प्रभाव यह हुआ कि उच्च शिक्षा और तेजी से बढने लगी। सन् १८५३ ई० तक भारतीय शिक्षा के क्षेत्र मे अनेक बखेडे उठ खडे हुए। अत मे पार्लियामेट ने भारतीय शिक्षा की जाँच कर के उचित सुझाव देने के लिए एक 'ससदीय शिक्षा समिति' बनाई।

इस प्रकार स्पष्ट है कि इस भाग मे पुस्तकालयो की कुछ विशेष उन्नति न हो सकी। शिक्षा जनता के स्तर से ऊपर थी। अत केवल नए स्कूलो के साथ-साथ नाम मात्र के पुस्तकाछयो की स्थापना हुई।

दूसरा भाग : १८५४ से १९२० तक

ससदीय शिक्षा समिति के सुझाव के अनुसार कम्पनी के डाइरेक्टरो ने सन् १८५४ ई० मे अपनी शिक्षा नीति की घोषणा की। इसको **'वुड का शिक्षा घोषणा-प्रत्र'** कहा जाता है। इस घोषणा-पत्र की आधारभूत शिक्षा नीति इस प्रकार थी —

१ शिक्षा द्वारा भारतीयो की बौद्धिक और चारित्रिक उन्नति करना।

२. भारतीयो को अपने देश की उन्नति एव सम्पन्न बनाने मे सहायता करना ताकि अग्रेजी कारखानो के लिए बहुत-सी आवश्यक वस्तुएँ अधिक निश्चित रूप से प्राप्त हो सके।

इस घोषणा-पत्र मे सिफारिश की गई कि :—

१ मुख्य रूप से योरोपीय कला, विज्ञान एव साहित्य का अध्ययन किया जाय।

२ अध्ययन का माध्यम अग्रेजी ही रहे परन्तु देशी भाषाएँ भी पढ़ाई जावें और उनका विकास भी किया जाय जिससे वे भी योरोपीय ज्ञान के प्रचार मे सहायक हो।

३ प्रत्येक प्रान्त मे एक शिक्षा विभाग स्थापित हो और उसे एक शिक्षा-सचालक के अधीन रखा जाय। सहायक निरीक्षको की सहायता से वह अपने प्रान्त मे शिक्षा की व्यवस्था करे एव उसका सचालन करे और प्रतिवर्ष उसकी रिपोर्ट सरकार को दे।

४ कलकत्ता, बम्बई और यदि आवश्यक हो तो मद्रास मे भी लन्दन यूनिवर्सिटी की नकल पर यूनिवर्सिटियाँ स्थापित की जायें।

५ शिक्षा का ढाँचा इस प्रकार हो, प्राइमरी, मिडिल, हाईस्कूल, कालेज और उसके बाद विश्वविद्यालय।

६ शिक्षा छनने के सिद्धान्त को हटा कर जनसाधारण की शिक्षा पर ध्यान दिया जाय।

७ गरीब विद्यार्थियो को वजीफे दिये जायँ।

८ गैर सरकारी शिक्षण सस्थाओ को भी सरकार उदारतापूर्वक सहायता (ग्राट-इन-एड) दे।

पुस्तकालयो, विद्यालय-भवनो तथा विज्ञानशालाओ के निर्माण की व्यवस्था के लिए अतिरिक्त सहायता दी जाय।

९ शिक्षको की ट्रेनिङ्ग के लिए नार्मल स्कूल तथा ट्रेनिङ्ग कालेज खोले जायँ। ट्रेनिङ्ग काल मे भी शिक्षको को वजीफे दिये जायँ।

१० औद्योगिक शिक्षा, कानून, चिकित्सा, इजीनियरिंग आदि की शिक्षा की भी समुचित व्यवस्था की जाय।

११ स्त्री-शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जाय और अधिक उदारतापूर्वक सहायता दी जाय।

इस प्रकार यह घोषणा-पत्र आधुनिक शिक्षा की आधार शिला है। प्रसिद्ध लेखक जेम्स ने इसे 'भारत मे अग्रेजी शिक्षा का मैग्नाकार्टा' कहा है। इस घोषणा-पत्र के द्वारा कम्पनी ने अधिकृत रूप मे यह स्वीकार कर लिया कि जनता को शिक्षा प्रदान करना सरकार के कर्त्तव्यो मे से एक मुख्य कर्तव्य है। इस प्रकार शिक्षा विभाग अलग से स्थापित करके ग्राट देने की प्रथा चला

कर शिक्षा के साथ पुस्तकालयो को भी प्रोत्साहन देने की बात स्पष्ट रूप से स्वीकार की गई। अत इस घोषणा-पत्र ने शिक्षा के सगठन को एकरूपता प्रदान की। इसके अनुसार प्रत्येक प्रान्त मे शिक्षा विभाग स्थापित हुए और विशिष्ट प्रणाली के अनुसार कार्य शुरू किया गया। किन्तु इसी बीच सन् १८५७ ई० का प्रथम स्वाधीनता आन्दोलन छिड गया। उसके बाद कम्पनी के शासन का अत हो गया और ब्रिटिश पार्लियामेट ने भारतीय शासन की बागडोर सँभाली। महारानी विक्टोरिया भारत की महारानी बनी। उन्होने १९५८ ई० मे सरकारी धार्मिक तटस्थता की नीति की घोषणा की। भारत मंत्री का एक नया पद बनाया गया और उस पद पर लार्ड स्टैनले की नियुक्ति की गई। शिक्षा के उत्तरदायित्व को आशिक रूप मे प्रान्तीय सरकारो को दे दिया गया। आगे चल कर १८७१ ई० मे लार्ड मेयो ने शिक्षाविभागो को प्रान्तीय सरकारो के अधीन कर दिया और उन्हे शिक्षा पर खर्च करने की आज्ञा दे दी। १८७७ ई० मे लार्ड लिटन ने कुछ और अधिकार दिए किन्तु शिक्षा की नीति निर्धारित करने का अधिकार अत तक केन्द्रीय सरकार के ही हाथ मे रहा।

इस प्रकार भारत मे शिक्षा-विभाग द्वारा स्कूलो और कालेजो की स्थापना होने लगी। सरकारी सहायता से प्रोत्साहन पा कर अनेक गैर-सरकारी स्कूल और कालेज खुले। इनके साथ पुस्तकालय स्थापित हुए। इसके बाद से ही स्वतत्र पुस्तकालय भी स्थापित होने लगे।

अत मे कुछ दिनो बाद पादरियो का वर्ग सरकार की धार्मिक तटस्थता की नीति से नष्ट हो गया। इस पर लार्ड रिपन ने १८८२ ई० मे 'भारतीय शिक्षा कमीशन' की नियुक्ति की, जिसे 'हण्टर कमीशन' कहा जाता है। इस कमीशन की सिफारिश पर प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था नगरपालिका और जिला बोर्डो को दे दी गई। कमीशन ने प्रौढ शिक्षा की भी सिफारिश की। फलत नए पुस्तकालयो की भी वृद्धि हुई।

सन् १८९९ ई० मे लार्ड कर्जन वाइसराय होकर आए। उन्होने शिक्षा के क्षेत्र मे जो सुधार किए उसे भारतीयो ने पसन्द नही किया। वे शिक्षा पर कडे सरकारी नियत्रण के कायल थे। उनके इस विरोध से शिक्षा के क्षेत्र मे हलचल-सी मच गई।

सन् १९०५ मे भारत मे स्वदेशी आन्दोलन शुरू हुआ। उसका भी शिक्षा पर बहुत बडा प्रभाव पडा। राष्ट्रीय शिक्षा की नई योजनाएँ बनाई गई। उनके फलस्वरूप अनेक राष्ट्रीय विद्यालय, गुरुकुल और महाविद्यालय

आदि खुले। १९०६ मे मुस्लिम लीग बनी तो उसने भी अपने नए कुछ विद्यालय खोले। सन् १९१० ई० मे इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउन्सिल में प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य एव नि शुल्क करने का प्रस्ताव स्वर्गीय गोपाल कृष्ण गोखले ने रखा जो टल गया और बाद मे दुबारा पेश होने पर १९१२ ई० मे अस्वीकार हो गया। इसके बाद १९१४ ई० मे यूरोपीय महायुद्ध की ज्वाला दहक उठी तो प्रगति कई वर्षो के लिए रुक गई।

तृतीयकाल: सन् १९२१ से १९५७ तक

प्रथम विश्व युद्ध समाप्त होने पर लार्ड चेम्सफोर्ड और भारत मन्त्री लार्ड माण्टेग्यू ने राजनीतिक सुधारो की एक योजना तैयार की। वह १९२१ ई० मे लागू हुई। इसके अनुसार शिक्षा हस्तान्तरित विषयो के अन्तर्गत आ गई। अत भारतीय मन्त्रियो के हाथ मे शिक्षा की व्यवस्था आई। उनमे उत्साह तो था और उन्होने शिक्षा के क्षेत्र मे उन्नति भी की परन्तु सरकार द्वारा अधिक आर्थिक सहायता न मिलने के कारण वे उतना न कर सके जितना कि करना चाहते थे।

१९२१ ई० के असहयोग आन्दोलन के फलस्वरूप अनेक राष्ट्रीय विद्यायल एव महाविद्यालय खुले। सन् १९२१ ई० मे केन्द्रीय सरकार ने 'शिक्षा सलाहकार बोर्ड' की स्थापना की। उसके द्वारा व्यावसायिक और औद्योगिक शिक्षा पर बल दिया गया। इस सलाह को मान कर १९३६ ई० 'वुड ऐक्ट कमीशन' की नियुक्ति हुई। इस कमीशन ने सामान्य शिक्षा और व्यावसायिक तथा औद्योगिक शिक्षा के सुधार और विकास पर सुझाव दिया। सन् १९३६ के शासन विधान के अनुसार प्रान्तो मे जनता के प्रतिनिधि मन्त्रिमण्डल बने और शिक्षा का पुनर्गठन होने लगा। इसी समय गाधीजी ने शिक्षा-विषयक अपने विचार प्रस्तुत किए। उनके आधार पर बेसिक शिक्षा का जन्म हुआ। सन् १९३९ मे दूसरा विश्व युद्ध छिड गया। मन्त्रि-मडलो ने अपने त्याग-पत्र दे दिए। इसलिए शिक्षा की प्रगति रुक गई। सन् १९४४ ई० मे 'सार्जेण्ट शिक्षा योजना' सरकार के सामने आई। इसे १९४५ ई० मे सभी प्रान्तो मे लागू किया गया। १५ अगस्त सन् १९४७ तक इसी योजना के अनुसार कार्य होता रहा।

ब्रिटिश शासनकाल की शिक्षा प्रगति का यह संक्षिप्त विवरण है। अब इसके आधार पर पुस्तकालतो के विकास का अध्ययन किया जायगा।

भारत में प्रेस का आविष्कार और हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज

पुर्तगालियो के गोआ मे अपना अड्डा जमा लेने के बाद भारत मे सर्व प्रथम पुर्तगाली मिशनरियो ने सितम्बर १५५६ मे प्रेस स्थापित किया। उन्होने राचोल मे सेंदपॉल कॉलेज मे इसे सेट किया। शिवाजी महाराज ने भी एक प्रेस खोला था किन्तु बाद मे उसे भीम जी परख के साथ १६७४ ई० मे बेच दिया। १७१२ मे डैनिश मिशनरियो ने ट्रान्क्बेर मे एक प्रेस स्थापित किया। उन्होने 'एपोस्टाइल्स क्रीड' नामक पुस्तक तामिल मे छापी। कदाचित् यह भारतीय भाषा मे छपी सबसे पहली पुस्तक थी। उसी प्रेस ने १७१५ मे 'न्यू टेस्टामेंट' भी प्रकाशित किया। १७७१ मे हुगली मे, १७७२ मे मद्रास मे, और १७७८ मे कलकत्ता मे प्रेसो की स्थापना हुई। ऐसा ज्ञात होता है कि भारत के गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिग्ज ने अपनी साहित्यिक रुचि से प्रेरित हो कर कम्पनी के एक नौकर मि० विल्किन्स को आदेश दिया कि वे भारतीय भाषाओ के टाइपो के फाण्ट प्रस्तुत करके पुस्तके और 'सरकारी प्रचार के पत्र छपवाने का प्रबन्ध करे। उन्होने प्रयाग के एक मिस्त्री पंचानन से इस काम को शुरू करवाया। उसने बहुत ही साफ मेस्ट्रिसे बनाईं जिनकी भारत और योरप मे खूब प्रशसा की गई। इन्ही हिन्दी टाइपो से 'ब्रजभाषा का व्याकरण' सन् १७७१ ई० छापा गया और १७७७ मे बगाल और उर्दू के व्याकरण छपे। सिरामपुर के मिशनरियो ने पचानन मिस्त्री को अपने यहाँ मँगनी माँग कर तीन साल रखा और उससे टाइप बनवाए। पचानन का दामाद मनोहर और उसका लड़का कृष्ण भी इस काम को करते रहे। कृष्ण मिस्त्री का देहान्त १८५० मे हुआ। बगाली भाषा मे १७७८ मे सर वाल्टर विल्किस ने सबसे पहली पुस्तक हाल्हेड्स 'ग्रामर आफ बेंगाली लैंगवेज' छापी। बम्बई मे १७९३ मे 'रिमार्क्स ऐण्ड अकरेंस आफ हेनरी बेचर' नामक पुस्तक छपी। श्री बेचर टीपू सुल्तान के शासन मे कैदी थे और २½ वर्ष जेल मे रह कर भागे थे। यह पुस्तक उसी जेल-जीवन के सम्बन्ध मे है। इसमे १६४ पृष्ठ है और इसका आकार ६½"×४" का है। भारत मे इसकी एक ही प्रति इण्डियन हिस्टारिकल रिसर्च इस्टीट्यूट सेट जेवियर कालेज, बम्बई मे सुरक्षित है। इस पुस्तक को फादर हेरस ने कालबा देवी के पास एक गुदडी बाजार से आठ आने मे खरीदी थी।

गुजराती टाइप बम्बई मे श्री बीरमजी जीजीभाई चापगर के द्वारा १७९७ मे ढाला गया। मराठी को सबसे पहली पुस्तक 'बाल बोध मुक्ता-

वली' १८०५ मे छपी। यह पुस्तक ईसप की कल्पित कहानियो का अनुवाद मात्र थी। १८१७ मे सूरत मे 'मिशन प्रेस' की स्थापना हुई।

इस प्रकार आज से ४०० वर्ष पहले गोवा में पुस्तकें छपी। तीन सौ वर्ष से ऊपर छपी पुस्तके अव भी भारत मे म्युजियमो मे पाई जाती है। प्रेसो का धीरे-धीरे विस्तार हुआ और ब्रिटिशकाल के अन्तिम दिनो में तो भारत भर मे प्रेसो का एक जाल-सा विछ गया।

हस्तलिखित ग्रंथो की खोज

प्रेस के आविष्कार और प्रचार के साथ-साथ पुस्तको और समाचार-पत्रो आदि की भी सख्या वढी। धीरे-धीरे ये पुस्तके रगीन, सचित्र और आकर्पक ढङ्ग से छपने लगी। प्रेस की सुविधा के होने पर पुरानी हस्तलिखित पोथियाँ छपवाई जाने लगी। भारत सरकार ने एक पुरातत्त्व विभाग भी स्थापित किया। उसके अन्तर्गत प्राचीन भारतीय महत्त्वपूर्ण सामग्रियो की खोज होनी शुरु हुई। वहुत से ताम्र-पत्र, सिक्के, मुहरे, अभिलेख, शिलालेख आदि का पता लगा जिनसे भारत की पुरानी सम्यता और संस्कृति की अनेक गुत्थियाँ सुलझाने मे सहायता मिली।

इसी काल मे अनेक खोजपूर्ण सस्थाएँ स्थापित हुई जिन्होने भारतीय हस्तलिखित पोथियो की खोज का काम अपने हाथो मे लिया। इनमें से अधिकाश संस्थाएँ गैरसरकारी थी और कुछ सरकारी। यद्यपि भारत के घर-घर और गाँव-गाँव मे ऐसी हस्तलिखित पोथियाँ विखरी हुई थी किन्तु अनेक संस्थाओ, मठो, मन्दिरो और पाठशालाओ आदि मे हस्तलिखित ग्रन्थो की अनुपम ज्ञान-राशि मिली और अनेक सस्थाओ ने इनकी सूचियाँ भी छपवाई, उनमे से निम्नलिखित विशेप प्रसिद्ध है —

१८५७ कैटलाग राइसनी आफ ओरियन्टल मैन्युस्कृप्ट्स इन द गवर्नमेंट लाइब्रेरी मद्रास सपा० विलियम टेलर।

१८९४ नोट्स आफ सस्कृत मैनुस्कृप्ट्स आर्डर आफ द गवर्नमेंट आफ वगाल सपा० हरप्रसाद शास्त्री।

१९०२ कैटलाग आफ साउथ इण्डियन सस्कृत मैनुस्कृप्ट्स रायल एशियाटिक सो० लन्दन।

१९१६ ट्रिनिपल कैटलाग आफ मैनुस्कृप्ट्स कुप्पू स्वामी शास्त्री एम०।

१९१६ डिस्कृप्टिव कैटलाग आफ द गवर्नमेंट कलेक्शन आफ मैनुस्कृप्ट्स डकन कालेज, पूना।

१९१६ भण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट बडौदा डिस्क्रिप्टिव कैट

लाग आफ द गवर्नमेंट कलेक्शन आफ मैनुस्क्रुप्ट्स (अनेक भागो मे)।

१९२० अब्दुल करीम बाँगला प्राचीन पुथिर विवरण (बंगीय साहित्य परिषद्)।

१९२३ महावीर जैन पुस्तकालय दिल्ली हस्तलिखित ग्रन्थो का सूचीपत्र।

१९२३ श्यामसुन्दर दास नागरीप्रचारिणी सभा हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थो का संक्षिप्त विवरण (क्रमश कई भागो मे)।

१९२७ शिवरत्न मिश्र सम्पा० प्राचीन पुथिर विवरण।

१९३० यूनिवर्सिटी आफ कलकत्ता डिस्क्रिप्टिव कैटलाग आफ आसामी मैन्यु-स्क्रुप्ट्स सपा० हेमचन्द्र गोस्वामी।

१९३३ ओरियन्टल मैनुस्क्रुप्ट्स लाइब्रेरी उज्जैन, कैटलाग आफ ओरियन्टल मैनुस्क्रुप्ट्स।

१९३९ महासरस्वती भण्डार इष्टापथपुस्तकालयस्थ सस्कृतहस्तलिखित पुस्तकानाम् सूचीपत्रम्, इटावा, ब्रह्म प्रेस।

१९४२ विनय द्रुमुदसीय . शान्तिनाथ प्राचीन ताडपत्रीय जैन ज्ञान भडार।
लीवड़ी जैन ज्ञान भण्डारनी हस्तलिखित प्रतिओनु सूचीपत्र, वीर सम्वत् २४५५।

कुछ खोज करने वाले विद्वानो ने हस्तलिखित ग्रन्थो की खोज मे दुर्गम स्थानो की यात्राएँ की जिनके प्रयत्नो से लुप्त ज्ञानराशि का पता लगा। ऐसे खोजकर्त्ताओ मे **महापंडित राहुल सांकृत्यायन** का नाम उल्लेखनीय है। श्री राहुलजी ने तिब्बत मे वर्षो रह कर वहाँ से दुर्लभ ग्रन्थो का पता लगाया। अपनी एक खोज सम्बन्धी यात्रा का उल्लेख उनके शब्दो मे इस प्रकार है .—

"मेरी यह यात्रा भूगोल-सम्बन्धी अन्वेषण या मनोरजन के लिए नही हुई है, बल्कि यहाँ के साहित्य के अच्छे प्रकार अध्ययन तथा इससे भार-तीय एव बौद्ध-धर्म-सम्बन्धी ऐतिहासिक तथा धार्मिक सामग्री एकत्र करने के लिए हुई है। इतिहास-प्रेमी जानते है कि सातवी शताब्दी के नालन्द के आचार्य दीपकर श्रीज्ञान के समय तक तिब्बत और भारत (उत्तरी भारत) का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। तिब्बत को साहित्यिक भाषा अक्षर और धर्म देने वाले भारतीय है। उन्होने यहाँ आ कर हजारो संस्कृत तथा कुछ हिन्दी के ग्रन्थो के भी भाषान्तर तिब्बती भाषा मे किये। इन अनुवादो का अनुमान इसी से हो सकता है कि सस्कृत-ग्रन्थो के अनुवादो के कंग्यूर और तंग्यूर के

नाम से जो यहाँ दो सग्रह है उनका परिमाण अनुष्टुप् श्लोको में करने पर २० लाख से कम नही हो सकता। कग्यूर मे उन ग्रन्थो का संग्रह है जिन्हे तिब्बती बौद्ध भगवान् बुद्ध का श्रीमुख-वचन मानते है। यह मुख्यत सूत्र, विनय और तन्त्र तीन भागो मे बाँटा जा सकता है। यह कग्यूर ३०० वेष्टनो मे वंधा है। इसी लिये कंग्यूर मे सौ पोथियाँ कही जाती है, यद्यपि ग्रन्थ अलग-अलग गिनने पर उनकी सख्या सात सौ से ऊपर पहुँचती है। कग्यूर में कुछ ग्रन्थ सस्कृत से चीनी मे हो कर भी भोटिया मे अनुवाद किये गये है। तग्यूर मे कितने ही ग्रन्थो की टीकाओ के अतिरिक्त दर्शन, काव्य, व्याकरण ज्योतिष, वैद्यक, तन्त्र आदि के कई सौ ग्रन्थ है। ये सभी सग्रह दो सौ पोथियो मे बँधे है। इसी सग्रह मे भारतीय-दर्शन-नभोमडल के प्रखर ज्योतिष्क आर्यदेव, दिङ्नाग, धर्मरक्षित, चन्द्रकीर्ति, शान्तरक्षित, कमलाशी आदि के मूल-ग्रन्थ भी जो सस्कृत मे सदा के लिये विनष्ट हो चुके है, शुद्ध तिब्बती अनुवाद मे सुरक्षित है। आचार्य चन्द्रगोमी का चान्द्रव्याकरण सूत्र, धातु, उणादि-पाट, वृत्ति, टीका, पञ्चिका आदि के साथ विद्यमान है। चन्द्रगोमी 'इन्द्रश्चन्द्र काशकृत्स्न' वाले श्लोक अनुसार आठ महावैयाकरणो में से एक महावैयाकरण ही नही थे, वल्कि वे कवि और दार्शनिक भी थे' यह उनकी तग्यूर मे वर्तमान कृतियो 'लोकानन्द नाटक' वादन्याय-टीका आदि से मालूम होता है। अश्वघोष, मतिचित्र (मातृचेता), हरिभद्र, आर्यशूर आदि महाकवियो के कितने ही सस्कृत मे सुलभ ग्रन्थ भी तग्यूर मे है। इसी मे अष्टागहृदय, शालिहोत्र आदि कितने ही वैद्यक-ग्रन्थ टीका-उपटीकाओ के साथ मौजूद है। इसी मे मतिचित्र का पत्र महाराज कनिष्क को, यागीश्वर जगद्दल का महाराज चन्द्र को, दीपकर श्रीज्ञान का राना नयपाल (पालवशी) को तथा दूसरे भी कितने ही ले (पत्र) है। इसी मे ग्यारहवी शताब्दी के आरम्भ के बौद्ध मस्तान। योगी सरह, अवधूती आदि के दोहा कोश आदि हिन्दी-ग्रन्थो के भाषान्तर है।

इन दोनो सग्रहो के अतिरिक्त भोट भाषा नागार्जुन, आर्यदेव, असङ्ग, वसुवन्धु, शान्तरक्षित, चन्द्रकीर्ति, धर्मकीर्ति, चन्द्रगोमी, कमलशील, दीपकर श्रीज्ञान आदि अनेक भारतीय पण्डितो के जीवनचरित्र है। तारानाथ, बुतोन्, पद्मकरपो, वेदुरिया सेरपो, कुन्ग्यल आदि के कितने ही छोजुग (धर्मेतिहास) है, जितने भारतीय इतिहास के कितने ही ग्रन्थो पर प्रकाश पडता है। इन नम्थर (जीवनी), छोजुङ्ग (धर्मेतिहास), के अतिरिक्त कग्यूर

तंग्यूर मे दूसरे भी सैकडों ग्रन्थ है, जिनका यद्यपि भारतीय इतिहास से साक्षात् सम्बन्ध नही है, तो भी वे सहायता पहुँचा सकते है ।

उक्त ग्रन्थ अधिकतर कैलास मानसरोवर के समीपवाले थोलिग गुम्बा (विहार), मध्य तिब्बत के सक्या, समये आदि विहारो मे अनूदित हुए थे। इन गुम्बाओ (विहारो) मे खोजने पर ग्यारहवी शताब्दी से पूर्व के भी कुछ हमारे मूल संस्कृत ग्रन्थ देखने को मिल सकते है ।''

समाचार-पत्र और पत्रिकाओं के प्रकाशन

प्रेस के आविष्कार होने पर भारत मे अनेक भाषाओ मे समाचार-पत्र और मासिक पत्रिकाएँ छपने लगी । इनका प्रारम्भ इस प्रकार हुआ —

साप्ताहिक

प्रथम बंगाली पत्रिका,	समाचार दर्पण	१८१८
,, उर्दू पत्रिका,	जामे-जहान-नामा	१८२२
,, गुजराती पत्रिका,	बम्बई समाचार	१८२२
,, हिन्दी पत्रिका,	उदंत मार्तण्ड	१८२६

दैनिक

प्रथम बंगाली दैनिक कलकत्ता,	संवत् प्रवकर	१८३९
,, अंग्रेजी दैनिक पजाब,	लाहौर क्रानिकल	१८४६
,, मराठी दैनिक पूना,	ज्ञान प्रकाश	१८४८
,, हिन्दी दैनिक कलकत्ता,	समाचार सुधावर्पण	१८५४
,, अंग्रेजी दैनिक इलहाबाद,	पायनियर	१८६५

,, अमृत बाजार पत्रिका बंगला साप्ताहिक से अंग्रेजी दैनिक १८६६

पुस्तकालयों का विकास

प्रेस की सुविधा के कारण जब पुस्तके छपने लगी तो पुस्तकालयो के विकास मे बहुत सरलता हो गई। इस प्रकार जो पुस्तकालय स्थापित हुए, उनके विभिन्न रूप थे। उनका सक्षिप्त वर्गीकरण तथा विकास-क्रम इस प्रकार है—

ब्रिटिशकालीन पुस्तकालयों का वर्गीकरण

ब्रिटिश कालीन भारत मे पिछली शिक्षा नीति के अनुसार जो पुस्तकालय स्थापित हुए, उनको पाँच भागो मे विभाजित किया जा सकता है .—

१ ब्रिटिश सरकार के पुस्तकालय

(क) इम्पीरियल लाइब्रे री।

(ख) मन्त्रिमण्डलो से सलग्न पुस्तकालय ।
(ग) स्वतन्त्र कार्यालयो से सम्वद्ध पुस्तकालय ।
(घ) मातहत और सलग्न कार्यालयो मे सम्वद्ध पुस्तकालय ।

२ प्रान्तीय सरकारों और देशी राज्यों के पुस्तकालय

(क) विभागीय पुस्तकालय ।
(ख) म्युजियम पुस्तकालय ।

३ शिक्षण संस्थाओ के पुस्तकालय

(क) यूनिवर्सिटी पुस्तकालय ।
(ख) कालेज पुस्तकालय ।
(ग) हाईस्कूल तथा मिडिल स्कूलो के पुस्तकालय ।

४. अनुसंधान संस्थाओं, प्रयोगशालाओं, और स्वतन्त्र खोज-संस्थाओं के विशेप पुस्तकालय

५. सार्वजनिक पुस्तकालय

अव इनमे से प्रत्येक भाग के पुस्तकालयो के विपय मे यह देखना है कि उनका काल-क्रम से विकास किस प्रकार हुआ ।

[१] (क) इम्पीरियल लाइब्रेरी

१९०२ इम्पीरियल लाइब्रेरी, कलकत्ता ।

[१] (ख) मंत्रालयों से संलग्न पुस्तकालय

१९०१ मिनिस्ट्री आफ डिफेन्स लाइब्रेरी, नई दिल्ली ।
१९०५ सेंट्रल सेक्रेट्रियट लाइब्रेरी, नई दिल्ली ।
१९०८ मिनिस्ट्री आफ रेलवेज लाइब्रेरी, नई दिल्ली ।
१९१७ मिनिस्ट्री आफ लेवर लाइब्रेरी, नई दिल्ली ।
१९३७ सेंट्रल एजुकेशन लाइब्रेरी, शिक्षा विभाग, दिल्ली ।
१९३४ मिनिस्ट्री आफ फूड ऐण्ड ऐग्रीकल्चर लाइब्रेरी, दिल्ली ।

[१] (ग) स्वतंत्र कार्यालयों से संलग्न पुस्तकालय

१९२१ पार्लियामेंट लाइब्रेरी, पार्लियामेंट हाउस, नई दिल्ली ।

[१] (घ) मातहत और संलग्न कार्यालयों से सम्बद्ध पुस्तकालय

मिनिस्ट्री आफ कामर्स ऐण्ड इण्डस्ट्रीज

१९१२ द पैटेन्ट आफिस लाइब्रेरी, कलकत्ता ।

१९१६ कामर्शियल लाईब्रेरी एण्ड रीडिङ्ग रूम, कलकत्ता।
१९४० ट्रेड मार्क रजिस्ट्री आफिस लाइब्रेरी, कलकत्ता।
१९४० ट्रेड मार्क रजिस्ट्री आफिस लाइब्रेरी, बम्बई।
१९३४ लाइब्रेरी आफ इकोनामिकल ऐडवाइजर टु द ब्रिटिश गवर्नमेंट आफ इण्डिया, नई दिल्ली।
१९४६ लाइब्रे आफ डाइरेक्टरेट आफ इण्डस्ट्रियल स्टैटिस्टिक्स, शिमला।

मिनिस्ट्री आफ कम्युनिकेशन

१८७५ मेटेरोलोजिकल आफिस लाइब्रेरी, कलकत्ता।
१८७५ मेटेरोलोजिकल आफिस लाइब्रेरी, पूना।
१९०० सीनियर एलेक्ट्रिकल इजीनियर्स आफिस लाइब्रेरी, कलकत्ता।
१९०१ कोदाई कनाल आबजर्वेटरी लाइब्रेरी, कोदाई कनाल।
१९३७ लाइब्रेरी आफ द अफिस आफ द डाइरेक्टरेट जनरल आफ सिविल एवैशन, दिल्ली।
१९४२ पोस्ट ऐण्ड टेलीग्राफ्स ट्रेनिङ्ग सेंटर लाइब्रेरी, जबलपुर।
१९४५ रीजनल मेटेरोलोजिकल सेंटर लाइब्रेरी, नागपुर।
१९४५ रीजनल मेटेरोलोजिकल सेंट्रल लाइब्रेरी, मद्रास।

मिनिस्ट्री आफ डिफेन्स

१९२७ एयर हेडक्वाटर्स रिफरेंस ऐण्ड टेकनिकल लाइब्रेरी, नई दिल्ली।

मिनिस्ट्री आफ एजुकेशन

१८९१ इम्पीरियल रेकार्ड रूम आफ इण्डिया लाइब्रेरी, दिल्ली।
१९०२ सेंट्रल आर्कलोजिकल लाइब्रेरी, नई दिल्ली।
१९४५ लाइब्रेरी आफ द डिपार्टमेंट आफ द आर्कलोजी, कलकत्ता।

मिनिस्ट्री आफ फाइनेन्स

१९३६ लाइब्रेरी आफ द आफिस आफ द ए० जी० उडीसा (राँची)।
१९४४ सेंट्रल वोर्ड आफ रेव्न्यू लाइब्रेरी, नई दिल्ली।

मिनिस्ट्री आफ फूड ऐण्ड ऐग्रीकल्चर

१८५६ ज्योलोजिकल सर्वे आफ इण्डिया लाइब्रेरी, कलकत्ता।
१८६२ ज्योडेटिक ब्रान्च लाइब्रेरी, सर्वे आफ इण्डिया, देहरादून।
१८९६ लाइब्रेरी आफ द इण्डस्ट्रियल सेक्शन, इंडियन म्युजियम, कलकत्ता।

१९१६ लाइब्रेरी आफ द ज्योलोजिकल सर्वे आफ इण्डियन-इण्डियन म्युजियम, कलकत्ता ।

१९३५ डाइरेक्ट्रेट आफ मार्केटिङ्ग ऐण्ड इन्स्पेक्शन लाइब्रेरी, नई दिल्ली ।

मिनिस्ट्री आफ होम अफेयर्स

१९४७ इण्डियन ऐडमिनिस्ट्रेटिव ट्रेनिङ्ग स्कूल लाइब्रेरी, दिल्ली ।

मिनिस्ट्री आफ इन्फार्मेशन ऐण्ड ब्राडकास्टिंग

१९०४ प्रेस इन्फार्मेशन ब्यूरो लाइब्रेरी, नई दिल्ली ।

१९३० आल इण्डिया रेडियो लाइब्रेरी, कलकत्ता ।

१९३८ आल इण्डिया रेडियो लाइब्रेरी, मद्रास ।

१९३८ आल इण्डिया रेडियो लाइब्रेरी, लखनऊ ।

१९४१ मोनोरिङ्ग सर्विस ए० आई० आर० लाइब्रेरी, शिमला ।

१९४१ लाइब्रेरी आफ द स्टेशन डाइरेक्टर, आल इण्डिया रेडियो, नई दिल्ली ।

१९४१ पब्लिकेशन डिवीजन लाइब्रेरी, दिल्ली ।

१९४७ आल इण्डिया रेडियो लाइब्रेरी, कटक ।

मिनिस्ट्री आफ लेबर

१९४६ डाइरेक्टरेट जनरल आफ रिसेटेलमेंट ऐण्ड इम्प्लवायमेंट लाइब्रेरी, नई दिल्ली ।

१९४६ लेबर ब्यूरो लाइब्रेरी, शिमला ।

मिनिस्ट्री आफ वर्क्स, प्रोडक्शन ऐण्ड सप्लाई

१९२२ डाइरेक्ट्रेट जनरल आफ सप्लाई ऐण्ड डिस्पोजल्स लाइब्रेरी, नई दिल्ली ।

१९३१ सी० डब्ल्यू० ऐण्ड पी० सी० लाइब्रेरी ऐण्ड इन्फार्मेशन ब्यूरो, शिमला ।

१९३७ लाइब्रेरी आफ द सेंट्रल वाटर पावर इर्रिगेशन ऐण्ड नैवीगेशन रिसर्च स्टेशन, पूना ।

१९४६ सेंट्रल वाटर ऐण्ड पावर कमीशन लाइब्रेरी, शिमला ।

[२] (क)—प्रान्तीय सरकारों और देशी रियासतों के विभागीय पुस्तकालय ।

१८५४ मैसूर एजुकेशनल लाइब्रेरी, डी०पी० आई० आफिस, मैसूर, बंगलौर ।
१८६७ सेक्रेट्रियट लाइब्रेरी, कलकत्ता ।
१८९१ असाफिया स्टेट लाइब्रेरी, हैदराबाद ।*
१९१४ आर्कलाजिकल डिपार्टमेंट लाइब्रेरी, हैदराबाद ।
१९०१ लाइब्रेरी आफ द आफिस आफ द सुपरिन्टेन्डेण्ट, गवर्नर, लिवस्टाक फार्म हिसार ।
१९०४ गवर्नमेंट ऐग्रिकल्चर लाइब्रेरी, नवाबगंज, कानपुर ।
१९२० डाइरेक्ट्रेट आफ इन्डस्ट्रीज लाइब्रेरी, कलकत्ता ।
१९२१ यू० पी० लेजिस्लेटिव एसेम्बली, लाइब्रेरी लखनऊ ।
१९२२ लेजिस्लेटिव एसेम्बली लाइब्रेरी, त्रिवेन्द्रम ।
१९२७ रिफ्रेंस लाइब्रेरी डिपार्टमेंट आफ आर्केलोजी, त्रिचूर ।
१९३२ लाइब्रेरी आफ द आफिस आफ द ऐडवोकेट जनरल, रीवाँ ।
१९४७ कोआपरेटिव डिपार्टमेंट लाइब्रेरी रीवाँ ।

[२] (ख) म्युजियम लाइब्रेरी

१८८५ म्युजियम लाइब्रेरी जूनागढ ।
१८८८ म्युजियम लाइब्रेरी, राजकोट ।
१९१७ आर्कलोजिकल म्युजियम रिफरेंस लाइब्रेरी, मथुरा ।
१९२८ हैदराबाद म्युजियम लाइब्रेरी, हैदराबाद ।
१९३८ उडीसा म्युजियम लाइब्रेरी, उडीसा ।
१९४० आसाम प्रोविंशियल म्युजियम लाइब्रेरी, गौहाटी ।
१९४६ म्युजियम लाइब्रेरी, जामनगर ।

---

* ८४००० विभिन्न विपयो की पुस्तके, १३८०४ दुर्लभ ग्रन्थ, और प्राचीनतम ग्रन्थ । यह स्कालर्स के लिए है । पार्चमेंट पेपर, डियर-स्किन पर पुराने ग्रन्थ है । दो इञ्च की एक पुस्तक मे गीता लिखी है । १४८७ A. D की एक अनुपम पुस्तक है । सवसे पुरानी प्रका० पुस्तक १०७२ A D की है १५ वी शताब्दी की एक पुस्तक मे इंडस्ट्रियल साइस है जिसमे कागज, स्याही आदि वनाने की विधियाँ है ।

१९३१ सेठ वादीलाल साराभाई जनरल होस्पिटल ऐण्ड मेठ चिनाई मैटरनिटी होम मेडिकल लाइब्रेरी, अहमदाबाद।

१९३३ इण्डियन स्टैटिस्टिक इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी प्रेमी० कालेज, कलकत्ता।
१९३४ सैदिया लाइब्रेरी, जामबाग, ट्रूप बाजार, हैदराबाद।
१९३६ इंडियन इंस्टीट्यूट आफ सुगर टेक्नोलोजी लाइब्रेरी, कानपुर।
१९३६ टाटा इन्स्टीट्यूट आफ सोशल साइन्सेज लाइब्रेरी, अँधेरी, बम्बई।
१९३८ रामकृष्ण मिशन इस्टीट्यूट आफ कल्चर लाइब्रेरी, कलकत्ता।
१९३९ अनूप सस्कृत लाइब्रेरी फोर्ट, बीकानेर।
१९४१ दिल्ली पोलीटेकनिक लाइब्रेरी, दिल्ली।
१९४५ टाटा इस्टीट्यूट फन्डामेन्टल रिसर्च लाइब्रेरी, बम्बई।
१९४६ नेशनल मेटलयूरजीकल लेबोरेटरी लाइब्रेरी, जमशेदपुर।
१९४६ बीरबल साहनी इन्स्टीट्यूट आफ पेलियोबोटैनी लाइब्रेरी, लखनऊ।

[५] सार्वजनिक पुस्तकालय (पब्लिक लाइब्रेरीज़)

१८१२ मद्रास लिटरेरी सोसाइटी लाइब्रेरी, नुंगमबेगम, मद्रास।
१८१८ यूनाइटेड सर्विस लाइब्रेरी, पूना।
१८२९ त्रिवेन्द्रम् पब्लिक लाइब्रेरी, ट्रिवेन्द्रम्।
१८४० सार्वजनिक वाचनालय, नासिक सिटी।
१८४५ पीपुल्स फ्री रीडिङ्ग रूम ऐण्ड लाइब्रेरी, बम्बई।
१८४७ रतनगिरि नागर वाचनालय, रतनगिरि।
१८४८ जनरल लाइब्रेरी, बेलगाँव।
१८४८ पूना सिटी जनरल लाइब्रेरी, पूना।
१८५० करवी नागर वाचनमन्दिर, कोल्हापुर।
१८५० ऐण्ड्रूज लाइब्रेरी ऐण्ड रीडिङ्ग रूम, सूरत।
१८५१ बगाल चैम्बर्स आफ कामर्स लाइब्रेरी, कलकत्ता।
१८५२ श्रीराम वाचन मन्दिर, सावतवाडी, रतनगिरी।
१८५४ इन्दौर जनरल लाइब्रेरी, इन्दौर।
१८५४ उत्तरपाडा पब्लिक लाइब्रेरी, उत्तरपाडा, हुगली।
१८५४ धोंडो शाम राव गरुड लाइब्रेरी, धूलिया, प० खानदेश।
१८५५ पब्लिक लाइब्रेरी, गया।
१८५७ जिला वाचन मन्दिर, शोलापुर।
१८५७ नीलगिरि लाइब्रेरी, ओटकमण्ड, नीलगिरि।

१८५८ कोननगर पब्लिक लाइब्रेरी ऐण्ड फ्री रीडिङ्ग रूम, कोननगर, हुगली।
१८५८ रामचन्द दीपचन्द लाइब्रेरी, भडौच।
१८६० बाबू जी देशमुख वाचनालय, अकोला।
१८६३ राष्ट्रीय वाचनालय, अकोला।
१८६४ करवार सेन्ट्रल लाइब्रेरी करवार (उत्तर कन्नड)।
१८६४ कबासजी धनजी भाई गजदर रीडिङ्ग रूम ऐण्ड लाइब्रेरी, गान-देवी सूरत।
१८६४ पब्लिक लाइब्रेरी अल्फ्रेड पार्क, इलाहाबाद।
१८६५ गवर्नमेन्ट लाइब्रेरी, जूनागढ।
१८६५ लोकमान्य वाचनालय, अरबी, वर्धा।
१८६६ महाराजा पब्लिक लाइब्रेरी, जयपुर।
१८६६ सार्वजनिक वाचनालय, योला, नासिक।
१८६७ अमरावती नागर वाचनालय, अमरावती।
१८६८ लैग लाइब्रेरी, जुबली गार्डेन, राजकोट।
१८६९ सगली नगर वाचनालय संगरी, सतारा साउथ।
१८७० अप्पाराव भोलानाथ लाइब्रेरी, अहमदाबाद।
१८७० आप्टे वाचन मंदिर, इचलकरजी, कोल्हापुर।
१८७० इरनाकुलम पब्लिक लाइब्रेरी ऐण्ड-रीडिङ्ग रूम, इरनाकुलम।
१८७० कूचबिहार स्टेट लाइब्रेरी, कूचबिहार।
१८७० दयाराम फ्री रीडिङ्ग रूम ऐण्ड लाइब्रेरी, जामनगर।
१८७० यूनाइटेड सर्विस इस्टीट्यूशन्स आफ इडिया लाइब्रेरी, शिमला।
१८७१ मगन भाई काशी भाई सार्वजनिक पुस्तकालय, भदरान, खैर।
१८७२ कार्माइकेल लाइब्रेरी, बनारस।
१८७२ विक्टोरिया जुबली लाइब्रेरी, अमलनेर, पूर्व खानदेश।
१८७२ विक्टोरिया डायमड जुबली लाइब्रेरी, फलतान, उ० सितारा।
१८७३ अमरेली पब्लिक लाइब्रेरी, सकारबाद, अमरेली।
१८७३ चन्देरनगर पुस्तकागार, चन्देरनगर, हुगली।
१८७३ पब्लिक लाइब्रेरी एण्ड रीडिङ्ग रूम, त्रिचूर।
१८७३ पारीख च्हन्नूलाल केशवलाल सार्वजनिक पुस्तकालय, पटेलाड, खैरा।
१८७४ शिवपुर पब्लिक लाइब्रेरी शिवपुर, हवडा।
१८७४ सार्वजनिक पुस्तकालय, सोजिया।
१८७५ अलबर्ट इडवर्ड इस्टीट्यूट ऐण्ड लाइब्रेरी, पूना।

१८७६ द्वारका सार्वजनिक पुस्तकालय, द्वारका, ओखमडल, अमलनेरी ।
१८७६ मूदियली लाइब्रेरी, कलकत्ता ।
१८७७ वल्लभदास वालजी पब्लिक लाइब्रेरी, जलगांव, पूर्व खानदेश ।
१८७८ पारीख वल्लभराम हेमचन्द जनरल लाइब्रेरी, विशनगोर (मेहसना) ।
१८८२ जे० वी पेटीट रीडिङ्ग रूम, लाइब्रेरी ऐण्ड पब्लिक हाल, विलिमोरा, सूरत ।
१८८२ टालटला पब्लिक लाइब्रेरी, कलकत्ता ।
१८८३ वाग वाजार रीडिङ्ग रूम, लाइब्रेरी, कलकत्ता ।
१८८३ विहार हितैषी लाइब्रेरी, पटना ।
१८८३ हाल आफ थियासोफी, मदुराई ।
१८८४ वत्रा पब्लिक लाइब्रेरी, हवडा ।
१८८४ पजाव पब्लिक लाइब्रेरी, लाहौर ।
१८८५ वेली साधारण ग्रन्थागार, वेली हवडा ।
१८८५ सार्वजनिक वाचनालय, वीजापुर ।
१८८६ अद्यार लाइब्रेरी, अद्यार, मद्रास ।
१८८६ गोपाल राव पब्लिक लाइब्रेरी कुम्भकोनम, तंजौर ।
१८८५ मोहिरी पब्लिक लाइब्रेरी, हवडा ।
१८८६ लायल लाइब्रेरी, ऐण्ड रीडिङ्गरूम, मेरठ ।
१८८६ हसराज लाइब्रेरी, अम्वाला ।
१८८७ देसाई नानजी गोकल जी ऐण्ड सेठ जवरशाह, हर जीवन लाइब्रेरी, पोरवन्दर ।
१८८७ श्री विक्टोरिया जुवली लाइब्रेरी, वनथनेर, काठियावाड ।
१८८७ हेमवरुआ लाइब्रेरी, तेजपुर ।
१८८८ सुव्रवन रीडिङ्ग क्लव, कलकत्ता ।
१८८९ भारती भवन पुस्तकालय, इलाहावाद ।
१८८९ चैतन्य लाइब्रेरी ऐण्ड वीडन स्क्वायर लिटरेरी क्लव, कलकत्ता ।
१८९० कोनेमरा पब्लिक लाइब्रेरी, मद्रास ।
१८९० वारटन लाइब्रेरी, भावनगर ।
१८९० श्रीमत फतेहसिंह राव सार्वजनिक लाइब्रेरी, भदरा, पाटन ।
१८९१ ब्लावस्की लाज लाइब्रेरी, थियासोफिकल शोसाइटी, वम्बई ।
१८९१ वशबेरिया पब्लिक लाइब्रेरी, वशबेरिया, हुगली ।
१८९२ ए० एस० दहि लक्ष्मी लाइब्रेरी, नदियाद, खैर ।

१८९३ आर्य भाषा पुस्तकालय, नागरी० प्र० सभा० बनारस।
१७९३ पब्लिक लाइब्रेरी, पदरा, बड़ौदा।
१८९३ बंगीय साहित्य परिषद, कलकत्ता।
१८९३ मराठी ग्रंथ सग्रहालय, थाना, बम्बई।
१८९४ काटन लाइब्रेरी, कुबरी, आसाम।
१८९५ राजाराम सीताराम दीक्षित लाइब्रेरी, सीतावलदी नागपुर।
१८९६ चानसभा तालुका सार्वजनिक लाइब्रेरी, चानसभा।
१८९६ मदुराई डि० बो० टुअरिङ्ग लाइब्रेरी, वेरियाकुलम्, मदुराई।
१८९६ श्रीभवनराव पब्लिक लाइब्रेरी, आध्र-नार्थ सितारा।
१८९७ राजेन्द्र विक्टोरिया डाइमंड जुबली पब्लिक लाइब्रेरी, पटियाला।
१८९८ महिभाई दयाभाई सार्वजनिक पुस्तकालय धर्मज, खेडे।
१८९८ मुम्बई माराठी ग्रन्थ सग्रहालय, ठाकुरद्वारा, बम्बई।
१८९८ श्री गौतमी लाइब्रेरी, राजा मुन्दरी, ईस्ट गोदावरी।
१८९८ श्री प्रताप सिह पब्लिक लाइब्रेरी, श्रीनगर, कश्मीर।
१८९८ श्री शिवजी सार्वजनिक पुस्तकालय, न्यारा सूरत।
१८९८ श्री सयाजी वैभव सार्वजनिक पुस्तकालय, नवसारी, सूरत।
१८९९ श्री रामचन्द्र लाइब्रेरी, वारीवद।
१९०० नागरी प्रचारिणी सभा लाइब्रेरी, आरा।
१९०० पडित मोतीलाल म्युनिस्पल पब्लिक लाइब्रेरी, अमृतसर।
१९०० स्टेट पब्लिक लाइब्रेरी, भरतपुर।
१९०१ म्युनिस्पल विक्टोरिया मेमोरियल पब्लिक लाइब्रेरी ऐण्ड रीडिङ्ग रूम, तेलीचैरी।
१९०१ साघुशेश्य ओरियन्टल लाइब्रेरी, कुम्बकोनम, तंजौर।
१९०२ माजू पब्लिक लाइब्रेरी, माजू हवडा।
१९०२ पैट्रियाटिक लाइब्रेरी ऐण्ड फ्री रीडिङ्ग रूम, कलकत्ता।
१९०३ आसाम गवर्नमेंट पब्लिक लाइब्रेरी, शिलाङ्ग, आसाम।
१९०३ कर्जन हाल लाइब्रेरी, गौहाटी।
१९०४ धकोरिया पब्लिक लाइब्रेरी, कलकत्ता।
१९०४ यंगमेंस हिन्दू असोसिएशन लाइब्रेरी, इलोर, वेस्ट गोदावरी।
१९०५ एम० एस० रामवाई साहब वाचनालय, जमखंदी, बीजापुर।
१९०५ राममोहन लाइब्रेरी ऐण्ड फ्री रीडिङ्ग रूम, कलकत्ता।
१९०५ सर्वेण्ट्स आफ इण्डिया सोसाइटी लाइब्रेरी, रायपेटम।

१९०७ कर्जन सार्वजनिक पुस्तकालय, कर्जन वडौदा ।

१९०७ नेलोर प्रोग्रेसिव यूनियन फ्री रीडिङ्ग रूम ऐण्ड लाइब्रेरी, नेलोर ।

१९०७ विक्टोरिया इडवर्ड हाल, मदुराई ।

१९०७ श्री सयाजी, श्वेतीचकोव पुस्तकालय, मिनोर, वडौदा ।

१९०७ सेठ लक्ष्मीचन्द सुन्दर जी पब्लिक लाइब्रेरी सिद्धपुर, मेहसना ।

१९०८ अजमेर म्युनिस्पल पब्लिक लाइब्रेरी, अजमेर ।

१९०८ सरदार दयालसिंह पब्लिक लाइब्रेरी, लाहौर ।

१९०८ सेठ भाउलाल भाईमोहनलाल पब्लिक लाइब्रेरी, मेहलाव ।

१९०९ श्रीसयाजी गोल्डेन जुबली सार्वजनिक पुस्तकालय, वीजापुर, मेहसना ।

१९०९ सेठ एम० आर० पब्लिक लाइब्रेरी, ऊँझा ।

१९१० अमीरुद्दौला गर्वर्नमेंट पब्लिक लाइब्रेरी, लखनऊ ।

१९१० एम० एन० अमीन सार्वजनिक पुस्तकालय, नदियाद, खैर ।

१९१० नित्यानद लाइब्रेरी ऐण्ड फ्री रीडिङ्ग रूम, कलकत्ता ।

१९१० भद्रेश्वर पब्लिक लाइब्रेरी, भद्रेश्वर, हुगली ।

१९१० श्रीमान् मुनी महाराज श्रीमोहनलाल जी जैन सेंट्रल लाइब्रेरी, बम्बई,

१९१० सर्वेण्ट्स आफ इण्डिया सोसाइटी लाइब्रेरी, पूना ।

१९१० सेन्ट्रल लाइब्रेरी, वडौदा ।

१९११ मन्नालाल पुस्तकालय, गया ।

१९११ नार्थ इण्टली कमला लाइब्रेरी, टेगरा, कलकत्ता ।

१९११ राजानिक कान्त गुप्त मेमोरियल लाइब्रेरी, कलकत्ता ।

१९११ राममोहन फ्री लाइब्रेरी ऐण्ड रीडिङ्ग रूम, बेजवाडा ।

१९११ सेन्ट्रल जैन ओरियन्टल लाइब्रेरी, आरा ।

१९११ हमीदिया स्टेट लाइब्रेरी, भूपाल ।

१९११ करन थाई तामिल संगम लाइब्रेरी, करुन्तमकदी, तजौर ।

१९१२ सेन्ट्रल पब्लिक लाइब्रेरी, सङ्गसूर ।

१९१२ श्रीभाषा सजीवनी सग्रहम अमृतालूर, तेनाली ।

१९१२ हिन्दी पुस्तकालय, हिदी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद ।

१९१३ छगनलाल पीताम्बरदास परीख, फ्री पब्लिक लाइब्रेरी, मेहसाना ।

१९१३ ड्यूक पब्लिक लाइब्रेरी, हबडा ।

१९१३ महाराष्ट्र वाचनालय तिलक मन्दिर, जबलपुर ।

१९१३ श्री के० आर० बी० के० लाइब्रेरी, काकोमाड ईस्ट गोदावरी ।

१९१३ श्रीचित्र तिरुनाल लाइब्रेरी ऐण्ड रीडिङ्ग रूम, वाचीमूर, त्रिवेन्द्रम ।
१९१३ सार्वजनिक पुस्तकालय, कादी मेहमना, उ० गुजरात ।
१९१३ सुहृद परिषद ऐण्ड हेमचन्द्र ग्रन्थागार, बाँकीपुर, पटना ।
१९१३ हिन्दी प्रचार लाइब्रेरी, मद्रास ।
१९१४ पलसना सार्वजनिक पुस्तकालय, पलसना, सूरत ।
१९१४ पब्लिक लाइब्रेरी, मैसूर ।
१९१४ पब्लिक लाइब्रेरी शेशाद्रि अय्यर मेमो० हाल, बगलौर ।
१९१४ मारवाडी हिन्दी पुस्तकालय, बम्बई ।
१९१४ लैंडोल पब्लिक लाइब्रेरी, लैंडोल, बीजापुर मेहसना ।
१९१४ श्री वारमेन्द्र लाइब्रेरी, नागौद, सतना ।
१९१४ श्री रामचन्द्र ग्रन्थालय, पोडूर (वेस्ट गोदावरी) ।
१९१४ शारदा सदन पुस्तकालय, लालगंज, मुजफ्फरपुर
१९१५ प्रेमभवन पुस्तकालय, इलाहाबाद ।
१९१५ मारवाडी पब्लिक, लाइब्रेरी, दिल्ली ।
१९१५ माइकेल मधुसूदन लाइब्रेरी, कलकत्ता ।
१९१५ वराहमिहिराचार्य पुस्तकालय, पटना ।
१९१५ श्री एस० वी० लाइब्रेरी, पिथोपुरम् (ईस्ट गोदावरी) ।
१९१५ सुमेर पब्लिक लाइब्रेरी, जोधपुर ।
१९१६ बेली सरस्वती पाठागार, बेली, हवडा ।
१९१६ श्री ईश्वर पुस्तक भाण्डागारम्, रामराव पैट, ककिडा ।
१९१६ श्री सयाजी सार्वजनिक लाइब्रेरी, डभोई, बडौदा ।
१९१६ संस्कृत साहित्य परिषद्, कलकत्ता ।
१९१७ नेशनल लाइब्रेरी, बन्दर बम्बई ।
१९१७ महाराजा गजपति राव हिन्दू रीडिङ्ग रूम ऐण्ट लाइब्रेरी, विजाग ।
१९१७ माधव मेमोरियल लाइब्रेरी, सलकिया ।
१९१७ श्री सिद्धेश्वर मुफ्त वाचनालय, अचाद्रि ।
१९१७ सार्वजनिक वाचनालय ऐण्ड जिला ग्रन्थालय, अलीगंज, कोलाबा ।
१९१८ कृष्ण राजेन्द्र डिस्ट्रिक्ट लाइब्रेरी ऐण्ड रीडिङ्ग रूम, [illegible], मैसूर ।
१९१८ तंजोर महाराज सरफोजी सरस्वती महल, लाइब्रेरी, तंजोर (स्थापित १९३५) ।
१९१८ नरेन्द्र ग्रन्थालयम्, गोजाना ।

१९१८ परीख पी० एच० महाजन लाइब्रेरी, कपद्वानगज, खैर ।
१९१८ शान्ति इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी, कलकत्ता ।
१९१८ श्री कृष्ण राजेन्द्र लाइब्रेरी, तामकुर ।
१९१८ श्री महावीर पुस्तकालय, कलकत्ता ।
१९१८ सारस्वत निकेतन, सुब्रोईमहल, वेतायेलम, गुटूर ।
१९१९ म्युनिस्पिल लाइब्रेरी टाउनहाल, मुजफ्फरपुर ।
१९१९ श्रीगणेश मुफ्त वाचनालय और ग्रन्थालय बुधवारपेठ, पूना ।
१९२० गुजरात विद्यापीठ ग्रन्थालय (गुजरातीज लाइब्रेरी) अहमदाबाद ।
१९२० तिलक लाइब्रेरी रानीगंज, बरद्वान ।
१९२० तिलक मेमोरियल लाइब्रेरी, भंसूरी ।
१९२० पब्लिक रिलेशन्स रीडिङ्ग रूम, देवगढ, बमरा ।
१९२० बडतल्ला मुस्लिम लाइब्रेरी बडतल्ला, २४ परगना ।
१९२० बधुली लाइब्रेरी, कलकत्ता ।
१९२० रामवाला भवत पुस्तकभाण्डागारम्, राजा मुन्दरी ।
१९२० श्री रनवीर लाइब्रेरी, जम्मू (स्था० १८७९) ।
१९२० श्रीब्रह्म रम्भा मालेश्वर आध्रग्रन्थालय, बेजवाडा ।
१९२० सौराष्ट्र हाईस्कूल ओल्ड ब्वायज असोशिएशन लाइब्रेरी ऐण्ड रीडिंग रूम, मदुराई ।
१९२१ कैम्बे एजुकेशन सोसाइटीज सेठ जे० जे० लाइब्रेरी, कैम्बे (खेर) ।
१९२१ गयाप्रसाद लाइब्रेरी ऐण्ड रीडिंग रूम, कानपुर ।
१९२१ द्वारकादार लाइब्रेरी, लाहौर ।
१९२१ महात्मा खुशीराम पब्लिक लाइब्रेरी ऐण्ड रीडिंग रूम, देहरादून ।
१९२१ मुक्तद्वार ग्रथालय सदाशिव पेठ, पूना ।
१९२१ रघुनन्दन लाइब्रेरो, इमारमठ, पुरी ।
१९२१ श्री खोजवाँ आदर्श पुस्तकालय, बनारस ।
१०२१ समाजपति स्मृति समिति लाइब्रेरी, कलकत्ता ।
१९२२ श्री सरस्वती विद्यारण्य फ्री लाइब्रेरी, हुबली, धरवार ।
१९२२ सदर मुस्लिम लाइब्रेरी, नागपुर ।
१९२३ आध्र ग्रन्थालय, कुर्नूल ।
११२३ गगाप्रसाद वर्मा मेमोरियल लाइब्रेरी, लखनऊ ।
१९२४ सिनहा लाइब्रेरी पटना ।
१९२५ मुस्लिम पब्लिक लाइब्रेरी, काजी कोदे ।

१९२५ रामकृष्ण मिशन लाइब्रेरी, पुरी।

१९२६ वाइ० एम० सी० ए० लाइब्रेरी, मदुरा।

१९२६ सन्तूलाल पुस्तकालय, राँची।

१९२६ हैदरी सरकुलेटिंग लाइब्रेरी, हैदराबाद।

१९२८ महेश्वर पब्लिक लाइब्रेरी, महेन्द्र, पटना।

१९२८ सेन्ट्रल लाइब्रेरी, ग्वालियर।

१९२९ जमशेदजी नशरवानजी पेटिट रीडिंग रूम और लाइब्रेरी, दादर, बम्बई।

१९२९ म्युनिस्पिल पब्लिक लाइब्रेरी, तेनाली।

१९२९ लालजी मेमोरियल रीडिंग रूम ऐण्ड लाइब्रेरी, करुङ्गपल्ली।

१९२९ सिलवर जुबली पब्लिक लाइब्रेरी ऐण्ड रीडिंग रूम, चिकवागलूर।

१९३० एम० सी० हनसोती हिन्दू पुस्तकालय, हनसोत, भड़ौच।

१९३० माहिमा गवर्नमेंट लाइब्रेरी, माहन।

१९३२ रामकृष्ण मठ लाइब्रेरी काँचीपुरम्।

१९३२ श्री केशरी ऐण्ड मराठा लाइब्रेरी, पूना।

१९३२ श्री रामकृष्ण आश्रम लाइब्रेरी, धनतोली, नागपुर।

१९३३ म्युनिस्पिल लाइब्रेरी ऐण्ड रीडिंग रूम अमलपुर, ई० गोदावरी।

१९३४ श्री वेला दीदला हनुमयरैया ग्रन्थालयम, गांधीनगर, बेजवाड़ा।

१९३४ सौलत पब्लिक लाइब्रेरी, रामपुर।

१९३५ म्युनिस्पिल सेन्ट्रल लाइब्रेरी, शिमला।

१९३६ बी० आर० सेन पब्लिक लाइब्रेरी, मालदा।

१९३६ रामकृष्ण सेन्ट्रल लाइब्रेरी, मद्रास।

१९३६ शारदा लाइब्रेरी, अनाक पल्ली।

१९३७ किङ्ग इम्परर जार्ज पंचम सिल्वर जुबली लाइब्रेरी, बीकानेर।

१९३७ बी० के० मेमोरियल लाइब्रेरी ऐण्ड रीडिंग रूम, अम्बाला।

१९३९ तिलजल पब्लिक लाइब्रेरी ऐण्ड रीडिंग रूम, कलकत्ता।

१९४१ महिला मण्डल लाइब्रेरी, उदयपुर।

१९४१ चिन्तामणि मेमोरियल लाइब्रेरी, सेवा समिति भवन, इलाहाबाद।

१९४३ देवचन्द्र पुस्तकालय, मथुरा।

१९४३ धर्मपुरम् आधीनम् लाइब्रेरी, मयूरम् ।
१९४३ हिन्दू धर्म सस्कृति मन्दिर, वनतोली, नागपुर ।*

इन पुस्तकालयो का विस्तृत विवरण देना यहाँ सम्भव नही है किन्तु इनमे से दो पुस्तकालयो के विषय मे यहाँ सक्षेप मे जान लेना आवश्यक है —

१. इम्पीरियल लाइब्रेरी, और २. हिन्दी सग्रहालय ।

(१) इम्पीरिय लाइब्रेरी

आजकल जिसे 'नेशनल लाइब्रेरी' या स्वतन्त्र भारत का राष्ट्रीय पुस्तकालय कहते है, उसकी स्थापना ब्रिटिशकाल मे हुई थी । इसका सक्षिप्त विकास इस प्रकार हुआ —

'इङ्गलिश मैन' समाचार-पत्र के सम्पादक श्री जे० एच० स्टाकेलर महोदय थे । उनके मन मे कलकत्ता मे एक पब्लिक लाइब्रेरी स्थापित करने का विचार उठा । उन्होने १८३५ ई० मे इस सम्बन्ध मे एक अभिभाषण प्रसारित करवाया जिसमे इस पुस्तकालय की योजना रखी । कलकत्ता के १३६ प्रमुख सज्जनो ने उनकी इस योजना का समर्थन किया । उसके फलस्वरूप ३१ अगस्त १९३५ 'टाउनहाल' मे सरजॉन पेटर ग्रांट की अध्यक्षता मे एक पब्लिक मीटिङ्ग हुई । उसमे २४ सदस्यो की एक अस्थायी समिति बनाई गई जिसने दो हिन्दुस्तानी सदस्य भी थे । जे० एच० स्टॉकेलर महोदय प्रथम अवैतनिक मन्त्री चुने गए और ८ मार्च १८३६ से पुस्तकालय का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया ।

पुस्तकालय का श्रीगणेश व्यक्तिगत लोगो से मिली पुस्तको तथा गवर्नर जनरल की आज्ञा से फोर्ट विलियम कालेज से प्राप्त ४६७५ पुस्तको के सग्रह को लेकर हुआ । पुस्तकालय के लिए 'टाउनहाल' मे स्थान प्राप्त करने की कोशिश की गई किन्तु सफलता न मिली । प्रारम्भ मे पुस्तकालय को डा० एफ० वी० स्टाण्ड्रा के मकान मे रखा गया । उसके बाद १८४१ ई० मे फोर्ट विलयम कालेज के हिस्से मे स्थान मिल गया और वहाँ पर उसे व्यवस्थित किया गया ।

---

* ऊपर विभिन्न प्रकार के कुछ प्रसिद्ध पुस्तकालयो के नाम विकास-क्रम के अनुसार दिये गए है । प्रत्येक वर्ग के इन पुस्तकालयो मे अनेक बडे पुस्तकालय ऐसे भी है जिनका स्थापना-काल उपलब्ध साधनो से ज्ञात नही हो सका । जैसे पटना की खुदाबख्श लाइब्रेरी आदि । अत उनके नाम इसमे नही दिए जा सके ।

सन् १८४० ई० मे सरकार से कुछ जमीन मिल गई थी। उसी पर **'मेटकाफ भवन'** बना और जून सन् १९४४ मे उसी भवन के ऊपरी भाग मे पुस्तकालय रख लिया गया।

सदस्यता के नियम

प्रारम्भ मे पुस्तकालय के सदस्यो की तीन श्रेणियाँ बनाई गई। उनमे से तीसरी श्रेणी के लोगो को पुस्तके या पत्रिकाएँ ले जाने की अनुमति नही थी। १८५७ मे शुल्क की दर फिर से निर्धारित की गई। १८६४ ई० मे आजीवन सदस्यता का नियम चालू करके एक चौथी श्रेणी भी बनाई गई। इस श्रेणी के सदस्यो को सिर्फ पुरानी पुस्तके मिल सकती थी। पुस्तकालय ९ बजे सबेरे से ले कर शाम तक (छुट्टियो को छोड कर) खुला रहता था। १८४९ ई० मे प्रवेश-शुल्क हटा लिया गया तथा एक रुपया वाली श्रेणी बनाई गई। इस तरह पुस्तकालय की आमदनी मे कमी हुए बिना ही उसकी उपयोगिता वढ गई। १८४९ के अगस्त मे पाठको की सख्या सिर्फ १३७ थी, मगर दिसम्बर मे ३२३ हो गई।

म्युनिस्पल लाइब्रेरी के रूप में

१५ जनवरी १८९० को नगरपालिका के सदस्यो की एक बैठक हुई। उसमे नगरपालिका ने पुस्तकालय का सारा खर्च अपने ऊपर ले लिया। पुस्तकालय की व्यवस्था के लिए एक सयुक्त समिति बनाई गई जिसके आधे सदस्य नगरपालिका की ओर से और आधे पुस्तकालय के सरक्षको तथा सदस्यो के द्वारा चुने गए। २० अप्रैल १८९० से पुस्तकालय की व्यवस्था नगरपालिका के हाथ मे पूरी तौर से सौप दी गई। पुस्तकालय के लिए फिर से नियम बनाए गए और पुस्तको की एक साधारण सूची (डिक्शनरी कैटलाग के रूप मे) तैयार करने का काम शुरू किया गया। १८९० ई० के जुलाई महीने मे एक नि शुल्क सार्वजनिक वाचनालय खोला गया। चलते फिरते वाचनालय के साथ एक रिफ्रेंस लाइब्रेरी की भी स्थापना हुई। इन कार्यो से पुस्तकालय बहुत ही लोकप्रिय हो गया। धीरे-धीरे सदस्यो की सख्या भी बढ़ने लगी। १८९२-९३ मे सदस्यो की संख्या ३२७८० हो गई। बंगाल सरकार ने भी ५००० रुपये की ग्रॉट पुस्तकालय के पुनर्गठन कार्य के लिए दी।

इम्पीरियल लाइब्रेरी

सरकारी कई विभागो की पुस्तको को मिला कर **'इम्पीरियल लाइब्रेरी'**

नामक लाइब्रेरी की स्थापना कलकत्ता के दीवानी सचिवालय में १८९१ ई० में हुई थी। लार्ड कर्जन के उद्योग से इस इम्पीरियल लाइब्रेरी और ऊपर की कलकत्ता पब्लिक लाइब्रेरी (म्युनिस्पिल लाइब्रेरी) इन दोनों को १९०२ ई० में मिला दिया गया और इसका नाम 'इम्पीरियल लाइब्रेरी' रखा गया। इसका नए सिरे से कैटलाग तैयार किया गया। इसका उद्देश्य यह था कि यह पुस्तकालय अध्ययन का केन्द्र बन जाय और भारत के भावी इतिहासकारों के लिए आवश्यक सामग्रियों का संग्रहालय सिद्ध हो। साथ ही भारत से सम्बन्धित समस्त साहित्य यहाँ हो जिसका उपयोग लोग सरलतापूर्वक कर सकें। ३० जनवरी सन् १९०३ ई० में इस पुस्तकालय का द्वार सर्वसाधारण के लिए खोल दिया गया। लार्ड कर्जन ने इस पुस्तकालय के सम्बन्ध में अपने अभिभाषण में इस प्रकार कहा था —

"कलकत्ते में हमें एक ऐसे पुस्तकालय का निर्माण करना चाहिए जो भारतीय साम्राज्य की राजधानी इस नगरी के गौरव के उपयुक्त हो सके।"

ब्रिटिश म्युजियम लन्दन के सहायक लाइब्रेरियन श्री जॉन मैकफरलेन इसके लाइब्रेरियन बनाए गए। उन्होंने अपनी योग्यता, अनुभव और कार्य-पटुता के द्वारा पुस्तकालय को अप-टू-डेट और लोकोपयोगी बना दिया। इसके बाद पुस्तकों की सख्या में वृद्धि होती रही। १९०३ में पाठकों की संख्या सिर्फ १५०९३ थी परन्तु १९४० में ७१३८४ तक पहुँच गई। इस पुस्तकालय को १९०४ ई० में बिहार (दरभंगा) के जमींदार सैयद सदरुद्दीन अहमद का निजी संग्रह भेंट स्वरूप प्राप्त हुआ। इस संग्रह में १५०० छपी तथा ८५० हस्तलिखित महत्वपूर्ण पुस्तकें थीं।

सबसे कीमती पुस्तक

विश्व की सबसे कीमती पुस्तक कुरान की एक प्रति है जिसे अफगानिस्तान के अमीर को फारस के शाह ने उपहार स्वरूप दी थी। आजकल यह भारत के राष्ट्रीय पुस्तकालय की सम्पत्ति है। इस पुस्तक में सोने के कागज हैं और ८०० बहुमूल्य रत्न इसमें जड़े हुए हैं। इन रत्नों में ६७ मोती हैं, १३२ लाल और १०९ हीरे। पुस्तक की कीमत ३०,००० पौंड (लगभग ४ लाख रूपये) आँकी गई है।

रिचे समिति

१९२६ ई० सरकार ने इम्पीरियल लाइब्रेरी के कार्यों की जाँच और उसके विकास के लिए जे० ए० रिचे महोदय की अध्यक्षता में एक समिति

स्वर्गीय खानबहादुर के० एम० असदुल्ला

[पृ० ८१]
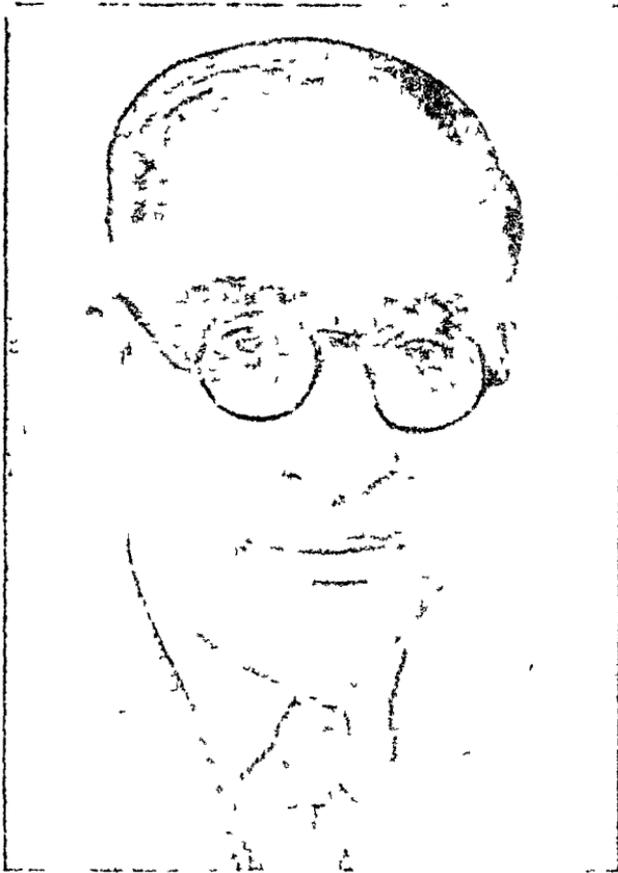
बनाई। समिति ने पुस्तकालय की व्यवस्था, स्थान और अर्थसम्बन्धी सारी बातों की छान-बीन के बाद और निम्नलिखित सिफारिशे की —

१ इम्पीरियल लाइब्रेरी का रूप एक रिफ्रेंस लाइब्रेरी का होना चाहिए तथा इसमे हिन्दुस्तान सम्बन्धी सारी पुस्तको का सग्रह हो।

२ इम्पीरियल लाइब्रेरी का रूप एक ऐसे केन्द्रीय पुस्तकालय का होना चाहिए कि जिससे हिन्दुस्तान के किसी भी भाग के व्यक्ति को अपने विशेष अध्ययन के लिए पुस्तके मिल सके।

३ पुरानी परिषद् के बदले नई परिषद् का निर्माण होना चाहिए और साधारण व्यवस्था एक छोटी समिति के हाथो सौप दी जानी चाहिए।

४ पुस्तकालय-सञ्चालन का पूरा खर्च केन्द्रीय रेवन्यू से मिले परन्तु वाचनालय का खर्च प्रान्तीय रेवन्यू से मिले।

अभी तका पुस्तकालय मेटकाफ भवन मे था। लेकिन वहाँ स्थान की कमी पडने के कारण बाद मे ६ एसप्लीनेड के सरकारी भवन मे इसे स्थानान्तरित करके रखा गया। ब्रिटिशकाल तक यह पुस्तकालय इसी भवन मे रहा और धीरे-धीरे रिचे समिति की सिफारिशो के अनुसार इसकी व्यवस्था हुई।

श्री के० एम० असदुल्ला

स्व० श्री असदुल्ला साहब १९३३ ई० मे इम्पीरियल लाइब्रेरी के लाइब्रेरियन नियुक्त किये गए। उन्होने बडी लगन और तत्परता से इस लाइब्रेरी की सेवा की। उन्होने १९३५ ई० मे ब्रिटिश सरकार से मंजूरी ले कर इस लाइब्रेरी मे एक ट्रेनिङ्ग कोर्स भी चालू किया। उन्होने अखिल भारतीय पुस्तकालय संघ की भी स्थापना यही पर की। ब्रिटिशकाल तक वे ही इस पुस्तकालय के अध्यक्ष पद पर बने रहे।

(२) हिन्दी संग्रहालय

यह राष्ट्रभाषा हिन्दी का एक अनुशीलन केन्द्र और हिन्दी प्रेमियों का तीर्थ है। प्रयाग मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन कार्यालय के साथ ही यह संग्रहालय अपने निजी भवन मे व्यवस्थित है। इसका शिलान्यास आयोध्यावासी स्व० लाला सीताराम जी ने १६ मई १९३२ ई० को किया था। ३२४५५ रुपये की लागत से २½ वर्ष मे इसका भवन बन कर तैयार हुआ। इन ऐतिहासिक भवन और सांस्कृतिक केन्द्र को इन प्रकार का स्वरूप देने का मुख्य श्रेय राजर्षि श्री पुरुषोत्तमदास जी टंडन को है। इस संग्रहालय का उद्घाटन राष्ट्रपिता गाधी जी ने ५–१–३६ ई० को किया था। संग्रहालय का भीतरी हाल ९० × ४० फुट

है। इसमे वीस स्तम्भो पर प्रकोष्ठ बनाए गए है। भवन की उत्तम चन्द्रशाला कमलाकित शिखरो से सुशोभित है और मध्य भाग मे वीणापाणि सरस्वती की स्फटिक प्रतिमा विराजमान है। भवन की दीवारो पर चारो ओर हिन्दी सेवियो के बडे-बडे चित्र लगे हुए है तथा सङ्गमरमर की पट्टियो पर हिन्दी कवियो की उत्तम सूक्तियाँ लिखी हुई है। सग्रहालय मे हिन्दी मे प्रकाशित सभी पुस्तको का, हिन्दी सेवियो के चित्रो, पत्रो तथा उनसे सम्बन्धित अन्य सामग्री का भी सग्रह किया जाता है। इससे संलग्न तीन कक्ष भी है। १—रणवीरकक्ष, २—राजर्षिकक्ष और ३—वसुकक्ष। रणवीर कक्ष मे हस्तलिखित ग्रन्थो का सग्रह किया जाता है। उत्तरप्रदेश की एक रियासत अमेठी के स्व० राजकुमार रणवीर सिह के नाम पर इस कक्ष का नामकरण हुआ है। स्व० राजकुमार जी द्वारा सगृहीत हस्तलिखित पोथियाँ भी इसी कक्ष मे है जो उनके अनुज राजकुमार रणजय सिह जी के द्वारा सम्मेलन को भेट-स्वरूप दी गई है। राजर्षि कक्ष मे सम्मेलन के प्राण राजर्षि टडन जी को व्यक्तिगत रूप से भेट स्वरूप प्राप्त सभी प्रकार की सामग्री का सग्रह किया जाता है। इसमे अभिनन्दन-पत्र, पुस्तके, मानचित्र, चित्र तथा अन्य प्रकार की अनेक वस्तुएँ है। वसुकक्ष मे स्व० मेजर वामनदास वसु द्वारा सगृहीत तथा उनके सुपुत्र स्व० ललितमोहन वसु द्वारा प्राप्त लगभग ५००० महत्वपूर्ण पुस्तकें है।

सग्रहालय मे भारत मे हिन्दी मे प्रकाशित प्राय सभी समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ आती है और उनमे से महत्त्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओ की फाइले भी सुरक्षित रखी जाती है। इस समय सग्रहालय मे लगभग ४५००० छपी पुस्तके, ५००० हस्तलिखित पोथियाँ तथा साहित्यिको के सैकडो पत्र एवं कुछ प्राचीन सिक्के भी सगृहीत है।

इन दो महान् पुस्तकालयो के बाद अब हम एक ऐसे पुस्तकालय की चर्चा करेगे जो भारत का है पर भारत मे नही है, वह है 'इण्डिया आफिस लाइब्रेरी।

इण्डिया आफिस लाइब्रेरी

ब्रिटिश शासन काल मे इगलैण्ड मे इस महत्त्वपूर्ण लाइब्रेरी की स्थापना हुई थी। भारत मे अग्रेजी राज की जड जमते ही ब्रिटिश शासको ने इस बात को महसूस किया कि एक ऐसा समृद्ध पुस्तकालय होना चाहिए जहाँ भारत की साहित्यिक, सास्कृतिक और ऐतिहासिक ज्ञान-राशि एकत्र रहे। यह

सूझ थी प्रसिद्ध इतिहासज्ञ रॉवर्ट ओरम की, जो उस समय ईस्ट इण्डिया कम्पनी का इतिहास लिख रहे थे। लेकिन वैसा कुछ उस समय तो न हो सका मगर वाद मे ईस्ट इडिया कम्पनी के वुद्धिमान डाइरेक्टरो ने इस ओर ध्यान दिया। सन् १७९९ मे टीपू सुलतान के पराजित होने पर उसका विशाल पुस्तकालय अग्रेजो के हाथ लगा। उसमे से २००० चुने हुए ग्रंथो को छाँट कर उन्ही के द्वारा एक लाइब्रेरी की शुरुआत की गई।

पब्लिक रिपौजिटरी

उस समय 'इण्डिया आफिस लाइब्रेरी' नाम न रख कर 'पब्लिक रिपौजिटरी' नाम से १८ फरवरी १८०१ ई० मे इण्डिया हाउस, लेडनहॉल स्ट्रीट, लदन मे इस पुस्तकालय की स्थापना हुई। उसके वाद उसमे भारत के कोने-कोने से महत्त्वपूर्ण पोथियाँ तथा अन्य दुर्लभ ज्ञान-सामग्री सगृहीत होती रही। सर जार्ज विल्किन्स नामक प्रकाण्ड विद्वान इस पुस्तकालय के निर्देशक रहे। इस पुस्तकालय के अन्तर्गत एक म्युजियम की भी स्थापना की गई और उसमे भारत की महत्त्वपूर्ण कला वस्तुओ को रखा गया। १८५७ ई० के राष्ट्रीय आन्दोलन के वाद देश की अरवी और फारसी की महत्त्वपूर्ण पोथियाँ भी इसी पुस्तकालय मे पहुँचा दी गई।

नया नामकरण

कम्पनी के शासन का अन्त होने पर जव इण्डिया आफिस की नीव पड़ी, तो १८६७ ई० मे 'पब्लिक रिपौजिटरी' का नाम 'इण्डिया आफिस लाइब्रेरी' कर दिया गया। उसे इण्डिया आफिस लेडेनहॉल स्ट्रीट से हटा कर किंग चार्ल्स स्ट्रीय स्थित 'व्हाइटहाल' मे स्थानान्तरित कर दिया गया। वही पर वह आज भी व्यवस्थित है।

रूपरेखा

इस पुस्तकालय मे इस समय ढाई लाख के लगभग पुस्तकें है। इनमे से ७०,००० अग्रेजी तथा अन्य यूरोपीय भाषाओ की पुस्तकें है और वाकी प्राच्य भाषाओ की। इस प्रकार भारतीय ज्ञान का यह ससार में सबसे बडा पुस्तकालय है। इनमे लगभग ९५ भाषाओं की पुस्तके संगृहीत हैं।

इंडिया आफिस लाइब्रेरी के प्राच्य विभाग के पाँच उपविभाग है —

१. मुद्रित पुस्तकें, २. हस्तलिखित ग्रन्थ ३. चित्रकला, ४. फोटो, और ५. अन्य वस्तुएँ।

१. मुद्रित विभाग में १,४०,००० पुस्तकें है जिनमें मुख्य रूप से बँगला,

कार्यों को सूत्रवद्ध करे परन्तु इस सम्वन्ध मे कुछ भी कार्य न हो सका। यह कार्य पजाव के स्व० श्रीमान् चन्द्रजी को दिया गया था।

अखिल भारतीय पुस्तकालय संघ की स्थापना

अव जो अखिल भारतीय पुस्तकालय सघ चल रहा है, इसकी स्थापना सन् १९३३ मे हुई। सन् १९३३ मे सितम्वर मास के कलकत्ता में एक सम्मेलन का आयोजन किया गया। उसका नाम रखा गया प्रथम 'अखिल भारतीय पुस्तकालय सम्मेलन'। वास्तव मे यह सम्मेलन पहले वाले 'अखिल भारतीय सार्वजनिक पुस्तकालय संघ' के विरोध मे एक प्रतिक्रिया के रूप मे हुआ। इस सम्मेलन के लोगों का कहना था कि 'अखिल भारतीय सार्वजनिक पुस्तकालय संघ' मे पुस्तकालय के पेशे (प्रोफेशन) से सम्वन्धित लोग नही है। अस्तु, कलकत्ता के उक्त सम्मेलन के अध्यक्ष डा० एम० ओ० टामस और मन्त्री यू० एन० ब्रह्मचारी चुने गए। इस सम्मेलन के स्वागत मन्त्री इम्पीरियल लाइब्रेरियन श्री के० एम० असदुल्ला साहव थे। भारत सरकार के शिक्षा विभाग के कमिश्नर श्री आर० विलसन ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। वडी धूमधाम रही। सघ की स्थापना हुई और पजाव विश्वविद्यालय के वाइस चासलर श्री ए० सी० वुलनर महोदय इस सघ के प्रथम अध्यक्ष और श्री के० एम० असदुल्ला मन्त्री चुने गए। सघ का कार्यालय कलकत्ता मे रखा गया।

पुराना 'अखिल भारतीय सार्वजनिक पुस्तकालय संघ' १९३७ ई० तक तो चलता रहा, उसके वाद भङ्ग हो गया।

अखिल भारतीय पुस्तकालय संघ की प्रगति

अखिल भारतीय पुस्तकालय सघ का रजिस्ट्रेशन १९३३ मे हुआ। इसके उद्देश्य इस प्रकार है —

१ भारत मे पुस्तकालय आन्दोलन की उन्नति करना।
२ भारत मे पुस्तकालयाध्यक्षो को प्रशिक्षित कर उनकी उन्नति करना।
३ पुस्तकालय-विज्ञान मे शोध कार्य को वढाना।
४ पुस्तकालयाध्यक्षो की सेवा की दशा और हैसियत मे सुधार।
५. समान उद्देश्य के अन्तर्राष्ट्रीय सगठनो के साथ सहयोग करना।

इस सघ ने सन् १९३८ मे एक 'इण्डियन लाइब्रेरी डाइरेक्टरी' तैयार करके प्रकार प्रकाशित थी। इस सघ के अधिवेशन नियमानुसार हर दो वर्ष पर होते रहे। उनके विवरण इस प्रकार है —

क्रम	वर्ष	स्थान	अध्यक्ष
द्वितीय अधिवेशन	१९२५	लखनऊ	डा० ए० सी० वुलनर ।
तृतीय अधिवेशन	१९३७	दिल्ली	डा० वली मुहम्मद ।
चतुर्थ अधिवेशन	१९३९	पटना	डा० सच्चिदानन्द सिनहा
पचम अधिवेशन	१९४२	वम्बई	सार्जेण्ट साहव ।
पष्ठ अधिवेशन	१९४४	जयपुर	जे० सी० रौल्स ।
सप्तम अधिवेशन	१९४६	वडौदा	खा० वहादुर अली जुलहक ।

इस सघ की प्रेरणा से अन्य प्रान्तो मे भी पुस्तकालय-आन्दोलन को वल मिला और काफी जागृति हुई ।

सघ की ओर से 'लाइब्रेरी वुलेटिन' का प्रकाशन १९४२ से १९४६ तक होता रहा । उसके बाद 'अवगिला' पत्रिका प्रकाशित होती रही ।

भारत में पुस्तकालय आन्दोलन

पुस्तकालय-आन्दोलन मानव आवश्यकताओ के अनुसार पुस्तकालयो के अभ्युदय का एक सगठित रूप है । आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य सर्वसाधारण मे ज्ञान का प्रचार करना है और इसका प्रमुख साधन है पुस्तकालय । यह आन्दोलन आधुनिक युग की ही चीज है । ग्रेट ब्रिटेन मे इसका आरम्भ सौ वर्ष पूर्व, अमेरिका मे अस्सी वर्ष पूर्व और योरोप के अन्य देशो मे तथा जापान मे पैतालीस वर्ष पूर्व हुआ था ।

पुस्तकालय-आन्दोलन की सफलता के लिए दो अवस्थाएँ आवश्यक रूप से अपेक्षित है । एक तो पुस्तको के उत्पादन मे शीघ्र वृद्धि और दूसरे ज्ञान के भण्डार को सर्वसाधारण तक पहुँचाने के लिए समाज मे तीव्र जागृति । भारत मे इन दोनो अवस्थाओ का अनुभव और चिन्तन बहुत बाद मे हुआ । भारत मे पुस्तकालय-आन्दोलन प्रारम्भ तो हुआ किन्तु वह कोई राष्ट्रीय आन्दोलन नही था और न तो उसे कोई कानूनी सहायता ही प्राप्त थी । यह आन्दोलन भारत मे कहाँ से और कब से प्रारम्भ हुआ और इसका कैसे विकास हुआ, इसका संक्षिप्त परिचय प्रान्तीय स्तर पर इस प्रकार है —

ब्रिटिश शासनकाल मे भारत अनेक प्रान्तो और देशी रियासतो मे बँटा हुआ था । उनमे से देशी रियासतो को अपने क्षेत्र के अन्दर शिक्षा आदि प्रत्येक बात की पूरी स्वतन्त्रता थी । केवल बाहरी मामलो मे अंग्रेजी सरकार का अंकुश उन पर रहता था । देशी रियासतो मे बडौदा एक प्रगतिशील रियासत थी और वही से सन् १९१० ई० मे पुस्तकालय-आन्दोलन का श्रीगणेश हुआ ।

वड़ौदा पुस्तकालय-आन्दोलन

वडौदा मे स्व० सर श्रीसयाजी राव गायकवाड का शासनकाल रियासत के लिए स्वर्ण युग था। वे पुस्तकालय-आन्दोलन के भविष्यद्रष्टा थे। उन्होंने अपनी रियासत मे जनता की सामाजिक शिक्षा के लिए पुस्तकालय-आन्दोलन का सूत्रपात किया। उनके निजी पथ-प्रदर्शन और देख-रेख मे १९१० ई० मे पुस्तकालय का एक स्वतन्त्र विभाग खोला गया। इस विभाग की योजना थी कि मनुष्य बौद्धिक जीवन तथा अधिक सम्पन्न जीवन के उच्च-स्तर को समझ सके और उस अनुभव द्वारा इस जीवन को प्राप्त करने की प्रेरणा ले सके। तदनुसार चार प्रकार के पुस्तकालयो की स्थापना की कल्पना की गई —

१ जिला पुस्तकालय, २ तालुका पुस्तकालय ३. नगर पुस्तकालय और ४ ग्राम पुस्तकालय।

ऐसा विचार किया गया कि जिला-नगर पुस्तकालय प्रत्येक जिले के हेडक्वार्टर मे और तालुका पुस्तकालय प्रत्येक तालुका हेडक्वार्टर मे होना चाहिए। ग्राम पुस्तकालय की स्थापना जहाँ तक हो, प्रत्येक गाँव मे होनी चाहिए और खास तौर से ऐसे गाँवो मे जहाँ प्राथमिक स्कूल हो। फिर ये पुस्तकालय भी एक चल पुस्तकालय के अनुविभाग द्वारा अनुपूरित हो। इन पुस्तकालयो की विभाग द्वारा ग्राँट मिलने की शर्त यह थी कि वहाँ की जनता मिल कर ग्राँट के बराबर रुपया देने को तैयार हो जाय। जिला पुस्तकालयो के लिए ज्यादा से ज्यादा ७०००) तालुका और नगर पुस्तकालयो के लिए ३०००) तथा गाँव पुस्तकालयो के लिए १००) सहायता निश्चित की गई। चल अनु-विभाग का पूर्ण व्यय सरकार देती थी।

श्री बोर्डन महोदय इस पुस्तकालय-विकास योजना के अध्यक्ष नियुक्त किए गए। इस प्रकार धीरे-धीरे इस राज्य मे १९४७ तक १५०० सस्थाएँ हो गई, जिनमे ४ जिला पुस्तकालय ७२ तालुका एव नगर पुस्तकालय और बाकी गाँव पुस्तकालय तथा वाचनालय। कुछ जिला और तालुका के हेड क्वाटर्स मे महिलाओ तथा बच्चो के लिए अलग व्यवस्था थी। उन्हे सरकारी अनुदान मिलता था। गाँव पुस्तकालय प्राय गाँव की पाठशालाओ मे खोले गए थे। लेकिन धीरे-धीरे सन् १९३० से उनके लिए स्वतन्त्र भवन बनवाने के लिए पुस्तकालय-विभाग ने सहायता देनी शुरू की तो १९४७ ई० तक १९४ ग्राम पुस्तकालयो के अपने निजी भवन भी हो गए।

अनुवाद कार्यालय

वडौदा सरदार ने अच्छी पुस्तको के प्रकाशन को बढावा देने के लिए

१९१० ई० मे एक 'अनुवाद कार्यालय' की भी स्थापना की। उसके द्वारा गुजराती, मराठी तथा हिन्दी की पुस्तके प्रकाशित की जाती थी। कुछ समय बाद इस कार्यालय ने 'ग्राम विकास माला' नामक एक 'सीरीज' प्रकाशित की।

सहायक संस्थाएँ

देहाती पुस्तकालयो को सहायता देने वाली एक सस्था 'उपभोक्ता सहकारी समिति' की स्थापना कुछ उत्साही पुस्तकालय-प्रेमियो द्वारा १९२४ ई० मे हुई। यह समिति सगठित रूप से पुस्तकालय के सदस्यो को पुस्तके, फार्म, फर्नीचर, समाचारपत्र, मासिक पत्रिकाएँ आदि वस्तुएँ भेजा करती थी। यह सेविग बैंक का भी काम करती थी। यह समिति पुस्तकालय-विज्ञान तथा जनरुचि की पुस्तके भी प्रकाशित करने लगी। इसी समिति ने गुजराती मे 'पुस्तकालय' नामक मासिक पत्रिका भी निकली।

राज्य पुस्तकालय-संघ

सरकार की मान्यता और गॉट की सहायता से 'बड़ौदा राज्य पुस्तकालय-संघ' की भी स्थापना हुई। जिसका उद्देश्य था अपने विविध कार्यो द्वारा पुस्तकालय-सङ्गठनकर्त्ताओ मे जीवन-शक्ति का संचार करना। वे सभी मिल कर सभा-सम्मेलन करने, ट्रेनिग आदि का प्रबन्ध करते रहे।

पुस्तकालयो का निरीक्षण, ट्रेनिग कोर्स चलाना, कान्फ्रेस करना, 'पुस्तकालय' पत्रिका प्रकागित करना, चुनी पुस्तको की सूची छापना, ग्रामसाहित्य का सग्रह करना। आदि के लिए सघ को १२०० रु० की सहायता भी मिली।

चल-पुस्तकालय (ट्रेवेलिङ्ग लाइब्रेरी)

बडौदा के चलते-फिरते पुस्तकालयो का उद्देश्य गाँववासियो मे पुस्तकालय के प्रति चेतना उत्पन्न करना था जिससे वे पुस्तकालय की ओर झुके और उससे लाभ उठावे। बडौदा के केन्द्रीय पुस्तकालय मे पुस्तको की एक बडी राशि इकट्ठी की गई और चल पुस्तकालयो द्वारा वे पुस्तके दूर-दूर तक पहुँचाई जाती थी।

बड़ौदा का केन्द्रीय पुस्तकालय

बडौदा शहर के लिए एक केन्द्रीय पुस्तकालय की स्थापना की गई। महामहिम महाराज जी ने स्वय इसके लिए २०,००० पुस्तके दी। इसका पूरा खर्च राज्य की ओर से दिया जाता था। इसका विकास एक नगर-पुस्तकालय के रूप मे हुआ। इस पुस्तकालय ने गुजराती और मराठी के दो विभागो का निर्माण किया, जो इन भापाओ के बडे विभाग है। धीरे-धीरे इस

पुस्तकालय मे १,२०७८४ पुस्तकें हो गई, जिनमें से ५१,६९९ अंग्रेजी की, ४०,६८० गुजराती की, ३१,९०७ मराठी की, ४६८१ हिन्दी, १८१७ उर्दू की। इस पुस्तकालय का भवन भी पश्चात्य ढङ्ग पर बनाया गया। स्टैक रूम भी आधुनिक ढग का बना। पुस्तकालय मे समाचार-पत्रालय, सहायक अध्यक्ष का दफ्तर, लेन-देन विभाग, रिफ्रेंस विभाग, बाल विभाग, महिला पुस्तकालय तथा स्टैकरूम आदि सुन्दर ढङ्ग से बनाए गए। पढने के साथ-साथ मनोरंजन का भी प्रबन्ध किया गया। बाल पुस्तकालय तो इतना आकर्षक था कि सैकडो बालक इससे प्रतिदिन लाभ उठाने लगे। इस प्रकार पुस्तकालय-आन्दोलन का सूत्रपात करके बडौदा स्टेट ने भारतीय नरेशो के सामने एक आदर्श स्थापित किया।

बड़ौदा राज्य-पुस्तकालयों का विकास

वर्ष	जिला और कस्बा पुस्तकालय	गॉव पुस्तकालय	महिला पुस्त-कालय	बाल पुस्त-कालय	वाचनालय		योग
					टाउन	गॉव	
१९३९–४०	४६	१२१९	१८	११	२०	२०२	१५१६
१९४०–४१	४६	११७०	१८	१२	४	१५२	१५०२
१९४१–४२	४६	१३०१	२१	१२	२	१२१	१५०३

वर्ष	स्टाक	सरकुलेशन	उपयोगकर्त्ताओं की संख्या
१९३९–४०	९,६९,२७१	९,१२,३७८	१,८८,५२४
१९४०–४१	९,८३,३०९	९,०१,२३०	१,७७,७४८
१९४१–४२	१०,४१,७२१	९,५०,५९६	१,६८,५१२

ट्रेवेलिग लाइब्रेरी सेक्शन मे १९४१–४२ मे २७७८७ पुस्तके थी। इस सेक्शन ने २०४८० पुस्तके ९१७८ पाठको को ४९४ बक्सो मे भेजी।

ट्रेनिङ्ग का प्रबन्ध

मिस्टर, डब्ल्यू० ए० बोर्डन महोदय कोलम्बिया मे डयूवी महोदय द्वारा सचालित लाइब्रेरी ट्रेनिग स्कूल मे शिक्षक रह चुके थे। अत उनकी देख-रेख मे बड़ौदा मे १९१० ई० मे पुस्तकालयाध्यक्षो के ट्रेनिग की भी व्यवस्था की गई। अनेक बाहरी लोगो को भी आमन्त्रित किया गया लेकिन उस समय तो किसी ने गर्दन घुमा कर उधर नही देखा क्योकि तब तो लोगो का यही विश्वास था कि लाइब्रेरियन बनने के लिए किसी ट्रेनिङ्ग की क्या जरूरत है।

मद्रास प्रेसीडेन्सी में पुस्तकालय-आन्दोलन

सन् १९३७ ई० के 'दिसम्बर मास मे राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन मद्रास मे हुआ। इस अधिवेशन की स्वागत समिति द्वारा दी गई सुविधाओ की सहायता से उसी समय 'अखिल भारतीय सार्वजनिक पुस्तकालय सम्मेलन' का भी अधिवेशन हुआ। इस सम्मेलन के बाद पुस्तकालय-हितैषियो ने यह अनुभव किया कि पुस्तकालय-आन्दोलन को सबल बनाने के लिए मद्रास मे एक पुस्तकालय-सघ का सगठन जरूरी है। अत. सन् १९२८ मे उत्सुक लोगो ने संघ को बनाने के लिए एक समिति का चुनाव किया। तत्कालीन न्याया-धीश श्री वी० वी० श्रीनिवास आयगर के सभापतित्व मे एक बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक मे मद्रास पुस्तकालय-संघ के सविधान का निर्णय किया गया तथा पदाधिकारियो को चुनाव भी हुआ जिसमे संघ के सविधान का प्रथम सभापति श्री के० पी० कृष्णा स्वामी ऐय्यर बनाए गए। इस प्रकार 'मद्रास पुस्तकालय-सघ' की स्थापना हुई।

क्रिया-कलाप

सघ को आन्दोलन के प्रथम वर्ष मे चन्दा द्वारा ५८२१ रु० प्राप्त हुए। उसके विभिन्न प्रकार के ४१७ सदस्य थे। किन्तु दिनो-दिन सदस्यो की सख्या बढती गई और अधिक धन का सग्रह होता गया। इस सघ ने विभिन्न अवसरो पर व्याख्यान, प्रदर्शनी एव प्रचार-कार्य द्वारा धनता का निकट सह-योग प्राप्त किया सघ के सदस्यो ने प्रत्येस नगर और गाँव मे धूम-धूम कर पुस्तकालयो का जाल बिछाने की कोशिश की। १९२९ ई० मे पुस्तका-लय-आन्दोलन के सूत्रधार श्री शि० रा० रगनाथन अनेक स्थानो का भ्रमण करके एक नई जिन्दगी पैदा कर दी। सन् १९३० से १९३१ तक चलने वाले भ्रमण कार्य मे भाग लेने वाले प्रचारको मे श्री ए० एम० फौसिल,

श्री के० एल० नरसिंह राव, श्री के० एम श्रीकान्तन आदि मुख्य थे, जिन्होंने दक्षिण भारत के प्रत्येक भाग का भ्रमण कर इस आन्दोलन को सबल बना दिया।

लाइब्रेरी ऐक्ट

इस सघ ने लाइब्रेरी ऐक्ट बनवाने का बीडा उठाया। सन् १९३१ में इसका ड्राफ्ट डा० रङ्गनाथन जी ने तैयार किया। यह १९३३ ई० को श्री बशीर अहमद सईद द्वारा मद्रास विधान सभा मे पेश किया।

पुस्तको का प्रकाशन

इस सघ ने डा० रङ्गनाथन जी द्वारा लिखित पुस्तकालय-विज्ञान की २० पुस्तके प्रकाशित की तथा कुछ फुटकर प्रकाशन भी किया। इन पुस्तको द्वारा पुस्तकालय-जगत् को विशेष लाभ पहुचा और जागृति की एक नई लहर दौड गई।

पुस्तकालयाध्यक्षों की ट्रेनिङ्ग

सघ ने पुस्तकालयाध्यक्षो को ट्रेनिङ्ग देने के लिए सन् १९२९ ई० मे डा० रगनाथन जी के निर्देशन मे एक 'ग्रीष्मकालीन स्कूल' चलाना प्रारम्भ किया। मद्रास विश्वविद्यालय की पुस्तकालय समिति ने मद्रास यूनिवर्सिटी के पुस्तकालय मे ही उस स्कूल को चलाने की बात मान ली। वही पर स्कूल शुरू हुआ किन्तु बाद मे सन् १९३३ मे मद्रास यूनिवर्सिटी ने इस ट्रेनिङ्ग स्कूल को अपने अन्तर्गत ले लिया। सन् १९६८ ई० मे मद्रास यूनिवर्सिटी ने अपनी ओर से 'डिप्लोमा कोर्स' चालू कर दिया। इस प्रकार इस डिप्लोमा कोर्स को शुरू कराने का भी श्रेय सघ को है।

अन्य कार्य

सघ ने १९३१ ई० मे बालको मे पुस्तकालय की पुस्तको का महत्त्व समझने तथा पढने की रुचि को बढावा देने के लिए एक योजना शुरू की। शिक्षा-विभाग के डाइरेक्टर ने इसको स्वीकार कर लिया। स्कूल के बालको को विषय दे दिए जाते थे। उस पर वे पढ कर सुन्दर ढग से ६ महीने मे निबन्ध लिखकर प्रस्तुत करते थे। सघ सबसे अच्छे निबन्धो पर पुरस्कार देता था। इस प्रकार यह योजना बहुत ही सफल रही।

सघ ने पंचायत द्वारा सचालित तथा अन्य सार्वजनिक पुस्तकालयो को सरकारी ग्राण्ट दिलाने मे बहुत सहायता की। सघ के प्रतिनिधि पुस्तकालय-सम्मेलनो मे बराबर भाग लेते रहे। लाहोर के पुस्तकालय-सम्मेलन मे स्व०

भारत मे पुस्तकालय-आन्दोलन के जनक

आचार्य डॉ० एम० आर० रगनाथन

एम ए, एल टी, एफ० एल० ए०

श्री एस० सत्यमूर्ति ने तथा बनारस के अखिल भारतीय शिक्षा-सम्मेलन मे डा० रंगनाथन जी ने भाग लिया। १९२९ ई० मे अखिल भारतीय पुस्तकालय सम्मेलन के पाँचवे अधिवेशन के अवसर पर मद्रास मे सघ ने एक 'पुस्तकालय प्रदर्शनी' का भी आयोजन किया। दक्षिण भारतीय भापाओ को प्रोत्साहित एव विकसित करने के लिए सघ ने १९३३ ई० मे एक बडी सभा बुलाई और तामिल प्रकाशनो की एक प्रदर्शनी भी उसी अवसर पर की गई। सघ ने अस्पतालो मे रोगियो को पुस्तक-सेवा प्रदान करने को योजना का उद्घाटन १९३२ मे किया और तदनुसार कार्य करना प्रारम्भ किया। इस प्रकार 'मद्रास पुस्तकालय सघ' इस काल मे बहुत ही गतिशील रहा।

बम्बई प्रेसीडेन्सी

देश मे ब्रिटिश शासन के सस्थापित हो जाने के बाद उन्नीसवी शताब्दी के प्रारम्भ मे प्राचीन कर्नाटक को पाँच भागो मे बाँट दिया गया। मैसूर और कुर्ग दो रियासते वनी और शेष कर्नाटक को वम्बई, मद्रास और हैदराबाद मे बाँट दिया गया। बम्बई मे मिले भाग को हम 'बम्बई-कर्नाटक' कह सकते है।

इस भाग मे हुबली और धारवार मे १८२६ ई० मे पहले सरकारी स्कूल खोले गए। ये मराठी स्कूल थे। १८३५ मे सरकार ने धारवार और हुवली मे कन्नड स्कूल भी खोले। १८४८ मे तीसरा कन्नड स्कूल रानेबेन्नूर मे खुला। इस क्षेत्र मे धारावार मे पहला हाईस्कूल खोला गया। इस प्रकार बेलगाँव, बीजापुर और कनारा आदि मे भी वर्नाक्युलर स्कूल खुले और धीरे-धीरे लोग शिक्षा की ओर आकृष्ट हुए। इन स्कूलो के जारी होने के साथ ही लोगो मे साक्षरता फैली तो उसको स्थायी वनाने के लिए पुस्तकालयो की भी आवश्यकता पडी। सन् १८८२ मे धारवार जिले मे पुस्तकालय और ४ वाचनालय थे। ये चार पुस्तकालय धारवार, हुबली, रानेवेन्नूर और शिरहट्टी मे थे, इनमे से धारवार को नेटिव सेंट्रल लाइब्रेरी सवसे पुरानी और वडी थी। यह १८५४ मे श्री एल० एस० नागपुरकर नामक एक अध्यापक द्वारा स्थापित की गई। १८८२ मे इस पुस्तकालय मे ४५१ पुस्तकें थी, जिसमे से ४१४ अग्रेजी, ३० मराठी और ७ कन्नड की थी। यह चदे पर निर्भर थो। पुस्तके वर्गीकृत न थी, और न अच्छी तरह रखी ही गई थी। दो अंग्रेजी अखवार इसमे आते थे और सहृदय सदस्य १ अग्रेजी, ३ एग्लोवर्नाक्युलर, १० वर्नाक्युलर और १ मराठी अखवार दे दिया करते थे।

आज की 'गरग सिद्दालिनगप्पा म्युनिस्पल जनरल लाइब्रेरी'—धारवार नगरपालिका द्वारा जिसका प्रवन्ध होता है, उस समय एक छोटे से स्थान में थी और इसकी दशा अच्छी न थी।

रानेवेन्नूर मे १८७३ में पुस्तकालय की स्थापना हुई। जनता से १५०० रु० चन्दा लेकर उसके व्याज से इसका प्रवन्ध दिया जाता था।

लोकमान्य धर्मार्थ वाचनालय शिरहट्टी की स्थापना १८८१ मे श्री नागेश राव ताम्बे ने की।

खुडगोल मे श्री जी० एस० खेर तथा अन्य लोगो के द्वारा १८९३ में एक पुस्तकालय की स्थापना हुई। वेलगाव मे 'नेटिव जनरल लाइब्रेरी' की स्थापना १८४८ मे तत्कालीन कलक्टर श्री जे० डो० इन्वेरेरिटी ने की। १८८२ मे इसमे १०३५ पुस्तके हो गई थी। कनारा जिले मे १८८० के लगभग चार पुस्तकालय थे—करवार, कुन्ता, हलियाल और सिरसी में। 'करवार जनरल लाइब्रेरी ऐण्ड म्युजियम' की स्थापना मई १८६४ मे हुई। उस समय उसमें केवल १,७०९ पुस्तके थी।

१८९० मे 'कर्नाटक विद्यावर्द्धक संघ' की स्थापना हुई। इसने सास्कृतिक कार्यो के साथ ही पुस्तकालय आन्दोलन मे भी सहयोग प्रदान किया। सघ ने प्रकाशित पुस्तको को भेट स्वरूप पुस्तकालयो को देकर उन्हे प्रोत्साहित किया। सघ ने 'वाग्भूषण' नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया, जिसमे वाद मे पुस्तकालय सम्बन्धी सूचनाएँ भी एकत्र करके प्रकाशित होती रही।

१९०४–५ मे पुस्तकालय-आन्दोलन का विकास हुआ। श्री अलूर वेकट राव ने इसको एक नया मोड दिया। एक योजना वनाई गई जिसके अनुसार कन्नड पुस्तके कर्नाटक विद्यावर्द्धक सघ पुस्तकालय मे, वीरशैवीय पुस्तके एल० ई० सोसइटी लाइब्रेरी मे, सस्कृत पुस्तके पाठशाला पुस्तकालय मे और सास्कृतिक और राजनीतिक पुस्तके भारत वाचनालय मे संग्रह करने का निश्चय किया गया।

१९१४ मे कर्नाटक हिस्टारिकल रिसर्च सोसाइटी की स्थापना धारवार मे हुई। इसने अपने उद्देश्य के लिए एक पुस्तकालय की स्थापना की।

१९१५ मे जव तिलक महोदय ने होमरूल आन्दोलन चलाया तो 'कर्नाटक सभा' ने राजनीतिक प्रचार के साथ-साथ पुस्तकालय सगठन का भी कार्य आरम्भ किया। कीर्तन और व्याख्यानो के द्वारा सभा ने पुस्तकालय स्थापना पर जोर दिया। १९१९ मे 'कर्नाटक कालेज' की स्थापना हुई

जिसके साथ एक पुस्तकालय स्थापित किया गया। धीरे-धीरे अन्य नई शिक्षण संस्थाओ ने भी पुस्तकालय स्थापित किए।

१९२० मे धारवार मे 'सन्तेस धर्मार्थ. वाचनालय' की स्थापना हुई। १९४० मे यह संघ के पुस्तकालय मे अन्तर्भूत हो गया। उस समय उसमे ४७०० पुस्तके हो गई थी। १९२० मे ऑल कर्नाटक पोलिटिकल कान्फ्रेन्स का अधिवेशन धारवार मे हुआ। उसमे भी एक प्रस्ताव पुस्तकालय-विकास के सम्बन्ध मे स्वीकृत किया गया किन्तु राजनीतिक परिस्थितिवश वह कार्यान्वित न हो सका। १९२४ मे सी० आर० दास महोदय की अध्यक्षता मे आल इण्डिया लाइब्रेरी कान्फ्रेंस बेलगाँव मे हुई। उसमे भी पुस्तकालय को जन-शिक्षा का सर्वोत्तम साधन घोषित किया गया। १९२७-२८ मे कर्नाटक पुस्तकालयो की एक डाइरेक्टरी भी बनाई गई।

कर्नाटक पुस्तकालय-संघ

१९२९ मे ऑल बाम्बे कर्नाटक लाइब्रेरी कान्फ्रेस धारवार मे श्री वेंकट नारायण शास्त्री की अध्यक्षता मे हुई। इस अवसर पर समाचार-पत्र और पत्रिकाओ की एक प्रदर्शनी भी हुई। उस समय बम्बई-कर्नाटक मे लगभग ४०० पुस्तकालय थे। उसके बाद १९३३ और १९४४ मे लाइब्रेरी कान्फ्रेस हुई।

पुस्तकालय-विकास समिति, बम्बई

१९३९ मे श्री ए० ए० ए० फैजी की अध्यक्षता मे एक बाम्बे **'लाइब्रेरी डवलपमेंट कमेटी'** बनाई गई। इसका उद्देश्य था बम्बई मे सेंट्रल स्टेट लाइब्रेरी और अहमदाबाद, पूना और धारवार मे तीन क्षेत्रीय पुस्तकालयो की स्थापना की सम्भावनाओ पर विचार करना और पूरे प्रदेश मे छोटे पुस्तकालयो के विकास पर विचार करना। कमेटी ने १९४० मे अपनी रिपोर्ट सरकार को दी। **'भारत छोड़ो'** आन्दोलन छिड जाने से इस समिति की रिपोर्ट के अनुसार कुछ काम न हो सका। फिर १९४७ मे कार्य प्रारम्भ किया गया।

इस काल मे बम्बई प्रेसीडेन्सी मे केन्द्रीय पुस्तकालय, रिसर्च पुस्तकालय, शिक्षण संस्थाओ के पुस्तकालय और सार्वजनिक पुस्तकालय आदि विभिन्न प्रकार के पुस्तकालयों की स्थापना हुई। बम्बई मे एक केन्द्रीय पुस्तकालय की स्थापना हुई। सरकार स्वय ही इन पुस्तको की देखभाल करती थी। ये पुस्तके व्यवस्थित रूप मे न होने के कारण सचिवालय के

तहखानो मे पडी रही और अवर्गीकृत दशा मे रही। १८६७ से १८९० के वीच सरकार ने वम्वई विश्वविद्यालय के अधिकारियो से भी इन पुस्तको का सरक्षक वनने की वात कही किन्तु वे राजी न हुए। सरकार ने रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, वम्वई ब्राच को यह सग्रह दे दिया किन्तु स्थान की कमी वता कर उसने भी लौटा दिया। इस प्रकार वह सग्रह अव्यवस्थित पडा रहा।

पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा

वम्वई यूनिवर्सिटी मे लाइब्रेरी साइस की पढाई की व्यवस्था की गई। १९४४ ई० मे इसी विश्वविद्यालय से श्री एन० एम० केनकर महोदय ने दीक्षा ली जो आजकल केन्द्रीय सरकार के शिक्षा विभाग पुस्तकालय के अध्यक्ष है। १९४४ के इसी प्रथम वैच मे श्री डी० एन० मार्शल सर्व-प्रथम उत्तीर्ण हुए थे, जो आजकल वम्वई यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी के अध्यक्ष है।

वम्वई लाइब्रेरी एसोसिएशन स्थापना सन् १९४४ ई० मे हुई और कार्यालय पीपुल्स फ्री लाइब्रेरी, धोवीतालाव, वम्वई—२ रखा गया।

विहार प्रान्त

इस काल मे विहार मे कुछ अच्छे पुस्तकालयो की स्थापना हुई। पटना मे १८९१ मे खुदावख्श लाइब्रेरी स्थापित हुई जो अपने ढग की अनुपम है। इसमे विभिन्न विषयो की छपी पुस्तको के अतिरिक्त आठ हजार हस्तलिखित ग्रथ भी है। साथ ही प्राचीन चित्रो का भी उत्तम सग्रह है। स्वर्गीय डा० सच्चिदानन्द सिनहा ने १९२४ ई० मे अपनी पत्नी श्रीमती राधिकारानी सिनहा की स्मृति मे 'सिनहा लाइब्रेरी' स्थापित की। इस पुस्तकालय की उत्तरोत्तर प्रगति होती रही। पटना यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, विहार ऐण्ड उडीसा रिसर्च सोसाइटी लाइब्रेरी (१९१५), विहार हितैषी पुस्तकालय (१८८३), महेश्वर पब्लिक लाइब्रेरी (१९२८), डिपार्टमेंट आफ इन्डस्ट्रीज, विहार लाइब्रेरी (१९२०), विहार लेजिस्लेटिव लाइब्रेरी (१९१२), मन्नूलाल सार्वजनिक पुस्तकालय (१९२४) और भगवान पुस्तकालय भागलपुर (१९१३) प्रभृति अच्छे पुस्तकालयो की स्थापना इस काल मे हुई। राज्य सरकार की ओर से पुस्तकालयो को अनुदान भी दिया जाता रहा। १९४० मे प्रान्त मे लगभग २०० पुस्तकालय थे। १९४०–४१ के वजट मे पुस्तकालयों को दस हजार रुपया अनुदान दिया गया और यह क्रम ब्रिटिश काल के अन्त तक चलता रहा।

पुस्तकालय संघ

१३ फरवरी १९३७ ई० को मन्नूलाल पुस्तकालय मे बिहार के पुस्तकालय-प्रेमियो का प्रथम सम्मेलन कुमार मुनीन्द्रनाथ देव की अध्यक्षता मे हुआ। उसी सम्मेलन मे बिहार राज्य मे पुस्तकालय आन्दोलन को सबल बनाने के लिए 'बिहार पुस्तकालय-संघ' की स्थापना की गई। सितम्बर १९३७ मे पुस्तकालय-सघ का दूसरा अधिवेशन पटना सिटी के बिहार हितैपी पुस्तकालय मे डा० अनुग्रह नारायण सिह की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। इसके बाद संघ की कार्यविधि ढाली पड गई। लेकिन १९४३ ये फिर कुछ उत्साही व्यक्तियो ने सघ का तीसरा अधिवेशन श्री भुवनेश्वर प्रसाद जी की अध्यक्षता मे पटना मे किया। इसके बाद चौथा अधिवेशन दरभगा की लक्ष्मीश्वर पब्लिक लाइब्रेरी मे श्री चन्डेश्वर प्रसाद नारायण सिह की अध्यक्षता मे हुआ। इन अधिवेशनो मे लोग मिलते-जुलते रहे और अपनी प्रगति की बाते सोचते रहे, लेकिन सगठित रूप मे कोई ठोस कार्य की योजना न बन पाई।

संयुक्त-प्रान्त आगरा व अवध

ब्रिटिश काल मे पुस्तकालय विकास के दृष्टिकोण से सयुक्त-प्रान्त काफी प्रगतिशील रहा। इस प्रदेश मे चार विम्वविद्यालय स्थापित किये गए जिनसे संलग्न समृद्ध पुस्तकालय भी थे। काशी विश्वविद्यालय का गायकवाड पुस्तकालय, लखनऊ की अमीरुद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी, नागरीप्रचारिणी-सभा काशी का आर्य भाषा पुस्तकालय, प्रयाग का हिन्दी सग्रहालय और पब्लिक लाइब्रेरी, इसी काल मे स्थापित हुए। अखिल भारतीय सेवा समिति, प्रयाग के प्रबध-मंत्री श्री एस० आर० भारतीय महोदय के प्रयास से स्वर्गीय सी० वाई० चिन्तामणि की स्मृति मे 'चिन्तामणि मेमोरियल लाइब्रेरी' की भी स्थापना १९४१ मे प्रयाग मे हुई जिनमे समाज-सेवा सम्वन्धी ऐसी विशिष्ट पुस्तकों का संग्रह किया गया जो अन्य पुस्तकालयो मे नही मिल सकती।

शिक्षा-प्रसार विभाग

शिक्षा विभाग सयुक्त-प्रदेश द्वारा इस प्रान्त मे १९२६-२७ मे ४३ जिलो को पाँच-पाँच सौ रुपये की ग्राट नए ९६ पुस्तकालय खोलने के लिए दी गई। सन् १९२७-२८ मे उसी क्रम से ७६ और पुस्तकालय खोले गये। पाँच ट्रेवेलिग और सरकुलेटिंग लाइब्रेरी भी खोली गई। इस प्रकार प्रान्तीय सरकार पुस्तकाल को प्रोत्साहन देती रही, यद्यपि सरकारी आर्थिक सहायता वहुत

हल्की थी। उसके बाद इस प्रान्त मे ग्रामवासी प्रौढो मे शिक्षा का प्रचार करने के लिए सरकार की ओर से एक 'शिक्षा प्रसार विभाग' की स्थापना सन् १९३८ मे हुई। यह विभाग शिक्षा विभाग के अन्तर्गत रखा गया। उस विभाग की ओर से प्रौढोपयोगी विभिन्न विषय की पुस्तकें खरीद कर उन्हे बक्सो मे रख कर गाँव के कुछ निश्चित केन्द्रो तक पहुंचाने की व्यवस्था की गयी। इस प्रकार के १३१७ पुस्तकालय इस काल मे स्थापित हुए।

संघ और डाइरेक्टरी

इस प्रान्त मे पुस्तकालय सघ की स्थापना स्वर्गीय डा० वली मुहम्मद के प्रयत्नो से हुई जो इस प्रान्त मे सबसे अधिक रुचि रखने वाले व्यक्ति थे। वे लखनऊ यूनिवर्सिटी मे फिजिक्स के प्रोफेसर तथा अमीरउद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी के आनरेरी लाइब्रेरियन भी थे। उनकी अध्यक्षता मे अखिल भारतीय पुस्तकालय-सघ का तीसरा अधिवेशन भी दिल्ली मे हुआ था। डा० वली मुहम्मद साहब ने १९३७ ई० इस प्रान्त के पुस्तकालयो की एक डाइरेक्टरी भी तैयारी की। उसमे ५१९ पुस्तकालयो का विस्तृत विवरण है जिनमे अमन-सभा से ले कर यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी तक के पुस्तकालय हैं किन्तु पाँच हजार से अधिक पुस्तको वाले पुस्तकालयो की सख्या इस प्रान्त मे १९३६ तक केवल ४८ थी।

डा० माताप्रसाद गुप्त, रीडर इलाहाबाद यूनिवर्सिटी (हिन्दी विभाग) ने 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' नामक पुस्तक का सम्पादन किया जिनमे उन्होने १९४२ तक छपी हिन्दी की सब पुस्तको की विषय-क्रम से सूची प्रस्तुत की। यह पुस्तक हिन्दुस्तानी एकेडेमी से प्रकाशित हुई।

पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा

इस प्रान्त मे पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा की व्यवस्था सन् १९४१ ई० मे बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी की ओर से यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी (गायकवाड लाइब्रेरी) मे की गई। इसमे न्यूनतम योग्यता ग्रेजुएट रखी गयी। धीरे-धीरे अनेक प्रान्तो से विद्यार्थी इस प्रशिक्षण मे आने लगे।

पंजाब प्रांत

पंजाब विश्वविद्यालय ने पुस्तकालय आन्दोलन को विकसित करने में अप्रत्यक्ष रूप से बहुत सहायता की। लाहौर-स्थित पजाब विश्वविद्यालय ही पहला विश्वविद्यालय था जिसने १९१५ ई० मे अपने पुस्तकालय को वैज्ञानिक ढग से सगठित करने के लिए एक अमेरिकन लाइब्रेरियन श्री ए० डी० डिकि-

न्सन को बुलाया। मि० डिकिन्सन ने पुस्तकालय को सगठित किया और उसमे 'लाइब्रेरी साइंस' की ट्रेनिङ्ग की भी व्यवस्था की। उन्होने 'पञ्जाब लाइब्रेरी प्राइमर' नामक एक पुस्तक भी लिखी। इस तरह उन्होने पंजाब मे पुस्तकालय आन्दोलन शुरू किया। पजाब यूनिवर्सिटी के इस ट्रेनिङ्ग कोर्स मे स्व० के० एम० असदुल्ला सब से पहले भारतीय विद्यार्थी थे जिन्होने लाइब्रेरी साइन्स मे डिप्लोमा प्राप्त किया। उन दिनो इस प्रकार की ट्रेनिग लेना बहुत घृणित समझा जाता था। श्री असदुल्ला के साथी ही उन्हे 'पढा लिखा दफ्तरी' कहा करते थे। किन्तु धीरे-धीरे यही श्री असदुल्ला 'इम्पीरियल लाइब्रेरी' के लाइब्रेरियन हो गए। कलकत्ता यूनिवर्सिटी के वर्त्तमान लाइब्रेरियन श्री प्रमीलचन्द्र बसु ने भी यही से १९३३–३४ के सेशन मे डिप्लोमा लिया। 'पञ्जाब पुस्तकालय-संघ' की स्थापना १९२९ मे हुई। इसके निम्निलिति उद्देश्य थे —

१ पुस्तकालयो की स्थापना और उसके विकास को आगे बढाना।

२ पुस्तकालयो की उपयोगिता मे वृद्धि करना।

३ जनता की शिक्षा मे पुस्तकालयो को महत्त्वपूर्ण बनाना।

इंडियन लाइब्रेरियन' नामक पत्रिका का प्रकाशन भी १९४५ ई० मे लाहौर से शुरु हुआ। इस सघ की ओर से 'माडर्न लाइब्रेरियन' नामक त्रैमासिक पत्रिका भी निकाली गई।

बङ्गाल-प्रांत

इस प्रान्त मे पुस्तकालय सघ की स्थापना १९३१ मे की गई। उसके बाद राज्य मे पुस्तकालय आन्दोलन को गतिशील बनाने का काम शुरू किया गया। कलकत्ता यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी (सेंट्रल) मे इसका रजिस्टर्ड कार्यालय रखा गया। इसकी ओर से 'बंगाल लाइब्रेरी एसोसिएशन बुलेटिन' का प्रकाशन १९३८ ई० मे शुरू हुआ। इस सघ ने १९३७ मे ग्रीष्मकालीन त्रैमासिक कोर्स पुस्तकालयाध्यक्षों की ट्रेनिङ्ग के लिए चलाया, जिसमें पर्याप्त सफलता मिली। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों मे बंगाल मे पुस्तकालय-आन्दोलन बड़े जोरों पर था। इस आन्दोलन के नेताओं ने कलकत्ता विश्वविद्यालय तथा बंगाल सरकार से ट्रेनिग के प्रबन्ध के लिए काफी कोशिश की। अन्त में स्व० कुमार मुनीन्द्रदेव राय महाशय ने सन १९३४ ई० मे अपने सहयोगियो के सहारे 'हुगली जिला पुस्तकालय संघ' के तत्त्वावधान में एक ट्रेनिग कैम्प की स्थापना की। बासबेड़िया मे स्थित 'प्रशिक्षण शिविर' के प्रबन्-

नीय कार्यो को देख कर पुस्तकालय आन्दोलन के नेताओ का साहस चौगुना हो गया।

खान बहादुर के० एम० असदुल्ला ने भी भारत मे पुस्तकालयाध्यक्षो को शिक्षित करने मे बहुत रुचि ली। उन्होने बडी लगन के साथ इस ओर काम किया। वे इम्पीरियल लाइब्रेरी मे लाइब्रेरियन थे। उन्होने भारत सरकार के पास दौड-धूप की और आखिर मे १९३५ ई० मे इम्पीरियल लाइब्रेरी मे 'डिप्लोमा कोर्स' की पढाई सरकार ने स्वीकार कर ली। १९४५ ई० मे कलकत्ता विश्व-विद्यालय मे भी जब लाइब्रेरी साइन्स की ट्रेनिंग की व्यवस्था हो गई तो इस ट्रेनिंग का भी इसी मे विलयन हो गया।

आंध्र-प्रात

बडौदा के पुस्तकालय-आन्दोलन ने आन्ध्र-निवासियो मे अच्छी जागृति पैदा की। उसके फलस्वरूप १९३१ ई० मे 'आन्ध्र पुस्तकालय सघ' की स्थापना हुई। सघ ने लोगो के सहयोग मे कई एक पुस्तकालय स्थापित किए। पदपालम् के केन्द्रीय पुस्तकालय ने १९३५ ई० मे मोटरो द्वारा पुस्त-कालय सेवा के स्थान पर नावो द्वारा इस काम को पूरा किया। इस प्रकार की पुस्तक-सेवा तीस गाँवो तक फैली। इसकी ओर से 'आंध्र ग्रन्थालयम्' और 'तेलुगु' इंगलिश त्रैमासिक पत्रिका १९३९ से शुरू हुई। इस सघ ने आंध्र-प्रदेश की लाइब्रेरियो की दो बार सन् १९१४ और १९१५ मे डाइरेक्टरी प्रकाशित की तथा पुस्तकालय-विज्ञान की कई अन्य पुस्तके भी प्रकाशित की। १९३५ ई० मे आन्ध्र विश्वविद्यालय मे लाइब्रेरी साइन्स मे डिप्लोमा कोर्स की पढाई शुरु हुई।

ट्रावनकोर-कोचीन

ट्रावनकोर-कोचीन राज्य मे भी पुस्तकालय आन्दोलन की प्रगति बीसवी शताब्दी मे हुई। ट्रावनकोर सरकार ने १९३६ के अपने बजट मे सबसे पहले पुस्तकालयो के लिए २, १३,००० रुपये का व्यय स्वीकार किया। कोचीन सर-कार ने भी इस ओर ध्यान दिया। सन् १९४२ मे इन दोनो राज्यो के निवा-सियो ने मिल कर 'केरल पुस्तकालय सघ' की स्थापना की।

अन्य प्रांतों में पुस्तकालय-आन्दोलन

उडीसा प्रान्त मे सन् १९४४ ई० मे 'उत्कल लाइब्रेरी एसोसिएशन' की स्थापना हुई और इसका कार्यालय नयागढ, पुरी, उडीसा मे रखा गया। यह सघ भी अपने वार्षिक अधिवेशन तथा कुछ प्रचार कार्य करता रहा।

आसाम प्रान्त मे 'ऑल आसाम लाइब्रेरी एसोसिएशन' की स्थापना १९३८ ई० मे हुई। इसका कार्यालय पोलोफील्ड पोस्ट तेजपुर (आसाम) मे रखा गया। इसकी ओर से भी अधिवेशन आदि होते रहे।

पूना मे 'पुस्तकालय-संघ' की स्थापना १९४५ ई० मे हुई।

दिल्ली मे पुस्तकालय-सघ की नीव १९४६ ई० मे पडी जिसकी ओर से एक 'ट्रेनिग क्लास' की भी व्यास्था का गई। दिल्ली विश्वविद्यालय मे १९४७ ई० मे पुस्तकालय-विज्ञान का एक स्वतन्त्र विभाग खोला गया, जहाँ पर 'डिप्लोमा कोर्स' के अतिरिक्त 'मास्टर डिग्री' का एक कोर्स चालू किया गया। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय-विज्ञान मे रिसर्च करने के लिए भी व्यवस्था की गई। यह कार्य पुस्तकालय-विज्ञान के प्रसिद्ध भारतीय आचार्य डा० एस० आर० रंगनाथन् की अध्यक्षता मे प्रारम्भ किया गया।

इस प्रकार ब्रिटिश शासन काल मे अनेक प्रान्तो और देशी राज्यो मे पुस्त-कालय संघ स्थापित हुए। पुस्तकालय-विज्ञान को भी कुछ महत्त्व मिला और उसे एक स्वतन्त्र विषय के रूप मे माना जाने लगा।

भारत में प्रौढ़ शिक्षा-सम्बन्धी पुस्तकालय

पुस्तकालय प्रौढो के लिए स्व-शिक्षा के एक महत्त्वपूर्ण साधन है। इस बात को सबसे पहले बडौदा नरेश स्व० महाराज गायकवाड महोदय ने अपने राज्य मे अनुभव किया और भ्रमणशील पुस्तकालयो की योजना चालू की। इसकी आलोचना सभी राज्यो ने की किन्तु अनुसरण किसी ने नही किया। कुछ वर्ष बाद आन्ध्र लाइब्रेरी एसोसिएशन की स्थापना हुई तो उसने इसके लिए कुछ आन्दोलन किया। उसने १९१९ मे एक कान्फ्रेन्स बुला कर 'आल इंडिया लाइब्रेरी असो-सिएशन' की स्थापना भी की। महाराष्ट्र और बगाल ने भी उसका अनुसरण करके लाइब्रेरी एसोसिएशन स्थापित किए।

प्रौढो के लिए स्थापित पुस्तकालयो के विकास का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है —

पंजाब मे १९३० मे १६९० पुस्तकालय थे। जो ग्रामीण क्षेत्रो मे मिडिल स्कूलो के साथ थे। नार्मल स्कूल के अध्यापको को कहा गया कि वे उनके द्वारा प्रौढो को साक्षर होने की ओर आकृष्ट करे। सी० पी० और बरार ने भी १९२८ मे ऐसे पुस्तकालयो की स्थापना की। १९३५ मे ट्रावनकोर ने बडौदा के ढङ्ग पर नगर और गांव पुस्तकालयों को चलाना चाहा। वहाँ शिक्षा-विभाग पुस्तकालय और वाचनालय को प्राइमरी स्कूलो मे स्थापित करने

के लिए ८० पुस्तकालयो की व्यवस्था के निमित्त ३०,००० रु० प्रतिवर्ष ग्राण्ट देने का वजट मे स्थान दिया।

प्राइवेट पुस्तकालयो को भी सरकार ने फर्नीचर और विल्डिङ्ग तथा अन्य व्यवस्था के लिए ग्राण्ट दी। ट्रिवेंड्रम पब्लिक लाइब्रेरी ने केन्द्रीय हेडक्वार्टर के रूप मे ग्राम पुस्तकालयो के लिए काम किया जो सम्बन्धित ग्राम-पुस्तकालयो में से प्रत्येक को एक-एक वार २० पुस्तकें भेजा करती थी।

१९३९ मे वम्बई सरकार ने एक 'लाइब्रेरी डेवलपमेंट कमेटी' बनाई। उसके सुझाव पर पेठ लाइब्रेरी, तालुका लाइब्रेरी क्षेत्रीय लाइब्रेरी और केन्द्रीय लाइब्रेरी की एक योजना स्वीकार की गई। इनके अन्तर्गत रजिस्टर्ड गाँव के पुस्तकालयों को ३० से ५० ग्राण्ट दी गई। १९४१–४२ मे ७५० गाँव पुस्तकालय खोले गए और २२,००० रु० की ग्राण्ट दी गई।

उत्तर-प्रदेश

उत्तर-प्रदेश सरकार ने प्रथम साक्षरता दिवस पर गाँव के क्षेत्रो मे ७६८ पुस्तकालय और ३६०० वाचनालय खोले। इन पुस्तकालयो की संख्या १९४०–४१ मे १००० हो गई। और ४० महिला लाइब्रेरी भी खोली गई। १९४०–४१ मे १५० रु० मूल्य की पुस्तकें और कुछ मासिक पत्रिकाएँ और अखवार दिये गए। १९३९–४९ में ५०० प्राइवेट लाइब्रेरियो को (गाँव के क्षेत्र मे) और १९४०–४१ और १९४१ मे ऐसे ५०६ पुस्तकालयो को ग्राण्ट दी गई। १९४१–४२ मे २५० पुस्तकालयो को (रूरल डेवलपमेंट डिपार्टमेंट के) पत्र-पत्रिकाएँ भी दी गई। फिर ५० वीमेंस वेलफेयर सेंटर को (रूरल डप०, डि० फैजावाद) ५०० रु० की ग्राण्ट पत्र-पत्रिकाओ की सप्लाई के साथ-साथ दी गई।

१३१७ गाँव पुस्तकालय और ३६०० वाचनालय जो पहले स्थापित हो चुके थे, अपना काम करते रहे। इन्होने १६ से १७ लाख तक पुस्तकें एक साल में पढने को दी। जव सरकार ने दैनिक अखवार भेजना बन्द कर दिया तो पाठको की सख्या जो १९४१–४२ मे ५३८२९४३ से वढ कर ७५८२१७५ हो गई थी, १९४३–४४ मे ३७७८८८९ ही रही अर्थात् घट गई। १९४३–४४ मे सहायता-प्राप्त पुस्तकालय २५९ रहे, जब कि १९४१–४२ मे केवल २५० थे। उन्होने २,३२,९८५ पुस्तके साल भर मे पढने के लिए दी। १९४२–४३ मे सरकार ने इलाहावाद मे एक सेंट्रल लेंडिङ्ग लाइब्रेरी स्थापित की।

विहार

विहार सरकार के गाँव पुस्तकालयो का विवरण इस प्रकार है :—

वर्ष	पुस्तकालयों की संख्या जो खुले	कुलपुस्तकालयों की संख्या	इन पुस्तकालयों में कुल पुस्तकें जो सरकुलेट की गई
१९४२–४३	१०००	८०००	६,८३,३९२
१९४३–४४	७५०	८७५०	४,६७,४४१
१९४४–४५	७१०	९२६०	...
१९४५–४६	.	.	...
१९४६–५७	....		६,०३,८९६

वम्बई

नयी स्कीम के अन्तर्गत १९४५–४६ मे—विना किसी वर्गभेद, या धर्मभेद के सभी के लिए पुस्तकालय हो—इस शर्त पर वम्बई सरकार ने ग्राण्ट देना निश्चय किया। ४००० रु० तक की ग्राण्ट दी जा सकती थी यदि उतना ही जनता से भी प्राप्त हो। कुछ स्थानो पर महिलाओ के लिए पुस्तकालयो की अलग व्यवस्था की गई। ये पुस्तकालय ८ से १२ घटे तक खुले रहते थे। १० रु० पत्र-पत्रिकाओ और ३० से ५० रुपये तक इक्विपमेट के लिए सहायता भी दी जाने लगी।

वर्ष	नए पुस्तकालय	कुल पुस्तकालय	व्यय
१९४२–४३	५८०	१२००	१८८४०
४३–४४	३००	१५००	१८८००
४४–४५	२००	१७००	२००००
४५–४६	२६०	१९६०	२७०००
४६–४७	४३०	२३९०	३३०००

लाइब्रेरी इक्विपमेंट

पुस्तकालयो को वैज्ञानिक ढंग से व्यवस्थित करने के लिए पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा ही काफी नही होती। इसके साथ ही दूसरी आवश्यकता यह थी कि वैज्ञानिक ढंग का 'लाइब्रेरी इक्विपमेंट्स' भी अपने देश में सरलता-पूर्वक सस्ते दामों पर मिल सके। बड़ौदा स्टेट मे तो 'पुस्तकालय सहकारी समिति' द्वारा यह कार्य बहुत कुछ सरल हो गया था। लाहौर मे मेहरा ऐंड कम्पनी सन् १९२५ ई० में स्थापित हुई, जिसने कैटलाग कार्ड्स, डेट स्लिप, ऐक्सेशन रजिस्टर, बुक रैक्स, गाईड कैबिनेट आदि सभी प्रकार के सामान पुस्तकालयों को सप्लाई करके अच्छी सेवा की। मद्रास और कलकत्ता मे भी दो एक कम्पनियाँ इस प्रकार के कार्य के लिए स्थापित हुईं।

पुस्तकालय-विज्ञान-सम्बन्धी साहित्य

पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा-व्यवस्था के साथ ही ब्रिटिशकालीन भारत में पुस्तकालय-विज्ञान सम्बन्धी साहित्य की भी रचना प्रारम्भ हुई। इस काल में निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हुईं —

१९१४ आंध्र देश लाइब्रेरी एसोसिएशन : डाइरेक्टरी आफ आन्ध्र लाइब्रेरीज।
१९१५ ,, ,, ,, ,,
१९१६ डिकिंसन, ए० डी० — पंजाब लाइब्रेरी प्राइमर।
१९१८ केम्प स्टैण्डली — कैटलॉग आफ द साइंटिफिक सीरियल पब्लिकेशन इन प्रिंसिपल लाइब्रेरीज इन कलकत्ता।
१९१९ कुदेलकर, जे० एस० — बड़ौदा लाइब्रेरी मूवमेंट।
,, नरसिंहशास्त्री, एस०, वी० — पब्लिक लाइब्रेरी ऐट होम ऐण्ड एब्रोड।
१९२७ मुकर्जी, प्रभात कुमार — डेसिमल क्लैसीफिकेशन एडाप्टेड फार द यूज आफ इंडियन लाइब्रेरीज।
१९२८ दत्त, एन० एम० — बड़ौदा ऐण्ड इट्स लाइब्रेरीज।
१९२९ मद्रास लाइब्रेरी एसोसिएशन — लाइब्रेरी मूवमेंट।
१९३१ रंगनाथन्, एस० आर० — फाइव लाज आफ लाइब्रेरी साइंस।
रंगनाथन्, एस० आर० — माडेल लाइब्रेरी ऐक्ट।
१९३२ गुह, सतीशचन्द्र — प्राच्य वर्गीकरण पद्धति।
१९३३ पारखी, आर० एस० — ग्रंथालय शास्त्रा चा ओनामा।
,, रंगनाथन्, एस० आर० — कोलन क्लैसीफिकेशन द्वि० सं० १९३९ तृतीय १९५०।
,, रंगनाथन्, एस० आर० — क्लैसीफाइड कैटलाग कोड द्वि सं १९४५ तृतीय १९५१।
१९५३ देव, राय महाशय (कुमार मुनीन्द्र) — ग्रन्थागार।
,, रंगनाथ, एस० आर० — लाइब्रेरी ऐडमिनिस्ट्रेशन।
,, रमन, वाई० एल० वी० — लाइब्रेरी मूवमेंट।
१९३६ आरटे — लिस्ट आफ द साइंटिफिक पीरियडिकल्स इन द बाम्बे प्रेसिडेंसी।
,, कनाडे आर० जी० — लाइब्रेरी इन्डेक्स।
,, रंगनाथन्, एस० आर० — स्कूल लाइब्रेरी वर्क सिलेबस ऐण्ड बिब्लियोग्रैफी।

वर्ष	लेखक	ग्रंथ
१९३७	दाते, एस० जी०	मराठी ग्रंथ-सूची १८००-१९३७
,,	रंगनाथन्, एस० आर०	प्रोलेगोमेना टु लाइब्रेरी क्लैसीफिकेशन,
,,	वली मुहम्मद (डा०)	डाइरेक्टरी आफ लाइब्रेरीज इन द यूनाइटेड प्राविसेज आगरा ऐण्ड अवध,
१९३८	इण्डियन लाइब्रेरी एसोसिएशन	डाइरेक्टरी आफ इण्डियन लाइब्रेरीज।
,,	कानाडे, आर० जी०	प्राचीनार्वाचीन ग्रंथालयम्।
१९३९	आंध्रदेश लाइब्रेरी एसोसिएशन	डाइरेक्टरी आफ आंध्र लाइब्रेरीज।
१९४०	इलाही, (फजल)	रिफ्रेंस असिस्टेंस टु इण्डियन रीडर्स।
,,	रंगनाथन्, एस० आर० और सुन्दरम् सी०	रिफ्रेंस सर्विस ऐण्ड बिब्लियोग्रैफी भाग १
,,	रिजवी, एस० एच०	इन्तजाम-ए-कुतुबखाना (लाइब्रेरी ऐडमिनिस्ट्रेशन)।
,,	,, ,,	लाइब्रेरी और उसके थन्जीम।
,,	,, ,,	लाइब्रेरी सुधार।
१९४१	रंगनाथन्, एस० आर० ऐण्ड शिवरामन् के० एस०	रिफ्रेंस सर्विस ऐण्ड बिब्लियोग्रैफी।
,,	सोहनसिंह	मैनुअल आफ लाइब्रेरी सर्विस फार चिल्ड्रेन फार यूज इन इंडियन लाइब्रेरीज।
१९४२	बंगाल लाइब्रेरी एसोसिएशन	बंगाल लाइब्रेरी डाइरेक्टरी।
,,	रंगनाथन्, एस० आर०	ड्राफ्ट मॉडल इंडियन लाइब्रेरी एक्ट।
,,	,, ,,	स्कूल ऐण्ड कालेज लाइब्रेरीज।
,,	वशीरुद्दीन, ऐण्ड नकवी जे०ए०	इन्तजाम-ए-कुतुबखाना।
,,	शिवरामन्, के० एस०	बिब्लियोग्रैफी आफ द राइटिंग्स बाई ऐण्ड आन श्री राव साहिब एस०आर० रंगनाथन्।
१९४४	इण्डियन् लाइब्रेरी एसोसिएशन	डाइरेक्टरी आफ इण्डियन लाइब्रेरीज।
,,	शिवरामन्, के० एस०	कोलन सिस्टम ऐण्ड इट्स वर्किङ्ग।
,,	रंगनाथन्, एस० आर०	पोस्ट वार दि कन्स्ट्रक्शन आफ लाइब्रेरीज इन इण्डिया (एक योजना)।

१९४५ नागभूषणम्, पी० . फर्स्ट लिस्ट आफ तेलुगू हेडिंग्स सुटेबुल फार लाइब्रेरीज।

„ नागराव राज, के० : बिब्लियोग्रैफी आफ इण्डियन कल्चर ऐण्ड इट्स प्रेपरेशन।

„ „ „ लाइब्रेरी मूवमेंट इन इण्डिया।

„ पारखी, आर० एस० टेक्निकल ऐण्ड कोलन क्लैसीफिकेशन, ए समरी ऐण्ड ए कम्परीजन।

„ रंगनाथन्, एस० आर० एलीमेंट्स आफ लाइब्रेरी क्लैसी-फिकेशन।

„ „ „ डिक्शनरी कैटलाग कोड द्वि०सं० १९५१

„ पारखी, आर० एस० रिफ्रेंस सर्विस इन लाइब्रेरीज।

१९४६ रंगनाथन् एस० आर० क्लैसीफिकेशन आफ मराठी लिटरेचर,

„ „ „ मराठी ललित वाङ्मया चा वर्गीकरण (अनु वी० पी० कोनालकर)।

„ „ „ नेशनल लाइब्रेरी सिस्टम (ए प्लान फार इण्डिया)।

„ „ „ . सजेशन्स फार द आर्गनाइजेशन आफ लाइब्रेरीज इन इण्डिया।

इसके अतिरिक्त बडौदा से 'लाइब्रेरी साइंस' की सबसे पहली एक पत्रिका 'लाइब्रेरी मिस्लेनी' प्रकाशित हुई। 'ऑल इण्डिया लाइब्रेरी एसोसिएशन' की ओर से उसके कान्फ्रेंस के विवरण, तथा आन्ध्र-देश लाइब्रेरी एसोसिएशन की ओर उसके कान्फ्रेंस के विवरण भी प्रकाशित हुए। जो अन्य पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई उनका जिक्र प्रान्तीय आन्दोलन के साथ-साथ कर दिया गया है।

ब्रिटिशकालीन पुस्तकालयो पर एक दृष्टि

इस अध्याय मे ब्रिटिशकालीन पुस्तकालयो की जो सक्षिप्त चर्चा की गई, उससे साफ जाहिर है कि ब्रिटिशकाल मे बहुत वर्षो तक तो कम्पनी शिक्षा के दायित्व से बचती रही। जब दायित्व उसके ऊपर लादा भी गया तो शिक्षा के नीति-निर्धारण मे भी काफी समय लगा। उसके बाद एक नए ढग की शिक्षा-प्रणाली और साथ ही नयी शासन-प्रणाली के ढाँचे मे ढल कर भारतीय शिक्षा और पुस्तकालयो का रूप ही बदल गया। इतना तो मानना ही पडता है कि अंग्रेज शासको की हार्दिक इच्छा कभी भी भारतीय जनता को

पूर्ण रूप से शिक्षित बनाने की नही रही। अत जो कुछ भी इस काल मे किया गया उसमे शासन चलाने का हित पहले था और जनता का हित बाद मे। यही कारण है कि इतने लम्बे अर्से तक शासन करने पर भी भारतीय जनता १० प्रतिशत से अधिक साक्षर नही हो सकी यद्यपि कुछ बडे-बडे विद्वान, कुशल शासक और धुरंधर राजनीतिज्ञ भी इस काल मे पैदा हुए।

फिर भी अंग्रेजी शासन भारत के लिए एक अर्थ मे बहुत ही सहायक सिद्ध हुआ। देश मे पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान का प्रचार होने से, तथा रेल, तार, डाक, प्रेस, रेडियो तथा अन्यान्य साधनो के उपलब्ध होने से भारतीय शिक्षा और पुस्तकालयो के विकास के लिए एक ऐसी पृष्ठभूमि बन गई जिस पर अपने ढंग से जो कुछ चाहे किया जा सकता है। चूँकि ब्रिटिश काल मे जनता के बौद्धिक स्तर को ऊँचा उठाने की बात साफ दिल से शासक वर्ग सोचते नही थे, और कमर कस कर इस पर तैयार नही होते थे, इसलिए पुस्तकालयो का जनता से सम्पर्क नही हो पाया। कहने का तात्पर्य यह है कि ब्रिटिशकाल मे पुस्तकालयो को मौलिक शिक्षा (फण्डामेण्टल एजुकेशन) एव सामाजिक शिक्षा का आधार नही माना गया और न तो उन्हे इसके लिए प्रयोग मे ही लाया गया। अतः पुस्तकालयो को उभाड़ने का मौका नही मिल सका।

★

अध्याय ९

स्वाधीनकालीन पुस्तकालय

नव-निर्माण की ओर

ब्रिटिशकाल मे भारत की शिक्षा का प्रतिशत बहुत नीचा था। खेद है कि इतने लम्बे काल तक शासन करने पर भी अंग्रेजो की दूषित नीति ने हमारा अनेक प्रकार से पतन हो गया। अत देश का चतुर्मुखी विकास करके इसको एक सुसस्कृत और सम्पन्न राष्ट्र बनाने के लिए देश के नेतागण जुट गए। भारत का सविधान बनाया गया और उसे २६ जनवरी १९५० ई० को लागू किया गया।

भारत मे स्थित ब्रिटिशकाल की सभी छोटी-बडी रियासतो को भारत के प्रान्तो में मिला कर निम्नलिखित तीन श्रेणी के राज्य बनाए गए —

(क) उत्तर-प्रदेश, बम्बई, आन्ध्र, बिहार, मध्य-प्रदेश, पूर्वी पंजाब, उडीसा, आसाम, मद्रास, पश्चिमी बगाल।

(ख) मध्य-भारत, राजस्थान, सौराष्ट्र, हैदराबाद, पेप्सू, ट्रावनकार, कोचीन, मैसूर, जम्मू एव काश्मीर।

(ग) हिमाचल प्रदेश, विन्ध्यप्रदेश, दिल्ली, अजमेर, त्रिपुरा, भोपाल, कुर्ग, कच्छ, मणिपुर बिलासपुर, तथा अण्डमान-नीकोबार।

इन प्रदेशो मे 'क' श्रेणी का शासन राज्यपाल, 'ख' श्रेणी का राज्यप्रमुख और 'ग' श्रेणी का उपराज्यपाल तथा डिप्टी-कमिश्नरो के द्वारा होने लगा।*

---

* राज्य पुनर्गठन होने पर अब १४ प्रदेश और ६ केन्द्र शासित क्षेत्र हो गए है।

प्रदेश बम्बई, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तर-प्रदेश, आध्र, जम्मू-काश्मीर, आसाम, मैसूर, बिहार, उडीसा, मद्रास, प० बगाल, पजाब और केरल।

क्षेत्र हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, त्रिपुरा, अण्डमान-नीकोबार, दिल्ली, और लकादिव आदि।

इस प्रकार देशी राज्यो का विलयन करके भारत संघ की एक इकाई के रूप मे प्रदेश बनाए गए और इसके साथ ही साथ अनेक जटिल समस्याओ का सामना किया गया जिनमे शरणार्थियो की पुनर्वास व्यवस्था, खाद्यान्न का प्रबन्ध तथा ऐसी अनेक बाते थी। जमीदारी-उन्मूलन करके भूमि-सुधार को हाथ मे लिया गया। लेकिन इन सबके ऊपर एक सबसे बडी समस्या थी—जनता की अशिक्षा। जनता मे अशिक्षा के शिकार प्रौढो का एक बहुत बडा वर्ग है। बच्चे जिन्हे बचपन मे पढने की सुविधा प्राप्त नही होती है, वे वडे हो कर निरक्षर रह जाते है। ऐसे प्रौढ स्वतन्त्र देश के लिए कलङ्क रूप हो जाते है। फिर बच्चो की शिक्षा मे भी शिक्षा का नये ढङ्ग से पुनर्गठन और उसकी व्यवस्था। अत इन सबकी ओर ध्यान दिया गया।

शिक्षा-दीक्षा का विचार करते समय पुस्तकालयो की उपयोगिता को भी स्वीकार किया गया। राष्ट्रीय सरकार ने यह अनुभव किया कि पुस्तकालयी केवल शिक्षण-सस्थाओ के लिए ही जरूरी नही है वल्कि वे समाजिक शिक्षा के भी प्रबल साधन है। इन पुस्तकालयो के द्वारा नव-प्रौढो की साक्षरता को स्थायी बनाया जा सकता है और जनता का बौद्धिक विकास सरलतापूर्वक किया जा सकता है। अत पुस्तकालयो से जनता का सम्पर्क स्थापित करने के लिए बडे पैमाने पर नए सिरे से काम शुरू किया गया।

शिक्षा की ओर विशेप ध्यान दिया गया और उसमे काफी उन्नति की गई। चूँकि अब भी पुस्तकालय शिक्षा-विभाग के अन्तर्गत ही है, अत' शिक्षा की प्रगति का सक्षिप्त परिचय जान लेना आवश्यक है।

प्राथमिक शिक्षा

ब्रिटिशकाल मे हमारे देश मे ६ से ११ साल के वच्चो मे से मुश्किल से ३० प्रतिशत वच्चे स्कूल मे पढा करते थे। किन्तु स्वाधीनता के वाद इस ओर ध्यान दिया गया। और 'क' श्रेणी के राज्यो मे १९४८ ई० तक १,४०, १२१ प्राथमिक स्कूल हो गए और उनमे पढने वालो की सख्या १, १०,००,९६४ तक पहुँच गयी। १९५३ के मार्च तक स्कूलो की संख्या १,७७,२८५ हो गई। इस प्रकार स्वाधीनता के वाद ३७,००० नए स्कूल खोले गए। पूरे भारत मे १९५३ मे २,२१०८२ स्कूल थे और उनमे पढने-वालो की सख्या १,९२,९६,८४० थी। शिक्षा मे सुधार करने के लिए वुनियादी शिक्षा के सिद्धान्त अपनाए गये। १९५३ तक ५९८ नगरों और

२१, २६० गाँवो मे अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा फैला दी गई। इस प्रकार भारत की साक्षरता मे भी लगभग ६% (१९४१ की अपेक्षा) वृद्धि हुई।

माध्यमिक शिक्षा

प्राथमिक शिक्षा के प्रसार से माध्यमिक शिक्षा मे भी वृद्धि हुई। १९४७ के वाद नए स्कूलो मे वृद्धि होनी शुरू हुई और १९५३ के अंत तक मिडिल स्कूलो की सख्या १५,२३२ और हाई स्कूलो की सख्या ८६३३ हो गई। माध्यमिक शिक्षा को अधिकतर लोग रोजी कमाने का साधन मानते है। इसलिए १९५२ मे समूचे देश मे सामान्य रूप से माध्यमिक शिक्षा पर सोच-विचार के लिए एक कमीशन की नियुक्ति हुई। उसने रिपोर्ट में पाठ्य-क्रम और परीक्षाओ मे भारी हेर-फेर के सुझाव रखे। इसी बीच देश के कई भागो मे नए पाठ्य-क्रम बनाये गए और उद्योग-धन्धे, सगीत, दस्तकारी, खेती, जूनियर केडेटकोर तथा समाज स्वय सेवक जैसे काम शुरू करके पाठ्य-क्रम को सुधारा गया। अब उत्तर बुनियादी स्कूलो के रूप में धीरे-धीरे एक नई तरह के माध्यमिक स्कूलो का विकास हो रहा है। १५५३ मे केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय की ओर हेडमास्टरो का एक अखिल भारतीय सेमिनार भी शिमला मे हुआ। यह प्रयोग वहुत ही सफल रहा।

विद्यालय और ऊँची शिक्षा की संस्थाएँ

देश के विभाजन के वाद भारत मे केवल १२ विश्वविद्यालय थे। १९४५ तक उनकी सख्या ३० हो गई। इसी प्रकार सामान्य शिक्षा देने वाले कालेजो की सख्या भी १९५३ तक ६०६ और व्यावासायिक शिक्षा देनेवाले कालेजो की सख्या ३१४ हो गई। सन् १९४८ मे 'क' श्रेणी के राज्यो मे कुल २७००० ग्रेजुएट थे। १९५३ मे यह सख्या वढ कर ५२,००० हो गई। शिक्षा पर व्यय भी वढा। १९५३ मे सारे भारत मे उच्च शिक्षा पर १५ करोड २२ लाख खर्च हुए, जिसमे व्यावसायिक शिक्षा पर ५ करोड ९४ लाख खर्च हुए। सन् १९४८ ई० डा० राधाकृष्णन् की अध्यक्षता मे एक **'इण्डियन यूनिवर्सिटी एजुकेशन कमीशन'** वनाया गया। उसने १९४९ मे अपनी रिपोर्ट पेश की। इस रिपोर्ट मे यूनिवर्सिटी के सभी पहलुओ पर विचार करके महत्त्व-पूर्ण सिफारिशे की गई है। कमीशन की रिपोर्ट सामान्य रूप से भारत सरकार ने मान ली और उसकी सिफारिशो पर अमल कराने के लिए एक समिति वनाई। कमीशन की राय है कि विश्वविद्यालयो को व्यवसाय, वाणिज्य, उद्योग आदि सभी क्षेत्रो मे नेता पैदा करना चाहिए, न कि केवल राजनीति

और शासन के क्षेत्र मे ही। विज्ञान, टेक्नोलोजी और खेती की शिक्षा का भी विश्वविद्यालयो मे विकास होना चाहिए। उसकी सिफारिश के अनुसार एक 'यूनिवर्सिटी ग्राण्ट कमेटी' की भी स्थापना की गई, जिसको अधिक काम और अधिकार दिए गए है।

टेकनिकल और व्यावसायिक शिक्षा

इस शिक्षा की ओर भी सरकार ने काफी ध्यान दिया। १९४७ मे इस क्षेत्र के ग्रेजुएटो की सख्या केवल २,७०० थी, जब कि १९५३ मे ६,००० हो गई। केन्द्रीय सरकार ने विज्ञान-खोज परिषद् (काउसिल आफ साइटिफिक ऐण्ड इण्डस्ट्रियल रिसर्च) स्थापित की। ऑल इडिया काउसिल फार टेकनिकल एजुकेशन ने ११ राष्ट्रीय प्रयोगशालाएँ और केन्द्रीय खोज-सस्थाएँ खोली। एक इन्टर-यूनिवर्सिटी बोर्ड भी बनाया गया। विदेश छात्रवृत्ति समिति की सिफारिशो के अनुसार अनेक वजीफे दिये गए। सरकार ने अनुदान दे कर अनेक सस्थाओ को प्रोत्साहन दिया। अध्यापको और अध्यापको की ट्रेनिङ्ग की भी व्यवस्था की गई। 'सेट्रल इन्स्टीट्यूट आफ एजुकेशन' नामक संस्था की स्थापना १९४७ मे हुई जो अब काफी प्रगति कर चुकी है।

सामाजिक शिक्षा

सेट्रल ऐडवाइजरी बोर्ड आफ एजुकेशन ने १९४८ की 'सक्सेना रिपोर्ट' के अनुसार भी कार्य शुरू किया। सभी तरह के सामाजिक शिक्षा के कामो को बढावा देने के लिए शिक्षा-मत्रालय ने अनेक सस्थाओ को अनुदान दिए। इस सामाजिक शिक्षा की मे केन्द्रीय सरकार की अनेक योजनाएँ चल रही है।

शिक्षा में अवसरों का समीकरण

शिक्षा और आर्थिक अवसरो मे समानता लाने के लिए, पब्लिक स्कूलो के वजीफे, मानवधर्मी विद्याओ, विज्ञान और टेक्नोलोजी की खोज के लिए वजीफे, विदेशी वजीफे, अनुसूचित जातियो और कबीलो आदि के लिए वजीफो की योजना की गई।

सांस्कृतिक और अन्तर्राष्ट्रीय कार्य

सरकार ने 'इण्डियन कौंसिल आफ कल्चरल रिलेशन' की स्थापना की, जिसके द्वारा भारत का अन्य देशो से सास्कृतिक सम्बन्ध घनिष्ट हो रहा है। आजादी के बाद अनेक वजीफे, फेलोशिप और ट्रैवेल ग्राण्ट दी गई है।

इस बीच साहित्य, संगीत और कला को प्रोत्साहन देने के लिए साहित्य अका-

दमी, सगीत और नाट्य अकादमी तथा भारत कला समिति की सस्थापना की गई है, जिनके द्वारा उत्तम कार्य हो रहा है।

'नेशनल आर्काइव्ज आफ् इण्डिया' का नाम बदल कर 'राष्ट्रीय पुरालेख सग्रहालय' कर दिया गया। नेशनल लाइब्रेरी का भी पर्याप्त विस्तार किया गया और भारतीय राष्ट्रीय कमीशन बना कर अनेक आयोजन किए गए, जिनने देश को काफी बौद्धिक और सास्कृतिक लाभ पहुँचा है।

इस प्रकार स्वाधीन भारत शिक्षा के क्षेत्र मे बडी तेजी से विकास के पथ पर बढ रहा है।

नवीन पुस्तकालयों का विकास

स्वाधीन भारत मे विभिन्न प्रकार के पुस्तकालयो का निर्टिशकाल के ढङ्ग पर निम्नलिखित रूप मे विकास हुआ —

[१] (क) नेशनल लाइब्रेरी (इम्पीरियल लाइब्रेरी) ।*

[१] (ख) मंत्रालयों से सम्बद्ध पुस्तकालय

१९४७ मिनिस्ट्री आफ वर्क, प्रोडक्शन ऐण्ड सप्लाई लाइब्रेरी, नई दिल्ली।

१९४९ मिनिस्ट्री आफ इक्स्टर्नल अफेयर्स लाइब्रेरी, नई दिल्ली।

[१] (ग) स्वतंत्र कार्यालयों से संलग्न पुस्तकालय

१९५९ प्लानिङ्ग कमीशन लाइब्रेरी, राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली।

,, सुप्रीमकोर्ट लाइब्रेरी, पार्लियामेंट हाउस, नई दिल्ली।

[१] (घ) मातहत और सम्बद्ध कार्यालयों से संलग्न पुस्तकालय।

मिनिस्ट्री आफ कामर्स ऐण्ड इण्डस्ट्री

१९४७ ट्रेड मार्क रजिस्ट्री आफिस लाइब्रेरी, बंगलोर।

मिनिस्ट्री आफ कम्युनिकेशन्स

१९४८ सिविल एवेशन ट्रेनिङ्ग सेंटर लाइब्रेरी, बमरौली, इलाहाबाद।

मिनिस्ट्री आफ फाइनेन्स

१९४८ लाइब्रेरी आफ द आफिस आफ द डिप्टी ए० जी० उडीसा (पुरी)

---

* इसका विवरण 'केन्द्रीय सरकार के कार्य' शीर्षक के अन्तर्गत पृष्ठ १०५ पर देखिए।

मिनिस्ट्री आफ होम अफेयर्स

१९४८ सेक्रेट्रियट ट्रेनिङ्ग स्कूल लाइब्रेरी, नई दिल्ली ।

मिनिस्ट्री आफ इन्फारमेशन एण्ड ब्राडकास्टिङ्ग

१९४७ ऑल इण्डियो रेडियो लाइब्रेरी, कटक ।
१९४८ ऑल इण्डिया रेडियो लाइब्रेरी, नागपुर ।
१९४८ ,, ,, ,, बडौदा ।
१९४९ ,, ,, ,, इलाहाबाद ।
१९४९ फिल्म डिवीजन लाइब्रेरी, बम्बई ।
१९४९ ऑफ इडिया रेडियो लाइब्रेरी, अहमदाबाद ।

मिनिस्ट्री आफ डिफेस

१९४८ डिफेन्स साइस आर्गनाइजेशन लाइब्रेरी, नई दिल्ली ।

[२] (क) प्रांतीय सरकारों के पुस्तकालय

१९४७ पजाब हाईकोर्ट लाइब्रेरी, शिमला ।
१९४७ लाइब्रेरी आफ द आफिस आफ द डाइरेक्टर वेटेरीनैरी सर्विसेज, पजाब ।
१९४७ फारेस्ट सेंट्रल लाइब्रेरी शिमला ।
१९४८ ट्रॉसपोर्ट डिपार्टमेट लाइब्रेरी, शिमला ।
१९४८ पजाब गदर्नमेट रिकार्ड्स आफिस रिफ्रेस लाइब्रेरी, शिमला ।
१९४८ रिहैबिटेशन डिपार्टमेट लाइब्रेरी, जालन्धर ।
१९४९ गवर्नमेट सेंट्रल प्राविशियल लाइब्रेरी, इलाहाबाद ।
१९५० पजाब स्टेट लाइब्रेरी, चण्डीगढ ।
१९५० लाइब्रेरी आफ द प्राविशियल ऐडवाइजरी बोर्ड आफ एजुकेशन, शिमला ।

[३] यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी

१९४७ पंजाव यूनिवर्सिटी, लाइब्रेरी शिमला ।
१९४८ गौहाटी यूनिवर्सिटी, लाइब्रेरी, गौहाटी, आसाम ।
१९४८ रुड़की यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, रुड़की ।
१९४९ जम्मू ऐण्ड काश्मीर यूनिवर्सिटी, श्रीनगर ।
१९४९ राजपूताना यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, जयपुर ।

१९४९ गुजरात यूनिवर्सिटी, लाइब्रेरी, अहमदाबाद ।
१९५० कर्नाटक यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, धारवार ।
१९५० पूना यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, पूना ।
१९५० बडौदा यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, बडौदा ।

[४] रिसर्च लाइब्रेरीज

१९४७ इंडियन स्टैण्डर्ड इन्स्टीट्यूसन्स लाइब्रेरी दिल्ली ।
१९४७ नेशनल केमिकल लेबोरेटरी आफ इण्डिया लाइब्रेरी, पूना ।
१९४८ फिजिकल रिसर्च लेबोरेटरीज लाइब्रेरी, नवरंगपुर, अहमदाबाद ।
१९४९ नेशनल फिजिकल लेबोरेटरी आट इण्डिया लाइब्रेरी, नई दिल्ली ।
१९४९ मुन्शी सरस्वती मन्दिर ग्रन्थागार, भारतीय विद्याभवन, बम्बई ।
१९४९ सेंट्रल कालेज आफ कर्नाटक म्युजिक लाइब्रेरी, अद्यार, मद्रास ।
१९४९ सेंट्रल ड्रग रिसर्च इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी, लखनऊ ।
१९४९ सेंट्रल फूड टेकनोलोजिकल रिसर्च इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी, मैसूर ।
१९५० फ्यूअल रिसर्च इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी, जीलगोरा, मानभूम ।
१९५० सेंट्रल ग्लास ऐण्ड सेरेमिक रिसर्च इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी, यादवपुर, कलकत्ता ।
१९५० सेंट्रल रोड रिसर्च इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी, दिल्ली ।

[५] पब्लिक लाइब्रेरी

१९४७ महाराष्ट्र ग्रन्थालय, पूना ।
१९४८ कर्नाटक ग्रन्थालय, कर्नाटक रीज० लाइब्रेरी, धारवार ।
१९४८ नागर वाचनालय, सतारा सिटी ।
१९४९ ब्रजमोहन चन्दोला पब्लिक लाइब्रेरी, पौरी-गढवाल ।
१९४९ श्री सरस्वती वाचनालय, शाहापुर, बेलग्राम ।
१९५१ दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी (पाइलट प्रोजेक्ट) दिल्ली ।

इनके अतिरिक्त भारत की ६२२ नगर पालिकाओ के द्वारा भी कितने ही सहायता प्राप्त सार्वजनिक पुस्तकालय है जिनका नाम स्थानाभाव के कारण नही दिया सकता ।

केन्द्रीय सरकार के कार्य

शिक्षा-विभाग के अन्तर्गत ही पुस्तकालयो का विकास भी रखा गया । अत. केन्द्रीय शिक्षा विभाग ने पूरे देश मे पुस्तकालयो की जो बात सोची, उसकी रूप-रेखा इस प्रकार है —

१. बृटिश काल मे स्थापित इम्पीरियल लाइब्रेरी को 'नेशनल लाइब्रेरी' का रूप दिया जाय और उसका विकास किया जाय।

२ नेशनल बिब्लियोग्रैफी के निर्माण की ओर ध्यान दिया जाय ।

३ प्रदेशो मे 'सेन्ट्रल स्टेट लाइब्रेरी' और जिला पुस्तकालय स्थापित किए जायँ।

४. राजधानी दिल्ली मे एक केन्द्रोय पुस्तकालय हो जिसके द्वारा सब पुस्तकालय एक सूत्र मे गुंथे रहे।

इन सभी पुस्तकालयो के कार्यक्षेत्र अलग-अलग हो। जिला पुस्तकालय के द्वारा ग्राम पुस्तकालयो को सगठित किया जाय तथा जिले मे जनता के बौद्धिक विकास के लिए सम्भावित प्रयत्न किए जायँ।

इन उद्देश्यो की पूर्ति के लिए देश की चतुर्मुखी विकास वाली पञ्चवर्षीय योजनाओ मे एक अच्छी रकम स्वीकार की गई जिसका पूरा विवरण आगे दिया गया है।

५ लाइब्रेरी ऐडवाइजरी कमेटी का निर्माण।

किन्तु इसी वीच निम्मलिखित कार्य भी किए गए :—

(क) विभाजन के बाद पाकिस्तान से जो पुस्तकालयध्यक्ष भारत मे आये उनको कार्य मे लगाना भी पुनर्वास मंत्रालय के सामने एक समस्या थी। ऐसे सभी पुस्तकालयध्यक्षो को यत्र-तत्र पुस्तकालयो मे नियुक्त किया गया।

(ख) केन्द्रीय सरकार ने २० मई सन् १९५४ से प्रत्येक प्रकाशन की एक-एक प्रति 'राष्ट्रीय पुस्तकालय' कलकत्ता, सेन्ट्रल पब्लिक लाइब्रेरी बम्बई, और कोनेमरा लाइब्रेरी मद्रास को तथा नये स्थापित होने वाले 'राष्ट्रीय केन्द्रीय पुस्तकालय, दिल्ली को भेजना अनिवार्य कर दिया। १० सितम्बर १९५५ को कोनेमरा लाइब्रेरी को तथा ४ नवम्बर १९५५ को सेट्रल पब्लिक लाइब्रेरी, बम्बई को राष्ट्रीय पुस्तकालय घोषित कर दिया। इसका उद्देश्य यह है कि समस्त भारतीय साहित्य चारो भागो मे सगृहीत और सुरक्षित रहे तथा देश का जनता उनसे लाभ उठावे।

(ग) सन् १९५२ ई० मे नवगठित प्रान्तो के अनुसार भारत के सभी प्रकार के पुस्तकालयो की एक डाइरेक्टरी केन्द्रीय शिक्षा विभाग ने 'लाइब्रेरीज इन इंडिया' नाम से प्रकाशित की। इसमे प्रसिद्ध ११६६ पुस्तकालयों का विवरण दिया गया।

(घ) यूनेस्को के सहयोग से दिल्ली मे सार्वजनिक पुस्तकालय-योजना

के मुख्य केन्द्र के रूप में 'दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी' की स्थापना की गई।

(ङ) अक्टूबर १९५५ मे दिल्ली में 'सार्वजनिक पुस्तकालय के विकास' पर यूनेस्को की अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन किया गया।

(च) 'नेशनल बुक-ट्रस्ट' स्थापित करके जनता तक सस्ता तथा स्वस्थ साहित्य पहुँचाने की योजना बनाई गई। ट्रेनिंग के लिए सेन्ट्रल इन्स्टीटयूट की स्थापना की गई।

(छ) इंडिया आफिस लाइब्रेरी को प्राप्त करने की चेष्टा की गई।

(ज) हस्तलिखित ग्रंथो की खोज और उनके प्रकाशन के कार्य को प्रोत्साहन दिया गया।

(झ) पुस्तकालय-संघो को प्रान्तीय सरकारो ने पुस्तकालय-आन्दोलन के लिए प्रोत्साहित किया।

(ञ) पुस्तकालयाध्यक्षो को विदेश भेज कर प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई।

इसी प्रकार के अनेक कार्य किये गए जिनसे भारतीय पुस्तकालय जगत की उन्नति हुई।

[१] नेशनल लाइब्रेरी

बृटिशकालीन इम्पीरियल लाइब्रेरी 'जवा कुसुम हाउस' मे व्यवस्थित थी। रिचे कमेटी ने इसको कापी राइट लाइब्रेरी बनाने की सिफारिश की थी। अंग्रेजो के शासनकाल मे खान बहादुर असदुल्ला उस पुस्तकालय के अध्यक्ष रहे। नवम्बर १९४७ मे उनके अवकाश ग्रहण करने पर मिस्टर बी० एस० केशवन (क्युरेटर आफ लाइब्रेरीज इन द सेंट्रल ब्यूरो आफ एजुकेशन, दिल्ली) को ईस लाइब्रेरी का अध्यक्ष बनाया गया। ८ सितम्बर १९४८ ई० को इस पुस्तकालय को 'बेल्वेडियर भवन' मे लाया गया और इसका नाम बदल कर 'नेशनल लाइब्रेरी' रखा गया। इसकी 'सिलवर जुबली' १ फरवरी १९५३ ई० को मनाई गई। बगाल के गवर्नर श्री० हीरेन्द्रकुमार मुकर्जी ने सभापति का आसन ग्रहण किया और केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री मौलाना आजाद ने इसका उद्घाटन कर के इसका द्वार जनता के उपयोग के लिए खोल दिया।

विकास

नेशनल लाइब्रेरी होने के कारण भारत सरकार के शिक्षा विभाग ने इसके विकास की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया। 'डिलीवरी आफ बुक्स
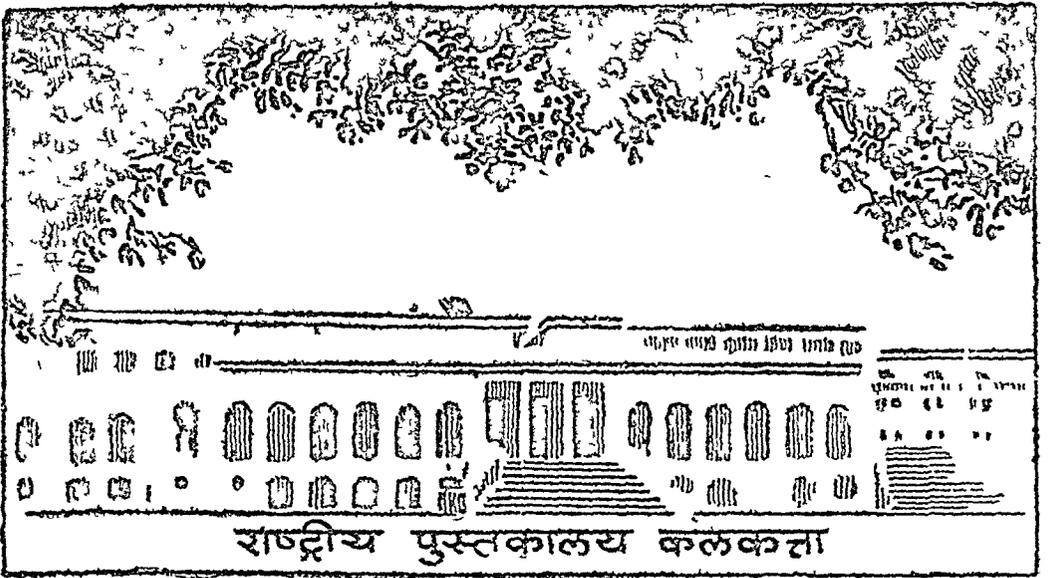
नेशनल लाइब्रेरी (वेलवेडियर) कलकत्ता

[पृ० ११६]

सन् १८६९/१९५४ के द्वारा प्रत्येक प्रकाशन की एक प्रति इसको भेजना सभी प्रकाशको के लिए कानूनन् अनिवार्य कर दिया गया। रोलिंग स्टैक की व्यवस्था की गई। नए ढग से साज-सज्जा करके प्रशिक्षित कर्मचारियो की नियुक्ति की गई। धीरे-धीरे इस पुस्तकालय मे लगभग ११ लाख पुस्तकें और ३०० तक कर्मचारी हो गए। इसके अध्ययन कक्ष मे २०० पाठको को पढने का प्रबंध किया गया। पत्र-पत्रिका कक्ष मे अंग्रेजी तथा भारतीय भाषाओ की पत्रिकाओ के प्रदर्शन की व्यवस्था की गई जिनकी संख्या धीरे-धीरे ३६० तक पहुंच गई। संस्कृत और बंगला भाषाओ की संगृहीत पुस्तको की सूची छापी गई। बंगाल लाइब्रेरी एसोसिएशन की सर्टिफिकेट कोर्स की कक्षाएँ लगाने की सुविधा दी गई। पुस्तकालय को श्री आशुतोष मुकर्जी का ८५,००० ग्रंथो का संग्रह भी प्राप्त हुआ। उसकी व्यवस्था की गई।

१९५६–५७ मे पुस्तकालय के लिए ७,७५,००० रु० नियत किया गया। उसके पूर्व वर्ष १९५५-५६ मे, ६,७६,००० रु० था। १९५७–५८ के लिए १२,९६,७०० रु० की व्यवस्था की गई है।

१९५६-५७ मे प्रेस तथा पुस्तक रजिस्ट्री अधिनियम १८६७ और पुस्तक-वितरण (सार्वजनिक पुस्तकालय) अधिनियम १९५४ के अधीन पुस्तकालय ने ४६४४० पुस्तके प्राप्त की। इस अवधि मे कुल १६०३९ जिल्दो की वृद्धि की गई। १५६५ पत्रिकाएँ प्राप्त हुई, जिनमे से ५६७ खरीद कर प्राप्त की गई।

ग्रन्थ-सूची का प्रकाशन

मराठी, उडिया, तामिल और तेलगू की पत्रिकाओ की सूची, चरक सन्दर्भ सूची, रवीन्द्रनाथ ठाकुर के गीतो की अनुक्रमणिका आदि है।

पुस्तकालय में जनता को सुविधा देने के लिए अनेक कार्य किए गए। पुस्तको के लिए स्थान की व्यवस्था की गई। अखिल भारतीय पुस्तकालय-सघ के ग्यारहवें अधिवेशन के अवसर पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

भारत सरकार ने द्वितीय पञ्चवर्षीय योजना (१९५७-५८) में नेशनल लाइब्रेरी को १० लाख रुपया निम्नलिखित कार्य के लिए दिया है —

१. मुख्य भवन के एक भाग को पूरा निर्माण कराने के लिए।
२ सम्पूर्ण कार्ड कैटलाग का पुनर्गठन करने के लिए।
३ इण्डोलोजी की बिब्लियोग्रैफी को पूरा करने के लिए।
४ निजी दफ्तरीखाना (होम वाइंडिंग) स्थापित करने के लिए।
५ वाल-पुस्तकालय के लिए।

इनके अतिरिक्त १९५७–५८ से लिए निम्नलिखित कार्यक्रम है—

(क) फोटो प्रतिलिपिकरण उपस्कर की प्रस्थापना।
(ख) निर्वात धूमायन वेश्म की प्रस्थापना।
(ग) पुस्तक लिफ्ट की प्रस्थापना।
(घ) पुस्तकालय के परिसर के घास के मैदानो को ताजा करना।
(ङ) तृतीय और चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियो के लिए रियायती मकानो का निर्माण।

(च) अध्येता छात्रावास का निर्माण।

[२] इंडियन नेशनल बिब्लियोग्रैफी

डिलीवरी आफ बुक्स कानून के पास हो जाने पर देश के प्रत्येक प्रकाशक और सरकारी एजेंसियो को कानूनी तौर पर एक प्रति नेशनल लाइब्रेरी को और ३ प्रतियाँ अन्य तीन पुस्तकालयो को भेजना अनिवार्य हो गया। इसके पहले से भी नेशनल लाइब्रेरी को पुस्तके प्राप्त होती रही है और अव तो यह सख्या बराबर बढती जा रही हैं।

केन्द्रीय सरकार ने कुछ स्टाफ दे कर फिलहाल नेशनल लाइब्रेरी मे ही भारत की नेशनल बिब्लियोग्रैफी बनाने का काम प्रारम्भ करा दिया। इस

कार्य की नीति निर्धारण करने तथा अन्य बातो पर विचार करने के लिए निम्नलिखित व्यक्तियों की एक समिति बनाई गई :—

श्री वी० एस० केशवन् (अध्यक्ष) ।

सदस्य श्री डी० एन० मार्शल, श्री एस० एस० सेठ, श्री एन० एम० केतकर, श्री वाई० एम० मुले, श्री सी० आर० बनर्जी, श्री ए० के० ओहदेदार, और श्री विनयेन्द्र सेन गुप्त ।

उक्त कमेटी ने अपनी बैठके करके कार्य की पद्धति निश्चित की और तदनुसार अब तक कुछ भाषाओ का कार्य समाप्त हो चुका है । अब तैयार सामग्री का छापने की व्यवस्था की जायगी ।

साहित्य एकेडमी बिब्लियोग्रैफी

साहित्य एकेडेमी ने देश मे १९०१ से १९५३ के बीच प्रकाशित साहित्य की सेलेक्ट बिब्लियोग्रैफी बनाने की एक योजना बनाई । यह कार्य तदनुसार निम्नलिखित व्यक्तियो की देख-रेख मे प्रारम्भ हुआ :—

१ आसामी . डा० विरंचिकुमार बरुआ, गौहाटी यूनिवर्सिटी, आसाम ।
२ बगाली डा० सुकुमार सेन कलकत्ता ।
३. गुजराती . श्री उमाशकर जोशी, अहमदाबाद ।
४. हिन्दी डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी, बनारस ।
५. कन्नड · प्रो० ए० एन० मूर्थीराव, बगलौर ।
६. काश्मीरी . मिर्जा गुलामहुसेन बेग, काश्मीर ।
७. मलयालम : श्री एस० कुजन पिल्लई, ट्रिवेण्ड्रम ।
८ मराठी श्री शकर गनेश दाते, पूना ।
९. पजाबी : डा० गगासिह, पटियाला ।
१० तामिल · प्रो० एल० पी० कुमार रामनाथन चेट्टियर, अन्नामलाई नगर ।
११ तेलुगु . डा० जी० बी० सीतापती, मद्रास ।
१२. उर्दू : प्रो० ए० ए० सरूर, लखनऊ ।

संस्कृत, इगलिश और उडिया की बिब्लियोग्रैफी नेशनल लाइब्रेरी के स्टाफ द्वारा बनाई जा रही है। श्री बी० एस० केशवन एकेडेमी के भी टेकनिकल सलाहकार है।

[३] प्रथम पंचवर्षीय योजना मे पुस्तकालयों की प्रगति

इस योजना मे ९ स्टेट सेंट्रल लाइब्रेरी, ९६ जिला लाइब्रेरी और ५२ अस्तित्व रखनेवाली जिला लाइब्रेरीज के विकास के लिए ८८, ९१, ४९९ रु० स्वीकृत किया गया। इस योजना के अनुसार जो प्रगति हुई, उसका विवरण इस प्रकार है —

९ स्टेट सेंट्रल लाइब्रेरियो की स्थापना की गई। ये आसाम, पश्चिम बगाल, मध्यप्रदेश, पंजाब, पेप्सू, राजस्थान, सौराष्ट्र, भूपाल और विन्ध्यप्रदेश में खोली गईं। इस प्रकार की तीन लाइब्रेरियो को बम्बई मे केन्द्रीय सहायता दी जा रही है।

जिला पुस्तकालय

इस योजना के अन्तर्गत निम्नलिखित राज्यो मे कुल मिला कर ९६ जिला मे पुस्तकालय खोले गए —

आसाम	७	सौराष्ट्र	५
प० बंगाल	१७	भोपाल	२
विहार	१२	विंध्यप्रदेश	७
मध्यप्रदेश	२२		
राजस्थान	२४	कुल	९६

इस प्रकार के पुस्तकालयो को केन्द्रीय सरकार सहायता दे रही है। जिसमे मद्रास मे १४ बम्बई मे २२ विहार मे ५ और आध्र मे ११ हे।

१९५५-५६ के बीच स्टेट लाइब्रेरीज के लिए १४, १३, ३२८ रु० ग्राण्ट के रूप मे स्वीकार किया गया। इनसे कलकत्ता, चडीगढ और पटियाला के स्टेट लाइब्रेरी स्थापित की गई।

इसी प्रकार १९५५-५६ मे ४,०८,४२४ रु० जिला पुस्तकालय के लिए स्वीकृत किया गया। इनसे मध्यप्रदेश मे दो जिला पुस्तकालय जबलपुर और मरथवादा मे स्थापित किये गए।

पश्चिम वगाल मे ७ स्टेट लाइब्रेरी वर्द्धान, मिदनापुर, चौवीस परगना (मे, दो), वनकुरा, मालदा और कूचबिहार मे स्थापित हुई।

आनन्दालय
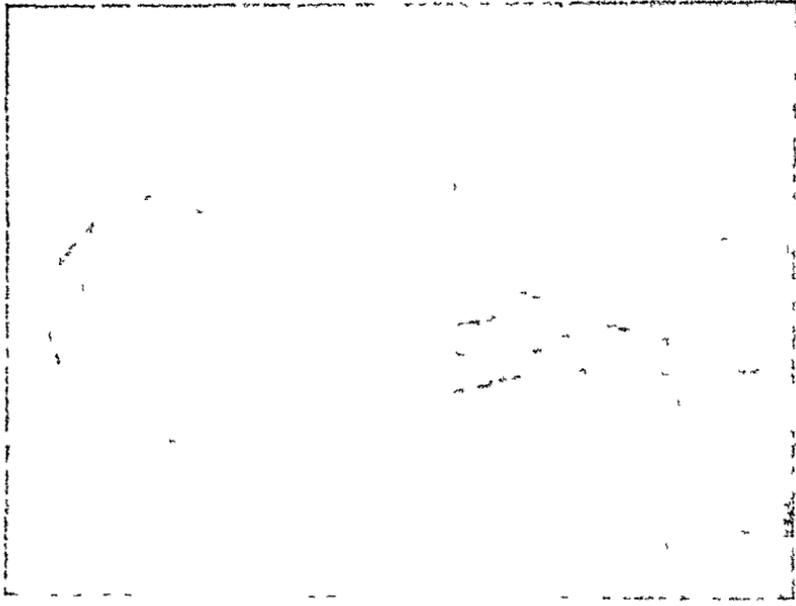
श्री वा० वि० मारे
लाइब्रेरियन
सेण्ट्रल स्टेट लाइब्रेरी, लश्कर, ग्वालियर

श्री टी० पी० त्रिवेदी एम० ए०, डिप० एल० एस्सी०
लाइब्रेरियन, सेण्ट्रल लाइब्रेरी, भोपाल

[पृ० १२१]
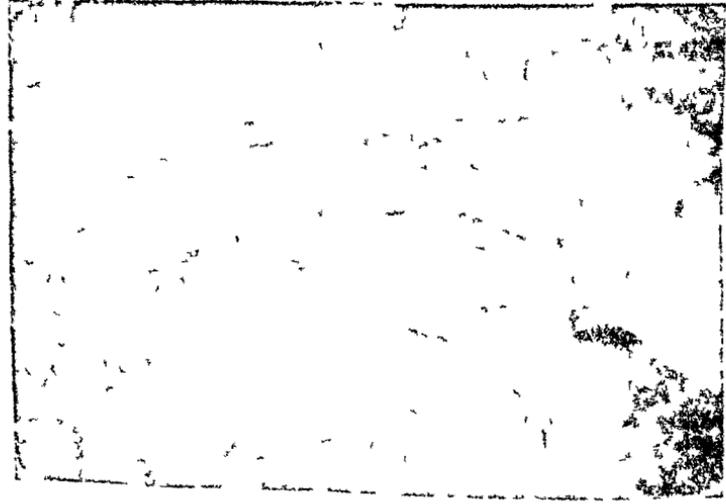
द्वितीय पंचवर्षीय योजना

इस योजना मे पुस्तकालय विस्तार के लिए १४० लाख रुपया स्वीकार किया गया। इसके द्वारा भारत के पूरे ३२० जिलो मे से १०० जिलो मे सर्कुलेटिङ्ग लाइब्रेरी सर्विस चालू होगी। सेट्रल लाइब्रेरी इसका केन्द्र होगी। जिला लाइब्रेरी अपने से सम्बंधित ग्राम क्षेत्रो मे पुस्तको को सरकुलेट करने की व्यवस्था करेगी। बडे राज्यो मे क्षेत्रीय पुस्तकालय भी होगे और सब के ऊपर नेशनल सेट्रल लाइब्रेरी होगी जो दिल्ली मे होगी। जिला लाइब्रेरी अपने अतर्गत गॉव पुस्तकालयो की ट्रेनिङ्ग की व्यवस्था भी करेगी। वह पुस्तक-प्रदर्शनी तथा ऐसे आयोजन करेगी जिनसे जनता पुस्तकालय की ओर आकृष्ट हो। स्टेट लाइब्रेरी विब्लियोग्रैफी तैयार करेगी और पाठको के लिए 'ऐडवाइजरी सर्विस' की व्यवस्था करेगा —

[४] नेशनल सेन्ट्रल लाइब्रेरी

जुलाई १९४७ ई० मे डा० रगनाथन ने नेशनल सेट्रल लाइब्रेरी का मेमोरेण्डम तैयार किया था जिस पर विचार करने के लिए सेट्रल गवर्नमेट ने निम्नलिखित व्यक्तियो की एक कमेटी बनाई—

१ डा० ताराचन्द, शिक्षा सलाहकार भारत सरकार, (अध्यक्ष)।
२ डा० रगनाथन, प्रेसीडेट आल इण्डिया लाइब्रेरी एसोसिएशन।
३. डा० एस० एन० सेन, डाइरेक्टर आफ् नेशनल आर्काइव्ज, नई दिल्ली।
४. डा० पी० एस० जोशी ,, ,, ,, बम्बई।
५ डा० डी० एस० कोठारी, डीन साइन्स फाकल्टी, दिल्ली यूनिवर्सिटी।
६. श्री बी० एस० केशवन, नेशनल लाइब्रेरियन (सेक्रेटरी)।

इस समिति की प्रथल बैठक ७ अप्रैल १९४८ को हुई, जिसमे, डा० रंगनाथन जी से नेशनल सेट्रल लाइब्रेरी का प्लान बनाने का अनुरोध किया गया। इस कमेटी की अन्तिम रिपोर्ट के बाद सरकार ने सेट्रल रिफ्रेन्स लाइब्रेरी नई दिल्ली मे स्थापित करने का निश्चय किया। इसके लिए २५ लाख रु० पहिली योजना मे रखा गया। यह सिर्फ पुस्तकालय ही न होगा बल्कि लोगो को रिसर्च की सुविधाएँ प्रदान करेगा। यह इंडियन नेशनल विब्लियोग्रैफी, विदेशी पुस्तकालयो से अन्तर्ऋण (इन्टलोन) की व्यस्था भी करेगा। इस पुस्तकालय के लिए इडिया गजट भाग २ सं० ३, १९ मार्च सन् १९५४ के अनुसार (पब्लिक लाइब्रेरी ऐक्ट ५६) २१ मई १९५४ से प्रकाशित

सम्पूर्ण भारतीय साहित्य को प्राप्त करने की व्यवस्था की गई है। इनका भवन भी बनना शुरु हो गया है।

[५] लाइब्रेरी ऐडवाइजरी कमेटी

भारत सरकार ने निम्नलिखित व्यक्तियो की एक 'लाइब्रेरी एडवाइजरी कमेटी' बनाई है जो सरकार को पुस्तकालय-सेवा के विस्तार मे सहायता प्रदान करेगी —

१–श्री बी० एस० केशवन डाइरेक्टर नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता।

२–श्री टी० डी० वाकनीस, क्युरेटर, आफ लाइब्रेरीज, बडौदा।

३–श्री डी० आर० कालिया, डाइरेक्टर, दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, दिल्ली।

४–श्री एन० बद्रैया, प्रेसीडेंट, मैसूर स्टेट एडल्ट एजुकेशन काउंसिल, मैसूर।

५–श्री जगदीशचन्द्र माथुर, आई० सी० एस०, डाइरेक्टर जनरल ऑल इडिया रेडियो, दिल्ली।

६–श्रीमती जॉन मथाई, बम्बई।

७–श्री एस० एस० सेठ, लाइब्रेरियन, हिस्टारिकल डि०, मिनिस्ट्री आफ इक्स्टर्नल अफेयर्स, नई दिल्ली।

८–श्री के० पी० सिनहा, डाइरेक्टर शिक्षा-विभाग, बिहार (अध्यक्ष)।

९–श्री सोहन सिह, सहायक एजुकेशनल ऐडवाइजर, शिक्षा-विभाग नई दिल्ली (सेक्रेटरी)।

भारत सरकार की यह पुस्तकालय परामर्श समिति भारत मे वर्त्तमान पुस्तकालयो की गतिविधि और स्थिति की जाँच एक प्रश्नावली द्वारा करेगी जो कि विधान सभा के सदस्यो, सरकारी पदाधिकारियो, पुस्तकालयाध्यक्षो तथा अभिरुचि रखनेवाले व्यक्तियो को भेजी जायगी। इसकी लगभग ५०००, प्रतियाँ व्यक्ति और संस्थाओ को भेजी जायँगी। कमेटी विभिन्न प्रदेशो का दौरा करेगी और सरकारी अफसरो और प्रमुख पुस्तकालय सेवियो से विचार-विनिमय करेगी। यह अपनी रिपोर्ट सरकार को मार्च १९५८ तक देगी, जिसके आधार पर नीति निर्धारित होगी।*

(ग) आधुनिक भारतीय पुस्तकालयों का वर्गीकरण

अन्य देशो की भाँति हमारे देश मे भी विविध पुस्तकालय हैं। इन पुस्तकालयो का क्रमबद्ध विवरण उपस्थित करने के लिए भारत सरकार के शिक्षा विभाग की ओर से सन् ११५२ ई० मे 'लाइब्रेरीज इन इडिया' नामक पुस्तक

---

* प्रश्नावली भेजी गई है और दौरा करने का कार्य-क्रम बन रहा है।

प्रकाशित हुई। इसमे ११६६ पुस्तकालयो* का विवरण दिया गया है। इस पुस्तक मे भारतीय पुस्तकालयो को निम्नलिखित ६ वर्गो मे बाँटा गया है —

१ केन्द्रीय सरकार के पुस्तकालय।

२ प्रान्तीय सरकार के पुस्तकालय।

३ यूनिवर्सिटी और कालेज के पुस्तकालय।

४ अनुसंधानशालाओ, प्रयोगशालाओ और सोसाइटियो के पुस्तकालय।

५ पब्लिक स्कूल लाइब्रेरी।

६ पब्लिक लाइब्रेरी।

भारत सरकार के पुस्तकालयो को पुन चार भागो मे विभाजित किया गया है—

(क) नेशनल लाइब्रेरी।

(ख) मंत्रालय से सलग्न पुस्तकालय।

(ग) भारत सरकार के वतत्र कार्यालयो से सम्वद्ध पुस्तकालय।

(घ) मातहत और सम्वद्ध कार्यालयो से संलग्न पुस्तकालय।

इसी प्रकार प्रान्तीय सरकार के पुस्तकालयो को दो भागो मे विभाजित किया गया है —

(क) विभागीय पुस्तकालय (ख) संग्रहालय पुस्तकालय।

इसके अतिरिक्त यूनिवर्सिटी और कालेज पुस्तकालय के दो भाग किए गए है—

(क) युनिवर्सिटी पुस्तकालय (ख) कालेज पुस्तकालय।

अन्य वर्गो मे भेद नही किया गया है इस प्रकार भारत के पुस्तकालयो को विभाजित करके उनका विवरण तीन प्रकार से दिया गया है .—

१ प्रान्त के अनुसार पुस्तकालयो का विवरण।

२ स्टॉक के अनुसार पुस्तकालयो का विवरण।

३ प्रवंध के अनुसार पुस्तकालयो का विवरण।

आगे दी गई सारिणी (चार्ट) से यह वात स्पष्ट हो जायगी।

---

* यद्यपि पुस्तकालयो की सख्या इससे कही अधिक है किन्तु सरकार को सभी पुस्तकालयो ने पूरा विवरण नहीं भेजा। अत प्राप्त विवरणो पर यह पुस्तक आधारित है।

प्रान्त के अनुसार पुस्तकालयों का विवरण

प्रान्त	नेशनल लाइब्रेरी	केन्द्रीय मन्त्रालय से सवद्ध पुस्तकालय	भारत सरकार के स्वतन्त्र कार्यालयों से सवद्ध पुस्तकालय	भारत सरकार के अंतर्गत स० कार्यालयों से सवद्ध पुस्तकालय	प्रान्तीय विभागीय पुस्तकालय	प्रान्तीय सग्रहालय पुस्तकालय	विश्वविद्यालय पुस्तकालय	कालेज पुस्तकालय	अन्य उच्चतर शिक्षा संस्थाओं के पुस्तकालय	पब्लिक स्कूल लाइब्रेरी	पब्लिक लाइब्रेरी	योगफल
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)	(७)	(८)	(९)	(१०)	(११)	(१२)	(१३)
अजमेर	—	—	—	—	—	—	—	१	—	१	१	३
आसाम	—	—	—	१	१	१	१	१९	३	—	४	३०
अण्डमान, नी० द्वीप	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
पश्चिमी बंगाल	१	—	—	११	२	—	१	१०४	८	—	४०	१६७
भूपाल	—	—	—	—	—	—	—	१	—	—	१	२
बिहार	—	—	—	—	—	—	१	४५	३	—	११	६०
बिलासपुर	—	—	—	—	३	—	—	—	—	—	—	३
बम्बई	—	—	—	८	—	—	४	९८	९	१	८०	२००
कुर्ग	—	—	—	—	—	—	—	१	—	—	—	१
दिल्ली	—	१२	३	२२	—	—	१	१७	८	१	१	६५
हिमाचल प्रदेश	—	—	—	—	—	—	—	१	—	—	१	२
हैदराबाद	—	—	—	—	२	१	१	२०	१	—	१	२६
जम्मू, काश्मीर	—	—	—	—	—	—	१	१४	—	—	२	१७

कच्छ	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
मध्य भारत	—	—	—	—	—	—	—	७	१	२	२	१२
मध्य प्रदेश	—	—	—	३	—	—	२	४०	—	१	१०	५६
मद्रास	—	—	—	३	—	—	३	१०९	३	१	४१	१६०
मनीपुर	—	—	—	—	—	—	—	१	—	—	१	२
मैसूर	—	—	—	१	२	—	१	३३	३	—	५	४५
उड़ीसा	—	—	—	३	—	१	१	१७	—	—	४	२६
पी० इ० पी० एस० यू०	—	—	—	—	—	—	—	९	—	१	३	१३
पंजाब	—	—	—	६	११	—	१	४७	२	—	५	७२
राजस्थान	—	—	—	—	—	—	१	२९	१	३	५	३९
सौराष्ट्र	—	—	—	—	—	३	—	२	—	—	६	११
ट्रावनकोर, कोचीन	—	—	—	—	३	—	१	२५	१	—	८	३८
त्रिपुरा	—	—	—	—	—	—	—	२	—	—	—	२
उत्तर प्रदेश	—	—	—	४	४	१	६	६६	९	२	१५	१०७
विन्ध्य प्रदेश	—	—	—	—	५	—	—	२	—	—	१	८
योग	२	१२	३	६२	३३	७	२६	७०९	५२	१३	२४८	११६६

स्टॉक के अनुसार पुस्तकालयों का विवरण*

स्टॉक की शृङ्खला	नेशनल लाइब्रेरी	केन्द्रीय मन्त्रालय में सबद्ध पुस्तकालय	भारत सरकार के स्वतन्त्र विभागों से सबद्ध पुस्तकालय	भारत सरकार से सलग्न सहा० कार्यालयों से सबद्ध पुस्तकालय	प्रान्तीय विभागीय पुस्तकालय	प्रान्तीय सग्रहालय पुस्तकालय	विश्वविद्यालय पुस्तकालय	कॉलेज पुस्तकालय	अन्य उच्चतर शिक्षा सस्था + के पुस्तकालय	पब्लिक स्कूल लाइब्रेरी	पब्लिक लाइब्रेरी	योगफल
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)	(७)	(८)	(९)	(१०)	(११)	(१२)	(१३)
५०० से कम पुस्तकें	—	—	—	७	७	—	—	१९	६	—	—	३९
५०० से १,००० "	—	—	—	५	२	२	—	३८	३	—	—	५०
१,००१ से २,००० "	—	—	—	५	३	४	—	७५	६	२	—	९५
२,००१ से ३,००० "	—	१	—	५	३	१	—	७८	२	२	—	९२
३,००१ से ४,००० "	—	—	—	६	१	—	१	५६	३	१	—	६८
४,००१ से ५,००० "	—	—	१	३	२	—	१	४९	३	१	—	६०
५,००१ से ६,००० "	—	—	—	७	३	—	—	३१	४	१	३६	८२
६,००१ से ७,००० "	—	१	—	२	—	—	—	२९	२	—	२०	५४
७,००१ से ८,००० "	—	—	—	१	२	—	—	२३	१	—	२४	५१
८,००१ से ९,००० "	—	—	—	२	—	—	१	१२	२	१	११	३०
९,००१ से १०,००० "	—	—	—	१	—	—	१	८	३	३	१९	३५

१०,००० से १५,००० ,,	—	१	—	५	१	—	२	६७	२	१	३९	११८
१५,००१ से २०,००० ,,	—	—	—	२	१	—	१	४५	५	—	१८	७२
२०,००१ से २५,००० ,,	—	२	—	१	—	—	१	२४	२	—	९	३९
२५,००१ से ३०,००० ,,	—	१	—	२	१	—	१	१४	—	—	५	२४
३०,००१ से ३५,००० ,,	—	१	—	२	—	—	१	७	१	—	५	१७
३५,००१ से ४०,००० ,,	—	२	—	—	—	—	—	५	३	—	२	१२
४०,००१ से ४५,००० ,,	—	१	—	—	—	—	१	२	१	—	२	७
४५,००१ से ५०,००० ,,	—	—	—	१	—	—	२	२	—	—	२	७
५०,००१ से १,००,००० ,,	—	१	१	१	४	—	७	३	२	—	५	२४
१,००,००१से ६,००,००० ,,	१	—	—	१	२	—	६	२	१	—	१	१४
योग	१	११	१	५९	३३	७	२६	५८९	५२	१२	१९८	९९०S

* ३१ मार्च १९५१ तक ।

† पुस्तकें, पत्रिकाएँ, पुस्तकाएँ तथा हस्तलिखित ग्रंथ आदि ।

\+ विश्वविद्यालय, अनुसन्धानशालाओ और संस्थाओ से जो सम्बद्ध सस्थाएँ नही हैं ।

S शेप १७६ पुस्ताकालयो का विवरण उपलब्ध नही है ।

प्रबन्ध के अनुसार पुस्तकालयों का विवरण

स्वरूप	केन्द्रीय सरकार द्वारा प्रवर्तित	प्रान्तीय सरकार द्वारा प्रवर्तित	लोकल बोर्डों द्वारा प्रवर्तित	प्राइवेट संस्थाओं द्वारा प्रवर्तित	योगफल
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)
नेशनल लाइब्रेरी	१	—	—	—	१
केन्द्रीय मन्त्रणालय से सम्बद्ध पुस्तकालय	१२	—	—	—	१२
भारत सरकार के स्वतन्त्र विभागो से सम्बद्ध पुस्तकालय	३	—	—	—	३
भारत सरकार से सलग्न सहा० कार्यालयो से सम्वद्ध पुस्तकालय	६२	—	—	—	६२
प्रान्तीय विभागीय पुस्तकालय	—	३३	—	—	३३
प्रान्तीय संग्रहालय पुस्तकालय	—	७	—	—	७
विश्वविद्यालय पुस्तकालय	—	२	—	२४	२६
कालेज लाइब्रेरी	७	१९४	५	५०३	७०९
अन्य उच्चतर शिक्षा संस्थाओ* से सम्बद्ध पुस्तकालय	२२	३	१	२६	५२
पब्लिक स्कूल लाइब्रेरी	२	१	—	१०	१३
पब्लिक लाइब्रेरी	—	२२	१८	२०८	२४८
योग	१०९	२६२	२४	७७१	१,१६६

* विश्वविद्यालयो, अनुसन्धान केन्द्रो और सोसाइटीज से जो असम्बद्ध पुस्तकालय हैं।

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी का काउण्टर
सदस्यगण घर के लिए पुस्तकें उधार ले रहे हैं।

श्री डी० आर० कालिया, एम० ए०, ए० एल० ए०
डाइरेक्टर, दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी

(घ) दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी

पुस्तकालय के क्षेत्र मे दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी की स्थापना एक सराहनीय कार्य है। यह पुस्तकालय यूनेस्को और भारत सरकार के सयुक्त प्रयास से दिल्ली मे १९५१ ई० मे स्थापित किया गया। इसका उद्घाटन माननीय-प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने २७ अक्टूबर १९५१ ई० को किया। इस पुस्तकालय का उद्देश्य यह है कि सार्वजनिक पुस्तकालय-सेवा के क्षेत्र मे आधुनिकतम रीतियो का प्रचार किया जा सके। पुस्तकालयाध्यक्षो को लाइब्रेरी ट्रेनिङ्ग की सुविधा दे कर और पुस्तकालयो के मामलो मे सलाह दे कर तथा इस पुस्तकालय मे व्यावहारिक रूप मे सब टेकनिको को दिखा कर यह दक्षिणपूर्व एशिया मे सार्वजनिक पुस्तकालयो के विकास के लिए एक आदर्श पुस्तकालय हो सके।

इस पुस्तकालय का महत्त्व इसके द्वारा की जाने वाली सेवाओ के विभिन्न रूप से ही प्रकट होता है। यह प्रति दिन सवेरे ८ बजे से शाम के ८ बजे तक १२ घण्टे रोज खुला रहता है और वर्ष भर मे किसी भी दिन वन्द नही होता। यह केवल पुस्तके उधार देने वाली लाइब्रेरी नही है बल्कि समुदाय की सामूहिक आश्यकताओ का पूरक एक कम्युनिटी सेंटर भी है। इस पुस्तकालय का सदस्य वन कर पुस्तके घर ले जाने के लिए जमानत के रूप मे कुछ भी जमा करने की जरूरत नही पडती। इसके लिए केवल एक किसी जिम्मेदार व्यक्ति की फार्म पर सिफारिश भर होनी चाहिए। इस समय इस पुस्तकालय के लगभग २७,००० सदस्य है और प्रतिमास लगभग १५०० नए सदस्य वनते है।

घर के लिए पुस्तके

इस पुस्तकालय मे इस समय लगभग ६५,००० पुस्तके है। इसमे लगभग २००० नयी पुस्तके प्रतिमास वढती रहती है। ये पुस्तके खुली आलमारियो मे रखी जाती है और पाठक विना किसी रोक-टोक के अपने इच्छानुसार पुस्तके उनमे से चुन सकते है। पुस्तके घर पर ले जाकर पढने के नियम भी वहुत ही सरल है। पुस्तके उधार ले जाने वाले से उसके हस्ताक्षर नही लिए जाते। औसतन् लगभग ११०० पुस्तकें हर रोज घर पर पढने के लिए दी जाती है। पिछले चार साल मे १ लाख ४०० हजार पुस्तके लोगो को घर पर पढने के लिए दी गई जिनमे से केवल ७५७ पुस्तके वापस नही मिल सकी। यह संख्या विदेशी पुस्तकालयो मे खोने वाली पुस्तको की संख्या के मुकाविले वहुत कम है।

इस पुस्तकालय मे पुस्तको के लेन-देन के अलावा एक रिफ्रेंस और सूचना विभाग भी है, जिसमे विश्वकोश, कोश, शब्दकोश, समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ तथा अन्य सामग्री सुगमतापूर्वक मिल सकती है।

इस विभाग द्वारा पत्र-तार तथा टेलीफोन मे सभी प्रकार की सूचनाएँ और रिफ्रेंस लोगो को बताए जाते है।

बच्चो के लिए अलग बालकक्ष है तथा उनके लिए उसी कक्ष से मिला हुआ एक 'कल्चरल ऐक्टिविटी रूम' भी है जिसमे खिलौने, लकडो के अक्षर, मनोहर चित्र तथा मैकेनोज आदि रखे रहते है। बच्चो के लिए कहानी तथा फिल्म आदि की भी सुन्दर व्यवस्था है। बाल कक्ष मे एक पुस्तकालय है जिसमे से वे घर पर पढने के लिए पुस्तकें ले जा सकते है। अभी घर पर पढने के लिए ले जाने वाली पुस्तको का अनुपात लगभग २०० पुस्तक प्रति-दिन का है। किशोर बालको के लिए ड्रामा, सगीत, सहित्य आदि के अनेक आयोजन उन्ही के द्वारा कराये जाते है।

सामाजिक शिक्षा का एक अलग विभाग है, जिसके द्वारा प्रौढो के लिए सास्कृतिक आयोजन किए जाते है। इस विभाग के द्वारा फिल्म, प्रदर्शनी, व्याख्यान, नाटक, वादविवाद प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया जाता है इस विभाग के अन्तर्गत प्रोजेक्टर, पोस्टर, माइक्रोफोन, ग्रामोफोन रिकार्ड्स, टेपरिकार्डर, हारमोनियम, तबला आदि अनेक दृश्य-श्रव्य उपकरण है जिनके द्वारा सामाजिक शिक्षा का प्रसार किया जाता है और प्रौढो को साक्षरता की ओर आकृष्ट किया जाता है। इस विभाग की ओर से प्रौढोपयोगी सहित्य की तीन पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी है।

जो लोग इस पुस्तकालयसे दूर है उनके लिए पुस्तकालय की ओर से चलती फिरती लाइब्रेरी की व्यवस्था की गई है। शहर मे सात 'डिपोजिट स्टेशन' काम कर रहे है जो अनेक सस्थाओ को कुछ निश्चित समय के लिए पुस्तकें उधार देते है। इस चलती-फिरती लाइब्रेरी के साथ सिनेमा और सगीत का भी प्रबध रहता है। पिछले दो वर्षो मे इस चलती-फिरती लाइब्रेरी से १२ हजार १०० पुस्तकें लोगो को पढने के लिए उधार दी गईं।

इस पुस्तकालय मे सार्वजनिक पुस्तकालय के पुस्तकालयाध्यक्षो के क्रियात्मक प्रशिक्षण की भी व्यवस्था की गई है।

इस प्रकार इस पुस्तकालय ने सिद्ध कर दिया है कि यदि समुचित सुविधा प्रदान की जाय तो पुस्तकालय सार्वजनिक शिक्षा के महत्त्वपूर्ण एव सफल साधन हो सकते है।

यूनेस्को सेमिनार में उत्तरप्रदेश सरकार
के
प्रतिनिधि
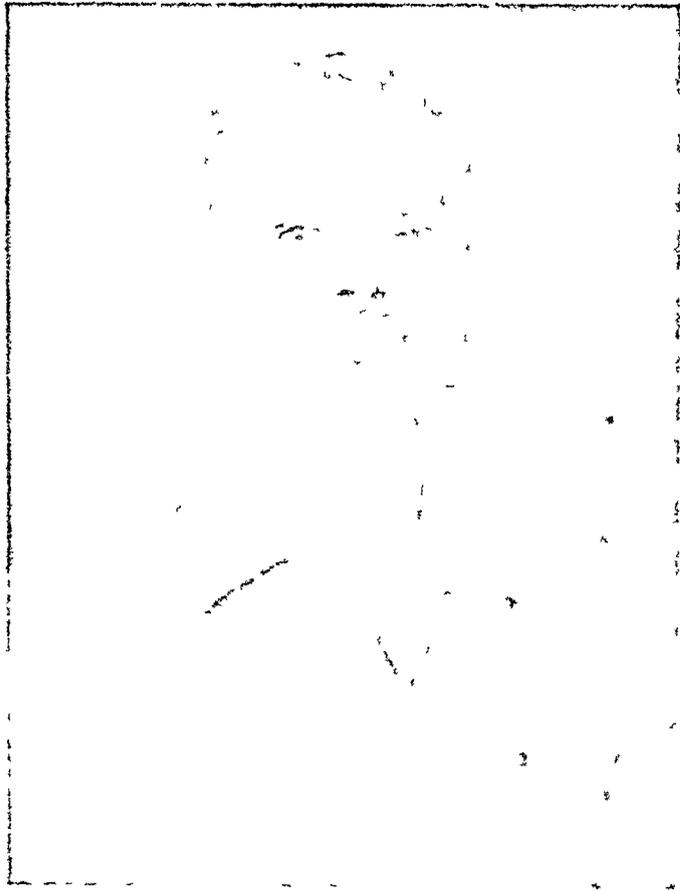
श्री टी० पी० माहेश्वरी एम० ए०, एड० टी०
शिक्षा प्रसार अधिकारी
उत्तरप्रदेश
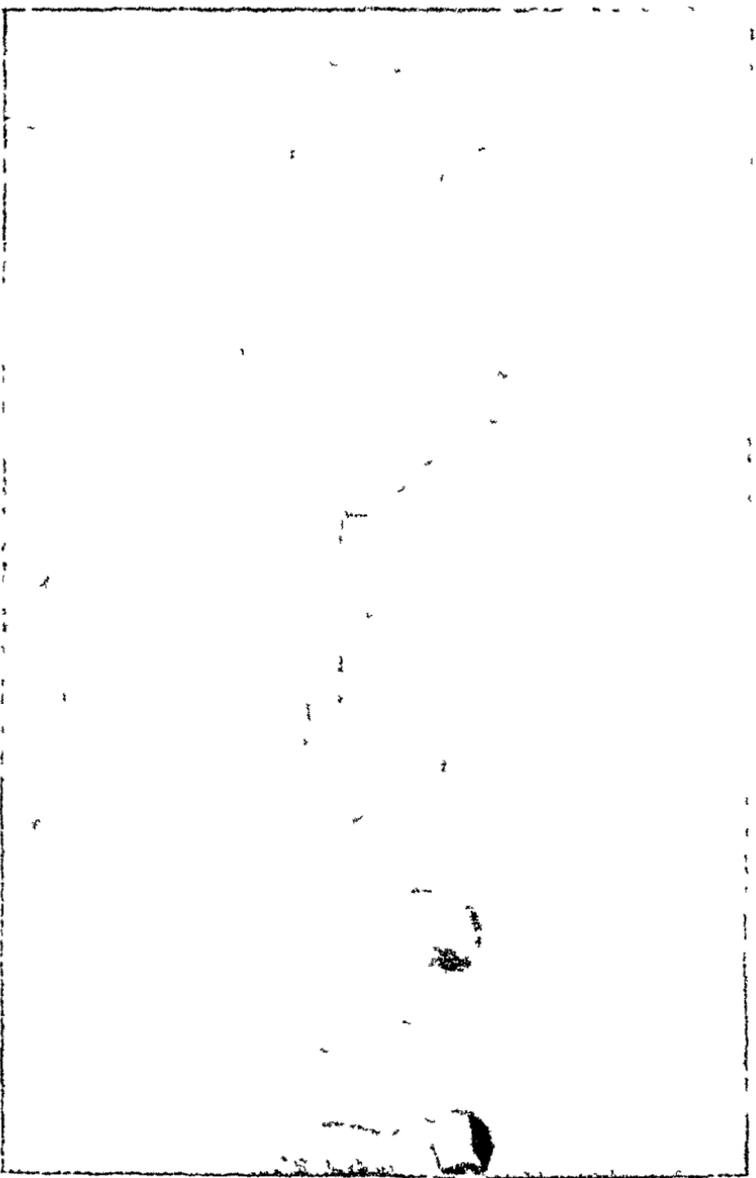
यूनेस्को सेमिनार के प्रथम ग्रुप का एक दृश्य
बाईं ओर ग्रुप के नेता मि० गाटनर, अन्य सदस्यों के साथ विचार-विनिमय करते हुए

[पृ० १३

(ङ) यूनेस्को का अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार

यूनेस्को के अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन ६ अक्टूबर से २६ अक्टूबर १९५५ तक दिल्ली मे किया गया। इसका उद्‌घाटन केन्द्रीय शिक्षा मंत्री मौलाना आजाद महोदय ने ६ अक्टूबर को पार्लियामेट हाउस मे किया, जिसमे शिक्षा एवं पुस्तकालयो मे रुचि रखने वाले गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

कार्य-पद्धति

इस सेमिनार मे अफगानिस्तान, आस्ट्रेलिया, बर्मा, लंका, भारत, इंडोनेशिया, जापान, मलाया, नेपाल, पाकिस्तान, फिलिपाइंस, थाईलैण्ड तथा यूनाइटेड नेशन्स के प्रतिनिधियो ने भाग लिया। भारत की ओर से श्री वी० एस० केशवन्, श्री हरि सर्वोथम राव, श्री टी० डी० वाकनीस और श्री डी० आर० कालिया महोदय प्रतिनिधि के रूप मे तथा श्री गोविन्द प्रसाद अग्रवाल, श्री वलवन्त सिह गुजराती, श्री एन० आर गुप्ता, श्री वी० एम० कपादिया, सुश्री पुष्पा कुमारी कपिला, श्री जी० वी० पाटेल, श्री एस० राघवन, श्री जगन्नाथ प्रसाद शाह, श्री के० टी० मन्टाई, एवं श्री डी० पी० माहेश्वरी (उप-शिक्षा-प्रसार अधिकारी, उत्तर प्रदेश) पर्यवेक्षक के रूप मे सम्मिलित हुए। प्रो० के० जी सैयदेन तथा प्रो० हुमाऊँ कवीर ने भी अपना महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया।

इस सेमिनार के नेता ल्यूटन पब्लिक लाइब्रेरी के लाइब्रेरियन एवं यूनेस्को लाइब्रेरी विशेषज्ञ श्री एफ० एम० गार्डनर महोदय थे। भारत की कई प्रान्तीय सरकारो ने भी अपने-अपने पर्यवेक्षक इस सेमिनार मे भेजे। मि० इ० एन० पिटर्सन, अध्यक्ष, पब्लिक लाइब्रेरीज डव्लप्मेट लाइब्रेरीज डिवीजन, यूनेस्को काफी पहले से अपने स्टाफ सहित दिल्ली आए और भारत सरकार तथा दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी अधिकारियो से सम्पर्क स्थापित किया और उनके सहयोग से सेमिनार का प्रारंभिक जरूरी प्रबंध किया। मिस्टर गार्डनर को उनके कार्य मे न्यूजीलैण्ड नेशनल लाइब्रेरी सर्विसेज के डाइरेक्टर श्री एच० मैकसिल और पाकिस्तान की आर्काइव्ज और लाइब्रेरीजके डाइरेक्टरेट के आफिसर आन स्पेशल ड्यूटी मिस्टर एच० ए० काजी ने विशेष रूप से सहायता की।

यूनेस्को लाइब्रेरी डिवीजन के Mlle S Basset द्वारा सेमिनार कार्यालय का संचालन सफलतापूर्वक किया गया। सेमिनार की कार्यवाही को सुगम बनाने के लिए कई दुभाषिए भी संलग्न थे।

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी के उत्साही डाइरेक्टर श्री डी० आर० कालिया ने अपने स्टाफ सहित वडी तत्परता से सहयोग दे कर सेमिनार को सफल वनाया।

इस सेमिनार का उद्देश्य एशिया मे पुस्तकालय सम्बन्धी समस्याओ का अध्ययन करना और एशिया मे पब्लिक सर्विस के विस्तार के लिए सुझाव और प्रस्ताव तैयार करना था, विशेष रूप मे मौलिक शिक्षा के सम्बन्ध में।

पूरा सेमिनार ग्रुप-प्रणाली पर सचालित किया गया। पहिला ग्रुप 'पब्लिक लाइब्रेरी' का था जिसके नेता मि० गार्डनर थे। दूसरा ग्रुप 'एशिया में प्रौढ़ शिक्षा की सामग्री' के सम्बन्ध मे था जिनके नेता पाकिस्तान के प्रतिनिधि श्री एच० ए० काजी थे। तीसरा दल 'बाल पुस्तकालय' का था जिसके नेता न्यूजीलैण्ड के प्रतिनिधि श्री मैकसिल महोदय थे।

इन तीनो दलो की समानान्तर बैठकें प्रतिदिन होती रही। प्रत्येक सप्ताह के अंत में एक 'प्रारंभिक अधिवेशन' होता था जिसमे प्रत्येक दल की रिपोर्ट पढी जाती थी और उस पर सभी दलो के प्रतिनिधि विचार-विनिमय करते थे।

प्रत्येक दल का अपना Rapporteur था। प्रत्येक पिछले दिन के वाद-विवाद का संक्षिप्त रूप तैयार कर लिया जाता था और Mimeogrsaphed सक्षिप्त रूप प्रत्येक दल को दूसरे दिन की बहस शुरू होने से पहले मिल जाता था। इस प्रकार दल मे किए गए विचारो की जाँच हो जाती थी और कोई प्वाइंट छूट नही सकता था। दल का नेता बहस के समय इस बात पर ध्यान रखता था कि प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह प्रतिनिधि या पर्यवेक्षक हो, प्रस्तुत विषय मे पूरा भाग ले रहा है या नही। उनको अपना विचार प्रकट करने की पूरी आजादी थी। इस प्रकार बडे अनुशासित ढग से शान्तिपूर्वक प्रत्येक दल की कार्यवाही होती थी। इसका फल यह हुआ कि प्रत्येक दल की रिपोर्ट विचारो से परिपूर्ण और ठोस रूप मे सामने आई।

सेमिनार के अन्तिम सप्ताह की उल्लेखनीय बात यह थी कि माननीय पडित नेहरू भी सेमिनार के प्रतिनिधियो से मिले और अपने कुछ विचार प्रकट किये।

सेमिनार के दिनो मे अखिल भारतीय पुस्तकालय-सघ, भारत सरकार पुस्तकालय-सघ और दिल्ली पुस्तकालय-सघ ने प्रतिनिधियो और पर्यवेक्षको का स्वागत किया। केन्द्रीय शिक्षा मत्री माननीय मौलाना आजाद ने भी सेमिनार मे शामिल होने वालो को जलपान के लिए राष्ट्रीय भवन मे आमन्त्रित किया। यूनेस्को ने भी स्विस होटल मे एक दिन सभी प्रतिनिधियो, पर्यवेक्षको एव शिक्षाविदो का स्वागत किया।

सेमिनार की रिपोर्ट

राष्ट्रीय-जन पुस्तकालय सेवा के विकास के सम्बन्ध मे समूह की अन्तिम रिपोर्ट एशिया के देशो की वास्तविक परिस्थितियो को ध्यान मे रखगे हुए विचारपूर्ण ढग से प्रस्तुत की गई है। देश मे पुस्तकालय की आयोजना से सम्बन्धित सभी पहलुओ पर जैसे, साक्षारता का विकास, स्थानीय सरकारो मे विशाल पुनर्जागृति, नगर और ग्रामीण क्षेत्रो मे यातायात के आदान-प्रदान की सुविधाएँ, लोगो के रहन-सहन का दर्जा तथा उनका आर्थिक विकास आदि सभी पर पूर्ण विचार किया गया है। यह निश्चित किया गया कि एक जन-पुस्तकालय सेवा को कानून के द्वारा निर्धारित किया जाना चाहिए, जिसका उपयोग जनता नि शुल्क रूप से कर सकेगी और जिस पुस्तकालय का व्यय जनता के धन से चलेगा। यह पुस्तकालत स्थापना की आधार भित्ति है। दूसरे, इस पुस्तकालय मे न केवल विद्वान और विद्यार्थी अध्ययन करेंगे बल्कि प्रत्येक नागरिक, वह चाहे जो पेशा करता हो, चाहे जितनी थोड़ी-बहुत शिक्षा प्राप्त हो, चाहे जिस वातावरण मे रहता हो—सभी इस सेवा से लाभ उठायेंगे। जहाँ कही भी पुस्तकालय-विधान पहले से वर्तमान है वहाँ परीक्षणो का अध्ययन करने के बाद यह पाया गया है कि बहुत छोटी इकाई होने से, सहयोग के न होने से, पर्याप्त कोष न होने से, सरकार की उदासीनता, ट्रेंड कर्मचारियो के अभाव आदि कारणो के द्वारा उतना अच्छा निष्कर्ष नही निकल रहा है जितना कि कानून से निकलना चाहिए।

विचार गोष्ठी ने यह अनुभव किया कि इधर-उधर छिटके पुस्तकालयों को इस योजना के अन्तर्गत एक 'जन पुस्तकालय' के संरक्षण मे कार्य करना चाहिए। धन द्वारा सहायता प्राप्त निजी (प्राइवेट) संस्थाएँ गलत ठहराई गईं। विचार गोष्ठी ने इस बात पर विशेष बल दिया कि जन-पुस्तकालय-सेवा के व्यय का धन राष्ट्रीय या प्रान्तीय सरकारो से मिलना चाहिए, विशेषकर प्रारम्भिक व्यय की पूँजी के रूप मे। गत पाँच वर्ष मे पुस्तकालयो पर किये जाने वाले और शिक्षा पर किये जाने वाले व्यय की तुलनात्मक रीति से देखते हुए विचार-गोष्ठी ने दोनो के उचित सन्तुलन पर बल दिया।

पुस्तकालय की स्थापना जहाँ तक सम्भव हो स्थानीय प्रशासक-सीमाओ के अन्दर ही होनी चाहिए, जहाँ इनका विकास हो सके और ये क्षेत्र पुस्तकालय के विकास मे पूर्ण सहयोग दे सकेंगे, इन क्षेत्रो का चुनाव नगर और ग्रामीण क्षेत्रो के मध्य मे होगा तथा ये पुस्तकालय इतनी दूरी पर नही होंगे कि

पुस्तकालय डाइरेक्टर या जिला पुस्तकालय बोर्ड उन पर अधिकार रख सकने में कठिनाई अनुभव करे।

रिपोर्ट का दूसरा अन्तिम निर्णय था कि केन्द्रीय पुस्तकालय बोर्ड नियम (कानून) बद्ध स्वय परिचालित सस्था होगी जो एक मन्त्री पर निर्भर करेगी और इसको अधिकार होगे कि यह पुस्तकालय सेवाओ का विकास करे और इस निमित्त स्वीकृति भी दे। उस बोर्ड के अधिकार सम्बन्धी प्रश्न अभी विवादग्रस्त है। उनके एक मत होने के लिए हमें प्रतीक्षा करनी चाहिए।

रिपोर्ट के दिलचस्प अवतरणो (Paragraphs) मे से राष्ट्रीय पुस्तकालय-सेवा के कार्यों का वर्णन अति महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय पुस्तकालय के क्या कार्य है? क्या यह राष्ट्रीय-पुस्तकालय सेवा से भिन्न और विशिष्ट है? यदि ऐसा है तो राष्ट्रीय पुस्तकालय-सेवा के क्या विधान है? एशिया में विभिन्न प्रकार के जैसे Unitary और Federal राज्य वर्तमान है। ऐसे विभिन्न राज्यो मे राष्ट्रीय पुस्तकालय और राष्ट्रीय-पुस्तकालय-सेवा का क्या प्रकार (रूप) होगा। इत्यादि प्रश्नो पर विचार किया गया।

राष्ट्रीय पुस्तकालय एक वह संस्था है जिसके कि स्वय अधिकार है, जो राष्ट्रीय प्रकाशनो की रक्षा करती है और विश्व की सस्कृति और सभ्यता सम्बन्धी पुस्तको का चुनाव करती है। उसका प्रधान लक्ष्य राष्ट्रीय पुस्तको की सूची (Bibliography) निर्माण करना होता है तथा वह अन्तर्राष्ट्रीय ऋण और अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तको के आदान-प्रदान के केन्द्र के रूप मे कार्य करती है और जहां सम्भव हो देश का यूनियन कैटलाग रखती है।

राज्यो मे राष्ट्रीय पुस्तकालय का कर्तव्य है कि वह राष्ट्रीय पुस्तकालय-सेवा का निर्माण करे। राज्यो मे राष्ट्रीय पुस्तकालय का पुस्तकालयाध्यक्ष केन्द्रीय पुस्तकालय बोर्ड के पुस्तकालयाध्यक्ष की हैसियत से कार्य करता है। केन्द्रीय पुस्तकालय बोर्ड राष्ट्रीय पुस्तकालय पर निर्भर नही है।

रिपोर्ट मे केन्द्रीय पुस्तकालय बोर्ड के कार्यों का एव यह किस प्रकार राज्य और ज़िला बोर्डों के सहयोग से अपना राष्ट्रीय रूप स्थिर करती है, इसका विस्तृत विश्लेषण किया गया है।

दिल्ली सार्वजनिक पुस्तकालय आयोजन की आशातीत सफलता विचार-गोष्ठी को यह कहने के लिए प्रेरित करती है कि एशिया के देशो मे पथ-प्रदर्शन, शिक्षण और कार्यो के लिए अधिक से अधिक सुदृढ जन-पुस्तकालयो की आवश्यकता है। दूसरे जिन आवश्यक तथ्यो पर रिपोर्ट मे विचार किया गया,

उनमे से कुछ मुख्य ये हैं—पुस्तकालय-भवनो के निर्माण की समस्या, पुस्तकों का एक बडी सख्या मे वितरण, स्वेच्छा से कार्य करने वाले कर्मचारियो का प्रयोग, समूह मे विशेष वर्गो की सेवा, पुस्तकालय टेकनिक, कर्मचारियो का प्रशिक्षण, चुनाव और सामाजिक स्थिति, पुस्तकालयाध्यक्ष की कला मे प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले लोगो के लिए विदेशी अनुभवो का महत्त्व, पुस्तकालय-विस्तार-सेवा विशेषतया नये पढे-लिखे लोगो के लिए, प्रादेशिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग, राष्ट्रीय पुस्तकों की सूची का निर्माण और पुस्तकालय समितियो द्वारा किये जाने वाले कार्य की समस्याएँ।

विचार-गोष्ठी की सक्षिप्त रिपोर्ट मे, जो कि ३० नवम्बर को Unesco (CUA/73) द्वारा प्रसारित हुई निम्नलिखित मुख्य तथ्यो का साराश दिया गया है :—

१ एशिया मे सभी लोगो के लिए मुक्त और बराबर आधार पर उचित रूप से आयोजित, जन-पुस्तकालय-सेवा विकास।

२ सभी एशिया के देशों मे जहाँ कोई पुस्तकालय-कानून नही है, राष्ट्रीय जन-पुस्तकालय के कानूनो को क्रियात्मक रूप देना।

३. पुस्तकालय-सम्बन्धी प्रशिक्षण की सुविधाओ मे उन्नति तथा पुस्तकालयाध्यक्षो के वेतन एव सामाजिक रहन-सहन मे विकास।

४ जन-पुस्तकालयों का व्यय जनता के चन्दे से किया जायगा।

५ यूनेस्को, एशिया की सरकारो से मिल कर अतिरिक्त जन-पुस्तकालय आयोजना बनाए।

६. यूनेस्को नवीन पढे-लिखे लोगो के लिए उचित जन-पुस्तकालय सेवाओं की सुविधा प्रदान करने के लिए अनुसन्धान जारी रखेगा।

७ यूनेस्को एशिया मे एक ऐसा कार्यालय स्थापित करेगा जो विभिन्न सरकारो को सहमति और सहायता प्रदान कर जन-पुस्तकालय के विकास मे सहयोग देगा।

द्वितीय दल (ग्रुप टू) की रिपोर्ट मे, प्रौढो के लिए प्रारम्भिक अध्ययन की सामग्री प्रदान करने के सम्बन्ध मे जो मुख्य समस्या है वह यह कि निरक्षरता केवल उन क्षेत्रो मे ही है जहाँ पालन-पोषण की सुविधा अच्छी नही है, जहाँ प्राय. सदैव बीमारी का साम्राज्य रहता है और जहाँ अति गरीबी है। इसलिए यह उचित है कि प्रारम्भिक अध्ययन की सामग्री प्रदान करने मे राष्ट्रीय

योजना लोगो की सामाजिक और आर्थिक विकास को मुख्य रूप से ध्यान में रखे। रिपोर्ट वर्तमान पठन-सामग्री को देखती है और उनमें अन्तर (Lacunae) का निरीक्षण करती है, औद्योगिक, धार्मिक तथा अन्य क्षेत्रो मे पठन-सामग्री के क्रमो को निर्धारित (प्रस्तुत) करती है। यह श्रव्य और दृश्य (Audo-visual) सम्बन्धी सहायताओ एव उनके चुनाव तथा उनके जन पुस्तकालयो के प्रयोग के प्रश्नो पर विचार करती है। यह कुछ विशेष देशो की बहु-भाषा सम्बन्धी एव लिपि-विभिन्नताओ की समस्या पर विचार करती है। इन दिशाओ मे यहां आवश्यक परिणाम निकाले गये है कि देश की राष्ट्रीय भाषा मे पुस्तको के प्रदान करने के साथ-साथ प्रादेशिक भाषा-सामग्री को भी लेना होगा, और जहाँ तक सम्भव हो सके, सम्पूर्ण देश के लिए एक लिपि का अनिवार्य होना, पुस्तकालयाध्यक्षो के कार्य में सुविधा प्रदान करेगा। औद्योगिक शब्द-कोश का एशिया की भाषाओ मे निर्माण (रूपान्तर), कुछ यूरोपीय भाषाओ के लिए महत्व, अनुसन्धान-शिक्षण व्यवस्था तथा शिक्षा-केन्द्र का विकास और पुस्तक-प्रकाशन की व्यवस्था—इन पर रिपोर्ट में मुख्य रूप से विचार-विनियम किया गया है। इसमे चार महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ बताई गई है। प्रथम सरकारी और प्रबन्ध विभागो के सम्मुख जिनका कार्य प्रश्न-तालिका का उपस्थित करना, नवीन-शिक्षित लोगो के लिए सामग्री प्रदान करना है, जिसे पठन-सामग्री के स्वभाव (Nature), वितरण और उत्पत्ति आदि के विषय मे सूचना सगृहीत करना है। इसके अतिरिक्त यह प्रस्तुत की गई पुस्तको की भाषाओ, उनकी पूर्व-परीक्षाएँ तथा क्रमिक स्थिति-करण (ग्रेडिङ्ग), शिक्षण मे विभिन्न सीढियाँ (Stages), पुस्तको के अतिरिक्त शिक्षण मे अन्य सुलभ सामग्रियो की सहायता, उनके (पुस्तकों के) आकार-प्रकार जिनमे कि उन्हे निर्गत होना है और प्रस्तुत की गई सामग्री का मूल्याकन (की आलोचना) आदि प्रश्नो की सूचना एकत्रित करेगी। द्वितीय, एशिया के देशो मे प्रारम्भिक पठन (अध्ययन) सामग्री तथा इसके उत्पादन का निरीक्षण। तृतीय, प्रौढ शिक्षा साहित्य से सम्बन्धित शीर्षको (Titles) की एक विषय-सूची और स्थानीय कृषि, उद्योग (व्यापार) तथा हस्तकला द्वारा जीविकोपार्जन के साधनो मे सुधार (और विकास), चतुर्थ, वाङ्मय-सूची के उपकरणो और प्रौढ-शिक्षा के क्षेत्र मे कर्मचारियो के लिए सहायताओ के चुनाव के रूप मे हस्तकलाओ का पुनर्स्मरण।

उपर्युक्त (Unesco) (CUA/73) के द्वारा प्रसारित सक्षिप्त रिपोर्ट ने (Group Two) की रिपोर्ट को निम्न प्रकार से सक्षिप्त किया है —

प्रौढ-शिक्षा के लिए उचित पठन-सामग्री के विशेष अभाव तथा एशिया मे साहित्य प्रस्तुत करने वाली विभिन्न सस्थाओ (एजेसीज) मे परस्पर असहयोग की भावना को ध्यान मे रखते हुए आवश्यक है कि प्रत्येक देश मे भली प्रकार व्यय द्वारा चलाए जाने वाले एक राष्ट्रीय उत्पादन केन्द्र की स्थापना की जाय। इस दिशा मे, यह हर्ष का विषय है कि भारतवर्ष ने 'राष्ट्रीय पुस्तक-न्यास' के निर्माण के द्वारा एक बहुत बडा सराहनीय कदम उठाया है। छोटे बालको के लिए पुस्तकालय-सेवा के विषय मे तृतीय दल की रिपोर्ट सामग्रियो एवं भवनो के संग्रह, विस्तार सम्बन्धी कार्य, स्कूल-पुस्तकालयो, और वर्तमान (कार्यरत) पुस्तकालयो के लिए आवश्यक विशेष प्रकार के कर्मचारी-गण पर विशेष रूप से विचार करती है।

पूर्वकथित Unesco (CUA/37) की सक्षिप्त रिपोर्ट तृतीय दल के निर्णयो को इस प्रकार सक्षेप मे प्रदर्शित करती है —

१. सभी जन-पुस्तकालय बच्चो की सेवा को ध्यान मे रखेगे और उसे प्रदान करेगे।

२. स्कूल मे बच्चो की पुस्तकालय-सम्बन्धी-सेवा का विकास एक निश्चित आयोजन के आधार पर किया जायगा और इन सेवाओ को सभी स्कूल के बच्चो के लिए सुलभ बनाया जायगा।

३ यूनेस्को एशिया की सरकारो से मिल कर प्रादेशिक, या राष्ट्रीय आधार पर स्कूलो और जन-पुस्तकालयो मे बच्चो के लिए पुस्तकालय की सेवाओं के निर्देश के हेतु एक सुदृढ आयोजन बनायेगी।

४ यूनेस्को एशिया के बच्चो और नवयुवक व्यक्तियो के लाभार्थ अच्छी पुस्तको के निर्माण के लिए आयोजन बनायेगी।

५ यूनेस्को विश्व साहित्य की उन पुस्तको की—वह मौलिक हो चाहे अनूदित तालिका तैयार करेगी जो एशिया के बच्चो के लिए लाभप्रद हो।

एशियन लाइब्रेरी एसोसिएशन

२३ अक्टूबर १९५५ मे यूनेस्को सेमिनार के दिनो मे अनेक ऐशियायी देशो के प्रतिनिधियो ने मिल कर 'एशियन लाइब्रेरी एसोसिएशन' की स्थापना की। इसके सभापति Mr Severino I Velasco (फिलिपाइन्स) और मंत्री श्री डी० आर० कालिका (भारत) चुने गए।

पुस्तक-जाकेट प्रदर्शनी

आकर्षक पुस्तक तैयार करने को प्रोत्साहन देने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक-जाकेट-प्रदर्शनी २७ अप्रैल ५६ को दिल्ली मे आयोजित की गई जिसका उद्घाटन केन्द्रीय शिक्षा-विभाग के उपमन्त्री डा० के० एल० श्रीमाली महोदय ने किया।

(च) नेशनल बुक ट्रस्ट

केन्द्रीय सरकार ने जनता मे सरल और स्वस्थ साहित्य को सस्ते मूल्य पर प्रचारित करने के लिए तथा क्लैसिकल एव अन्य विशेष साहित्य जिन्हें प्रकाशक लाभ की दृष्टि से छापने मे हिचाते है, उन्हे छापने के लिए एक 'नेशनल बुक ट्रस्ट' की स्थापना की। चालू प्रथम वर्ष मे ३० लाख रुपये का व्यय अनुमानित है। इसकी समिति इस प्रकार है —

डा० जॉन मथाई वाइस चान्सलर, बम्बई यूनिवर्सिटी (अध्यक्ष)।

सदस्य —

१. डा० ए० लक्ष्मण स्वामी मुदालियर, वाइस चान्सलर मद्रास यूनिव०
२ डा० जाकिर हुसेन ,, अलीगढ ,,
३. श्री मुल्कराज आनन्द।
४ श्री ख्वाजा अहमद अब्बास।
५. श्री दिलीपकुमार गुप्त।
६. श्री पीटर जयसिंघे।
७. श्री डी० जे० तेन्दुलकर।
८. श्रीकृष्णा कृपलानी।
९. प्रो० मुंजीव।
१०. प्रो० हुमाऊँ कबीर।

इनके अतिरिक्त भारत सरकार के शिक्षा तथा सूचना-मन्त्रालयो के मंत्री भी ट्रस्ट के सदस्य होगे।

पुस्तकालयाध्यक्षों की ट्रेनिंग

पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा देने के लिए 'सेंट्रल इन्स्टीटयूट' स्थापित करने के निमित्त १० लाख रुपये की एक रकम रखी गई है।

(छ) इण्डिया आफिस लाइब्रेरी के लिए प्रयत्न

देश के विभाजन के पश्चात् भारत और पाकिस्तान दोनो ने इस

लाइब्रेरी को लेने की बात चलाई। केन्द्रीय-शिक्षा मन्त्री मौलाना आजाद इस लाइब्रेरी के समझौते के सम्बन्ध मे बातचीत करने इंगलैण्ड गए भी। वे २६ जुलाई १९५५ को वापस आए। २९ जुलाई को प्रेस कान्फ्रेंस मे भाषण देते हुए उन्होने बताया कि ब्रिटिश कॉमनवेल्थ के सेक्रेटरी लार्ड होम के साथ पत्र-व्यवहार हो रहा है और अभी तक कोई निर्णय नही हो पाया है। लार्ड होम का विचार है कि इण्डिया आफिस लाइब्रेरी इगलैण्ड मे ही अखण्ड रूप से पूर्ववत् बनी रहे। यो वैधानिक रूप से लाइब्रेरी की सारी सम्पति तथा ईस्ट इण्डिया कम्पनी के समस्त कागजात पर अविभाजित भारत का अधिकार है। इस सम्बन्ध मे १९४८ ई० के स्वतंत्रता अधिनियम के तैयार होते समय गवर्नर जनरल ने अपनी कौसिल मे स्पष्ट रूप से कहा था कि उक्त सामग्री भारत की सम्पत्ति है। इस प्रकार अभी यह मामला खटाई मे पडा हुआ है। यदि ज्ञान का विभाजन हुआ अर्थात् लाइब्रेरी की सामग्री भारत और पाकिस्तान मे बँट गई तो यह एक अदूरदर्शिता होगी।

(छ) हस्तलिखित-ग्रंथों की खोज

देश के स्वाधीन होने पर भारत सरकार ने तथा प्रान्तीय सरकारो ने भी हस्तलिखित ग्रन्थो की खोज करने तथा उन्हे प्राप्त करके उनको प्रकाश मे लाने का कार्य भी अपनाया। सन् १९५२–५३ मे भारत सरकार ने ३१ ऐतिहासिक पाण्डुलिपियाँ और डाकूमेंट्स विभिन्न पार्टीज से १२०० रु० की लागत पर प्राप्त किया। इनमे सरोजिनी नायडू की कविताएँ, अमीर खुसरो की रचनाएँ, मुगलकालीन कुछ फरमान एवं डाकूमेंट्स थे। सरकार ने अरबी कवि वोस्तानी का ८०,००० रु० मे क्लैसिकल पुस्तको के ट्रांसलेशन की पांडुलिपि का कापीराइट ले कर जनता में सस्ते दामो मे वितरण की योजना तैयार की। इसमे महाभारत, भगवद्गीता, रामायण, शकुन्तला, नल-दमयन्ती और ए समरी आफ इण्डियन मैथोलोजी आदि मुख्य ग्रंथ है, जिनमे से शकुन्तला का प्रकाशन हाथ मे लिया गया। नेशनल आर्काइव्ज आफ इण्डिया ने प्राचीन हस्तलिखित ग्रथो के रखने के लिए नई रासायनिक खोज की और २००० के लगभग ग्रंथो को उसी रीति से रखा। सरकार ने भण्डारकर रिसर्च इस्टीट्यूट पूना, सयाजीराव ओरियन्ट इंस्टीट्यूट बड़ौदा, कलकत्ता यूनिवर्सिटी और मैन्युस्क्रिप्ट्स की माइक्रोफिल्म कापी उधार देने की एक योजना भी स्वीकार की।

जम्मू और काश्मीर सरकार ने सस्कृत के २३९ बहुमूल्य ग्रंथ प्राप्त किए।

४९ फारसी और अरबी, १६ पाली और १९ तिब्बती। इनमें से ८९ संस्कृत के ग्रंथ प्रकाशित भी हुए। इनमें 'निकशास्त्र' बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। सरकारी रिसर्च पडित और मौलवी विभिन्न दुर्लभ ग्रथो का सम्पादन कर रहे है। मलिक हसन का ११ वी शताब्दी का लिखा हुआ काश्मीर का इतिहास भी मिला है जिसमे आरभ से १८९५ तक का इतिहास है और जिनका पता कल्हण की राजतरगिणी से भी नही लग पाया था।

उत्तर प्रदेशीय सरकार ने अपने एक परिपत्र के द्वारा राज्य के समस्त जिलाधीशो को आदेश दिया है कि वे अपने-अपने जिले में व्यक्तियो और संस्थाओ के पास जो हस्तलिखित ग्रथ हो, उनका विवरण सरकार को भेजें। इस ओर कार्य भी शुरू हो गया है।

नागरी प्रचारिणी सभा ने अपने कार्यकर्त्ताओ के द्वारा खोजे गए ग्रथो की खोज रिपोर्ट प्रकाशित की। हिन्दी-सग्रहालय मे सुरक्षित ५००० ग्रथो का सूची-पत्र भी सम्मेलन की ओर से सन् १९५७ में प्रकाशित किया गया। विहार राष्ट्रभाषा-प्रचार-परिषद ने भी अपनी 'हस्तलिखित ग्रंथो की खोज' के दो भाग प्रकाशित किए।

कैटलागस कैटलागरम्

इन सब सस्थाओ के निजी हस्तलिखित ग्रथो के सूचीपत्रो के अतिरिक्त एक महत्त्वपूर्ण सूचीपत्र 'कैटलागस कैटलागरम्' (प्रथम खंड) मद्रास यूनिवर्सिटी की ओर से १९४९ ई० मे प्रकाशित हुआ। इसका सम्पादन मद्रास यूनिवर्सिटी मे सस्कृत विभाग के अध्यक्ष श्री सी० कुन्हनराजा ने किया। ३८० पृष्ठो के इस सूचीपत्र मे केवल 'अ' अक्षर ही आ पाया है। इसको निम्नलिखित सस्थाओ के तथा कुछ व्यक्तिगत सग्रहो के भी हस्तलिखित ग्रंथो के सूचीपत्रो से तैयार किया गया है—

पुस्तकालय, ओरियंटल इन्स्टीट्यूट, रिसर्च सोसाइटीज और मैनुस्क्रिप्ट लाइब्रेरीज़

अड्यार लाइब्रेरी, अड्यार।
आनन्दाश्रम, पूना।
ऐंग्लो सस्कृत लाइब्रेरी, नवद्वीप।
एनी पब्लिक लाइब्रेरी, बेनी बाजार, सिलहट, आसाम।
अनूप सस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर।
भण्डारकर ओरियटल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना।

भारतीय इतिहास संशोधक मंडल, पूना।
भारतीय विद्याभवन, बम्बई।
बिब्लियोथिक नेशनल, पेरिस।
बिहार ऐण्ड उडीसा रिसर्च सोसाइटी, पटना।
बाम्बे ब्राच आफ रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, बम्बई।
दाहिलक्ष्मी लाइब्रेरी, नाडियाद।
दकन कालेज पोस्ट ग्रेजुएट ऐण्ड रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना।
गवर्नमेंट ओरियन्टल लाइब्रेरी, मैसूर।
ग्रेटर इंडिया सोसाइटी, कलकत्ता।
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद।
नेशनल लाइब्रेरी, कलकत्ता।
इण्डिया आफिस, लन्दन।
जिन्द स्टेट पब्लिक लाइब्रेरी, जिन्द।
कृष्ण देवराय आन्ध्र भाषा निलय, हैदराबाद, दक्षिण।
लाइब्रेरी आफ कांग्रेस, इंडिक सेक्शन, वाशिंगटन।
मद्रास गवर्नमेंट ओरियंटल मैनुस्कृप्ट लाइब्रेरी, मद्रास।
मदुरा तामिल संग्रहम्, मदुरा।
मीमासा विद्यालय, पूना।
ओरियन्टल इन्स्टीट्यूट बड़ौदा।
रंगपुर साहित्य परिषद, कलकत्ता।
सिंधिया ओरियन्टल इन्स्टीट्यूट, उज्जैन।
सोसाइटीज एशियाटिक, पेरिस।
तंजौर महाराज शरफोजी सरस्वती महल लाइब्रेरी, तंजौर।
तेलुगु एकेडेमी, कोकोनाद।
ट्रावनकोर यूनिवर्सिटी ओरियन्टल मैनुस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, ट्रिवेन्डम।
ट्रिवेन्ड्रम पब्लिक लाइब्रेरी, ट्रिवेन्ड्रम।
बंगीय साहित्य परिषद, कलकत्ता।
वारेन्द्र रिसर्च सोसाइटी, राजशाही, बंगाल।
वेदशास्त्र उत्तेजक सभा, पूना।
वारंगल हिस्टारिकल रिसर्च सोसाइटी वारंगल, हैदराबाद।

यूनिवर्सिटी, कालेज और स्कूल

आन्ध्र यूनिवर्सिटी, वाल्टेयर।

अन्नामलाई यूनिवर्सिटी, मद्रास ।
बम्बई यूनिवर्सिटी, बम्बई ।
कलकत्ता यूनिवर्सिटी, कलकत्ता ।
कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी ऐण्ड ट्रिनिटी कालेज, कैम्ब्रिज ।
ढाका यूनिवर्सिटी, ढाका ।
डी० ए० वी० कालेज, लाहौर ।
फर्गुसन कालेज, पूना ।
एच० पी० टी० कालेज, नासिक ।
नार्मल स्कूल, सिल्चर ।
उस्मानिया यूनिवर्सिटी, हैदराबाद ।
पंजाब यूनिवर्सिटी, लाहौर
श्रीरामपुर कालेज, श्री रामपुर

म्युजियम और आर्कलोजी विभाग

आर्कलाजिकल विभाग, जोधपुर ।
आर्कलाजिकल सर्वे आफ इंडिया ।
कोलम्बो म्युजियम, कोलम्बो ।
कटक म्युजियम, कटक ।
इण्डियन म्युजियम, कलकत्ता ।
म्युनिस्पल म्युजियम, इलाहाबाद ।
प्रिंस आफ वेल्स म्युजियम, बम्बई ।

संस्कृत कालेज और पाठशालाएँ

महाराजा संस्कृत कालेज, मैसूर ।
महाराजा संस्कृत कालेज, विजयानगरम् ।
प्राज्ञ पाठशाला वाइ, सतारा जिला ।
रामेश्वरम् देवस्थानम् पाठशाला, मदुरा ।
संस्कृत पाठशाला राजापुर, रत्नगिरि ।
संस्कृत कालेज, उड्डीपी ।
उभय वेदान्त संस्कृत कालेज, श्री परुमबुदुर ।
वेदशास्त्र पाठशाला, पुदुकोटा ।

स्टेट्स

अजयगढ़, भरतपुर, भोर, बरद्वान, कोचीन, धरमपुर, गोडवाल, जयपुर

उड़ीसा, काश्मीर, केंझोर, कोटा, पुदुकोटा, उदयपुर और विजयानगरम् ।

जैन संस्थाएँ

अलक पन्नालाल दिगम्बर जैन
सरस्वती भवन, झालरापाटन ।
अमृत लाल मगन लाल शाह जैन विद्याशाला, अहमदाबाद ।
कासकीर्ति पंडिताचार्य जैन भंडार भुवन वेलगोला, मैसूर ।
सेंट्रल जैन लाइब्रेरी, आरा ।
चिगम्बर जैन भण्डार, दिल्ली ।
दिगम्बर जैन लाइब्रेरी, रोहतक ।
जैन मंदिर भण्डार, पानीपत ।
जैन मंदिर घिलाखली, घिरोर, मेनपुरी ।
वीरवाणी विलास जैन सिद्धान्त भवन, मूडबिद्री ।
शान्तिनाथ जैन मंदिर, अलीगंज एटा ।
स्याद्वाद जैन महाविद्यालय, भदैनी बनारस ।
राजाराम कालेज, कोल्हापुर ।

हिन्दू मठ और मन्दिर

अहोविलास मठ, श्रीरंगम् ।
कलालागर देवस्थानम्, मद्रास ।
कांची कामकोटि शंकराचार्य मठ, कुंभकोना ।
कृष्णपुर मठ, उद्दीपी ।
नाथद्वारा, उदयपुर ।
पेशावर मठ, उद्दीपी ।
प्रतिवादि भयंकर मठ, काची ।
रंगनाथ स्वामी देवस्थानम् म्युजियम और लाइब्रेरी, श्रीरंगम् ।
शृंगेरी शकराचार्य मठ, शृंगेरी ।
उपनिषदाश्रम मठ, काची ।

अन्य संस्थाएँ

आसाम गवर्नमेंट बुकडिपो ।
आयुर्वेद केमिकल वर्क्स, कोल्हापुर ।
मातृभूमि कार्यालय, ग्वालियर ।

निर्णय सागर प्रेस, बम्बई।

पद्माचार्य प्रेस, मैसूर।

रेड्डी होस्टल सुल्तान बाजार, हैदराबाद।

इससे इस बात का भी अनुमान किया जा सकता है कि भारत के कोने-कोने मे विभिन्न सस्थाओ में महत्वपूर्ण ग्रंथ बहुत बडी संख्या में सुरक्षित है और इस बात की बहुत जरूरत है कि देहातो तथा नगरो मे विभिन्न व्यक्तियो के पास जो ग्रंथ पडे है, उनका भी उद्धार किसी सुनिश्चित योजना के अनुसार किया जाना चाहिए। इन ग्रथो से भारत के साहित्य की श्रीवृद्धि होगी और अतीत की सस्कृति पर महत्वपूर्ण प्रकाश पडेगा।

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित सूचियाँ भी प्रकाशित हुई है –

१९४७ राजस्थान मे हिन्दी के हस्तलिखित ग्रथो की खोज विद्यापीठ, उदयपुर सपादक अगरचन्द नाहटा।

१९४८ कन्नड प्रान्तीय ताडपत्रीय ग्रथ सूची . भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, संपा० भुजबली शास्त्री।

१९४९ इम्पारटेंट हिस्टारिकल मैनुस्क्रिप्ट्स . रघुवीर लाइब्रेरी सीतामऊ, सपा० डा० रघुवीर।

१९५२ राजस्थान मे हिन्दी के हस्तलिखित ग्रथो की खोज साहित्य सदन, उदयपुर · संपा० उदयसिंह भटनागर।

१९५२ हस्तलिखित हिन्दी ग्रथो की खोज का पिछले ५० वर्षो का विवरण। नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

१९५५ प्राचीन हस्तलिखित पोथियो का विवरण राष्ट्रभाषा-प्रचार-परिषद् पटना सपा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी।

गिलगिट मैनुस्क्रिप्ट के नाम से १९३१ मे डा० रघुनाथ सिंह स्टेट आफिसर ने १६ पुरानी बुद्धिस्ट ग्रंथो (पाली मे) का पता लगाया जिसका सम्पादन डा० नलिनाथ दत्त, कलकत्ता यूनिवर्सिटी ने किया और प्रकाशित हुई। शेष को भारत सरकार के पास इन्फेक्टेड होने के कारण भेजा गया, जो ५, ६ शताब्दी की लिखी हुई थी। ये गिलगिट मैनुस्क्रिप्ट्स संसार के प्राचीन ग्रथो मे से है। १९ तिब्बती ग्रथो के सिर पैर का पता अभी विशेषज्ञ लगा रहे हैं। 'ओरिजिन ऐण्ड ग्रोथ आफ काश्मीरी म्युजिक' का भी पता लगा है। दाराशिकोह की खुद की लिखी 'सिरी अकबर' नामक पुस्तक मिली है, जो बहुमूल्य है।

गवर्नमेंट रिसर्च और पब्लिकेशन विभाग को ५००० हस्तलिखित पोथियो के संग्रह की बडी चिन्ता है जो उत्तर भारत का सबसे बडा संग्रह है। वह जम्मू रघुनाथ संस्कृत कालेज के सरक्षण मे एक ट्रस्ट के अधिकार मे है। जिसका नाम धर्म अर्थ ट्रस्ट है। धर्म अर्थ समिति सरकार को इसकी प्रतिलिपि भी नही देना चाहती।

बहादुरसिह जी सिंघी के दान द्वारा श्री दालचन्द जी सिंघी की पुण्यस्मृति मे सिघी जैन ग्रंथमाला की स्थापना १९२९ ई० मे हुई थी। उसकी ओर से भी श्री मुनिजिन विजय के सम्पादकत्व मे ५ दुर्लभ जैन ग्रथ प्रकाशित हो चुके है तथा और भी प्रकाशित हो रहे है। इस ग्रथमाला के अन्तर्गत जैन आगम, दर्शन, साहित्य, इतिहास, कथात्मक विविध विषय, प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, प्राचीन राजस्थानी आदि के उपलब्ध ग्रथो को प्रकाशित करने की बडी सुन्दर योजना बनाई गई है।

(झ) प्रदेशों में पुस्तकालयों और संघों की प्रगति

अखिल भारतीय पुस्तकालय-संघ की प्रगति

ब्रिटिशकाल मे इस संघ के सात अधिवेशन हो चुके थे। उसके बाद अब तब इसके चार अधिवेशन हुए।

संघ का आठवाँ अधिवेशन २० से २३ जनवरी १९४९ ई० को नागपुर यूनिवर्सिटी मे डा० रंगनाथन् जी के सभापतित्व मे हुआ। इसका उद्घाटन माननीय मंगलदास पकवासा, राज्यपाल, मध्य-प्रदेश ने किया। स्वागत-समिति के अध्यक्ष पंडित कुंजीलाल दुबे, वाइस चासलर, नागपुर यूनिवर्सिटी ने प्रतिनिधियो का स्वागत किया। इस अधिवेशन मे विभिन्न भागो से लगभग २०० प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

इन्दौर सेंट्रल लाइब्रेरी के नियत्रण पर संघ का नवाँ अधिवेशन ११ से १४ मई १९५१ तक श्री टी० डी० वाकनीस (क्युरेटर आफ लाइब्रेरीज, वम्बई) की अध्यक्षता मे हुआ।

उसके वाद १० वाँ अधिवेशन हैदरावाद मे १ से ६ जून १९५३ को श्री एस० दास गुप्ता की अध्यक्षता मे हुआ। हैदरावाद स्टेट के शिक्षा-मन्त्री श्री देवीसिंह चह्व्वन ने इसका उद्घाटन किया। उस्मानिया यूनिवर्सिटी के वाइस चासलर श्री डा० एस० भगवन्थम स्वागतसमिति के स्वागताध्यक्ष रहे।

संघ का ग्यारहवाँ अधिवेशन ७ अप्रैल से १० अप्रैल १९५६ तक कलकत्ता में श्री ए० बशीरुद्दीन साहब, लाइब्रेरियन, अलीगढ़ यूनिवर्सिटी की अध्यक्षता में हुआ। कलकत्ता यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर श्री एन० के० सिद्धान्त स्वागताध्यक्ष थे। अधिवेशन का उद्घाटन पश्चिमी बंगाल के राज्यपाल श्री एच० के० मुकर्जी महोदय ने किया।

इन सभी अधिवेशनो मे कुछ निबन्ध पढ़े जाते रहे और उन पर विचार-विनिमय होता रहा तथा अन्य सामयिक बातो की चर्चा हुआ करती थी।

इस समय श्री वी० केशवन् संघ के अध्यक्ष और श्री पी० सी० बोस प्रधान मन्त्री है।

इण्डियन लाइब्रेरी डाइरेक्टरी

'डाइरेक्टरी आफ इण्डियन लाइब्रेरीज' का प्रथम सस्करण सन् १९३८ ई० मे प्रकाशित हुआ। इसका सम्पादन एक समिति द्वारा किया गया। द्वितीय सस्करण सन् १९४४ ई० मे प्रकाशित हुआ। इसकी तैयारी श्री आर० गोपाल, श्री सन्तराम भाटिया, श्री राम मथुराप्रसाद, श्री एस० बशीरुद्दीन, खान बहादुर के० एम० असदुल्ला, सरदार सोहन सिंह और वाई० एम० मूले ने की। तृतीय संस्करण की तैयारी के लिए अखिल भारतीय पुस्तकालय-सघ की कार्य-समिति ने १९५० मे निश्चय किया। प्रश्नावली भेजी गई। उसकी गति मन्द रही किन्तु १९५१ की जुलाई मे यह निश्चय किया गया कि प्राप्त सूचनाओं के आधार पर बिना देर किए तृतीय सस्करण छाप दिया जाय। फलत· स९५१ में यह डाइरेक्टरी प्रकाशित की गई। इसका सम्पादन डा० रंगनाथन् जी, श्री एस० दास गुप्ता एवं श्री मगनानन्द जी ने किया। इसमें ६ अध्याय है —

प्रथम अध्याय मे लाइब्रेरी की डाइरेक्टरी है। प्रत्येक पुस्तकालय के विषय मे सूचनाएँ टेबुलर फार्म मे दी गई है।

द्वितीय अध्याय मे पुस्तकालयो की भौगोलिक तरतीब दी गई है।

तृतीत अध्याय मे पुस्तकालयो का उनके रूप (टाइप) के अनुसार विभाजन दिया गया है।

चौथे अध्याय मे पुस्तकालय-संघों के सम्बन्ध में सूचनाएँ दी गई है।

पाँचवें अध्याय मे पुस्तकालय-विज्ञान के स्कूलो का परिचय है।

भारतीय पुस्तकालय संघ के ग्यारहवे अधिवेशन
के
अध्यक्ष
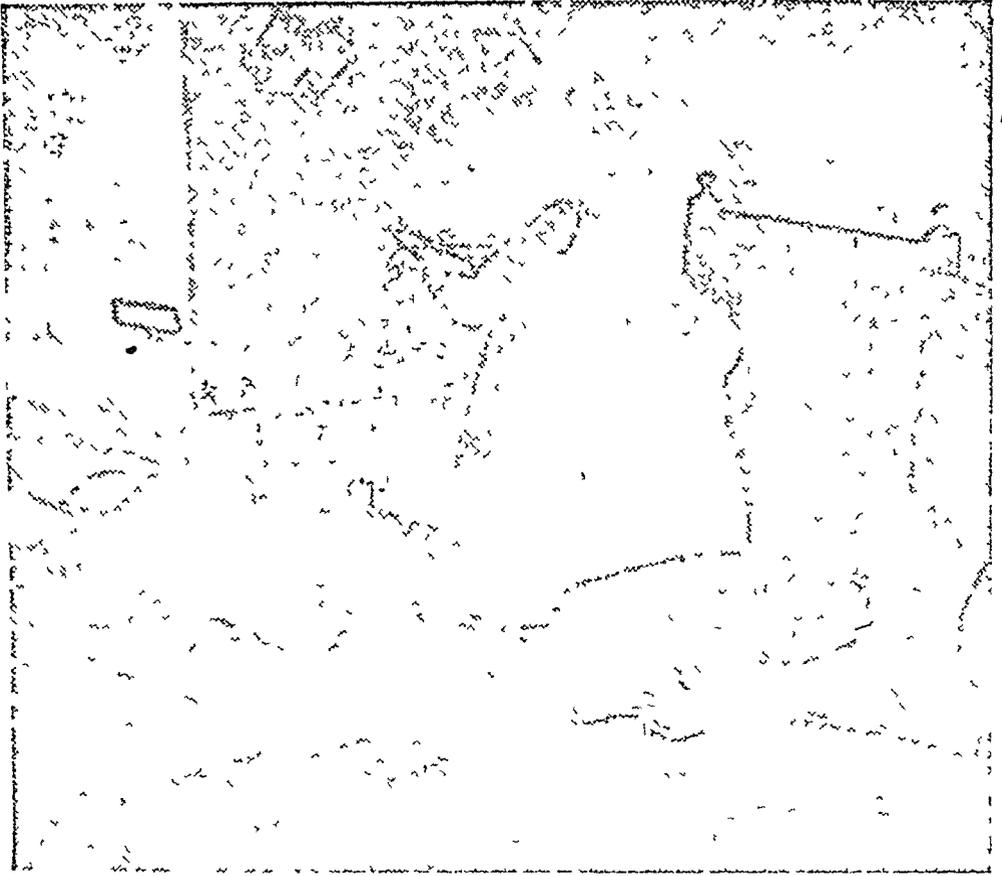
श्री एम० बशीरुद्दीन एम ए, एफ एल ए
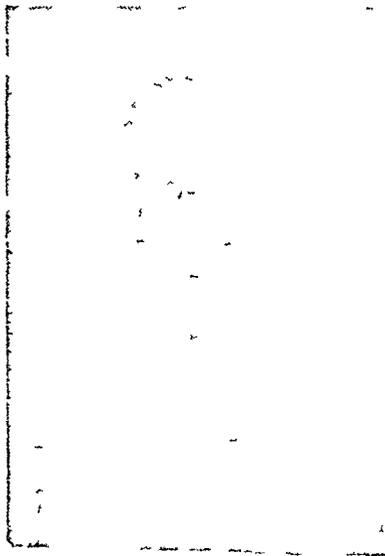
श्री पी० सी० बोस
प्रधानमन्त्री
अखिल भारतीय पुस्तकालय संघ

छठें अध्याय मे भारत में प्रकाशित पुस्तकालय-साहित्य को वर्गीकृत करके दिया गया है।

सातवें अध्याय मे भारत में लाइब्रेरी प्रोफेशन के कुछ व्यक्तियो के सम्बन्ध मे जीवन-सम्बन्धी संक्षिप्त परिचय दिए गए है।

यद्यपि इस डाइरेक्टरी के सम्बन्ध मे भेजी गई प्रश्नावली का उत्तर लगभग एक-तिहाई पुस्तकालयो, कुछ पुस्तकालय सघो तथा लाइब्रेरी प्रोफेशन के सदस्यों ने नही भेजे, फिर भी डाइरेक्टरी काफी उपयोगी है।

संघ ने इनके अतिरिक्त निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित की —

१९५० डा० एस० आर० रंगनाथन् : लाइब्रेरी टुअर १८४८ यूरोप ऐण्ड अमेरिका, इम्प्रेशन ऐण्ड रिफ्लेक्शन।

१९५० डा० एस० आर० रंगनाथन् : ग्रन्थ अध्ययनार्थ हे (अनु० श्री मुरारी लाल नगर)।

१९५१ ,, ,, ,, पब्लिक लाइब्रेरी प्रोविजन ऐण्ड डाकूमेन्टेशन प्रोब्लम्स।

१९५१ ,, और के०एम०शिवरामन् : लाइब्रेरी मैनुअल।

१९५१ ,, ,, ,, ग्रन्थालय प्रक्रिया (अनु० श्री मुरारी लाल नागर)।

इनके अतिरिक्त १९४९ से 'अवगिला' और 'ग्रन्थालय' दो पत्रिकाओ का प्रकाशन होता रहा। अक्टूवर सन् १९५६ से 'अवगिला' के स्थान पर 'इण्डियन लाइब्रेरी जनरल' नामक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया गया।

उत्तर-प्रदेश

इस काल मे उत्तर-प्रदेश सरकार ने पुस्तकालयो के विकास की ओर विशेष ध्यान दिया। सरकार नगर और गॉव के अच्छे पुस्तकालयो को वार्षिक अनुदान दे कर उन्हे पुस्तकालय-सेवा के लिए प्रोत्साहित करती रही। सन् १९५५-५६ के वजट मे ६२ पुस्तकालयो को १७,००० रु० अनुदान दिया गया। १९५६-७५ के वजट मे वृद्धि कर दी गई और ८४ पुस्तकालयो को २५,००० रु० अनुदान दिया गया। देहरादून मे अन्धो के लिए भी एक पुस्तकालय स्थापित किया गया।

प्रान्तीय केन्द्रीय पुस्तकालय

उत्तर-प्रदेश सरकार ने इलाहाबाद मे दिसम्बर १९४९ मे केन्द्रीय पुस्त-

कालय की स्थापना की। इसमे प्रारम्भ मे पुस्तको का सगह प्रेस एण्ड रजि-स्ट्रेशन आफ बुक्स ऐक्ट के अन्तर्गत प्राप्त पुस्तको और शिक्षा से सम्बन्धित विपयो का था। इस पुस्तकालय को प्रथम पचवर्षीय योजना के अन्तर्गत किसी प्रकार का विशेप प्रोत्साहन नही मिल सका अब द्वितीय पचवर्षीय योजना के अन्तर्गत इस पुस्तकालय के विकास की योजना बनाई गई है। साथ ही यह भी निश्चय किया गया है कि उससे सम्बद्ध ६ जिला पुस्तकालय स्थापित किए जायँ। ये पुस्तकालय मेरठ, मथुरा, आगरा, बरेली, कानपुर, अलमोडा, झाँसी गोरखपुर और वाराणसी मे स्थापित किए जा रहे है। इनके लिए विशेप रूप से भवनो के निर्माण और साज-सामान आदि के सग्रह की भी व्यवस्था हो गई है। समस्त योजना मे पुस्तको, कर्मचारियो और भवनो आदि पर लगभग १८ लाख रुपये व्यय होगा। इसमे से केन्द्रीय पुस्ततकालय भवन पर ४ लाख, प्रत्येक जिला पुस्तकालय भवन पर ३० हजार केन्द्रीय पुस्तकालय के फर्नीचर आदि सामग्री पर १ लाख २० हजार तथा प्रति जिला पुस्तकालय की सामग्री एव पुस्तको आदि पर १० हजार रुपये व्यय होगे। योजना के प्रथम वर्ष (१९५६–५७) मे भवन निर्माण के कार्य मे सन्तोषजनक प्रगति हुई है। शनै–शनै पुस्तकालय-सम्बन्धी आवश्यक सामग्री भी सगृहीत कर ली गई है।

वाल पुस्तकालय विभाग, पुस्तकालयाध्यक्षो का प्रशिक्षण, 'जिला पुस्त-कालयो द्वारा पुस्तको का वितरण आदि केन्द्रीय पुस्तकालय की प्रमुख विशे-पताएँ होगी। प्रशिक्षण योजना के अन्तर्गत प्रति वर्ष २० छात्रो को ट्रेण्ड करने का प्रवन्ध किया जायगा। प्रशिक्षण की रूपरेखा अभी सरकार के विचाराधीन है। इस केन्द्रीय पुस्तकालय मे अब तक १ लाख २५ हजार पुस्तके सगृहीत हो चुकी है। श्री मगनानन्द जी इस पुस्तकालय के अध्यक्ष है।

शिक्षा-प्रसार विभाग

स्वाधिनता के पश्चात् इस विभाग के कार्यो मे उत्तरोत्तर वृद्धिहोती रही। विभाग की ओर से साक्षरता को बढाने और उसे स्थायित्व प्रदान करने के लिए १३१७ पुस्तकालय स्थापित है। जिनमे से ४० केवल महिलाओ के लिए है। इनके अतिरिक्त ३६०० वाचनालय भी है। इन पुस्तकालयो और वाच-नालयो को प्रतिवर्ष विभाग द्वारा उपयोगी एव सरल साहित्य पहुँचाया जाता है। इन पुस्तकालयो से ग्रामीण लोग पुस्तके घर ले जा कर पढ़ते है। वाच-

नालयो मे लोग आकर समाचार-पत्र और पत्रिकाओ द्वारा लाभ उठाते है। कुछ वर्षो की प्रगति का विवरण इस प्रकार है –

वर्ष	स्वीकृत धन पुस्तकों के लिए	समाचार-पत्र, पत्रिकाओं के लिए	निर्गत पुस्तके	वाचनालय के उपयोगकर्त्ताओं की संख्या
१९५३-५४	३४,१०२=)।।।	२३,७२५।≡)५	८,३८,६२७	८,७९,८५३
१९५४-५५	७९,३१७)	३९,७६७।≡)	७,५३,१७८	६,२७,६९४
१९५५-५६	८४,०००)	४८,०००)	७,५३,१७८	६,२७,९९४

अनुदान

उपर्युक्त विभागीय पुस्तकालयो के अतिरिक्त इस विभाग द्वारा सुव्यवस्थित ग्रामीण पुस्तकालयो को अनुदान भी दिया जाता है। इसका विवरण इस प्रकार है –

वर्ष	ग्रामीण पुस्तकालय	अनुदान की रकम
१९५४	२०७	७,४७६ रु०
१९५५	२०८	७,६३२ रु०
१९५६	१९७	७,३५६ रु०

विभागीय पुस्तकालय

शिक्षा-प्रसार विभाग के कार्यालय मे भी एक सुव्यवस्थित पुस्तकालय है जिसमे विविध विषयो की ३६०० पुस्तके संगृहीत है।

अन्य कार्य

इधर इस विभाग मे एक चलचित्र केन्द्र स्थापित हुआ है जिसके द्वारा दृश्य-श्रव्य साधनो का उत्पादन किया जाता है और गांव तथा नगर की शिक्षा संस्थाओं एवं ग्रामीण क्षेत्रो मे चलचित्र-प्रदर्शन की भी व्यवस्था की

जाती है। विभाग के पास पाँच प्रचार वाहन है जो रेडियो, ग्रामोफोन, चित्र-पट्टी तथा चलचित्र-प्रदर्शन यंत्रों से युक्त हैं।

इनके अतिरिक्त यह विभाग ऐसे अनेक आयोजन करता रहता है जिनसे शिक्षा-प्रचार मे सहायता मिल सके, जैसे प्रौढ साहित्य का प्रकाशन, सेमिनार, सामाजिक शिक्षा सप्ताह एव प्रदर्शनी आदि। इस समय श्री द्वारकाप्रसाद जी माहेश्वरी शिक्षा-प्रसार अधिकारी हैं।

पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा

इस प्रदेश मे १९५१ ई० से अलीगढ विश्व विद्यालय मे श्री एस० वशीरुद्दीन साहव के प्रयत्नो से एक 'सर्टिफिकेट कोर्स' चालू किया गया। यह कोर्स सफलतापूर्वक चल रहा है।

काशी विश्वविद्यालय मे सन् १९५६ से डा० जगदीशशरण शर्मा पुस्तकालय-विज्ञान-प्रशिक्षण के अध्यक्ष नियुक्त किए गए हैं। अत इस प्रदेश मे पुस्तकालय-विज्ञान के प्रशिक्षण का यह केन्द्र अब अधिक लोकप्रिय हो रहा है।

पुस्तकालय-संघ

उत्तर प्रदेश मे नए पुस्तकालय-सघ की स्थापना अगस्त १९५६ मे हुई। इसका उद्घाटन प्रदेश के मुख्य मत्री डा० सम्पूर्णानन्द जी ने किया। श्री राधाकुमुद मुकर्जी, वाइस चान्सलर, लखनऊ यूनिवर्सिटी इनके स्वागता-ध्यक्ष और श्री एस० वशीरुद्दीन साहव (अलीगढ यूनिवर्सिटी) अधिवेशन के सभापति थे इनका सगठन हो गया है और आशा है निकट भविष्य मे इसके द्वारा प्रान्त मे पुस्तकालय आन्दोलन को वहुत वल मिलेगा इस समय श्री सी० जी० विश्वनाथ (वाराणसी) सभापति और श्री के० कुमार लाइब्रेरियन अमीरुद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी प्रधान मत्री है।

प्रान्तीय सघ के अतिरिक्त कई जिलो मे जिला पुस्तकालय-सघ भी स्थापित हो गए है। इनमे से 'इलाहावाद पुस्तकालय-सघ' उल्लेखनीय है। इसकी स्थापना प्रयाग विश्वविद्यालय के आनरेरी लाइब्रेरियन डा० वनारसीप्रसाद सक्सेना तथा अखिल भारतीय पुस्कालय-सघ के उपाध्यक्ष श्री एस० वशी-रुद्दीन जी की प्रेरणा से १९५६ मे हुई। यह एक रजिस्टर्ड सस्था है। इसने अपने जिले मे पुस्तक-प्रदर्शनी, भाषण, लेख और प्रचार द्वारा काफी जागृति पैदा कर दी है। इस सघ का वार्षिकोत्सव २० जनवरी १९५७ को श्री एस० वशीरुद्दीन साहव की अध्यक्षता मे मनाया गया। इस समय श्री प्रो० एस० सी देव सभापति और श्री द्वारकाप्रसाद शास्त्री प्रधान मत्री है।

श्री के० कुमार, बी० ए०, एम० ए० एल० बी० डिप० एड० एम्सी०
प्रधान मन्त्री
उत्तरप्रदेशीय पुस्तकालय संघ
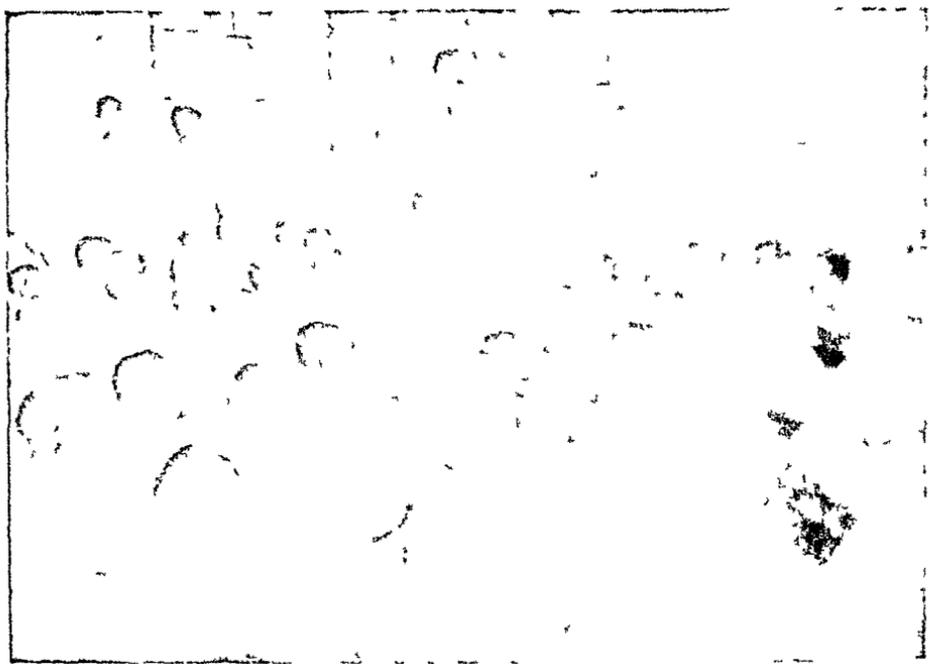
विहार राज्य पुस्तकालय-सघ के पूर्णिया अधिवेशन का एक दृश्य
नेशनल लाइब्रेरियन श्री बी० एस० केशवन भाषण देते हुए

बिहार

बिहार सरकार ने पुस्तकालय-विकास की एक योजना स्वीकार करके पुस्तकालयो की देख-रेख के लिए एक अलग 'पुस्तकालय विभाग' स्थापित किया। सरकार ने पटना स्थित सिनहा लाइब्रेरी को 'केन्द्रीय राज्य पुस्तकालय' घोषित किया। प्रान्त के प्रत्येक जिले के हेडक्वाटर मे 'जिला केन्द्रीय पुस्तकालय' स्थापित किए। पुस्तकालयो को राज्य सरकार ने ग्रान्ट देने मे बहुत उदारता का परिचय दिया। १९४९ ई० मे पुस्तकालयो को एक लाख का आवर्त्तक और तीन लाख का अनावर्त्तक अनुदान (ग्रान्ट) दिया गया। मद्रास की भाँति अपने प्रदेश मे भी पुस्तकालय-अधिनियम लागू करने का निश्चय किया और इसके लिए एक कमेटी भी बनाई। पटना मे पाँच बाल-पुस्तकालय स्थापित किये गए। समाज-शिक्षा विभाग द्वारा तीन सौ भ्रमण शील पुस्तकालय सचालित किये गये। सरकार द्वारा प्रतिवर्ष ६०० हाई स्कूल ५३५ बेसिक स्कूल और लगभग २०,००० मिडिल अपर तथा लोअर स्कूलो के पुस्तकालयो को भी ग्राण्ट देने की व्यवस्था की गई। अपने राज्य से पाँच पुस्तकालयाध्यक्षो को 'दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी' मे वहाँ की कार्य-पद्धति का अध्ययन करने के लिये भेजा। पुस्तकालय-अधीक्षक प्रो० नवलकिशोर जी गौड है।

बिहार राज्य पुस्तकालय-संघ

ब्रिटिशकाल मे इस सघ के तीन अधिवेशन हो चुके थे। उसके बाद संघ के निम्नलिखित अधिवेशन हुए :—

चौथा	१९४८	दरभङ्गा	श्री चंडेश्वरप्रसाद सिह
पाँचवाँ	१९५१	भागलपुर	जगन्नाथप्रसाद मिश्र
छठाँ	१९५३	रहीमपुर	जगन्नाथप्रसाद मिश्र
सातवाँ	१९५५	पूर्णिया	जगन्नाथप्रसाद मिश्र
आठवाँ	१९५६	गया	देवव्रत शास्त्री

ऊपर के पाँचवे अधिवेशन मे संघ का विधान स्वीकृत हुआ। उसके बाद संघ का काम तेजी से बढा। १९५३ तक लगभग ३००० पुस्तकालय सघ मे सम्बद्ध हो गए। सघ के जिला पुस्तकालय-सघ प्रत्येक जिले मे स्थापित हुए और कुछ सबडिविजनल संघ भी। संघ के कार्यकर्त्ताओ मे श्री अनुज शास्त्री, श्री परमानन्द दोषी, श्री इन्द्रदेवनारायण सिनहा, श्री प्रभुनारायण गौड और पं० जगन्नाथप्रसाद मिश्र के नाम उल्लेखनीय है।

पुस्तकालयाध्यक्षों का प्रशिक्षण

पूर्णिया अधिवेशन के वाद प्रशिक्षण शिविर के दो सत्र हुए। १९५४ मे एक महीने का १८ जून १९५५ से और दूसरा २० फरवरी १९५६ मे। पहले मे ३० प्रशिक्षणार्थी पास हुए और दूसरे मे २२ जिनमे ५ महिलाएँ भी थीं। इस मद मे सरकार ने ३०००) देन की व्यवस्था की। सिनहा लाइब्रेरी के लाइब्रेरियन श्री प्रभु नारायण गौड ने दो छात्राओ को १०–१० रुपये की छात्रवृत्तियाँ भी दी।

सरकारी सहायता

सघ को विहार राज्य सरकार ने काफी प्रोत्साहन दिया। कार्यालय चलाने को ३०००) वार्षिक सहायता देना स्वीकार किया। राँची, पटना, दरभगा, मुँगेर और पूर्णिया के जिला पुस्तकालय सघो को ३०,००० रु० के एक-एक मोटरवान दिये गए।

संघ के क्रियाकलाप

सघ ने कई महत्त्वपूर्ण कार्य किए। 'पुस्तकालय' नामक एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। पुस्तकालय कर्मचारियो के ट्रेनिङ्ग की भी व्यवस्था की। इसके लिए उसने 'प्रशिक्षण शिविर' चलाया, जिसके लिए सरकार ने पहली वार पाँच सौ रुपये की सहायता दी। उसके वाद १९५६ मे पुस्तकालय-कर्मचारियो की ट्रेनिङ्ग के लिए २५,००० की सहायता विहार-सरकार ने दी।

विहार में प्रथम पंचवर्षीय योजना

प्रथम पचवर्षीय योजना मे सरकार ने लगभग ३८ लाख रुपये खर्च किया। राज्य के ५ जिलो मे जिला पुस्तकालय स्थापित हुए। प्रत्येक सवडिविजन मे एक-एक राज्य पुस्तकालय खोलने के लिए तीन लाख ६६ हजार रुपया स्वीकार किया गया। सिनहा लाइब्रेरी को ४२,००० की आवर्तक और २ लाख ३० हजार की अनावर्त्तक ग्राण्ट की व्यवस्था की गई है। इसके हाते मे एक वाल-पुस्तकालय और एक अजायव-घर वनाने का निश्चय हो चुका है। उसके भवन के लिए १ लाख तथा पुस्तक तथा अन्य सामानो के लिए ५० हजार रुपये खर्च होने जा रहे है। वच्चो के लिए अव तक १० पुस्तकालय थे जिन पर तीस हजार अनावर्त्तक और ९४००) आवर्त्तक खर्च होता रहा है। अव सात और पुस्तकालय खुले, जिन पर २१००) अनावर्त्तक और ६८५०) आवर्त्तक रूप मे खर्च होगा।

जिलानुसार पुस्तकालयों की ग्राण्ट का विवरण (राज.)

(सन् १९५६–५७)

जिले	साधारण	एफिशिएन्सी	स्पेशल	योग
१. पटना	१२,०००	३,७५०		१५,७५०
२ गया	९,०००	१,५००		१०,५००
३ शाहाबाद	८,२५०	१,५००		९,७५०
४ भागलपुर	७,५००	२,२५०		९,७५०
५ मुँगेर	११,२५०	३,०००		१४,२५०
६ सहरसा	३,०००	७५०		५,२५०
७ सथाल परगना	३,७५०	१,५००		६,७५०
८ पूर्णिया	५,२००	७५०	१,५००	८,२५०
९ मुजफ्फरपुर	१०,५००	३,०००	२२,५०	१३,५००
१० दरभगा	९,०००	१,५००		१०,५००
११ सारन	९,०००	१,५००		१०,५००
१२. चपारन	५,२५०	१५००	२२५०	९०००
१३ राची	२,२५०	१५००		५२५०
१४ हजारीबाग	२,२५०	१५००	१५००	५२५०
१५ सिवभूम	२,२५०	१५००	१५००	५२५०
१६ मानभूम	२,२५०	१५००	१५००	५२५०
१७. पलामू	२,२५०	१५००	१५००	५२५०
	१,०५,०००	३०,०००	१५,०००	१,५०,०००

बिहार सरकार पहिली पंचवर्षीय योजना मे १ लाख की जो ग्राट सार्वजनिक पुस्तकालयो को देती थी, उसे द्वितीय पचवर्षीय योजना मे दो लाख कर दिया और पिछडे हुए जिलो क पुस्तकालयो को तीव्र गति से बढने के लिए कुछ पेशल ग्राण्ट भी दी। यह ग्राट प्रत्येक जिले मे पुस्तकालयो के चार ग्रेड बना कर दी गई।

(क) १००) से १५०) प्रति पुस्तकालय।

(ख) ७०) से १००) ,, ,,

(ग) ४०) से ७०) ,, ,,

(घ) ३५) से ५०) ,, ,,

पुस्तकालय संदेश

श्रीकृष्ण खण्डेलवाल महोदय ने अप्रैल १९५२ ई० में पटना से 'पुस्तकालय सदेश' नामक मासिक पत्रिका का सम्पादन और प्रकाशन शुरू किया। इस पत्रिका ने विहार मे ही नही, अन्य हिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तो में भी पुस्तकालय-आन्दोलन मे वहुत योग दिया। समय-समय पर इस पत्रिका के आकर्षक विशेषाङ्क भी प्रकाशित हुए। सम्भवत अब इसका प्रकाशन बन्द हो गया है।

अ० भा० पुस्तकालय-विज्ञान-परिषद्

हिन्दी के माध्यम से पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था करने के निमित्त विहार मे 'पुस्तकालय-विज्ञान शिक्षा परिषद' नामक सस्था की स्थापना भी हुई। इस परिषद ने अखिल भारतीय पमाने पर 'पुस्तकालय-प्रवेश' और 'पुस्तकालय-कला भूषण' परीक्षाएं सचालित की।

नालन्द का पुस्तकालय

भारत का गौरव नालन्द का प्राचीन पुस्तकालय इसी विहार प्रदेश मे था जिसकी चर्चा 'वौद्धकालीन पुस्तकालय' मे की गई है। केन्द्रीय सरकार ने विहार राज्य सरकार को ३२०७६ रु० नालन्द मे पुस्तकालय भवन को पूरा करने के लिए दिया जो कि 'इस्टीट्यूट आफ रिसर्च ऐण्ड पोस्ट ग्रेजुएट स्टडीज फार पाली ऐण्ड वुद्धिस्ट लर्निङ्ग' से संलग्न है।

पंजाब

देश के विभाजन के वाद पूर्वी पजाव का एक अलग प्रान्त वना तो इसमे पुस्तकालयो को नये सिरे से सगठित करने की आवश्यकता पडी। इस प्रदेश की राजधानी चण्डीगढ वनाई गई। चण्डीगढ से सेट्रल स्टेट लाइब्रेरी, पजाव-सरकार शिक्षा-विभाग द्वारा अस्थायी तौर पर १५-१०-५५ को पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत स्थापित हुई। निश्चय किया गया कि इस पुस्तकालय मे ओपेन एक्सेस सिस्टम रहे। लेडिङ्ग और रिफ्रेंस विभागो के साथ-साथ दृश्य-श्रव्य उपकरण तथा उत्तम वाल-कक्ष की व्यवस्था की जाय। सन् १९५५-५६ मे पजाव प्रदेश मे पुस्तकालय-विस्तार योजना के लिए केन्द्रीय सरकार ने दो लाख रुपया दिया। फिलहाल यह सेट्रल लाइब्रेरी गवर्नमेट कालेज, चडीगढ़ मे रखी गई और इसको सगठित करने का काम शुरू किया गया। श्री वलवन्त सिह गुजराती बी० ए०, ए० एल० ए० लाइब्रेरियन और इन्द्रसिह एम० ए० तथा श्रीमती

राजेन्द्र चोपडा बी० ए० सहायक लाइब्रेरियन के पद पर नियुक्त किये गए। पुस्तकालय के लिए २६७४६ पुस्तके खरीदी गई ।

सन् १९४८ के पुस्तकालय-आन्दोलन से पूर्वी पजाब मे ७०० से अधिक पुस्तकालय तथा वाचनालयो को सरकार के विभिन्न विभागो के अन्तर्गत सगठित किया गया। इनमे से १५० नगर मे है तथा शेष गावो मे है।

पुस्तकालय-संघ

'पूर्वी पजाब पुस्तकालय सघ' ने अपना प्रथम अधिवेशन अक्टूबर १९४८ ई० को शिमला मे किया। इसमे प्रैक्टिकल लाइब्रेरी ट्रेनिङ्ग, पुस्तक-प्रदर्शनी प्रौढ शिक्षा, पाठक परामर्श सेवा, समाचार-पत्रो की प्रदर्शनी आदि अनेक आयोजन किये गये।

सघ का दूसरा अधिवेशन गवर्नमेट ट्रेनिङ्ग कालेज (वीमेस), शिमला मे १६ नवम्बर से २० नवम्बर १९४९ को हुआ। इसका उद्घाटन सरदार नरोत्तम सिह जी शिक्षा-मन्त्री ने किया। स्वागताध्यक्ष शिक्षा-सचालक श्री के० सी० खन्ना महोदय थे। प्रो० डी० सी० शर्मा ने अपना भाषण पढा। ५००० से अधिक विभिन्न विषयो की पुस्तके प्रदर्शित की गई। हजारो दर्शको ने इससे लाभ उठाया।

सघ ने २७ से ३० अक्टूबर १९५० को वाई० एम० सी० ए० हाल शिमला मे पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया। इसका उद्घाटन माननीय चीफ जस्टिस हरिक, पूर्वी पजाब हाईकोर्ट ने किया।

१५ जून १९५१ ई० को सघ ने चौथी पुस्तक प्रदर्शनी वाई० एम० सी० ए० के हाल मे शिमला मे आयोजित की। इसका उद्घाटन जी० डी० खोसला महोदय आई० सी० एस० पजाब हाईकोर्ट ने किया। स्वागताध्यक्ष बेरिस्टर टेकचन्द जी थे। ६००० पुस्तके प्रदर्शित की गई। इस आयोजन के लिए सगठन-मन्त्री श्री सन्तराम भाटिया जी तथा जी० एल० तेरहान महोदय को पुस्तक-प्रेमियो ने धन्यवाद दिया। २० से २४ मार्च १९५२ मे सघ ने पाँचवी पुस्तक-प्रदर्शनी का आयोजन तथा कुछ अन्य आयोजन अपने वार्षिक अधिवेशन के साथ-साथ किये।

सघ की ओर से पुस्तक-प्रदर्शनी और लाइब्रेरी सेमीनार का आयोजन ८ से १२ फरवरी १९५४ मे जालन्धर मे गवर्नमेट ट्रेनिङ्ग कालेज के हाल मे

किया गया। इस पुस्तक-मेला के अध्यक्ष पूर्वी पजाव के शिक्षा-सचालक डाक्टर ए० सी० जोशी महोदय थे। ९ फरवरी १९५४ को लाइब्रेरी सेमीनार का उद्घाटन नेशनल लाइब्रेरियन श्री बी० एस० केशवन् ने किया।

कल्चरल फेस्टिवल

भारत मे अपने ढग का यह पहला 'कल्चरल फेस्टिवल' नरहिन्द क्लब, अम्बाला कैन्टोन्मेट मे १९५१ ई० मे २८ नवम्बर से ३ दिसम्बर तक आयोजित किया गया। श्री यादवेन्द्रसिंह वहादुर, राजप्रमुख पेप्सू ने इसका उद्घाटन किया। इसका आयोजन पुस्तकालयो और वाचनालयो की सहायता के लिए किया गया था। इसमे श्री सतराम जी भाटिया ने पुस्तक-प्रदर्शनी का आयोजन किया जिसका उद्घाटन श्री पी० एन० थापर, आई० सी० एस० फाइनेंस-कमिश्नर, पजाब ने किया। इसमे विभिन्न विषयो की ४००० पुस्तकें प्रदर्शित की गई। बाल-साहित्य का प्रदर्शन बहुत ही सफल रहा। लगभग दो लाख व्यक्तियो ने इसको देखा और लाभ उठाया।

इण्डियन लाइब्रेरियन

श्री सतराम भाटिया महोदय विभाजन के वाद से 'इण्डियन लाइब्रेरियन' पत्रिका को शिमला से प्रकाशित करते रहे। उसके बाद अब जालधर सिटी से इसका प्रकाशन सफलतापूर्वक कर रहे हैं। अग्रेजी मे भारतीय पुस्तकालय जगत मे यह अच्छी पत्रिका मानी जाती है और इसका बहुत आदर है।

पेप्सू

१ फरवरी १९५५ ई० को सेंट्रल पब्लिक लाइब्रेरी, पेप्सू[1] का शिलान्यास मुख्य मन्त्री श्री वृषभानु जी द्वारा पटियाला मे हुआ। यह पुस्तकालय भारत के शिक्षा-विभाग की योजना का एक अग है। इसमे लाइब्रेरी ट्रेनिङ्ग क्लास तथा बाल-पुस्तकालय की भी व्यवस्था की जायगी।

पेप्सू पुस्तकालय-संघ

'पेप्सू पुस्तकालय सघ', पूर्वी पंजाव पुस्तकालय सघ' के साथ मिल गया और इसके सभापति श्री बलवन्त सिह गुजराती, प्रधान मन्त्री श्री जी० एल० तेरहान और सगठन मन्त्री श्री सतराम भाटिया बनाए गए।

दिल्ली

देश के विभाजन के बाद भारत-सघ की राजधानी दिल्ली ही रही इसमे शासन आदि की सुविधा के लिए अनेक नये विभाग एव कार्यालय

---

१ पेप्सू अब पजाब सम्मिलित है।

खुले, पुराने विभागो मे विस्तार किया गया। इन विभागो और कार्यालयो के साथ-साथ पुस्तकालयो की स्थापना हुई। इस प्रकार दिल्ली के पुस्तकालय-विकास को पाँच भागो मे बाँटा जा सकता है —

१ नए पुस्तकालयो की स्थापना।
२ पुराने पुस्तकालयो का विस्तार।
३ पुस्तकालय-सम्बन्धी विशेष चर्चाएँ और आयोजन।
४ पुस्तकालय-संघ की गतिविधि।
५ पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा-व्यवस्था।

[१] नए पुस्तकालयों की स्थापना

स्वाधीनता के बाद सरकार ने दिल्ली मे जो सबसे महत्त्वपूर्ण पुस्तकालय स्थापित किया, उनका नाम है, 'दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी'। इसका परिचय पीछे दिया जा चुका है।

फिरका लाइब्रेरी

फिरका डवलपमेट डिपार्टमेट द्वारा २५ सेट्रल लाइब्रेरी बनाने के लिए २५ फिरको मे निश्चय किया गया। फिरका के हर गाँव मे शाखा कार्यालय खोलने की योजना बनाई गई। प्राथमिक पाठशालाओ के हेडमास्टरो के चार्ज मे वे पुस्तकालय शुरू मे रहे, ऐसा निश्चय किया गया। सरकार ने फिरका मे हर एक सेट्रल लाइब्रेरी को ३१८०), ५००) पुस्तको के लिए, २१०) अन्य खर्च के लिए स्वीकार किया। २४-३५ रु० मासिक ग्रेड पर लाइब्रेरियन की स्वीकृति हुई और उनको एक साइकिल प्यून भी दिया गया। यह योजना जनवरी १९४८ मे बनी।

[२] पुराने पुस्तकालयों का विकास

(क) पार्लियामेंट लाइब्रेरी—इस लाइब्रेरी मे प्रतिवर्ष ५००० पुस्तके बढने लगी और धीरे-धीरे ९०,००० पुस्तके—३००,००० सरकारी प्रकाशन और डाकूमेट्स और ५०,००० डिबेट्स की प्रतियाँ हो गई। १९५९ मे इसका बजट ३०,००० रु० था।

शिक्षा-विभाग की सेट्रल एजुकेशनल लाइब्रेरी का सगठन किया गया। श्री आर० गोपालन् के अवकाश ग्रहण करने पर उनके स्थान पर श्री एन० एम० केतकर महोदय की नियुक्ति की गई।

[३] पुस्तकालय-सम्बन्धी विशेष आयोजन

यो तो पुस्तकाल-सम्बन्धी अनेक आयोजन दिल्ली मे हुए किन्तु उनमें से दो आयोदन विषय प्रसिद्ध है —

(अ) यूनेस्को का अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार

(ब) इण्डियन एडल्ट एजुकेशनल एसोसिएशन की ओर से छठाँ सेमिनार।

[अ] यूनेस्को सेमिनार का विवरण पीछे दिया जा चुका है।

[ब] भारतीय पुस्तकालय और सामाजिक शिक्षा विषय पर विचारार्थ इस सेमिनार का आयोजन २७ सितम्बर से ५ अक्टूबर १९५५ को किया गया। इसका उद्घाटन करते हुए प० गोविन्द वल्लभ पन्त ने कहा कि 'साक्षर और नव-साक्षरो को शिक्षित करने का कार्य जारी रखने की आवश्यकता है। इन पुस्तकालयो मे पुस्तको के चुनाव पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए जिनसे कि उनके द्वारा प्रसारित ज्ञान अपूर्ण न हो'। बम्बई लाइब्रेरीज के क्युरेटर श्री टी० डी० वाकनीस ने भी इसमे भाग लिया। इसका निर्देशन भारत-सरकार के असिस्टेन्ट एजुकेशनल ऐडवाइजर सरदार सोहन सिह जी ने किया।

इस सेमिनार मे निम्नलिखित ६ समस्याओ पर विचार किया गया —

१ किन तरीको से पुस्तकालय भारत मे साधारण नव-निर्माण के लिए योगदान कर सकते है।

२ सामाजिक शिक्षा और पुस्तकालयो के बीच किस प्रकार का सम्बन्ध है ?

३ नव-भारत पुस्तकालयीय ढाँचा।

४ लाइब्रेरी ट्रेनिग।

५ लाइब्रेरी कानून।

६ लाइब्रेरी साहित्य।

पहली समस्या पर सेमिनार ने मत व्यक्त किया कि पुस्तकालय, व्यक्तियो, दलो, और सस्थाओ के साथ काम करते हुए उत्तम साहित्य को उभाड कर, अपेक्षाकृत अच्छी प्रकार की साक्षरता को प्रोत्साहन दे कर वर्तमान नव-निर्माण मे सहयोग दे सकते है।

द्वितीय समस्या पर यह मत व्यक्त किया गया कि सामाजिक-शिक्षा और पुस्तकालय-सगठन मे घनिष्ट सम्बन्ध है। इसमे पुनरुक्ति कार्य से बचना

चाहिए। यह ठीक होगा कि पुस्तकालय और सामाजिक शिक्षा दोनो एक ही शिक्षा विभाग के अन्तर्गत रहे।

तीसरी समस्या पर सिफारिश की गयी कि भारत सरकार पुस्तकालय-कमीशन बनावे जो भारत के पुस्तकालयो की वर्तमान स्थिति की जाँच-पडताल करे और भविष्य के लिए एक लाइब्रेरी कानून की सिफारिश करे। नेशनल सेंट्रल लाइब्रेरी, नेशनल लाइब्रेरी बोर्ड, जिला पुस्तकालय, प्रारम्भिक ग्राम पुस्तकालय आदि के कर्तव्य आदि की रूपरेखा पर भी विचार किया गया।

चौथी समस्या पर सेमिनार का यह मत रहा कि प्रत्येक स्तर पर पुस्तकालय-सम्बन्धी प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाय। यह सुझाव दिया गया कि लाइब्रेरी के पाठ्य-क्रम मे मौलिक-सामाजिक शिक्षा को भी शामिल किया जाय। शाखा, जिला और प्रदेश पुस्तकालयो की योग्यता का भी विश्लेषण किया गया।

पाँचवी समस्या पर सेमिनार की राय थी कि एक पुस्तकालय-कानून बनाना चाहिए। अखिल भारतीय पुस्तकालय-सघ या भारत सरकार द्वारा नियुक्त विशेषज्ञो की किसी समिति द्वारा लाइब्रेरी कानून का ढाँचा बनाया जाय।

छठी समस्या पर विचार करते हुए सेमिनार ने पुस्तको की श्रेणियाँ बनाई जिनमे कि लाइब्रेरियन रुचि रखते है और विशिष्ट एजेन्सियो तक उनको प्रचारित करने पर बल दिया गया।

इस प्रकार इस सेमिनार ने अनेक महत्त्वपूर्ण समस्याओ पर विचार करके यूनेस्को सेमिनार के लिए एक पृष्ठभूमि तैयार कर दी।

पुस्तकालय-संघ

दिल्ली मे दो पुस्तकालय-सघ स्थापित हुए —

१. गवर्नमेंट आफ इण्डिया लाइब्रेरी एसोसियेशन।

२. दिल्ली लाइब्रेरी एसोसियेशन।

[१] 'गवर्नमेंट इण्डिया लाइब्रेरी एसोसियेशन' सरकारी पुस्तकालयो के कर्मचारियो द्वारा स्थापित किया गया। इसके द्वारा सरकारी पुस्तकालयो के कर्मचारियो को प्रशिक्षित करने की भी व्यवस्था १९५१ मे एक क्लास खोल कर की गई। यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन के सदस्य प्रो० एन० के०

सिद्धान्त ने इसके द्वितीय अधिवेशन मे १७-४-५४ को उत्तीर्ण परीक्षार्थियो को प्रमाण-पत्र वितरण किया।

५ जून १९५४ की वार्षिक बैठक का सभापतित्व श्री कृष्ण आयगर, लाइब्रेरियन, नेशनल आर्काइव्ज ने किया। सरदार सोहन सिंह एसोसिएशन के सभापति और जसवन्त आनन्द मन्त्री तथा कु० कान्ता भाटिया कोषाध्यक्ष चुने गए। एसोसिएशन ने मि० आर० गोपालन को विदाई दी और यूनेस्को सेमिनार का स्वागत किया।

२ दिल्ली लाइब्रेरी एसोसिएशन की स्थापना श्री पृथ्वीनाथ कौल महोदय के प्रयत्न से हुई। इसका एक अधिवेशन १७-१-५४ को दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी मे हुआ जिसका सभापतित्व कुमारी शान्ता वशिष्ठ ने किया और उद्घाटन डा० रङ्गनाथन् जी ने। १९५४ ई० मे इसके २६३ सदस्य हो चुके थे। इस एसोसिएशन ने २२ दिसम्बर १९५४ को लाइब्रेरी बिल का ड्राफ्ट दिल्ली स्टेट गवर्नमेंट के सामने पेश किया। इस सघ ने ८-१-५५ को हार्डिञ्ज म्युनिस्पल लाइब्रेरी मे एक लाइब्रेरी ट्रेनिङ्ग कोर्स भी शुरू किया, जिसका उद्घाटन श्री ए० ए० ए० फसले, सदस्य सघ-सेवा-आयोग ने किया और इसकी अध्यक्षता डा० रङ्गनाथन् ने की। श्री पी० एन० कौल इस कोर्स के रजिस्ट्रार और श्री एस० दास गुप्ता डाइरेक्टर चुने गये। मारवाडी पब्लिक लाइब्रेरी चाँदनी चौक, दिल्ली मे इसका कार्यालय रखा गया।

पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा

दिल्ली यूनिवर्सिटी मे पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा की व्यवस्था पूर्ववत् चालू रही। इनके अतिरिक्त भारत सरकार पुस्तकालय-सघ और दिल्ली लाइब्रेरी एसोसिएशन मे भी इसका प्रबन्ध हुआ। दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी मे नवीनतम टेकनिको के अनुसार विशेष रूप से पब्लिक लाइब्रेरी विषयक शिक्षा की व्यवस्था की गई। यूनेस्को फेलोशिप के अन्तर्गत इडोनेशिया और वर्मा के दो लाइब्रेरियनो ने यहाँ से तीन मास ट्रेनिङ्ग प्राप्त की।

१९५५-५६ के वर्ष मे दिल्ली राज्य के सब पुस्तकालयो मे पुस्तको की सख्या ३ लाख ७८ हजार थी। इस वर्ष ८,१४,३१६ पुस्तके सदस्यो द्वारा इन पुस्तकालयो से उधार लेकर पढी गई। कुल २३,६२,७२५ व्यक्तियो ने लाभ उठाया।

५५-५६ मे दिल्ली मे १६ पब्लिक लाइब्रेरियाँ थी जिनमे से ३ ऐसी थी जहाँ से पुस्तके उधार लेने पर कुछ फीस नही लगती थी। इन तीनो

पुस्तकालयो को सरकार ने २,३२, ३९२ रु० की आर्थिक सहायता दी। अन्य १३ मे से ७ को .१, ९९,००६ रुपये की सरकारी आर्थिक सहायता मिली।

गत वर्ष दिल्ली राज्य मे १३२ ग्रामो मे १३२ समाज-शिक्षा-केन्द्र खुले जिनके साथ पुस्तकालय भी चलाए जाते रहे। दिल्ली म्यु० कमेटी ने भी ऐसे कुछ केन्द्र चलाए।

इस प्रकार दिल्ली राज्य मे पुस्तकालय-आन्दोलन एक सगठित रूप मे रहा।

बम्बई

पुस्तकालय-विकास समिति की सिफारिशो के अनुसार बम्बई सरकार ने कार्य प्रारम्भ किया। बम्बई मे केन्द्रीय पुस्तकालय की स्थापना हुई थी और अहमदाबाद, पूना, और धारवार मे क्षेत्रीय पुस्तकालय स्थापित किए गए। क्षेत्रीय पुस्तकालयो को गुजराती, मराठी और कन्नड भाषाओ की पुस्तके सरकार ने उस सग्रह मे दी जो अब तक अव्यवस्थित रहा। शेष पुस्तके केन्द्रीय पुस्तकालय को दी गई। अण्डर सेक्शन ९ (३) प्रेस ऐण्ड रजिस्ट्रेशन आफ बुक्स ऐक्ट १८६७ के अनुसार (अमेन्डेड बम्बई गवर्नमेंट १९४८) प्रत्येक प्रकाशन की दो प्रतियाँ केन्द्रीय पुस्तकालय को प्राप्त होती है।

बाम्बे ब्रॉच रायल एशियाटिक सोसाइटी को कापीराइट कॅलेक्शन का काम सौप दिया गया है। मार्च सन् १९५३ तक केन्द्रीय पुस्तकालय मे पुस्तको की सख्या ४९,४३४ हो गई। वहाँ ५र वर्ष के अनुसार से उनका वर्गीकरण किया गया और वर्ष के अन्तर्गत लेखक-क्रम से व्यवस्थित किया गया। रीजनल कलेक्शन का काम गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद, द सिटी जनरल लाइब्रेरी पूना, विद्यावर्द्धक संघ, धारवार कर रहे है।

इन केन्द्रीय और क्षेत्रीय पुस्तकालयो के अतिरिक्त २२ पुस्तकालय डिस्ट्रिक्ट टाउन और २२९ पुस्तकालय तालुका टाउन मे स्थापित हुए है।

गाँवो मे सरकार ने ५००० पुस्तकालय सामाजिक शिक्षा-योजना के अन्तर्गत स्थापित किये, जिन्हे १८) वार्षिक अधिक से अधिक सरकारी सहायता के रूप मे प्राप्त होते है।

इन पुस्तकालयो मे १५०० पुस्तकालय बडौदा स्टेट के है और ३५०० बम्बई सरकार के।

बम्बई राज्य के साथ विलय होने पर बडौदा राज्य के पुस्तकालयो का भी भार बम्बई सरकार पर पडा। लेकिन इससे बड़ौदा स्टेट के पुस्तकालयो को

कोई हानि नही पहुँची। पहले वडौदा राज्य मे जिला पुस्तकालय को ७००) वार्षिक अनुदान, तालुका पुस्तकालय को ३००) वार्षिक अनुदान मिलता था, किन्तु वम्बई सरकार ने क्रमश इनको ६०००) और ४५०) अनुदान कर दिया। वडौदा के ग्राम पुस्तकालयो को 'सामाजिक शिक्षा योजना' के अन्तर्गत ही रखा गया। विलय के वाद वडौदा स्टेट लाइब्रेरीज के भूतपूर्व क्युरेटर श्री टी० डी० वाकनीस महोदय ही वम्बई लाइब्रेरीज के क्युरेटर वनाए गये।

कर्नाटक लाइब्रेरी एसोसिएशन

इस सघ को १९५० मे सरकार द्वारा मान्यता मिली। उसको वार्षिक अनुदान भी मिलने लगा। इसने पुस्तकालय-विज्ञान पर कन्नड मे एक पुस्तक प्रकाशित की और १९५३ मे लाइब्रेरी ट्रेनिंग कोर्स भी शुरू किया। कर्नाटक पुस्तकालयो की डाइरेक्टरी प्रकाशित करने का कार्य सघ ने अपने हाथ मे लिया है और आशा है शीघ्र ही प्रकाशन हो सकेगा।

अधिवेशन

सघ के तत्वावधान मे आल वम्बई कर्नाटक लाइब्रेरी कान्फ्रेस का अधिवेशन धारवार मे १९४८ मे हुआ। वम्बई हाईकोर्ट के जज माननीय एम० सी० छागला ने इसका उद्घाटन किया और मैसूर लाइब्रेरी के लाइब्रेरियन श्री जी हनुमत राव ने अध्यक्षता की। दुर्लभ कन्नड ग्रथो और पत्र-पत्रिकाओ की एक प्रदर्शनी भी हुई। इसके वाद तृतीय अधिवेशन १९५२ मे कुण्डगोल और कुम्ता मे १९५३ मे हुए। कुडगोल अधिवेशन की अध्यक्षता श्री वी० एन० दातार ने की और कुम्ता अधिवेशन की अध्यक्षता श्री आद्य रङ्गाचार जी ने।

यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी

१६ नवम्बर १९५४ को वडौदा यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी का राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने उद्घाटन किया। ५ जनवरी १९५५ को गुजरात विद्यापीठ पुस्तकालय का उद्घाटन माननीय प० नेहरू ने किया। आपने कहा कि 'हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि प्रत्येक गाँव मे एक पुस्तकालय हो।'

वम्बई के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री ने ३० मार्च १९४८ को सेठ जी० एस० मेडिकल कालेज, वम्बई मे 'मेडिकल लाइब्रेरी' का उद्घाटन किया।

महात्मा गांधी रेलिक्स प्रेजर्वेशन कमेटी

गाधी से सम्बन्धित सभी चल वस्तुओ को एकत्र करने की कमेटी डा०

श्री टी० डी० वाकनीस एम० ए०, एफ० एल० ए०
क्युरेटर आफ लाइब्रेरीज
बम्बई प्रदेश

राजेन्द्र प्रसादजी के सभापतित्व मे बनी और दिसम्बर १९५३ मे 'गांधी ज्ञान मन्दिर' की स्थापना वर्धा मे हुई।

पुस्तकालय संघ

महाराष्ट्र पुस्तकालय संघ की स्थापना १९४९ मे हुई। इनसे ट्रेनिङ्ग कोर्स की व्यवस्था की। इसने पुस्तकालय-योजना के विस्तार के लिए एक प्लानिङ्ग कमेटी (श्री वाकनीस, हिंग्वे, श्री कोल्हाटकर और श्री काले महोदय) बनाई। १९ अप्रैल से जून १९५५ को एस० एन०, बार्वे के निर्देशन मे २२ विद्यार्थियों को पूना मे ट्रेनिङ्ग दी गई। सन् ५५ मे इस संघ के विभिन्न श्रेणियो के २८९ सदस्य बन चुके थे। बम्बई सरकार ने सघ को १३५० रु० की ग्राण्ट भी दी। इसकी ओर से प्रतिवर्ष ट्रेनिङ्ग क्लास की व्यवस्था की जाती है। एक मराठी पत्रिका 'साहित्य सहकार' का प्रकाशन होता है और पुस्तकालय-विज्ञान की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है।

बम्बई लाइब्रेरियन स्टाफ यूनियन

बम्बई मे पुस्तकालय कर्मचारियो का एक सगठन यूनियन के रूप मे हुआ। इसकी दूसरा अधिवेशन २६ जून १९५३ को टाउन हाल, बम्बई मे प्रिंसिपल एम० बी० डॉगे, एम० एल० सी० की अध्यक्षता मे हुआ। ११-७-४८ को भी एक कान्फ्रेंस करके लाइब्रेरी-कर्मचारियो की नौकरी की दशा सुधारने और वेतन बढाने के सम्बन्ध मे माँगो की सूची प्रस्तुत की गई। इस प्रकार इसका प्रयास भी अपने ढग का अनुपम रहा।

पुस्तकालय-विज्ञान शिक्षा

बम्बई राज्य मे बम्बई विश्वविद्यालय मे श्री डी० एन० मार्शल महोदय की अध्यक्षता मे पुस्तकालय-विज्ञान में डिप्लोमा कोर्स की व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त पूना, बम्बई, गुंजरात और कर्नाटक के पुस्तकालय-संघ भी पुस्तक-प्रदर्शनी तथा पुस्तकालय ट्रेनिङ्ग कक्षाओ की व्यवस्था करते है।

मद्रास राज्य

मद्रास राज्य मे पुस्तकालय-आन्दोलन अधिक संगठित रूप से आगे बढा। डा० रंगनाथन् ने जो माडेल लाइब्रेरी ऐक्ट बनाया था, उस पर आधारित 'लाइब्रेरी बिल' मद्रास सरकार ने पास कर दिया। इस प्रकार भारत मे सब से पहला लाइब्रेरी ऐक्ट पास करने का श्रेय इसी राज्य को है। इस 'मद्रास-पब्लिक लाइब्रेरी ऐक्ट' के अनुसार राज्य मे स्थानीय कर्मचारियो ने काम

करना शुरू किया। मद्रास नगर और जिला सेलम को छोड़ कर सभी जिलो मे डिस्ट्रिक्ट सेन्ट्रल लाइब्रेरी स्थापित की गई। मद्रास राज्य ने १८५३ में २,७१,७०३ रुपये और १९४५ में ६,३४,२१० रुपये खर्च किये। डाइरेक्टर आफ पब्लिक लाइब्रेरीज, मद्रास के आफिस मे चिल्ड्रेन लाइब्रेरी स्थापित हुई, जिसके द्वारा बालको में पढने की आदत का विकास किया गया।

१९४५ तक मद्रास मे २८८८ पुस्तकालय और ९८९ रीडिङ्ग रूम हो चुके थे। इनसे ७३,०५,१६१ व्यक्तियो ने २४,४५,५३० पुस्तको का उपयोग किया था।

मद्रास लाइब्रेरी एसोसिएशन

यह एसोसिएशन बडी लगन और तत्परता से कार्य करता रहा। इनके अधिवेशन सफलतापूर्वक होते रहे। २७ वाँ वार्षिक अधिवेशन ९ अप्रैल १९४५ मे हुआ, जिसमे मद्रास लाइब्रेरी ऐक्ट मे लाइब्रेरी डाइरेक्टर को सरकार द्वारा नियुक्त किये जाने वाले की आलोचना की गई। सघ ने यह सिफारिश की कि ट्रेड ग्रेजुएट लाइब्रेरियन को ट्रेड ग्रेजुएट टीचर का ग्रेड स्कूलो और कालेजो मे दिया जाय।

इस प्रदेश मे कालेज लाइब्रेरियन्स का भी एक संगठित रूप है जिसका प्रथम अधिवेशन २८ सितम्बर १९४७ को Y. M. C A (मद्रास) मे हुआ।

बङ्गाल प्रदेश

बंगाल लाइब्रेरी एसोसिएशन के अधिवेशन प्रति वर्ष होते रहे। ३–४ अप्रैल १९५३ को सुनीतिकुमार चटर्जी की अध्यक्षता मे इसका एक सफल अधिवेशन हुआ। २४–५–५३ ई० की एक बैठक मे १५ वे ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर मे उत्तीर्ण २५ व्यक्तियो को प्रमाण-पत्र दिए गए। इस एसोसिएशन ने 'पश्चिमी बंगाल लाइब्रेरी डाइरेक्टरी' का भी काम अपने हाथ मे ले लिया है। मालदा के ट्रेनिङ्ग कैम्प से इस एसोसिएशन की ओर लोग अधिक आकृष्ट हो गये हैं। बंगाल सरकार इसके क्रिया-कलापो से सतुष्ट हो कर ग्राण्ट भी दे रही है। बंगाल के पुस्तकालयो-आन्दोलन मे श्री प्रभात-कुमार बनर्जी भूतपूर्व लाइब्रेरियन, शान्तिनिकेतन, श्री विमलकुमार दत्त, वर्त्तमान लाइब्रेरियन शान्तिनिकेतन तथा श्री प्रमीलचन्द्र वसु, लाइब्रेरियन कलकत्ता यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी आदि प्रमुख है। श्री प्रमीलचन्द्र जी तो जन्म-जात लाइब्रेरियन है और इस एसोसिएशन के प्राण है। 'ग्रंथागार' पत्रिका इस एसोसिएशन से प्रकाशित हो रही है।

इंडियन एसोसिएशन आफ स्पेशल लाइब्रेरीज ऐण्ड इन्फार्मेशन सर्विस

इसकी स्थापना डा० एस० एल० होरा की प्रेरणा से कलकत्ता मे हुई कार्य को संगठित करने के लिए योग्य व्यक्तियो के नेतृत्व मे ६ उपविभाग बना कर कार्य प्रारम्भ कर दिया गया।

हैदराबाद

इस राज्य मे एक 'ऑल हैदराबाद लाइब्रेरी एसोसिएशन' की स्थापना स्वाधीनकाल मे हुई। इसके द्वितीय अधिवेशन का सभापतित्व श्री के० जी० सैयदेन, ऐडीशनल सेक्रेटरी, शिक्षा विभाग, केन्द्रीय सरकार ने िया। उन्होने अपने भाषण मे इस बात पर बल दिया कि द्वितीय पचवर्षीय योजना के अत तक (१९६१) सभी राज्यो मे स्टेट और जिला लाइब्रेरियो की स्थापना हो जायगी और उनके अपने भवन हो जायँगे और वे सुयोग्य पुस्तकालयाध्यक्षो द्वारा मंगठित होगे।

संघ का तीसरा अधिवेशन सितम्बर १९५६ मे हुआ, जिसका उद्‌घाटन श्री **बी० एन० दातार महोदय** (केन्द्रीय मन्त्री) ने किया। इस अवसर पर स्पेशल लाइब्रेरी काफ्रेस और पुस्तक-प्रदर्शनी आदि के भी आयोजन हुए। स्पेशल लाइब्रेरी कान्फ्रेस के सभापति श्री आर० एस० पारखी महोदय थे और श्री आर० एम० जोशी स्वागताध्यक्ष। पुस्तक प्रदर्शनी का उद्‌घाटन हैदराबाद के गृहमन्त्री श्री डी० जी० बिन्दु ने किया।

डा० राधाकृष्णन् ने भी उस्मानिया यूनिवर्सिटी मे हस्तलिखित ग्रथो की एक प्रदर्शनी का उद्‌घाटन किया।

मैसूर

मैसूर राज्य के विभिन्न केन्द्रो मे हिन्दी पुस्तकालयो की स्थापना मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद् द्वारा की गई। प्रथम पचवर्षीय योजना के अन्तर्गत भारत सरकार ने अहिन्दी प्रान्तो मे हिन्दी प्रचार के लिए पाँच लाख रुपये की आर्थिक सहायता दी। मैसूर सरकार ने अपने राज्य मे हिन्दी के प्रचार पर हजारो रुपये खर्च किए। मैसूर हिन्दी प्रचार परिपद् को आठ केन्द्रो मे हिन्दी पुस्तकालय खोलने की आर्थिक सहायता दी गई। परिपद् ने ये पुस्तकालय—बगलोर परिषद् के दफ्तर मे, सिरा, आनेकल, होलबेरे, सतेबेन्मू, जगलूर, आलदूर और मल्लाडी हल्ली मे खोले। ये पुस्तकालय स्थानीय समिति की देख-रेख मे चल रहे है।

ट्रावनकोर कोचीन

ट्रावनकोर-कोचीन के संयुक्त राज्य वनने पर सरकार ने पुस्तकालयों की संख्या और वढा दी। धीरे-धीरे १४८१ पुस्तकालय 'पुस्तकालय-संघ' की देख-रेख मे चलने लगे। पुस्तकालयो की देख-रेख के लिए एक अधिकारी की नियुक्ति हुई। पुस्तको की सख्या मे भी वृद्धि हुई और सन् १९५० में कुल पुस्तक-सख्या १२,५८,७५० हो गई। सरकार २ पाई प्रति-व्यक्ति पुस्तकालय-सेवा पर व्यय कर रही है।

पुस्तकालय-संघ

'ट्रावनकोर-कोचीन ग्रन्थालय सघ' ट्रिवेन्ड्रम एक सुसगठित सस्था है। इस संघ से १९५४-५५ के अन्त तक १,६८५ पुस्तकालय सम्बद्ध हो गये थे। कम से कम ८०) की ग्राण्ट पुस्तकालयो को मिलती है। १९५४-५५ के अन्त तक ४१७ पुस्तकालयो के निजी घर वनाए गये। सघ के आर्गनाइजर इस्पेक्टर और भरण समितियाँ पुस्तकालयों के काम को कन्ट्रोल करते है। १९५४-५५ मे १,७०,४१५ रुपये ग्राण्ट पुस्तकालयो को दी गई।

मध्य-प्रदेश

'मध्य-प्रदेश राज्य पुस्तकालय सघ' का अधिवेशन २९-३० अक्टूवर १९५५ को नेशनल लाइब्रेरी के डिप्टी लाइब्रेरियन श्री वाई० एम० मुले की की अध्यक्षता मे नागपुर मे हुआ। नागपुर हाईकोर्ट के भूतपूर्व जज श्री डब्ल्यू० वी० पौराणिक स्वागताध्यक्ष थे। श्री मुले ने इस वात पर वल दिया कि अनिवार्य शिक्षा की भाँति सरकार को लाइब्रेरी ऐक्ट भी शीघ्र ही वनाना चाहिए। पुस्तकालय की देख-रेख का विभाग अलग होना चाहिए। इण्डिया आफिस लाइब्रेरी को वापस लाने के लिए प्रस्ताव पास किया गया और गाँव लाइब्रेरी और नेशनल वुक ट्रस्ट की योजना के लिए सरकार को धन्यवाद दिया गया।

सौराष्ट्र

मेघजी पेघराज ट्रस्ट के ४ लाख रुपये के दान से सौराष्ट्र मे ८०० लाइब्रेरी खोलने की योजना बनाई गई जिनमे से १०० पुस्तकालय पहले से ही ग्राम-पंचायत की ओर से चल रहे है।

राजस्थान

'२ अक्टूबर १९५५ को कुछ उत्साही पुस्तकालयाध्यक्षो ने जोधपुर नगर मे 'जोधपुर लाइब्रेरी एसोसिएशन' की स्थापना की। २० जनवरी १९५६ को

बैठक मे इसके मन्त्री श्री एल० एम० सिन्धवी (लाइब्रेरियन, जसवन्त कालेज) चुने गये ।

आन्ध्र

आन्ध्र प्रदेश में आन्ध्र यूनिवर्सिटी वाल्टेयर के लाइब्रेरियन श्री ए० रामकृष्णराव की अध्यक्षता मे २-१०-५५ को एक बैठक लाइब्रेरियन और सीनियर स्टाफ की हुई, जिसमे 'आन्ध्र लाइब्रेरियन्स एसोसियेशन' बनाने का निश्चय किया गया। इसका उद्देश्य देश मे लाइब्रेरियनशिप को बढाना तथा पुस्तकालय कर्मचारियो की दशा और हैसियत मे सुधार करना है। श्री ए० रामकृष्णराव इसके अध्यक्ष और श्री पं० सत्यनारायण पटनायक स० लाइब्रेरियन, आन्ध्र यूनिवर्सिटी मन्त्री चुने गए।

वेस्ट बंगाल लाइब्रेरी एसोसिएशन

एसोसिएशन का ९ वाँ अधिवेशन किदरपुर, कलकत्ता मे ८-९ अप्रैल १९५५ ई० को हुआ। डा० वी० सी० राय ने कान्फ्रेंस का उद्घाटन किया। कान्फ्रेंस की अध्यक्षता श्री प्रभातकुमार मुकर्जी ने की। कान्फ्रेंस के अवसर पर पुस्तको की प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रसिद्ध पत्रकार डा० हेमेन्द्र प्रसाद घोष ने किया।

(१) सामाजिक शिक्षा और पुस्तकालयों का सहयोग।
(२) पुस्तकालय आन्दोलन में टेकनीशियनों का योगदान।

आदि विषयो पर विचार किया गया। कान्फ्रेंस ने माँग की कि कलकत्ता यूनिवर्सिटी पुस्तकालय-विज्ञान मे मास्टर डिग्री कोर्स चालू करने के प्रश्न पर शीघ्रतापूर्वक विचार करे। प० बगाल की सभी शिक्षण-सस्थाएँ अपने यहाँ ट्रेण्ड योग्य लाइब्रेरियन रखे और प्रकाशक लोग उत्तम पुस्तको के उत्पादन मे वृद्धि करे।

पुस्तकालयाध्यक्षों का सहयोग

इस साल मे अनेक प्रान्तो ने तथा विशेष रूप से कुछ पुस्तकालयो ने डा० रङ्गनाथन् का सहयोग चाहा। फारेस्ट रिसर्च इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी, देहरादून, इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ साइंस, और यूनिवर्सिटी आफ बम्बई लाइब्रेरी के अनुरोध पर डा० रङ्गनाथन् जी ने उनका निरीक्षण किया और उनके पुनर्गठन के लिए अनेक सुझाव दिए।

लाइब्रेरियन कांफ्रेंस

२७ सितम्बर १९५६ को केन्द्रीय शिक्षा-विभाग की ओर से दिल्लीमे

पुस्तकालयाध्यक्षो का एक सम्मेलन हुआ। इसमें दो प्रकार के लोग थे। एक तो वे पुस्तकालयाध्यक्ष जो ह्वीट लोन एजुकेशनल इक्सचेंज प्रोग्रैम के अन्तर्गत १९५५ ई० मे सयुक्तराष्ट्र अमेरिका गए थे और दूसरे वे पुस्तकालयाध्यक्ष थे जो इसी प्रोग्रैम के अन्तर्गत १९५६ मे जाने वाले थे। इस सम्मेलन का उद्‌घाटन शिक्षा विभाग के सेक्रेटरी श्री के० जी० सैयदेन महोदय ने किया और निर्देशक थे नेशनल लाइब्रेरियन श्री वी० एम० केशवन्। इस सम्मेलन के सदस्य तीन दलो मे स्वत विभक्त हो गए। इन दलो के नेता थे श्री बशीरुद्दीन, श्री एस० एस० सेठ, और श्री एम० दास गुप्ता। इस सम्मेलन में दिल्ली वि-वविद्यालय के उपकुलपति श्री डा० वी० के० आर० वी० राव, यूनिवर्सिटी ग्राट कमीशन के सेक्रेटरी डा० सेमुअल मथाई, ह्वीट लोन प्रोग्रैम के अमेरिकन पक्ष के प्रधान डा० उडमैन के भी भाषण हुए। इस आयोजन का उद्देश्य यह था कि सयुक्त राष्ट्र अमेरिका को जाने वाले दल के लोग १९५५ मे यात्रा करके आए हुए दल के लोगो के अनुभवो और विचारो से पूर्णत परिचित हो जायें और उनसे लाभ उठा सके। इसलिए उपर्युक्त तीन दलो के विषय भी अलग कर दिए गये थे, जो इस प्रकार थे —

[१] राष्ट्रीय स्तर पर पुस्तकालयो का संगठन और संचालन तथा कर्मचारियो का प्रशिक्षण।

[२] सूचीकरण, और वितरण सेवा के कुछ यंत्रीकरण विवरण सहित (यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी के दृष्टिकोण से)।

(३) पुस्तकालय भवन एवं पुस्तकालय-विस्तार-सेवा (कालेज स्तर पर)।

इन दलो ने आपस मे अपने विषयो पर भलीभाँति विचार-विनिमय किया और अत मे प्रत्येक दल ने अपनी रिपोर्ट और सुझाव अन्तिम सेशन के लिए पेश किया। सब दलो के सुझावो और सिफारिशो पर बहस और विचार-विनिमय हुए और अत मे उन्हे स्वीकार किया गया।

(ब) पुस्तकालयाध्यक्षो की विदेश-यात्राएँ

स्वतन्त्र भारत का अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध अनेक देशो से स्थापित हो जाने पर पुस्तकालयाध्यक्षो को विदेशो मे जाकर पुस्तकालय-सगठन और सचालन सम्बन्धी विशेष ज्ञान और अनुभव प्राप्त करने के अनेक अवसर मिले। अनेक लाइब्रेरियन विदेशो मे गए और वहाँ से ज्ञान एव अनुभव प्राप्त करके लौटे।

ह्वीट लोन एजुकेशनल इक्सचेंज प्रोग्रैम

इस योजना के अन्तर्गत पहली ट्रिप मे निम्नलिखित व्यक्तियो ने ९ फरवरी १९५४ ई० को ५ महीने की संयुक्त राष्ट्र की विदेश यात्रा की —

१ श्री एस० दासगुप्ता, अध्यक्ष लाइब्रेरी साइन्स विभाग, दिल्ली यूनि०।

२ श्री एस० बशीरुद्दीन, लाइब्रेरियन, अलीगढ मुस्लिम यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी।

३. श्री नबी अहमद, जामिया मिलिया, नई दिल्ली।

४. श्री अमरनाथ शर्मा, लाइब्रेरियन, दिल्ली पोलीटेकनिक।

५. श्री जे० एस० आनन्द, लाइब्रेरियन, सेंट्रल एजुकेशनल लाइब्रेरी।

६. श्री एस० रामभद्रन्, असिस्टेंट लाइब्रेरियन, दिल्ली यूनिवर्सिटी।

७. श्री एम० बी० बर्जीफदार, असिस्टेन्ट लाइब्रेरियन, टाटा इन्स्टीट्यूट आफ फंडामेंटल रिसर्च, बम्बई।

८. श्री के० आर० देसाई, लाइब्रेरियन, गुजरात यूनिवर्सिटी।

९. श्री पी० सी० बोस, लाइब्रेरियन कलकत्ता यूनिवर्सिटी।

१०. श्री बी० सी० बनर्जी, असिस्टेन्ट लाइब्रेरियन विश्व भारती, शान्तिनिकेतन।

११. श्री डी० सी० सरकार, लाइब्रेरियन बंगाल इंजीनियरिंग कालेज।

१२. श्री बी० बी० राघवेन्द्र राव, लाइब्रेरियन, इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ साइन्स, बंगलौर।

इन्होंने वहाँ सेमिनार, वाद-विवाद आदि मे भाग लिया। अमेरिकन लाइब्रेरी असोसिएशन के वार्षिक अधिवेशन में सम्मिलित हुए और दस स्टेट्स की यूनिवर्सिटी पुस्तकालयो को देखा। लाइब्रेरी आफ कांग्रेस, वाशिंगटन, को देखा तथा अन्य क्रिया-कलाप मे भी भाग लिया। ये लोग जुलाई के अन्तिम सप्ताह मे लौटे। २८ जुलाई को सायंकाल ६ बजे इनका स्वागत दिल्ली लाइब्रेरी एसोसिएशन की ओर से किया गया।

इस योजना के अन्तर्गत दूसरी ट्रिप में निम्नलिखित ११ लाइब्रेरियनों का दूसरा दल २९ फरवरी ५६ को पांच मास की अध्ययन यात्रा पर गया है :—

१. श्री बर्नार्ड [illegible] — बम्बई

२. श्री प्रभातकुमार मुकर्जी — आगरा

३. श्री कृष्ण श्रीपद देशपाण्डे — कर्नाटक यूनिवर्सिटी, धारवाड़

४ श्री जनार्दन [illegible] कार्निकर, इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ [illegible] नई दिल्ली।

पुस्तकालयाध्यक्षो का एक सम्मेलन हुआ। इसमें दो प्रकार के लोग थे। एक तो वे पुस्तकालयाध्यक्ष जो ह्वीट लोन एजुकेशनल इक्सचेंज प्रोग्रैम के अन्तर्गत १९५५ ई० मे सयुक्तराष्ट्र अमेरिका गए थे और दूसरे वे पुस्तकालयाध्यक्ष थे जो इसी प्रोग्रैम के अन्तर्गत १९५६ मे जाने वाले थे। इस सम्मेलन का उद्घाटन शिक्षा विभाग के सेक्रेटरी श्री के० जी० सैयदेन महोदय ने किया और निर्देशक थे नेशनल लाइब्रेरियन श्री बी० एम० केशवन्। इस सम्मेलन के सदस्य तीन दलो मे स्वत विभक्त हो गए। इन दलो के नेता थे श्री वशीरुद्दीन, श्री एस० एस० सेठ, और श्री एम० दास गुप्ता। इस सम्मेलन मे दिल्ली वि-वविद्यालय के उपकुलपति श्री डा० वी० के० आर० वी० राव, यूनिवर्सिटी ग्राट कमीशन के सेक्रेटरी डा० सेमुअल मथाई, ह्वीट लोन प्रोग्रैम के अमेरिकन पक्ष के प्रधान डा० उडमैन के भी भाषण हुए। इस आयोजन का उद्देश्य यह था कि सयुक्त राष्ट्र अमेरिका को जाने वाले दल के लोग १९५५ मे यात्रा करके आए हुए दल के लोगो के अनुभवो और विचारो से पूर्णत परिचित हो जायें और उनसे लाभ उठा सके। इसलिए उपर्युक्त तीन दलो के विषय भी अलग कर दिए गये थे, जो इस प्रकार थे —

[१] राष्ट्रीय स्तर पर पुस्तकालयो का संगठन और संचालन तथा कर्मचारियो का प्रशिक्षण।

[२] सूचीकरण, और वितरण सेवा के कुछ यंत्रीकरण विवरण सहित (यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी के दृष्टिकोण से)।

(३) पुस्तकालय भवन एवं पुस्तकालय-विस्तार-सेवा (कालेज स्तर पर)।

इन दलो ने आपस मे अपने विषयो पर भलीभाँति विचार-विनिमय किया और अत मे प्रत्येक दल ने अपनी रिपोर्ट और सुझाव अन्तिम सेशन के लिए पेश किया। सब दलो के सुझावो और सिफारिशो पर बहस और विचार-विनिमय हुए और अत मे उन्हे स्वीकार किया गया।

(ञ) पुस्तकालयाध्यक्षो की विदेश-यात्राएँ

स्वतन्त्र भारत का अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध अनेक देशो से स्थापित हो जाने पर पुस्तकालयाध्यक्षो को विदेशो मे जाकर पुस्तकालय-सगठन और सचालन सम्बन्धी विशेष ज्ञान और अनुभव प्राप्त करने के अनेक अवसर मिले। अनेक लाइब्रेरियन विदेशो मे गए और वहाँ से ज्ञान एव अनुभव प्राप्त करके लौटे।

ह्वीट लोन एजुकेशनल इक्सचेंज प्रोग्रैम

इस योजना के अन्तर्गत पहली ट्रिप मे निम्नलिखित व्यक्तियो ने ९ फरवरी १९५४ ई० को ५ महीने की सयुक्त राष्ट्र की विदेश यात्रा की —

१ श्री एस० दासगुप्ता, अध्यक्ष लाइब्रेरी साइन्स विभाग, दिल्ली यूनि०।

२ श्री एस० बशीरुद्दीन, लाइब्रेरियन, अलीगढ मुस्लिम यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी।

३. श्री नबी अहमद, जामिया मिलिया, नई दिल्ली।

४. श्री अमरनाथ शर्मा, लाइब्रेरियन, दिल्ली पोलीटेकनिक।

५. श्री जे० एस० आनन्द, लाइब्रेरियन, सेट्रल एजुकेशनल लाइब्रेरी।

६. श्री एस० रामभद्रन्, असिस्टेट लाइब्रेरियन, दिल्ली यूनिवर्सिटी।

७. श्री एम० बी० वजीफदार, असिस्टेन्ट लाइब्रेरियन, टाटा इन्स्टीट्यूट आफ फडामेटल रिसर्च, बम्बई।

८. श्री के० आर० देसाई, लाइब्रेरियन, गुजरात यूनिवर्सिटी।

९. श्री पी० सी० बोस, लाइब्रेरियन कलकत्ता यूनिवर्सिटी।

१०. श्री बी० सी० बनर्जी, असिस्टेन्ट लाइब्रेरियन विश्व भारती, शान्ति-निकेतन।

११. श्री डी० सी० सरकार, लाइब्रेरियन बगाल इजीनियरिङ्ग कालेज।

१२. श्री वी० वी० राघवेन्द्र राव, लाइब्रेरियन, इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ साइन्स, बगलौर।

इन्होने वहाँ सेमिनार, वाद-विवाद आदि मे भाग लिया। अमेरिकन लाइब्रेरी असोसिएशन के वार्षिक अधिवेशन मे सम्मिलित हुए और दस स्टेट्स की यूनिवर्सिटी पुस्तकालयो को देखा। लाइब्रेरी आफ काग्रेस, वाशिंगटन, को देखा तथा अन्य क्रिया-कलाप मे भी भाग लिया। ये लोग जुलाई के अन्तिम सप्ताह मे लौटे। २८ जुलाई को सायकाल ६ बजे उनका स्वागत दिल्ली लाइब्रेरी एसोसिएशन की ओर से किया गया।

इस योजना के अन्तर्गत दूसरी ट्रिप मे निम्नलिखित ११ लाइब्रेरियनो का दूसरा दल २९ फरवरी ५६ को पाँच मास की अध्ययन यात्रा पर गया है —

१. श्री बर्नार्ड ऐन्डर्सन — बम्बई

२. श्री प्रभातकुमार मुकर्जी — आगरा

३. श्री कृष्ण श्रीपद देशपाण्डे — कर्नाटक यूनिवर्सिटी, धारावार

४ श्री जनार्दन मनकेश्वर कान्तिकर, इण्डियन इंस्टीट्यूट आफ पब्लिक ऐड०, नई दिल्ली।

५. श्री अशोक कुमार वनर्जी, इडियन इन्स्टीट्यूट आफ टेकनोलोजी, खड्गपुर ।

६. श्री व्रनारसी लाल पाठक, सागर यूनिवर्सिटी, सागर ।

७. श्री विनयेन्द्रसेन गुप्ता, नेशनल लाइब्रेरी

८ श्री सरदार तारासिंह, लखनऊ यूनिवर्सिटी ।

९. श्री वी० के० त्रिवेदी, इलाहावाद यूनिवर्सिटी ।

१०. श्री कृष्णजी शंकर हिंग्वे, पूना यूनिवर्सिटी ।

डा० रगनाथन् ने योरप और अमेरिका की वहु-उद्देशीय यात्रा ७ जून सन् १९४८ से अक्टूबर १९४८ तक की। उनकी यात्रा के निम्नलिखित कारण थे —

१ 'इंटरनेशनल फेडरेशन फार डाकुमेंन्टेशन' ने 'क्लैसीफिकेशन ऐण्ड इंटरनेशनल डाकुमेन्टेशन' पर एक स्मृति-पत्र के लिए प्रार्थना की थी।

२ हेग मे जून १९४८ मे एफ० आई० डी० की कार्फ्रेस में भाग लेने का निमन्त्रण मिला था ।

३. व्रिटिश काउन्सिल का निमन्त्रण था कि वे दो मास तक उसके अतिथि के रूप मे ग्रेटव्रिटेन देखे ।

४ इण्डियन स्टैण्डर्ड इंस्टीट्यूशन, के प्रतिनिधियो के नेता के रूप मे आई० एस० ओ० की छठी वैठक मे भाग लेना था जो हेग में होने वाली थी ।

५ दिल्ली यूनिवर्सिटी का निमत्रण था कि वे दिल्ली यूनिवर्सिटी के प्रतिनिधि की हैसियत से राष्ट्रमण्डल की यूनिवर्सिटियो की कान्फ्रेस में जुलाई १९४८ को आक्सफोर्ड मे शामिल हो ।

६. भारत के केन्द्रीय शिक्षा-विभाग की इच्छा थी कि डा० साहव यूरोप के कुछ देशो का भ्रमण करे और सामान्य रूप से पुस्तकालय-जगत् के नव विकास का और विशेष रूप से नेशनल सेंट्रल लाइब्रेरी के विपय मे अध्ययन करे ।

७ सयुक्त राष्ट्र का निमत्रण था कि उसके पुस्तकालय-विशेषज्ञो की अन्तर्राष्ट्रीय ऐडवाइजरी कमेटी मे भाग ले ।

८ यूनेस्को के अन्तर्राष्ट्रीय लाइब्रेरियनशिप के स्कूल की फाकल्टी के एक सदस्य हो जायें जो कि इंगलैण्ड मे सितम्बर १९४८ मे होने वाली थी ।

ह्वीट लोन एजुकेशनल एक्सचेंज प्रोग्रैम

के

अन्तर्गत दूसरी ट्रिप के लाइब्रेरियन

कुछ अमेरिकन विशेषज्ञों के साथ

९ इण्डियन लाइब्रेरी एसोसिएशन की प्रार्थना थी कि उसके प्रतिनिधि के रूप मे इटरनेशनल फेडरेशन आफ लाइब्रेरी एसोसिएशन के १४ वे सेशन मे सितम्बर १९४८ मे लन्दन मे भाग ले ।

उन्होने विदेशो मे नेशनल लाइब्रेरी सिस्टम, सिटी लाइब्रेरी सिस्टम, ग्राम पुस्तकालय सिस्टम, यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, और व्यापारिक लाइब्रेरियों का अध्ययन किया ।

इनके अतिरिक्त निम्नलिखित लाइब्रेरियनो ने फुटकर सुविधाओ के अन्तर्गत विदेश यात्रा की और पुस्तकालय-सम्बन्धी गम्भीर अनुभव प्राप्त किया —

श्री जनार्दन, लाइब्रेरियन कोनेमरा पब्लिक लाइब्रेरी, मद्रास, यूनेस्को की मीटिङ्ग मे सम्मिलित होने के लिए मैनचेस्टर गये ।

श्री बी० एस० केशवन्, नेशनल लाइब्रेरियन चार महीने की अध्ययन यात्रा पर फरवरी १९५२ मे अमेरिका गए। उन्होने वहाँ पुस्तकालयो के उच्च सचालको से सम्पर्क स्थापित किया और अनेक पुस्तकालयो का निरीक्षण किया ।

श्री एस० एस० सेठ, लाइब्रेरियन, इक्सटर्नल, अफेयर्स, भारत सरकार द्वारा फुलब्राइट ट्रैवेल ग्राण्ड पा कर स्मिथ मुन्ट (Mnndt) फेलोशिप के अन्तर्गत अमेरिका मे ६ मास वाशिगटन लाइब्रेरी मे लाइब्रेरी साइस से रिसर्च करने मे बिताया। श्री विमलकुमार दत्त, (लाइब्रेरियन, शान्ति निकेतन लाइब्रेरी) भी उक्त फेलोशिप के अन्तर्गत गए और लौटते समय अनेक देशो के पुस्तकालयो को देखा ।

श्री एम० एम० एल० टंडन ने यूनेस्को फेलोशिप के अन्तर्गत पुस्तकालय-संगठन एव सामाजिक शिक्षा का ६ मास अध्ययन करने के लिए यू० एस० ए० और इगलैण्ड की यात्रा की ।

श्रीमती कमला कपूर, यू०एस०आई०एस० लाइब्रेरी, नई दिल्ली ने इम्प्लाइज ओरियेन्टेशन प्रोग्रैम के अन्तर्गत यू० एस० ए० अध्ययन के लिए गई ।

श्री हरिदेव शर्मा एम०ए०, लाइब्रेरियन, डी० ए० वी० कालेज, जालधर ने २॥ वर्ष अमेरिका मे विताया। उन्होने मिचिगन यूनिवर्सिटी से ए० एम० एल० एस० परीक्षा जून १९५५ मे पास की। उन्होने ब्रुकलेन पब्लिक लाइब्रेरी न्यूयार्क मे कार्य भी किया तथा लौटते समय अन्य देशो के पुस्तकालयो को भी देखा ।

श्री एन० एम० केतकर महोदय ने १९५१ मे 'कोलम्बिया यूनिवर्सिटी आफ लाइब्रेरी साइंस' मे ट्रेनिङ्ग ली ।

डा० जगदीशशरण शर्मा, ने दो बार पुस्तकालय-विज्ञान सम्बन्धी विशेष अध्ययन के लिए विदेश यात्रा की। पहली बार १४ अगस्त १९४८ ई० को प्रस्थान करके अमेरिका की मिचिगन यूनिवर्सिटी से ए० एम० एल० एम० की परीक्षा पास करके १४ अगस्त १९५० को स्वदेश लौटे। दूसरी बार मिचिगन विश्वविद्यालय से एक फेलोशिप पाने पर राष्ट्रपिता बापू की विब्लियोग्रैफी को रिसर्च विषय के रूप मे लेकर १० जुलाई १९५२ को फिर अमेरिका गए और वहाँ मिचिगन यूनिवर्सिटी से पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। उसके बाद अनेक बडे-बडे पुस्तकालयो की कार्य-प्रणाली को देख कर सितम्बर १९५४ को भारत लौटे।

नेशनल लाइब्रेरी के श्री वैद्यनाथ चन्द्रोपाध्याय चौधरी को ह्वीट लोन फड प्रोग्राम के अन्तर्गत पुस्तक-सुरक्षा और जिल्द बदी के प्रशिक्षण के लिए भेजा गया।

त्याग, नटराजन (इडियन नेशनल बिब्लियोग्रैफी विभाग) को लाइब्रेरी आफ काग्रेस मे बिब्लियोग्रैफिकल अध्ययन के लिए पूर्ण छात्रवृत्ति ग्यारह माह के लिए प्राप्त हुई।

इनके अतिरिक्त श्री राधेश्याम सक्सेना (लखनऊ) तथा मिस थामस (ऐग्रिकल्चर इन्स्टीट्यूट नैनी लाइब्रेरी) आदि ने भी प्रशिक्षण के लिए विदेश यात्राएँ की।

पुस्तकालयाध्यक्षों का सम्मान

पुस्तकालय-विज्ञान को स्वतत्र विषय स्वीकार करने और लाइब्रेरी प्रोफेशन को सम्मान देने के लिए इस बीच कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य हुए —

अन्तिम गवर्नर जनरल माउन्टबेटन ने दिल्ली यूनिवर्सिटी के वाइसचान्सलर की हैसियत से डा० एस० आर० रंगनाथन् को ७ मार्च १९४८ ई० के स्पेशल कन्वोकेशन मे आनरेरी डी० लिट० (डाक्टर आफ लेटर्स) की उपाधि प्रदान की। इस अवसर पर डा० साहब को अनेक पुस्तकालयाध्यक्षो की ओर से बधाई के सदेश भी प्राप्त हुए।

भारत सरकार ने डा० रंगनाथन् जी को उनकी पुस्तकालय-सम्बन्धी बहुमूल्य सेवाओ के उपलक्ष मे 'पद्म-भूषण' उपाधि से अलकृत किया।

अलीगढ यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी के लाइब्रेरियन श्री एस० बशीरुद्दीन साहब को अमेरिका से लौटने पर यूनिवर्सिटी सीनेट ने प्रोफेसर ग्रेड (८०० से १२५० रु०, पर नियुक्ति करके उनको सम्मानित किया।

श्री एस० दास गुप्त महोदय को भी प्रोफेसर ग्रेड प्रदान दिया गया।

डा० रंगनाथन् का महान् त्याग

भारतीय पुस्तकालय-जगत् के महान् विद्वान् डा० रगनाथन् ने अपने जीवन भर की कमाई उस भारतीय विश्वविद्यालय को देने की घोपणा की जो उतनी ही रकम अपनी ओर से मिला कर पुस्तकालय-विज्ञान के विशेष अध्ययन और खोज के लिए एक 'चेयर' स्थापित कर सके। सभी ने इस,उदारता को मुक्तकंठ से सराहना की है।

स्वाधीन भारत में पुस्तकालय–विज्ञान-सम्बन्धी साहित्य का विकास

१९४७ कुरुनकर, नायर वी०	लाइब्रेरी मूवमेण्ट इन ट्रावनकोर।
१९४७ ,, ,,	लाइब्रेरीज ऐण्ड मॉस एजुकेशन।
१९४७ नागभूषणम्, जी०	लाइब्रेरीज ऐण्ड रजिट्रेशन।
रंगनाथन्, एस० आर०	कोलन क्लैसीफिकेशन आफ तैलगू-लिटरेचर।
१९४७ ,, ,,	लाइब्रेरी डव्लप्मेण्ट प्लान, विद ए ड्राफ्ट लाइब्रेरी बिल फार द प्राविन्स आफ बाम्बे।
१९४८-४९ इण्डिया हेल्थ सर्विसेज़ –डाइरेक्टर जनरल आफ–	कन्सोलीडेटेड कैटलाग आफ जरनल्स ऐण्ड पीरियाडिकल्स इन द लाइब्रेरीज आफ सरटेन मेडिकल रिसर्च इस्टीट्यूट इक्सट्रा आफ इडिया।
१४४८ कुधालकर, वी० जी०	ग्रन्थालयाँ वर्गीकरण।
९९४८ कोलहाटकर, वी० पी०	ग्रन्थालयाँ सूचीलेख।
१९४८ रंगनाथन्, एस० आर०	एजुकेशन फार लेजर।
१९४८ ,, ,,	क्लैसीफिकेशन एण्ड इण्टरनेशनल डाकुमेन्टेशन।
१९४८ ,, ,,	प्रीफेस टु लाइब्रेरी साइस।
१९४८ भोलानाथ 'विमल'	पुस्तकालय-परिचय।
१९४८ मथुराप्रसाद आदि	पुस्तकालय।
१९४९ नागभूपणम्, जी०	ग्रन्थालय गीतालु।
१९४९ पारखी, आर० एस०	ग्रन्थ और ग्रथालय।

१९४९ रंगनाथन्, एस० आर० लाइब्रेरी डव्लप्मेण्ट प्लान विद ए ड्राफ्ट लाइब्रेरी बिल फार द यूनाइटेड प्राविंसेज।

१९४९ हिंग्वे, के० एस० : इतिहासाचे वर्गीकरण।

१९५० नागभूषणम्, जी० क्लैसीफिकेशन आफ तेलगु बुक्स।

१९५० नागभूषणम्, जी० : ग्रन्थालय सूत्रालु।

१९५० ,, ,, लाइब्रेरी पब्लिसिटी ऐण्ड इक्सटेन्शन वर्क्स।

१९५० पारखी, आर० एस० प्रिंसिपल्स आफ लाइब्रेरी क्लैसीफिकेशन विद स्पेशल रिफरेंस टु कोलन ऐण्ड डेसिमल क्लैसीफिकेशन।

१९५० रंगनाथन्, एस० आर० . क्लैसीफिकेशन, कोडिङ्ग ऐण्ड मैशीनरी फार सर्च।

१९५० ,, ,, : ग्रन्थ अध्ययनार्थ है (अनु मुरारीलाल नागर)।

१९५० ,, ,, ऐण्ड कौल पी० एन०, कोरानी, टी० एन० यूनियन कैटलॉग आफ पीरियडिकल्स पब्लिकेशंस इन द लाइब्रेरीज आफ साउद एशिया।

१९५० रंगनाथन्, एस० आर० : लाइब्रेरी कैटलाग फण्डानेटल ऐण्ड प्रोसीजर।

१९५० रंगनाथन्, एस० आर० .. लाइब्रेरी डव्लप्मेण्ट प्लान।

१९५० हिन्दी समाचार-पत्र संग्रहालय, हैदराबाद . हिन्दी समाचार-पत्र सूची।

१९५१ इण्डियन लाइ० एसोसिएशन इण्डियन लाइब्रेरी डाइरेक्टरी, सम्पादक रङ्गनाथन् एस० आर०, दास गुप्ता एस० और मगनानन्द।

१९५१ जुबेर, एम० : प्रैक्टिकल कैटलागिग।

१९५१ ,, ,, : शाहान मुगलियान के कुतुबखाने।

१९५१ नवकोंकण प्रकाशन : पचामृत।

१९५१ नागभूषणम्, पी० . रीडिंग रूम।

१९५१ पैडोले, एल० वी० सम्पा० : मराठी ग्रन्थालया चा इतिहास।

१९५१ बोस, पी० सी० ग्रन्थागारम्।

१९५१	महाराष्ट्र ग्रंथालय संघ	: विसर्ग व दशाश वर्गीकरण सहाय के कोष्टक ।
१९५१	रंगनाथन्, एस० आर०	: कैलसीफिकेशन ऐण्ड कम्युनिकेशन ।
१९५१	,, ,, ,,	: लाइब्रेरी मैनुअल ।
१९५१	,, ,, ,,	ग्रन्थालय प्रक्रिया (अनु० मुरारिलाल . नागर) ।
१९५१	,, ,, ,,	: फिलासफी आफ लाइब्रेरी क्लैसी- : फिकेशन ।
१९५१	विश्वनाथ शास्त्री	. पुस्तकालय प्रवेशिका ।
१९५२	भारत सरकार-शिक्षा विभाग	. लाइब्रेरीज इन इंडिया (डाइरेक्टरी)
१९५३	,, ,, ,,	नेशनल लाइब्रेरी आफ इण्डिया ।
१९५३	रंगनाथन्, एस० आर०	: अनुवर्ग-सूची-कल्प (अनु० मुरारी-लाल नागर) ।
१९५४	विश्वनाथन, सी० जी०	कैटलागिङ्ग थ्योरी ऐण्ड प्रेक्टिस ।
१९५५	,, ,,	पब्लिक लाइब्रेरी विद स्पेशल रिफ्रेंस टु इंडिया ।
१९५५	इन्द्रदेवनारायण सिनहा	: ए गाइड टु लाइब्रेरियन ।
१९५५	जगदीशशरण शर्मा (डा०)	: महात्मागाधी, ए डिस्क्रिटिव बिब्लि-योग्रैफी ।
१९५५	,, ,,	: जवाहरलाल नेहरू, ए डिस्क्रिप्टिव बिब्लियोग्रैफी ।
१९५६	,, ,,	: विनोबा ऐण्ड भूदान ।
१९५६	,, ,,	: इडियन नेशनल कांग्रेस सरकुलर ।
१९५६	नेशनल इनफर्मेशन सर्विस, पूना	: निफर गाइड टु इण्डियन पीरिय-डिकल्म १९५५-५६ ।
१९५३	अनुज शास्त्री	: पुस्तकालय क्यो और कैसे ?
१९५६	द्वारकाप्रसाद शास्त्री	: पुस्तकालय संगठन और संचालन ।
१९५६	विमलकुमार दत्त	: प्रैक्टिकल गाइड टु लाइब्रेरी प्रोसीजर
१९५७	द्वारकाप्रसाद शास्त्री	: पुस्तकालय-विज्ञान
१९५७	,, ,,	: भारत मे पुस्तकालयो का उद्भव और विकास ।

★

अध्याय १०

भारत में पुस्तकालयों का भविष्य

सिंहावलोकन

इस पुस्तक के पिछले अध्यायो के अध्ययन करने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि भारत मे पुस्तकालयो की एक शानदार परम्परा रही है। ग्रथो के सग्रह और उनके सरक्षण और उपयोग के प्रति भारतीय अति प्राचीन काल से सजग रहे है। हमारे केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्री माननीय मौलाना आजाद महोदय ने ६ अक्टूबर १९५५ को यूनेस्को सेमिनार का उद्घाटन करते हुए विभिन्न देशो के प्रतिनिधियो को भी भारतीय पुस्तकालय-परम्परा का दिग्दर्शन करते हुए कहा था —

"इस समय यह बात विशेष रूप से स्पष्ट हो जाती है जब हम अपने अतीत के इतिहास का स्मरण करते है। ऐसा नहीं है कि अतीत में भारतवर्ष में पुस्तकालयों का अभाव रहा हो। प्राचीन विश्वविद्यालयो और बौद्ध विश्वविद्यालयों में विशाल पुस्तकालयों के निर्माण की परम्परा रही है। मध्य युग से सुल्तानों के काल मे और तत्पश्चात् मुगल सम्राटो में भी पुस्तकों के प्रति अत्यधिक प्रेम विद्यमान था। वास्तव में मुगलकाल में प्रत्येक अमीर के लिए अपना निजी पुस्तकालय बना लेने की एक प्रथा सी चल पड़ी थी। जब तक कि उसके पास अपना पुस्तकालय नही होता था, उसे राज्य से सम्मानित उच्चवर्गीय व्यक्ति नहीं समझा जाता था।"

उपर्युक्त उद्धरण एक सूत्र रूप मे है जिसकी पर्याप्त व्याख्या पिछले अध्यायो मे मिल सकेगी। अब प्रश्न यह उठता है कि यदि हमारी सस्कृति मे पुस्तकालयो का इतना महत्वपूर्ण स्थान था तो देश मे इतने व्यापक स्तर पर निरक्षरता क्यो फैल गई? इसके कारण का सकेत भी इस पुस्तक के पिछले अध्यायो मे यत्र-तत्र कर दिया गया है। केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्री महोदय ने अपने उक्त उद्घाटन भाषण मे इसी बात को स्पष्ट करते हुए प्रतिनिधियो को बताया था —

"कुछ भी हो इन पुस्तकालयों का लाभ राजवंशो तथा कुछ अमीरो तक ही सीमित था। परिणाम-स्वरूप ज्ञान-क्षेत्र का विस्तार

सर्वसाधारण जनता तक नहीं हो सका। भारत के योरप से पीछे रह जाने का एक मुख्य कारण वास्तव में पुस्तकालयों का उपयोग कुछ चुने हुए लोगों के लिए ही नियन्त्रित होना भी है। अतः आज प्रजातांत्रिक भारत ने अपने अतीत से शिक्षा-ग्रहण की है और ज्ञान-प्राप्ति के साधनों को अपनी समस्त सन्तानों के लिए सुगम बनाने में लगा है।"

यह सत्य है कि भारत की ज्ञान-प्रचारक अनेक एजेन्सियो मे शनै-शनै शिथिलता आती गई। धर्म-गुरु तथा वीतराग साधु-सन्यासी कथा, प्रवचन एवं उपदेशो के द्वारा जनता के बौद्धिक स्तर को ऊँचा उठाने के बजाय किसी दूसरी ही धारा मे बह गए। पुस्तकालयो मे सचित ज्ञान-राशि पर कुछ विशिष्ट वर्गों का एकाधिकार सा हो गया। राजनीतिक उथल-पुथल का भी घातक प्रहार हुआ। फलत हमारे ज्ञान-स्रोत लुप्त गए और हम उन देशो से बौद्धिक विकास मे पीछे रह गए जिनके निवासी हमारी सभ्यता के उस काल मे असभ्य और अशिक्षित थे।

पुनर्जागरण

यह हर्ष की बात है कि स्वाधीनता काल मे अनेक संघर्षों के बीच गुजरते हुए भी भारत ने पुस्तकालय-क्षेत्र मे आशातीत सफलता प्राप्त की है। इसी सेमिनार मे पुस्तकालय सम्बन्धी भारतीय नीति को स्पष्ट करते हुए माननीय केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्री महोदय ने कहा था —

"जिन देशों ने प्रजातांत्रिक शासन-प्रणाली को सार्वजनिक रूप से चुना है, वे अपनी अधिकांश प्रजा को अविकसित और अज्ञानी नहीं बनाए रख सकते। किसी राष्ट्र की स्थिति उसका स्तर, सम्मान और भविष्य अन्त मे वहाँ की जन-शक्ति के गुणों पर ही निर्धारित होता है। हम लोगों को पुस्तकालय-सम्बन्धी सुविधाओं की उन्नति के लिए विशेष प्रयत्न करना चाहिए जिससे शेष संसार के साथ भविष्य मे आने वाले अवसरों को हम अपने समस्त नागरिकों को प्रदान कर सकें।"

विकास सम्बन्धी कार्यों से यह स्पष्ट है कि सम्पूर्ण देश में पुस्तकालय सम्बन्धी पुनर्जागरण की एक लहर दौड गई है और एक नया युगारम्भ हो गया है। प्रत्येक क्षेत्र के विद्वानो के साथ पुस्तकाल्य-क्षेत्र के प्रसिद्ध विद्वान् डा० रङ्गनाथन् जी को डाक्टरेट और पद्मविभूषण उपाधि से अलंकृत किया जाना, विदेशो मे उनके मौलिक विचारो का स्वागत, भारतीय पुस्तकालयाध्यक्षो की विदेश यात्राएँ और उनके वेतन-स्तर मे वृद्धि, महिलाओ का भी इस क्षेत्र में सहर्ष प्रवेश और प्रशिक्षण प्राप्त करना, सर्वत्र प्रशिक्षित पुस्तकालयाध्यक्षो की माँग, पुस्तकालय-विज्ञान के प्रशिक्षण की सभी अचलो मे व्यवस्था, लाइब्रेरी इक्विपमेण्ट सप्लाई करने वाली अनेक कम्पनियो की स्थापना, पुस्तकालयो के वैज्ञानिक संगठन और सचालन पर जोर दिया जाना तथा पुस्तको के सरक्षण मे अधिक उनके उपयोग पर ध्यान देना आदि ऐसी बातें है जिनसे पुनर्जागरण की पुष्टि होती है। अखिल भारतीय स्तर पर प्रत्येक जिले को केन्द्र मान कर पुस्तकालयो को सर्व-सुलभ बनाने की योजना, प्रदेशो मे पुस्तकालयो का सर्वेक्षण, विश्वविद्यालयो तथा अन्य शिक्षण सस्थाओ को पुस्तकालय-विकास के लिए विशिष्ट अनुदान, तथा विविध रूपो के नए पुस्तकालयो की स्थापना और विकास आदि कार्य भारत में पुस्तकालयो के उज्ज्वल भविष्य के द्योतक है।

इतना होते हुए भी हम नि सकोच कह सकते है कि अभी हमारा लक्ष्य बहुत दूर है और वहाँ तक पहुँचने के लिए अभी अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य अपेक्षित है। हमे आशा है कि 'लाइब्रेरी ऐडवाइजरी कमेटी' के विद्वान् सदस्य उन समस्याओ की ओर विशेष रूप से ध्यान देगे और उनके समाधान का समुचित सुझाव भी प्रस्तुत करेगे जिसके फलस्वरूप हमारे पुस्तकालय भारत के बौद्धिक, आर्थिक, एवं सास्कृतिक उत्थान मे सहायक हो सकेगे।

अनुक्रमणिका

★

सहायक सामग्री

आजादी के सात वर्ष	: भारत सरकार शिक्षा मंत्रालय।
इण्डियन लाइब्रेरी डाइरेक्टरी	इण्डियन लाइब्रेरी एसोसिएशन
एजुकेशन इन मुस्लिम इण्डिया	. जफर।
ऐन्शीएण्ट इण्डियन एजुकेशन	. राधाकुमुद मुकर्जी।
डाइरेक्ट्री आफ आंध्र लाइब्रेरीज	: आंध्र लाइब्रेरी एसोसिएशन।
दि अल्फाबेट	डेविड ड्रिनिगर।
दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी एण्ड ह्वाट इट आफर्स यू	डी० आर० कालिया।
द्वितीय पंचवर्षीय योजना	. भारत सरकार-शिक्षा-विभाग।
नेशनल लाइब्रेरी इन इण्डिया	: ,, ,,
पुस्तकालय	. पुस्तक जगत, पटना।
प्रथम पंचवर्षीय योजना	भारत सरकार-पब्लिकेशन ब्राँच।
प्राचीन भारत	. डा० रामशकर त्रिपाठी।
प्राचीन भारत	· एन० एन० घोष।
प्राचीन भारतीय लिपिमाला	· श्री गौरीशंकर हीराचन्द ओझा।
बड़ौदा लाइब्रेरी मूवमेण्ट	कुधालकर, जे० एस०।
भारत के प्राचीन पुस्तकालय	: ओकारनाथ श्रीवास्तव।
भारत में अंग्रेजी राज्य	. सुन्दरलाल।
भारतवर्ष का इतिहास	. डा० ईश्वरी प्रसाद।
भारतीय शिक्षा का इतिहास	: प्यारेलाल रावत
भारतीय शिक्षा का संक्षिप्त इतिहास	वशीधर सिह, भूदेव शास्त्री।
मराठी ग्रन्थालयों च इतिहास	. पैंडोले, एल० वी० संपा०।
लाइब्रेरीज इन इण्डिया	भारत सरकार-शिक्षा मन्त्रालय।
लाइब्रेरीज डव्लपमेण्ट प्लान	: डा० एस० आर० रङ्गनाथन्

लाइब्रेरी मूवमेण्ट मद्रास लाइब्रेरी एसोसिएशन।
लाइब्रेरी मूवमेण्ट रमन, वाई० एल० वी०।
लाइब्रेरी मूवमेण्ट इन ट्रावनकोर कुरनार नायर, वी०।
शाहान मुगलियान के कुतुबखाने जुबेर० एम०
सिंधु सभ्यता डा० सतीशचन्द्र काला।
हिस्ट्री आफ नालन्दा संकालिया।

भारतीय पुस्तकालय-जगत की निम्नलिखित पत्रिकाओ की पुरानी और नई फाइलो से भी सहायता ली गई है —

अवगिला
इण्डियन लाइब्रेरियन
ग्रन्थालय
जनरल आफ ऑल इण्डिया लाइब्रेरी एसोसिएशन
पुस्तकालय
पुस्तकालय-संदेश
माडर्न लाइब्रेरियन
लाइब्रेरी बुलेटिन

इनके अतिरिक्त 'गंगा पुरातत्वाङ्क', हिन्दी प्रचारक, प्रकाशन समाचार तथा कुछ फुटकल पत्रिकाओ की फाइलो, यूनिवर्सिटी कमीशन, एव हायर सेकेण्डरी एजुकेशन कमीशनो की रिपोर्टो, राजकीय गजट तथा सरकारी शिक्षा विभागो के वार्षिक विवरणो से भी सहायता ली गई है।